Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राणाचार्य

C.K.Y.
LIB
HARIDWAR

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

113882

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

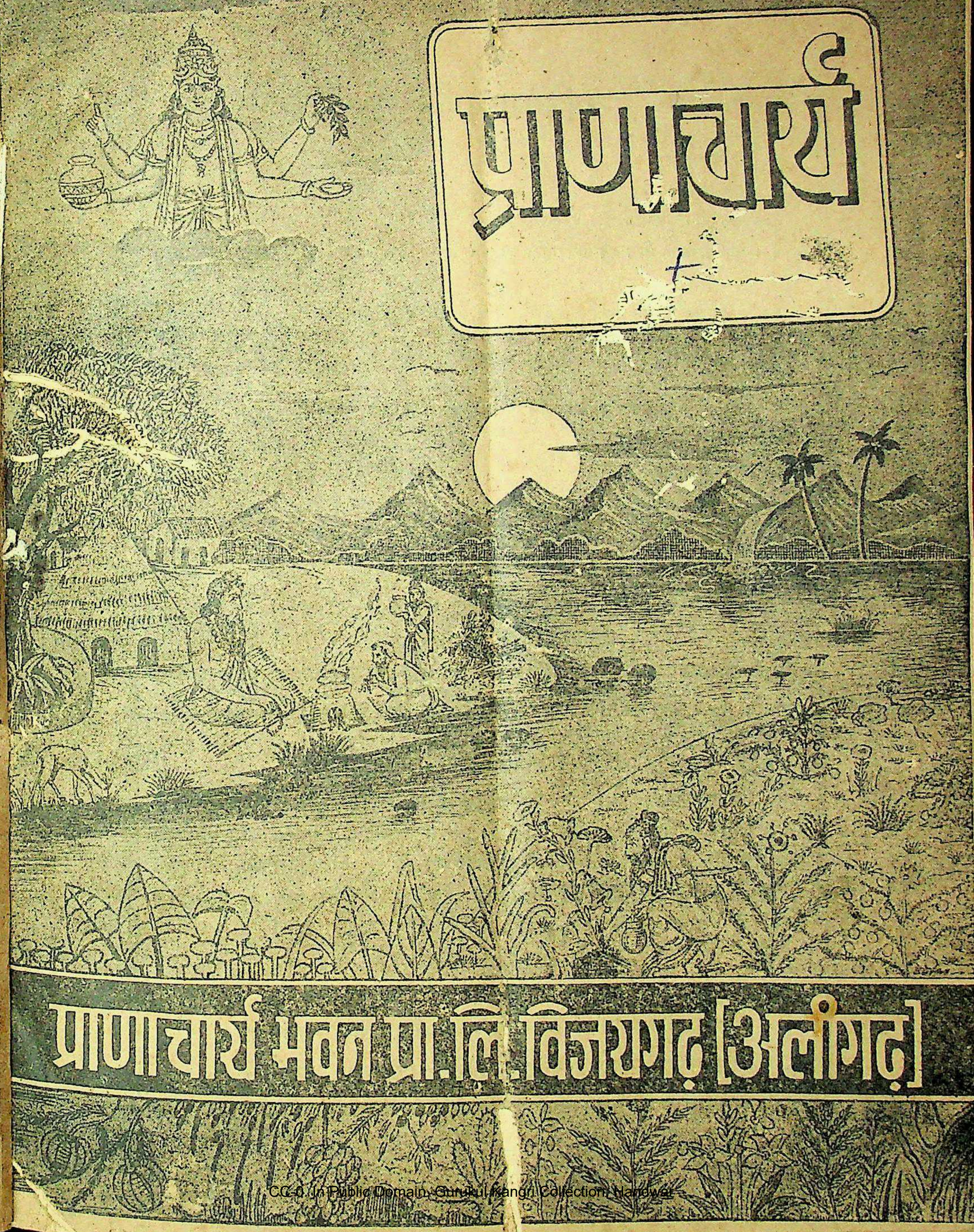

CC-0 In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

प्राणाचार्य अङ्क ८ की

विषय-तालिका

१—ऋषि वाणी	३८२
२—सम्पादकीय	३८३
३—फुफ्फुस की रचना और परीक्षा	३८४
४—एक असाध्य रोग की असाध्यता पर आयुर्वेदीय चिकित्सा विज्ञान की अभूतपूर्व परिसफलता	३८६
५—राजस्थान विधान सभा के सदस्यों के विचारार्थ स्मरण पत्र	३८८
६—भाषादेव निघण्टु	३९२
७—कुष्ठम्	३९४
८—अ॰ भा॰ आयुर्वेद महासम्मेलन की आर्थिक स्थिति का सिंहावलोकन एवं स्पष्टीकरण	३९७
९—वात कफ ज्वर	३९९
१०—एक खुला पत्र	४००
११—साहित्य परिचय	४०१
१२—देश विदेश	४०२

प्राणाचार्य की कामशास्त्र पर एक अपूर्व देन

—कामविज्ञानांक—

कामशास्त्र जैसे दुरूह विषय पर शास्त्रीय विवेचना युक्त यह अङ्क आयुर्वेद शास्त्र के मर्मज्ञ विद्वानों के लेखों से परिपूर्ण है। इन लेखों में कामशास्त्र की उपयोगिता, कामशास्त्र क्या है ? कामशास्त्र का रहस्य, संतति निग्रह आदि विषयों पर प्रकाश डाला गया है। इसके अतिरिक्त सैकड़ों प्रयोग भी दिये हैं जिससे स्त्री पुरुषों के रोगों को नष्ट करने में सहायता मिलती है।

प्रत्येक गृहस्थ के लिये उपयोगी है।

मूल्य— ४) मात्र पोस्ट व्यय पृथक।

प्राणाचार्य के अन्य ४ विशेषांक भी उपलब्ध हैं। सूचीपत्र मंगाकर देखें।

प्राणाचार्य भवन प्रायवेट लिमिटेड, विजयगढ़ [अलीगढ़]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

113882

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
113882

संस्थापक—स्वर्गीय वैद्यभास्कर बांकेलाल गुप्त "प्राणाचार्य"

भाग ७
अङ्क ८

प्राणाचार्य भवन प्रायवेट लिमिटेड, विजयगढ़ का मुखपत्र

वार्षिक मूल्य
४॥=)

❀ ऋषि वाणी ❀

वर्षा ऋतु के आहार विहार

इस काल में शर्बत आदि मंथ, दिन में सोना, ओस, नदी का पानी, व्यायाम, धूप सेवन एवं मैथुन को त्याग देना चाहिए, शहद का प्रयोग हितकर है। वर्षा काल में खट्टे, नमकीन, चिकने पदार्थ का सेवन लाभप्रद है। यव, गेंहूं, पुराने चावल, गर्म कर के शीतल किया पानी अथवा कूए का पानी जठराग्नि की रक्षा हेतु उत्तम है। उबटन लगाना, स्नान करना, गंधलगाना, हलके सूखे वस्त्र पहनना उत्तम है। गीले सील युक्त स्थान को त्याग देना चाहिऐ। उक्त साव-धानी बर्तने से वर्षा में व्याधियों से बचा जा सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ श्री धन्वन्तरयेनमः ॥

प्राणाचार्य

स्वास्थ्योपदेशकुशलः सौख्यायुष्यप्रवर्धक ।
आयुर्वेद प्रबोधार्थ प्राणाचार्य प्रकाशितः ॥

आज की आवश्यकता

भारतवर्ष की जनता एवं सरकार ने दो रोगों के सार्वदेशिक एवं स्थानिक प्रकोप के अवसर पर देखा कि बहुसाधन सम्पन्न एवं आधुनिकता की चकाचौंध करने वाली सज्जायुक्त राजकुमारी जी की पालिता चिकित्सा प्रणाली जहां देहली शहर में फैले पीलिया एवं इन्फ्ल्यूऐंजा रोगों के शमनार्थ जितनी असफल सिद्ध हुई उतनी अन्य कोई भी पद्धति असफल नहीं हुई। स्वयं देहली के पत्रकार, सरकार एवं जनसाधारण इस बात को कई बार स्वीकार कर चुके हैं।

आयुर्वेद ने पीलिया रोग पर जिस गौरव से विजय प्राप्त की थी वह सर्व विदित है। इसी प्रकार आज कल इन्फ्ल्यूऐंजा के शमनार्थ आयुर्वेद की शरण में आगत रोगी में से शायद ही किसी को निराशा हाथ लगी हो। बम्बई आयुर्वेदिक बोर्ड ने तो इसरोग के निवारणार्थ एक पत्रक प्रकाशित किया है और बिमूल्य औषधि भी काफी मात्रा में बितरित कराई है।

इन सब ठोस सत्यों के उपरांत भी यदि वैज्ञानिक तथा अवैज्ञानिक के चक्कर में फंसे रह कर हम अपनी जीवन दायिनी चिकित्सा पद्धति का तिरस्कार करते हैं तो अवश्य ही अपने हाथों अपने पैरों में कुल्हाड़ी मारने बाली बात है! जो विज्ञान बिना किसी बड़ी सहायता के साधारण रूप से उपेक्षित पड़े हुये भी सर्व साधन सम्पन्न सम्पूर्ण सहायता से युक्त विज्ञान से टक्कर ले रहा है, वह विज्ञान वास्तव में किसी ठोस तथ्य पर आधारित है। आवश्यकता आज इस बात की है कि हम अपनी भूल को स्वीकार स्पष्ट रूप से करलें या चोरी छिपे।

सरकार चेते और भारत वासियों के स्वास्थ्य से खिलवाड़ बन्द करदे और तथ्य को स्वीकार कर आयुर्वेद को संरक्षण देकर यथोचित उपायों से इसे सर्वाङ्गीण बनावें।

महासम्मेलन और सम्बन्धित झगड़े

महासम्मेलन के पुराने अधिकारियों के प्रति किन्हीं कारणों से कुछ आपसी विद्वेष आदि के कारण कुछ सज्जनों का मनोमालिन्य चल रहा है और इस समय १-२ केस भी शायद चल रहे हैं। २ केसों का निवटारा भी हो गया है जिनका महासम्मेलन के भूतपूर्व प्रधान श्री शिव शर्मा जी का सम्बन्ध था।

इन तरीकों से सम्मेलन की प्रतिष्ठा को जो हानि पहुंचती है वह बहुत खेद पूर्ण है। हर संस्था में कारण वश कुछ सदस्यों को असन्तोष होजाता है यह ठीक है पर उसका निराकरण उसी संस्था में रहकर और उस व्यक्ति की वास्तविकता सबसे सामने रखकर ही संस्था का हित होना सम्भव है।

आपसी द्वेष के वशी भूत होकर यदि हम कोई कार्य करें तो भी हमें व्यक्ति गत स्वार्थ का त्याग करते हुये संस्था का हित हमारे सामने रखना चाहिये। महासम्मेलन की प्रतिष्ठा के नाते अधिकारी वर्ग का भी कुछ कर्तव्य है। उनको बहुत सचेष्ट रह कर अपने कर्तव्य पर दृढ़ रहते हुये सभी के प्रीति भाजन बनना चाहिये और संस्था के हित में अपने मानापमान का भी ध्यान छोड़ कर आदर्श उपस्थित करना चाहिये।

हमें पूरी आशा है कि महासम्मेलन के वर्तमान अधिकारी गण और विशेषकर श्री अनन्त त्रिपाठी जी शर्मा अपने समस्त प्रभाव से सम्मेलन से विमुख आयुर्वेदज्ञों को पुनः महासम्मेलन के मार्ग पर ला खड़ा करेंगे और इस प्रकार महासम्मेलन को आज के समय में आयुर्वेद की एक मात्र प्रतिनिधि संस्था का स्थायी रूप प्रदान करेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फुफ्फुसों की रचना और परीक्षा

लेखक- वैद्य कृष्णगोपाल गुप्त आयुर्वेदाचार्य B. I. M. S.

फुफ्फुस की बनावट स्पंज के सदृश्य है। मधु-मक्षिका का छत्ता जिस प्रकार अनेक कोठरियों में विभक्त होता है उसी प्रकार फुफ्फुस अनेकों कोष्ठों में विभक्त रहता है। फुफ्फुस के यह कोष्ठ वायु-कोष्ठ कहलाते हैं। इन कोष्ठों में वायु नासिका के द्वारा श्वास प्रणाली तथा वायु नलिका से होती हुई आती रहती है। यह वायु-कोष्ठ एक दूसरे से पतली झिल्ली द्वारा प्रथक् थक् रहते हैं। पतली झिल्ली एक ... की कला से निर्मित होती है जिसकी मोटाई मकड़ी के जाले के धागे के समान होती है इस झिल्ली में रक्त केशिकाओं का जाल बिछा होता है। इसके अतिरिक्त झिल्ली की बनावट कुछ ऐसी होती है कि वायु इन झिल्लियों से छन कर एक कोष्ठ से दूसरे कोष्ठ में जाती रहती है। प्रकृति द्वारा इन झिल्लियों की ऐसी बनावट करने का भी एक मुख्य कारण है। झिल्लियों के अतीव पतली होने से तथा झिल्लियों में रक्त केशिकाओं का जाल होने से वायु का सम्पर्क रक्त से होता रहता है जिससे वायु में मिश्रित प्राणवायु रक्त द्वारा प्रचूषित करली जाती है तथा रक्त की दूषित गैस वायु में मिलकर बाहर करदी जाती है। इस प्रकार फुफ्फुस की बनावट स्पंज से लगभग मिलती है। इसी से इनको स्पंजाकार कह दिया जाता है।

इन फुफ्फुसों की रक्षा का भी प्रकृति ने सुन्दर प्रवन्ध किया है जिससे यह बाह्य आघातादि से भली भांति बचते रहते हैं। फुफ्फुसों के ऊपर एक प्रकार का आवरण चढ़ा होता है जिसे फुफ्फुसावरण कहते हैं। यह सौत्रिक तन्तु से निर्मित तथा दो परतों में विभक्त रहता है एक परत फुफ्फुस के ऊपर चिपटा रहता है तथा दूसरी वक्ष की मांस पेशियों तथा पशुकाओं से लगा रहता है इन दोनों परतों के बीच में एक प्रकार का तरल भरा रहता है इस प्रकार फुफ्फुस वक्ष की पृष्ठ आघातादि से पूर्णतया सुरक्षित रहता है।

फुफ्फुस की बाह्य बनावट—

दोनों ओर के फुफ्फुस साधारणतया एक से हैं। इनमें दरारों के कारण कुछ अन्तर है दाहिने फुफ्फुस में दो दरार हैं जिनसे यह तीन खण्डों में विभक्त प्रतीत होता है इसी प्रकार बांया फुफ्फुस एक दरार होने से दो खण्ड में विभक्त दीखता है। मध्य भाग की दरार दोनों में एक जैसी जिससे दोनों फुफ्फुस ऊर्ध्व और अधः खण्डों में विभक्त हो जाते हैं दाहिने फुफ्फुस में एक लघु दरार और होती है जिससे दाहिने फुफ्फुस का ऊर्ध्व खण्ड फिर दो खण्ड में विभक्त हो जाता है इस प्रकार दाहिना फुफ्फुस तीन खण्डों में और बांया फुफ्फुस दो खण्डों में विभक्त रहता है।

आकार और भाग—

फुफ्फुस का आकार कुछ कुछ स्तूपाकार होता है इनका वर्णन करने के लिये फुफ्फुस के निम्न भाग किये गये हैं।

१-शिखर (Apex) २-ऊर्ध्व खण्ड (Upper lobe) ३-मध्य खण्ड (Middle lobe) ४-अधः खण्ड (lower lobe) ५-वृन्त (Hilum) ६-आधार (Base) ७-तल (Surface) तथा ८-धारा (Borders)

वक्ष में वक्षास्थि के दोनों ओर दो फुफ्फुस रहते हैं। यह ऊपर की ओर अक्षकास्थि से तथा नीचे की ओर महाप्राचीरा पेशी के कुछ ऊपर तक रहते हैं।

शिखर (Apex)—

यह ग्रीवामूल में अक्षकास्थि से ३/४" से १" ऊपर तक रहता है। पीछे की ओर सातवीं ग्रीवा कशेरुका के समानान्तर नीचे को जाता है।

अग्र धारा—

शिखर से प्रारम्भ हो अक्षकास्थि और वक्षास्थि की सन्धि के पीछे होती हुई मध्य रेखा में दूसरी उपपर्शुका सन्धि की सीध में दूसरी ओर की अग्रधारा से मिल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाती है इस स्थान से दोनों ओर की अग्रधारा नीचे की ओर चौथी उपपर्शुका सन्धि की सीध तक साथ जाती है। फिर वहां से दांई ओर की अग्र धारा मध्य रेखा में ही छटी उप पर्शुका के सामने तक जाकर अधो धारा से मिल जाती है। बांई ओर की अग्रधारा चतुर्थ उपपर्शुका सन्धि के सामने से बाहर की ओर वक्षास्थि के वाह्य किनारे तक जाती है फिर नीचे हृदय कोण के पास पहुंच कर छठी उपपर्शुका के पीछे अधो धारा से मिल जाती है।

अधो धारा—

अग्र धारा के नीचे के भाग से प्रारम्भ हो बाहर और पीछे की ओर जाती है और चूचुक रेखा में छठी पर्शुका कक्षा रेखा में अठवीं पर्शुका और स्कन्धास्थि रेखा में दसवीं पर्शुका के सामने होकर पृष्ठ के पास दसवीं पर्शुका (दशम पृष्ठ कशेरुका) तक पहुंचती है।

पाश्चात्य धारा—

ग्रीवा के सातवें कशेरुका से प्रारम्भ होकर नीचे की ओर पृष्ठ वंश के दशम कशेरुका तक जाती है।

दरारों की स्थिति—

मध्य दरार पाश्चात्य धारा से दूसरे द्वितीय पृष्ठ बंश कशेरुका के सामने से प्रारम्भ होकर नीचे आगे की ओर जाकर छठी पर्शुका के पीछे अधो धारा से जाती है दाहिने फुफ्फुस की ऊर्ध्व दरार मध्य दरार के बीच से प्रारम्भ हो आगे की ओर जा चतुर्थ पर्शुका के सामने अग्र धारा से मिल जाती है।

वृत्त—

यह फुफ्फुस का वही भाग है जहां से वायु प्रणालियां, रक्तवाहिनियां और वात नाड़ियां आदि फुफ्फुस जाती आती हैं यह भाग चतुर्थ, पंचम और षष्टम पृष्ठ वन्श कशेरुका के सामने है।

फुफ्फुस के कार्य—

फुफ्फुस शरीर के लिये उतने ही आवश्यक हैं जितना कि प्राणी मात्र के लिये भोजन। फुफ्फुस शरीर को चलाने के लिये अतीव आवश्यक अंग हैं जैसे कि विद्युत यन्त्रों को कार्य कर बनाने के लिये विद्युत तरंगे।

इनका कार्य भी शरीर की रक्षा के लिये अत्यधिक आवश्यक है। जहां यह कार्यहीन हुये बस प्राणी [illegible] जाता है। वायुमण्डल से प्राणवायु लेना इन्हीं का कार्य है। इसके अतिरिक्त शरीर की अहित कारक [illegible] को शरीर से बाहर करने का भी कार्य करते हैं। रक्त में प्राण वायु का संचार भी इन्हीं के द्वारा होता है।

हृदय से फुफ्फुसीय शिराओं द्वारा दूषित रक्त इनमें आता है। यहां आकर रक्त प्रत्येक कोषों की केशिकाओं में फैल जाता है। जब फुफ्फुस वायु मण्डल से वायु को ग्रहण करते हैं तब वायु प्रत्येक फुफ्फुसीय कोषों में पहुंच जाती है जहां वायु और रक्त का सम्पर्क स्थापित हो जाता है। ऐसे सम्पर्क वार वार होते हैं जिनके होने से रक्त के कुछ विशिष्ट द्रव्य वायु से प्राण वायु को ग्रहण कर लेते हैं और रक्त की दूषित गैसों को वायु में भेज देते हैं। यह है फुफ्फुसों का प्रधान कार्य जिसके ऊपर जीवन अवलम्बित है। क्रमशः

स्वर्ण वसंत मालती नं० १

स्वर्ण वर्क के स्थान पर स्वर्ण भस्म एवं हिंगुलके स्थान पर सि० मकरध्वज नं० १ के योग से निर्मित यह महौषधि परम उपयोगी है। इसके सेवन से जीर्ण ज्वर धातुगत ज्वर यक्ष्मा फुफ्फुस के रोग जीर्ण कास आदि सभी नष्ट होते हैं। शरीर की धातुओं का पोषण होकर बल बढ़ता है ज्वर के उपरांत बल बढ़ाने को अद्वितीय औषधि है।

मूल्य—३०) प्रति तोला

प्राणाचार्य भवन प्रायवेट लि०, विजयगढ़ [अलीगढ़]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक असाध्य रोग की असाध्यता पर आयुर्वेदीय चिकित्सा विज्ञान की

अभूतपूर्व परिसफलता

लेखक-- श्री वैद्य वासुदेव जी आयुर्वेदाचार्य रघुनाथपुरा, जम्मू (काश्मीर)।

रोगी नाम —देवदत्त उम्र—२१ वर्ष
निवास स्थान—जम्मू चिकित्सा स्थान–श्री नगर (काश्मीर)
रोग—अखण्ड अपस्मार (Status Epilepticus)
रोग विवरण— रोगी के आत्मीय स्वजन श्रीमान् लाला मूलराज जी सैशन जज के कथनानुसार रोगी को यहां (श्रीनगर) पधारे हुये १५ दिन के करीब हो गये हैं। तीन दिन पूर्व अकस्मात् ही रोगी पर अपस्मार का आक्रमण हुआ। एक एलोपैथिक चिकित्सक के बिचारानुसार समझा यह गया कि रोग के आवेश की कालावधि समाप्त होने पर रोगी स्वतः सचेत हो जायगा, जैसा कि अपस्मार में प्रायः होता है। परन्तु ऐसा हुआ नहीं। कारण कि संचेतना से पूर्व ही अचेतना कारक रोग के आक्षेपों का, रोगी पर पुनः आक्रमण हो गया। तदनन्तर अविच्छिन्न आवेगों और आवेशों का ऐसा अविच्छेदी चक्र चला कि रोग ने अखण्ड अपस्मार (Status Edilepticus) का रूप धारण कर लिया। अतएव रोगी की चिकित्सा के लिये काश्मीर के चाफ मैडीकल आफासर सहित कतिपय अन्य ऐलोपैथिक चिकित्सकों का सहयोग प्राप्त किया गया।

परन्तु उनके चिकित्सा विषयक तमाम, प्रयत्न निरर्थक सिद्ध हुए। इसलिये तीन दिन के अनन्तर उन्होंने अपनी विवशता का प्रदर्शन करते हुए, यह बिचार व्यक्त किया कि रोग असाध्य है और रोगी का रोग बिमुक्त होना असम्भव है। तदनन्दर यहां के सुप्रसिद्ध एवं विशेष विख्याति प्राप्त हकीम जी ......को आवाहन किया गया।

परन्तु हकीम जी ने भी अपनी असमर्थता का ही प्रदर्शन किया। रोगी की परिस्थिति यह है कि विगत तीन दिन से उसे १ क्षण के लिये भी सचेतना का आभास नहीं हुआ।

अस्तु उपर्युक्त विवरण को कर्ण गोचर करने के अनन्तर जब रोगी को रोगाक्रान्त अवस्था में देख लिया गया तो, इन पंक्तियों के लेखक ने भी, मरणासन्न रोगी को चिकित्सार्थ हस्तगत करने में किसी अंश तक सङ्कोच सा ही व्यक्त किया परन्तु उत्तर स्वरूप रोगी के अभिभावकों को विशेषतया माननीय जज साहब ने साद्र नेत्र यह बिचार व्यक्त किया कि यह हम भी भली भांति समझते हैं कि रोगी का अन्तकाल समीप है और ऐसे समय में कोई दैवी चमत्कार ही रोगी को बचा सकता है।

परन्तु इसके बावजूद भी हम, रोगी की चिकित्सा के सम्बन्ध में अब आपके सहयोग के इस बिचार से आकांक्षी हैं कि कदाचित दैवयोग से कोई आयुर्वेदिक सिद्ध औषधि ही मरणासन्न रोगी को प्राणदान देने में सफल हो जाय। अस्तु इस सम्बन्ध में रोगी के अभिभावकों आदि का आग्रह जब बहुत बढ़ गया तो लेखक को भी उस शस्त्रोक्ति का ही अवलम्बन करना पड़ा कि जो ऐसे समय पर चिकित्सक को, कर्तव्य पालनार्थ प्रेरित और प्रोत्साहित करती है। वह शास्त्रोक्ति अधो लिखित है।

> तावत् प्रति क्रियाकायि या वच्छ्वस्ति मानवः।
> कदाचिद्दैव योगेन दृष्टारिषो पि जीवति ॥

परिणाम स्वरुप चिकित्सा सम्बन्धी जिस योजना ने, उपर्युक्त शास्त्रोक्ति को यथार्थ सिद्ध करने का श्रेयप्राप्त किया था उस योजना का विबरण संक्षेपतः अधोलिखित है।

चिकित्सा सम्बन्धी योजना–

(१) प्रति मात्रा—
बात कुलान्तक विशेष १ रत्ती जवाहर मोहरा ½ रत्ती
सिद्ध मकरध्वज ½ रत्ती
प्रयोग—१-१ घन्टे के अन्तर से, अनुपान— मधु।

चूंकि रोगी स्वयं औषधि सेवन करने में असमर्थ था इसलिये रोगी के एक परिचारक एवं सम्बन्धी ने तो रोगी के मुख को खोलने का प्रयत्न किया और दूसरे सम्बन्धी ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मधु मिश्रित औषधि को जल द्वारा तरल करके रोगी के मुख में डालने का प्रयत्न किया। अस्तु इसी प्रकार औषधि की तीन मात्रायें जब रोगी के उदर में पहुंच गई तो रोगी सचेत होकर बैठ गया और शिरो व्यथा एवं अङ्ग दर्द की शिकायत करने लग गया। अतएव औषधि की चौथी मात्रा में २ रत्ती के करीब नारदीय लक्ष्मी विलास रस को भी मिला दिया गया।

दूसरे दिन भी लक्ष्मी विलास युक्त औषधि की ही व्यवस्था की गई। परन्तु औषधि के प्रयोग में ४–४ घन्टे का अन्तर कर दिया गया। चूंकि रोगी को मलावरोध की भी शिकायत थी। इसलिये मल परिष्कार के लिये प्रतिदिन ग्लेसरीन वर्ति को व्यवहार में लाने की व्यवस्था की गई।

उपर्युक्त क्रम १ सप्ताह तक चालू रहा। परन्तु दो दिन के अनन्तर औषधि में लक्ष्मीविलास रस को संयुक्त करना बन्द कर दिया गया।

एक सप्ताह के अनन्तर औषधि की तो प्रतिदिन तीन मात्रा प्रयोग करने की व्यवस्था की गई और ग्लेसरीन वर्ति प्रयोग के विषय में यह व्यवस्था की गई कि जिस दिन स्वतः मल विसर्जन न हो उस दिन ही वर्ति को व्यवहार में लाया जाय।

१० दिन से तो रोगी को आहारार्थ केवल गो दुग्ध और फलों का रस ही दिया जा रहा था। परन्तु ११ वें दिन साबूदाना और गौ दुग्ध के दलिये की व्यवस्था की गई लेकिन रोगी ने उदर समाई से अधिक दलिया भक्षण कर लिया फलस्वरूप अजीर्ण के कारण प्रथम तो रोगी को २-६ बार बमन हुई तदनन्तर रोगी पुनः पूर्ववत ही आवेशाक्रांत होगया अतएव औषधि के प्रयोगादि की व्यवस्था प्रथम दिन वत् कर दी गई परन्तु औषधि की तीन मात्राओं ने अबके कुछ काम न किया इसलिये मात्रा द्विगुण करदी गई और औषधि को ४घन्टे के स्थान में २घन्टे के अन्तर से प्रयोग में लाने की व्यवस्था की गई परिणामस्वरुप रोगी १६ घन्टे के अनन्तर पुनः होश में आगया तदनन्तर १ सप्ताह तक तो औषधि का प्रयोग प्रतिदिन तीन मात्रा के रूप में चालू रहा तदुपरान्त २ मात्रा प्रतिदिन अर्थात १ मात्रा प्रातः और १ सायंकाल को। अस्तु २ मात्रा के प्रयोग का क्रम १५-१६ दिन तक चालू रहा फिर २–२॥ मास तक व्यवस्थानुसार औषधियों का प्रयोग जारी रहा।

व्यवस्था

(१) प्रतिमात्रा—

वातकुलांन्तक विशिष्ट १ रत्ती जवाहर मोहरा ½ रत्ती

सिद्ध मकरध्वज ½ रत्ती

प्रयोग—प्रातः-सांय सहपान—मधु।

(२) प्रतिमात्रा—

स्मृतिसागररस १॥ रत्ती

प्रयोग—दिन के १बजे और रात्रि को शयन से १ घन्टा पूर्व

सहपान—मधु मिश्रित नवनीत

परिणाम—उपर्युक्त घटना को घटित हुए २५ वर्ष के करीब होगये हैं परन्तु वह दिन और आज का दिन भी देवदत्त जी को उक्त रोग का दौरा पुनः नहीं पड़ा यद्यपि श्रीमान मूलराज जी के कथानुसार काश्मीर के तत्कालीन चीफ मेडीकल आफीसर महोदय भ्रान्ति के बशीभूत होकर निरन्तर १ वर्ष तक यह विचार व्यक्त करते रहे कि आयुर्वेदिक चिकित्सा विज्ञान द्वारा स्वास्थ्य लाभान्वित होने वाले महानुभाव पर रोग का पुनः आक्रमण होगा।

वक्तव्य—आयुर्वेद विज्ञान की उपरोक्त परिसफलता की असाधारण महत्ता यह है कि उक्त रोग (अखण्ड अपस्मार) का तो आयुर्वेदिक वाङ्मय में उल्लेख नहीं आया परन्तु आयुर्वेद के अकाट्य एवं अपरिवर्तनीय सिद्धान्तों तथा ध्रुवफलदायक सिद्ध औषधियों का प्रयोग रोग का मूलोच्छेद करने में सफल हो जाता है परन्तु जिस चिकित्सा प्रणाली को भारत सरकार के स्वास्थ्य विभाग के दरबार से बड़ी २ बीमारियों के इलाज का ठेका मिल चुका है उस चिकित्सा प्रणाली के साहित्य में तो स्टेटस एपिलेप्टीकस के नाम से उस रोग का उल्लेख आया है परन्तु उस चिकित्सा प्रणाली के कर्णधार अपनी विवशता का प्रदर्शन करते हुये यह विचार व्यक्त करते हैं कि रोग असाध्य और रोगी का रोग मुक्त होना असम्भव है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजस्थान विधान सभा के सदस्यों के विचारार्थ
राजस्थान आयुर्वेद सम्मेलन द्वारा प्रस्तुत
स्मरण-पत्र

बन्धुवर,

आप राजस्थान विधान सभा के जनप्रतिनिधि के रूप में सदस्य निर्वाचित हुए हैं। कृपया राजस्थान प्रदेश वैद्य सम्मेलन के सदस्यों की ओर से हार्दिक शुभकामना स्वीकार कीजिये।

राजस्थान विधान सभा के बजट अधिवेशन पर आयुर्वेद के विकास की योजना को मूर्तरूप देने हेतु यह प्रतिवेदन आपको प्रस्तुत करते हुए हमें यह विश्वास है कि आयुर्वेद के विकास में राजस्थान को एक आकर्षक अनुकरणीय उदाहरण के रूप में प्रस्तुत करेंगे। यह प्रतिवेदन इसलिये अनिवार्य है कि यदि इन पांच या दस वर्षों में देश के स्वास्थ्य का समुचित विकास न हुआ तो हमारी सारी पंचवर्षीय और विकास योजनायें धूलि-धूसरित हो जांयगी इसलिये देश के स्वास्थ्य की व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने की योजना लेकर आयुर्वेद विज्ञान दूसरे विज्ञानों के समकक्ष आपके सामने प्रस्तुत है। जो अपने अधिकारों को प्राप्त करने की सुदृढ़ मांग के साथ देश के स्वास्थ्य को अधिक उत्तरदायी तरीकों से सुरक्षित रखना चाहता है इस कार्य के लिये आयुर्वेद का विकास आवश्यक है अतएव आयुर्वेद की वास्तविक स्थिति का परिचय देते हुए हम आपको आयुर्वेद जगत की ओर आकर्षित करना चाहते हैं जिनके निम्न दृष्टि-बिन्दु हैं:–

१. भारत में आयुर्वेद
२. राजस्थान में आयुर्वेद
३. शिक्षा का वर्तमान स्वरूप और उसका विकास
४. चिकित्सा और चिकित्सालयों की समस्याएं
५. औषधि निर्माण तथा व्यवस्था
६. अनुसंधान
७. पंचवर्षीय योजना
८. सार्वजनिक स्वास्थ्य
९. राजकीय आयुर्वेदिक प्रशासन

हजारों वर्ष हुए भारत जब विश्व-गुरु के रूप में प्रतिष्ठित था तब भारतीय संस्कृति और उसका आधार जीवन–विज्ञान आयुर्वेद विज्ञान की चरम सीमा पर स्थित रह कर जिस प्रकार विश्व को संदेश देता रहा है उस सत्य का संस्मरण हमारे विकास के स्वाभिमान को पुनः आन्दोलित करता है तथाकथित पराकाष्ठा पर पहुंची आज की वैज्ञानिक सर्जरी और भारत के महाभारत कालीन, वैदिक कालीन समरांगणों में भिन्न–भिन्न आयुधों, तीक्ष्ण तीरों और त्रिशूलों से कटे शिर जंघाओं हाथों को अपनी चिकित्सा द्वारा १०–१५ दिन में ही नहीं तत्काल (२–४ दिन में ही) ठीक करने वाले, यज्ञ में और युद्धों में आंख, नाक, कान और मुंह के नष्ट भ्रष्ट होने पर व्यवस्थित स्वस्थ करने वाले ८० वर्ष के वृद्ध च्यवन को अपनी चिकित्सा द्वारा युवा बना देने वाले भारतीय वैद्य का इतिहास वैदिक काल के साथ प्रारम्भ होता है प्रगतिशील आयुर्वेद के ज्वलन्त उदाहरण नासासन्धान प्लास्टिक सर्जरी टाइफाइड में अन्न का निषेध, शोथ में लवण का निषेध, रक्त चाप (ब्लड प्रेशर) में सर्पगन्धा का प्रयोग आदि सैकड़ों आयुर्वेद के ऐसे सिद्धान्त एलोपैथिक के सिद्धान्त को परिवर्तित कर आज के विकसित विज्ञान को मौन करने में समर्थ रहे हैं। आयुर्वेद अब काय चिकित्सा (मेडिशन), शल्य (सर्जरी), शालाक्य (इयर, नोज, थ्रोट, आई, ब्रेन) सर्जरी, प्रसूति (मिडवाईफरी), विष तन्त्र (टोक्सीकोलोजी), व्यवहार आयुर्वेद (मेडिकल ज्यूरिसप्रूडेन्स) द्रव्य गुण शास्त्र (मेटेरिया मेडिका), रसायन, बाजीकरण, मानस रोग विज्ञान (फिलोसौफी), सार्वजनिक स्वस्थ्यवृत्त, स्वास्थ्य (पब्लिक हेल्थ) सदवृत, पंच कर्म (नेचरोपैथी), अग्नि कर्म इलेक्ट्रिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ट्रीटमेन्ट आदि अनेकों रुपों में देश के स्वास्थ्य का प्रहरी था जिसके ध्वस्त उदाहरण आज भी हमें मिलते हैं जिन्हें आप भली प्रकार से जानते हैं। आज का कहा जाने वाला विकसित विज्ञान इतनी प्रगति करने पर भी आयुर्वेद के विषयों में से कुछ को स्पर्श भी नहीं कर पाया है।

विश्व प्रसिद्ध नालन्दा विश्व विद्यालय तथा नेपाल और काश्मीर के राज वैद्य कुल चिकित्सागारों में वृक्काश्मरी (स्टोन आफ किडनीज) आदि के आज के तथा कथित भयंकरतम आपरेशनों का वर्णन भारत के एतिहासिकों ने ही नहीं चीन और इजिप्ट के प्रख्यात यात्रियों ने अपनी स्मृति के स्वर्णाक्षरों में अंकित किया है बौद्ध काल में मोहनी सुरा द्वारा बेहोश कर रोगी को आपरेशन करते समय वेदना का तनिक भी अनुभव नहीं होता था ऐसा चीन के यात्रियों ने अनेक प्रसंगों पर लिखा है। नालन्दा एवं मोहन जोदडो की खुदाई से प्राप्त आधुनिकतम यन्त्र शस्त्रों को पीछे रखने वाले यन्त्र शस्त्र आज के आयुर्वेद आलोचकों की क्लोरोफार्म और यन्त्र शस्त्रों की आविश गति का श्रेय एलोपैथिक विशेषज्ञों को ही है इस प्रकार की विचार धारा का उक्त उदाहरणों से कितना अस्तित्व है आप स्वयं सोचिये।

बुद्ध काल में अवश्य बौद्धों की अहिंसावादिता का दुरुपयोग कर शल्य कर्म से करोड़ों जीवाणुओं की हिंसा होती है इस बात का प्रचार कर आयुर्वेद के शल्य कर्म को राजकीय पैमाने पर कुंठित किया गया इसका परिणाम स्पष्ट है कि फिर आयुर्वेद शल्य कर्म में पिछड़ता गया।

मुगल काल में हिन्दू संस्कृत को नष्ट करने की जो धारा वह चली उसके अनुसार मुद्रण सामग्री के अभाव में अत्यल्प संख्या में लिखे आयुर्वेद ग्रन्थ और साहित्य को जला कर राख करा दिया गया इस बीच में मुगलों ने एक बुद्धिमानी अवश्य की कि आयुर्वेद के साहित्य को फारसी भाषा में बदल कर अरब और यूनान में भेज दिया अब वह आज भी किसी रूप में प्रस्तुत है यही नहीं उसी विज्ञान के आधार पर इजिप्ट ने आज के विकसित विज्ञान की आधार शिला रखी।

अंग्रेजों के राज्य में आयुर्वेद के साथ जो कूटनीति पूर्ण सौतेला व्यवहार हुआ वह आप से छिपा नहीं है। एक ओर करोड़ों रुपयों की गगन चुम्बी इमारतें बनाकर भारत की भोली जनता को अपने व्यवहार के चक्रव्यूह में डालने की कुत्सित भावना अनेकों मिठाइयां और पैसे बांट बांट कर इतना परतन्त्र कर लिया कि आपका स्वतन्त्र भारत देश के स्वास्थ्य के माने में सदियों तक विदेशियों का गुलाम बना रहेगा यदि आयुर्वेद का विकास नहीं हुआ।

अंग्रेजों के बाद स्वतन्त्र भारत में आयुर्वेद के विकास की बात सोची जाने लगी तो हमारे नेताओं को आयुर्वेद की वैज्ञानिकता पर सन्देह होने लगा है जिसका निराकरण हम निकट भविष्य में आयुर्वेद के अतुरालयों में करने का प्रयत्न करेंगे किन्तु क्या यह प्रमाण पर्याप्त नहीं है कि आयुर्वेद हजारों वर्षों से अविकसित पददलित राज्याश्रय विहीन रहने पर भी ८० % जनता की सेवा कर रहा है।

अब आयुर्वेद ने भी इनक्लाब मचाने का निश्चय किया है जो औषधि कल बाजार में २५) में मिलती थी वह आज १२ आने में प्राप्त है तो दूसरी ओर उसी कार्य की दूसरी औषधि २५) रुपये में तैयार है जो ५ वर्ष बाद बारह आने में मिलने लगेगी एलोपैथिक दवाओं के व्यापार से अरबों रुपया विदेशों में जाने पर भी क्या यह सिद्ध नहीं है कि जिन्हें अच्छी से अच्छी चिकित्सा पद्धति प्राप्त होती है वे क्षय रोगी १० % ही जीवत रहते हैं ? यही नहीं गत वर्ष ही दिल्ली में फैले पीलिया रोग में आधुनिक तथा-कथित विकसित विज्ञान असफल रहा जब कि अविकसित विज्ञान ने उस समय रक्षा की। क्या आप यह चाहते हैं कि एक पीलिया का रोगी आधुनिक चिकित्सा के २००) रुपये से ठीक किया जावे जब कि आयुर्वेद उसे ५) रुपये में ठीक करने को तैयार है।

अतः आयुर्वेद के विकास के लिये केन्द्र की नीति में तत्काल आवश्यक परिवर्तन के साथ अलग आयुर्वेद स्वास्थ्य मन्त्रालय आयुर्वेदिक डायरेक्ट्रेट और केन्द्रीय आयुर्वेद परिषद की मांग को आप बल देंगे।

राजस्थान में आयुर्वेद–

राजस्थान में आयुर्वेद की स्थिति दूसरे प्रान्तों की अपेक्षा जहां कुछ अच्छी है वहां दूसरी ओर अनेकों बातों में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत पिछड़ी हुई है जिसका विकास आवश्यक है और यह उत्तरदायित्व हम आप पर सौंप रहे हैं। जिन विषयों पर जिस प्रकार विकास करना है वह प्रस्तुत है।

(१) राजपूताना विश्वविद्यालय में आयुर्वेदीय फैकल्टी अलग से बनाई जाकर आयुर्वेद-शिक्षा का संचालन विश्व विद्यालयी प्रणाली द्वारा किया जाना चाहिये। आज राजस्थान में आयुर्वेद परीक्षाओं की व्यवस्था माध्यमिक बोर्ड के समान होती है जो उचित नहीं है।

(२) वर्तमान में राजस्थान में दो आयुर्वेद कालेज चलाये जा रहे हैं जिन्हें समान रूप से विकसित करने की व्यवस्था की जानी चाहिये। इस भावना के अनुसार दोनों कालेजों के भवनों में सुधार आवश्यक है इसके लिये कम से कम तीन २ लाख रुपया दोनों कालेजों को इसी वर्ष दिलाये जाने चाहिए।

इन भवनों में शवच्छेदनालय, प्रदर्शनालय, प्रयोगशाला कम से कम ३०० खाट का आतुरालय, शल्य कर्मालय आदि आवश्यक अङ्गों को विशेष महत्व दिया जाय इसके साथ छात्रावास, निर्माणशाला, औषधि उद्यान कालेज साथ ही रहनी चाहिए राजस्थान से अन्य प्रान्तों में जो आयुर्वेदिक कालेज हैं वे उक्त व्यवस्थाओं से सम्पन्न है और हमारे कालेज इन सब स्थितियों से इतने साधन विहीन हैं कि कालेज से निकलने वाला स्नातक साधनों के अभाव से ज्ञान शून्य अपने को पाता है।

(३) कालेजों का बजट बहुत कम है आपको यह जान कर आश्चर्य होगा कि जहां एक मेडीकल कलेज का बजट ३० लाख है वहां एक आयुर्वेद कालेज का ६० हजार है इसलिये यह आवश्यक है कि कालेजों का बजट बढ़ाया जाय उदाहरण के तौर पर वहां एलोपैथी के एक लेक्चरार को एक हजार रूपया मासिक मिलता है वहां आयुर्वेद के एक लेक्चरार को १५०) रू० मासिक वेतन मिलता है। अतः वेतन में समानता के दृष्टिकोण को रख कर अन्य साधन सामिग्रियां बढ़ाई जानी चाहिए। प्रयोगशाला प्रदर्शनी आदि सर्वथा आज साधन विहीन हैं प्रसूति कौमार भृत्य के परीक्षण की राजकीय पैमाने पर कोई व्यवस्था नहीं है। जब शिक्षा ही आप न दें तो स्नातक गांव में जाकर क्या करेंगे! कालेज में अष्टाङ्ग आयुर्वेद की शिक्षण के लिए २४-२४ अध्यापक चाहिए।

(४) स्नातकोत्तर प्रशिक्षण की व्यवस्था के साथ राजकीय सेवा में समलग्न वैद्यों के लिए एक रिफ्रेशर कोर्स का तत्काल प्रारम्भ किया जाना आवश्यक है।

चिकित्सालय और चिकित्सा-

(१) आज का आयुर्वेद औषधालय टूटी फूटी झोंपडी में पड़ा दीन हीन और असहाय साधन विहीन एलोपैथी के गगनचुम्बी और आवश्यकता से अधिक साधन सम्पन्न चिकित्सालयों के मुकाबिले ठीक नहीं पाता है। इस सत्य को स्वीकार करने के साथ चिकित्सालयों का सुधार किया जाना चाहिए। (१) औषधालय के भवन बनाए जाय (२ चिकित्सालय में अनिवार्यत एक वैद्य नर्स, एक कम्पाउडर एक चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी दो हजार की वार्षिक औषधि तथा अन्य आवश्यकताओं के लिए ५००) का बजट रखा जाना चाहिए। एलोपैथिक औषधालयों में एक डाक्टर दो नर्स एक कर्मचारी ५०००) की दवा अन्य उपकरणों के लिए अलग बजट रहता है जब कि आयुर्वेदिक औषधालयों में केवल एक वैद्य और एक कर्मचारी रहता है नर्स के अभाव से वह गांव की माता बहिनों की आन्तरिक रोग व्यवस्था करने में असफल हो जाता है। दो सौ रुपये की औषधि एक औषधालय को दी जाती। जिसका अनुपात ५ पांच आना प्रतिदिन भी नहीं होता है पांच आने में ६० रोगियों की चिकित्सा एक ओर दूसरी ओर ४० रोगियों की चिकित्सा में १००००) हजार की वार्षिक औषधियां मिलती है गांवों के लोग साधन अधिक होने से ही आज एलोपेथिक डिस्पेन्सरियों की मांग बढ़ाते जारहे हैं। यदि इतने ही साधन आयुर्वेदिक औषधालयों को दिए जांय तो आप सच मानिये देश के स्वास्थ्य का नक्शा पांच वर्षों में ही विश्व में सर्वोत्कृष्ट स्थान प्राप्त करले।

(२) वैद्यों का वेतन ६० रु महावार है उसके अनुसार एक वैद्य तीन आना घंटा में जनता की स्वास्थ्य सेवा करता है जब कि एक दूसरे चिकित्सक को २२५) महावार देने बाद भी ३०) रुपये का विलेज अलाउन्स देने में राज्य को कोई संकोच नहीं होता है। एक क्लर्क जो आयुर्वेद में आने वाले छात्र की योग्यता वाला होता है उसे ६०) रूपया माहवार मिलता है। फिर वह छात्र मेट्रिक परीक्षा पास कर क्यों ६ वर्ष का समय व्यतीत करेगा। अतः वैद्य का उच्च

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तम वेतन १५०) रुपया माहवार होना चाहिए और उसे भी ३०) रुपया माहवार विलेज एलाउन्स मिलना चाहिए। यह ध्यान रखने योग्य है कि राजस्थान से भिन्न प्रान्तों में वैद्य का उच्चतम वेतन १००) रुपया है जिसके भी परिवर्धन की सभावना है।

(३) सारे राजस्थान में एलोपैथिक अस्पताल में आठ हजार खाटों का प्रबन्ध है वहां सारे राजस्थान में आयुर्वेदिक अस्पतालों में कुल मिलाकर १०० खाटों का भी इन्तजाम नहीं है और ये १०० खाट भी इतने दयनीय हैं कि वास्तव में इस पर दया आजाती है। अतः प्रत्येक 'अ' श्रेणी के औषधालय में कम से कम ३०० खाट ब श्रेणी के औषधालयों में ५० खाट व कालेजों में ३०० खाटों का इन्तजाम इनके पूरे साधनों के साथ किया जाना चाहिए। अस्पतालों में पट्टियों रुई मरहम सुई डोरा जैसी साधारण वस्तुयें भी समय पर उपलब्ध नहीं रहती अतः खाटों के साथ औषधालय के बजट को त्वरत गति के साथ बढ़ाना होगा।

अनुसंधान—

राजस्थान में अनुसन्धान की योजना शीघ्र लागू की जानी चाहिए राजस्थान में प्राप्त वनस्पतियां यदि खोजी जांय तो राजस्थान की वनस्पतियों से बहुत बड़ा आर्थिक लाभ भी संभव है। विदेशों में एक रोग के लिए करोड़ों रुपया व्यय करने बाद कोई परिणाम सामने आता है और नहीं भी आता है। उसके मुकाबिले हजारों वर्षों से पीड़ित सारे आयुर्वेद के अनुसंधान के लिए ५-६ लाख रुपया देना उल्टा आयुर्वेद के लिए घातक है। अतः अनुसधांन के लिए अधिक राशि दी जानी चाहिए। अनुसधांन की योजना राजस्थान वैद्य सम्मेलन द्वारा स्वीकृत किया जाना उपयुक्त होगा।

रसायनशाला—

(१) औषधि कानून बनाया जाना चाहिए ताकि अच्छी वनस्पतियां उपलब्ध हो सके।

(२) वनस्पतियों के संग्रहालय राज्य के भिन्न २ डिविजनों में बनाए जांय।

(३) राज्य की उपजाऊ भूमि में वनस्पतियों की खेती की जाय।

(४) राज्य की रसायनशालाओं का एकीकरण कर एक निश्चित फार्मोकोपिया तैयार किया जाय।

(५) औषधि नियन्त्रण कानून बनाया जाय ताकि समान मूल्य पर समान रूप से बनी आयुर्वेदिक औषधियां के किसी भी भाग में प्राप्त हो सके।

(६) रसायनशालाओं के डिपो भिन्न २ जिलों में खोले जांय ताकि जनता लाभ उठा सके।

(७) औषध निर्माण के लिये विशेषज्ञों की एक समिति रसायनशालाओं के विकास के लिये स्थापित की जाय।

(९) औषधियां समय पर भेजने के लिये ट्रकों की व्यवस्था की जाय।

(१०) रसायनशालायें आधुनिकतम यन्त्रों से सज्जित हों तथा कर्मचारियों की संख्या पूर्ण हो।

सार्वजनिक स्वास्थ्य—

(१) आयुर्वेद में पब्लिक हेल्थ के सम्बन्ध में जितना साहित्य और विज्ञान मिलता है वह विश्व के किसी विज्ञान में आज भी उपलब्ध नहीं हैं यही नहीं आयुर्वेद का छात्र आधुनिक हेल्थ सम्बन्धी ज्ञान को अपने शिक्षण में प्राप्त करता है अतः पब्लिक हेल्थ डिपार्टमेन्ट म्युनिसिपैल्टियों आदि में वैद्यों को भी कार्य करने का पूरा अवसर मिलना चाहिये।

(२) शिक्षा में ग्यारहवीं कक्षा तक आयुर्वेद का स्वस्थ वृत्त सद्वृत्त आदि सहित एक प्रश्न पत्र अनिवार्यतः रखा जाना चाहिये।

(३) ऋतुचर्या, रात्रिचर्या, स्वस्थ वृत्त, सद्वृत्त, की डाक्यूमेन्टरी फिल्में तैयार की जाकर गांव गांव में प्रचारित की जानी चाहिये।

(४) रेडियो प्रोग्राम में एक घण्टा प्रतिदिन स्वस्थ वृत्त सद् वृत्त के प्रचार प्रसार के लिये मिलना चाहिये।

पंचवर्षीय योजना—

इसमें आयुर्वेद के विकास का समुचित ध्यान नहीं दिया गया है। अतः इस योजना पर पुनः विचार कर आयुर्वेद को अधिकतम धनराशि दिलाई जानी चाहिए। जहां विक-

(शेषांश पृष्ठ ३९९ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाषा देवनिघन्टु

संग्रहकर्ता:- श्री वैद्य नन्दन लाल जी गुप्त कासगंज

पूर्वकाल में प्रायः आयुर्वेदिक संस्कृत ग्रन्थों की भाषा टीका लिखी जाने की परिपाटी न थी। आयुर्वेद का पठन पाठन संस्कृत में ही होता था। संस्कृत भाषा ही आयुर्वेद ज्ञान का भन्डार है। संस्कृतानभिज्ञ हिन्दी-भाषा-भाषी-आयुर्वेद जिज्ञासुजन आयुर्वेद ज्ञान से वंचित रह जाते थे। इसी कारण लोकोपकार की दृष्टि से हिन्दीभाषी आयुर्वेद प्रेमियों की ज्ञान वृद्धि के लिये कुछ उदार विद्वान् वैद्य-कवियों ने अपने-अपने समय में भाषा पद्यों में कतिपय छोटे बड़े चिकित्सा ग्रन्थ लिखे थे क्योंकि गद्य की अपेक्षा पद्य कंठस्थ होकर आशु कार्य साधक होता है।

आज से २०१ वर्ष पूर्व सम्वत् १८०४ विक्रमी में इटावा नगर निवासी चौसरयिा श्री भवदेव नामक वैद्य ने आयुर्वेद के संस्कृत निघन्टु का छोटे-छोटे भाषा छन्द दोहों में "भाषा देव निघन्टु" नाम से अनुवाद किया था। उन्होंने उक्त ग्रन्थ में लिखा है कि-

बिना द्रव्य गुन ग्यान के, भेषज रोग प्रयोग।
बिफल चिकित्सा बिधि करत, देत अजस मन सोग॥
जे न देववानी पढ़े, वैद बटुक तिन हेत।
करि निघन्टु-भाषा लिखों, भेषज ग्यान निकेत॥

उन्होंने न जाने अपने देव निघन्टु को कितने शतकों में पूर्ण किया था। प्रायः उन्होंने एक ही दोहे में एक द्रव्य के पूर्ण गुण भरने का प्रयत्न किया है और वे सफल भी हुए हैं। किसी औषधि के विशेष गुण होने के कारण ही दो या तीन दोहों में वर्णन किया है। दोहा जैसे छोटे छन्द में एक द्रव्य का पूर्ण विवरण कर देना 'गागर में सागर भर देना, जैसा है। यह उनकी असाधारण बिद्वत्ता और काव्य पटुता है। उनके दोहे भी सरल एवं सुबोध हैं। अब तक इस प्रकार का लघु पद्यबद्ध भाषा निघन्टु देखने में नहीं आया। इसके प्रत्येक शतक में १०० द्रव्यों के गुणों का वर्णन है।

खेद है कि मेरे दृष्टि गोचर होने वाली खण्डित प्रति में २९९ दोहे हैं। दो शतक पूर्ण और तृतीय अपूर्ण है शेष पृष्ठ इसके नष्ट होगये हैं। किन्तु इतने भी दोहे हिन्दीपाठी वैद्य एवं गृहस्थ नरनारियों को अत्युपयोगी हैं। यदि किन्हीं महानुभावों के प्राचीन पुस्तक संग्रह में भाषा देव निघन्टु की पूर्ण प्रति विद्यमान हो तो सूचित करने की कृपा करें।

पाठकों के दिग्दर्शनार्थ देव निघन्टु के कुछ पद्य नीचे उद्धृत किये जाते हैं।

श्री गणेशायनमः॥ अथ भाषादेव निघंटु लिख्यते॥
सुमिरि शिवाशिव मातु पितु, गुरुपद सीस नवाइ।
धवन्तरि सुस्रुत चरक, वाग्भट पद मन लाइ॥
चौसरयिा भवदेव द्विज, दोहा छन्द बनाइ।
विरचत देवनिघन्टु अब, बाल वैद सुखदाइ॥
दौसेरस सुभग्राम ब्रज, वसे सनाबढ़ जोइ।
सोइ कहे दौसेरिया, चौसरिया कहं कोइ॥
कछु धौंसरिय दुसेरिया भाषन लिषन विलास।
सो गौतम वंसी विमल, करत इटाये वास॥
यह कुल वैद प्रसिद्ध भे, त्रिभुवन देव महान।
अमृतपानि अगनित जनन, दीनों जीवन दान॥
तिन सुत नृपवंदित चरन, देवदत्त कविदेव।
परी तिनहि लघु वैस ही, कवित करन की टेव॥
सुधी सांतषट करमरत, बुध कवि समिति सिंगार।
नव रस जिनके वसभए, ग्यानागार उदार॥
तिनको सुत भव देव हों, गई वैस उनचास।
अट्ठारह सौ चारि सुभ, संबत् करत प्रकास॥
बिना द्रव्य गुन ग्यान के, भेषज रोग प्रयोग।
बिफल चिकित्सा बिधि करत, देत अजस मन सोग।
जे न देववानी पढ़े, वैद बटुक तिन हेत॥
करि निघन्टु भाषा लिषों, भेषज ग्यान निकेत॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोंठि पाचनी रुचिकरन, आमवात कफ कास ।
सूल सोथ अतिसार रुज, अरस बिनासत स्वास ॥
स्याम मिरच तीच्छन गरम, स्वाससूलकफ वात ।
कृमिहरनी पितकारनी, वरनी दीपन आत ॥
पीपर हरनी बात कफ, उदर कोढ ज्वर स्वास ।
अर्स मेद प्लीहा गुलम, सूल निनासै कास ॥
सोंठि मिरच पीपर मिलत, त्रिकुटा नाम कहाइ ।
अगिनिदीपनी थूलतां, गुलमहि देति नसाइ ॥
एलालाल प्रदीपनी, कफ पित स्वास पिआस ।
वमन मूत्र सिररुधिररुज ,हरति सदा विष कास ॥
लघु इलायची बात कफ, अरस सु मूत्र विबंध ।
स्वास कास हर सीतगुन, रुचिकर करति सुगंध ॥
तेजपात तीच्छन गरम, अरस अरुचि कफ वाइ ।
हृदय रोग दुरगंधता, पीनस बमन नसाइ ॥
दालचीन वरवरन अरु, वीर्जकरी मुख सोप ।
नासति दसननि पीर तिमि, तृषा वात पित रोप ॥
केसरि नाग हरै वसन, कुष्ठ विसर्प पियास ।
रकत अरस ज्वर आमहर, करै पित्त कफ नास ॥
तेजपात एलायची, दालचीनि जे तीन ।
मिलत त्रिजात सुगंधित्रय कहत वैद परवीन ॥
या त्रिजात में देउ तुम, केसरि नाग मिलाय ।
कहत वैद बुध लोग सो, चातुर्जाति कहाय ॥
चातुर्जाति, त्रिजात जे, तीच्छन रेचन कारि ।
गरम बरन उत्तम करन, देत कुगंध निवारि ॥
अगिनि प्रदीपन पितकरन, नासत विष कफवात ।
रुषे बुध वैदन कहे, चातुर्जाति त्रिजात ॥
सोंफ बात ज्वरसूल कफ, हरति आम अतिसार ।
सोया सोंफ समान पै, जीतै जोनि विकार ॥
छय-छय कर तालीसदल, गुल्म आम कफ वाय ।
स्वास कास मंदागिनी, अरुचिहि देत नसाय ॥
वासा सीतल बातकर, कफ पित मेह पिआस ।
नासत छय ज्वर रकतरुज, कुष्ठस्वास अरु कास ॥
दोउ पंचमूलक जुरत, सो दसमूल कहाय ।
हृदय सिरोरुज अरुचि ज्वर,पसुरी पीर नसाय ॥
तंद्रा अफरा दोषत्रय, वात जात सब रोग ।
कास स्वास नासन सुपद, जे दसमूलक जोग ॥
चौसरयिा भवदेव द्विज, वंस सनावढ जात ।
पूरयो देवनिघन्टु को, प्रथम सतक अवदात ॥

इति श्री भाषा देवनिघन्टु प्रथमशतकं समाप्तम् पौष शुक्ला ७ सोमे संवत् १८३४ लिपितं गदाधर तिवारी इटावा नगरे शुभम् ।

क्रमशः

श्री विश्वनाथ जी द्विवेदी कृत अमूल्य साहित्य

[१]-*अभिनव नेत्र चिकित्सा विज्ञान*—नेत्र के रोगों पर अबतक की प्रकाशित हिन्दी भाषा की पुस्तकों में सर्वश्रेष्ठ आयुर्वेद, यूनानी और एलोपैथी के विचार का तुलनात्मक विवरण देने वाली सर्वश्रेष्ठ पुस्तक है। इसमें १०० के करीब रंगीन हाफटोन चित्र हैं। लेखक ने इसमें सब चिकित्साओं तुलना के आयुर्वेद को सर्वोत्तम चिकित्सा होने का प्रमाण दिया है। इस पुस्तक को रखकर आयुर्वेद व आधुनिक चिकित्सा की निधियों का पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर व्यक्ति योग्य नेत्र विशेषज्ञ बन सकता है। मूल्य १०)

[२] *वैद्य सहचर* —आयुर्वेद की औषधियों को प्रयोग कर जादू की तरह शर्तिया रोगों को दूर करने की विधि जानने के लिए इस पुस्तक को अवश्य अपने पास रखिये। मूल्य ३)

[३] *तैल संग्रह*—यदि आप तेलों को रङ्गना , पतला करना सुगंधित करना और गुणकारी बनाने की विधि का अध्ययन करना चाहते हैं तो इस पुस्तक को लेकर धन कमाइऐ। मूल्य २)

[४] *प्रत्यक्ष औषधि निर्माण*—आयुर्वेद चिकित्सा सर्वश्रेष्ठ शुद्ध और उत्तम औषधियों के निर्माण पर निर्भर करती है। इस पुस्तक में इनकी उन गुप्त गुत्थियों को सुलझाया गया है जो कि कोई नहीं बतलाता है। इसमें भस्मों के निर्माण की पूरी विधि है। मूल्य ३)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुष्ठम्

कुष्ठ और पुष्करमूल को लोग परस्पर मिला देते हैं। यह दोनों पृथक वनस्पतियां हैं। कुष्ठ अनिश्चित या संदिग्ध द्रव्य नहीं है यद्यपि कतिपय वैद्य ऐसा समझते हैं। यह सुनिश्चित द्रव्य है जिसकी जड़ में अति सुगंधि होती है और काश्मीर से प्रायः चीन को भेजी जाती है। यह भी काश्मीर में होता है अतः इसे काश्मीरज कहा है। कुष्ठ का एक नाम भावप्रकाश ने उत्पल दिया है। वस्तुतः इसके पत्ते कमल के पत्ते से मिलते जुलते हैं। पुष्करमूल के लिए भी उसने "पद्मपत्र,, पर्याय दिया है वस्तुतः यह पर्याय कुष्ठ का है। भ्रमवश पुष्करमूल के लिए दिया है। कुष्ठ और पुष्कर-मूल दोनों के चित्रों को देखने से यह बात स्पष्ट होजाती है

वनस्पतिक वर्णन

परिचयः-

इस वनस्पति का जातीय नाम सुप्रसिद्ध वनस्पति विशारद 'डी सोसुरे, के नाम पर (Sausurea)सौसुरिया रक्खा गया है। काश्मीर में इसे कुठ कहते हैं। संस्कृत नाम कुष्ठ अथवा कश्मीरज है द्वितीय नाम इसकी उत्पति स्थल का संकेत करता है कलकत्ता में इसी मूल को पाचक कहते हैं। यही प्राचीनों का कुष्ठ है। अंग्रेजी में इसे कास्टस रूट (Costas Root) कहा जाता है। इसका एक वानस्पतिक नाम आकलेन्डिया कास्टस (Auckland-ia Costus) भी है।

यह लध्व दृढ़ बहुवार्षिक क्षुप है जिसके पत्ते बहुत बड़े होते है और पत्ते मूल से ही सीधे निकलते हैं पुष्प धारक काण्ड दृढ़ होता है और जिसके शिखर पर अवृन्त पुष्पों का गुच्छा रहता है पुष्प का रंग बैंगनी और प्रायः श्याम होता है।

(१) मूलः- दृढ़, तीक्ष्ण और मनोहारी गन्ध युक्त।

(२) काण्डः- दृढ़ ४-६ फीट ऊँचा शाखा रहित तथा स्वल्प पत्तों वाला।

(३) पत्रः- बहुत बडे और सीधे मूल से निकलने वाले पत्र लम्बाई में २-४ फीट त्रिकोण अथवा मालाकार पत्रदण्ड छिन्नपक्षयुक्त और लम्बा काण्डोद्भव कलिकाओं के पत्रमूल से उत्पन्न ऊपर के पत्तों के समान आकृति के किन्तु छोटे प्रायः अवृन्त उद्भव स्थान पर कर्णाकृति, उपपत्र जिससे काण्ड आवेष्टित रहता है।

(४) पुष्प-अवृन्त कठोर, १-१½ इञ्च व्यास का गोला-कार सिर। अक्षीय और शिखरस्थ पुष्प मूर्द्धा में २-५ पुष्प गुच्छाकार में पाये जाते हैं। सारे पुष्प समान तथा नलिकाकार रंग में बैंगनी अथवा श्याम, पुष्प के पत्तों से छिपे हुए कंटक यत्र तत्र पुष्प में पाये जाते हैं। ये कंटक पुष्पाधार से उत्पन्न होते हैं।

विशिष्ट लक्षणः—

अपने बड़े पत्तों तथा मूल से निकलने के कारण और लम्बे छिन्नपक्ष पत्र वृन्त के कारण कुष्ठ आसानी से पहचाना जा सकता है। सपक्ष पत्रदण्ड कठोर गोल अवृन्त पुष्प जिनका रंग गहरा बैंगनी होता है इस प्रकार के पुष्प इसकी विशेषता है।

पुष्पकालः—

अगस्त-सितम्बर, सितम्बर से बीज पकते हैं

प्राप्तिस्थलः—

काश्मीर ९-१२ हजार फीट की ऊंचाई पर गुलमर्ग सोनमर्ग आदि काश्मीर के अन्य प्रान्तों काठवार तथा स्वल्पमात्रा में चम्बा कुल्लु आदि स्थानों में भी प्राप्त होता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

है मुख्यतः काश्मीर से ही बाहर जाता है।

व्यवहारः—

व्यवहार्य अंग मूल है और यह अति आर्थिक लाभ लाने वाली वनस्पति है मूल को निकालकर ३-३ इञ्च के टुकड़ों में काटकर सुखा लिया जाता है। और चीन को भेजा जाता है जहां पर यह देवपूजामें तथा औषधि के रूप में व्यवहार होता है चूरे को पीस कर सुगन्धि बत्ती बनाली जाती है और बड़े बड़े खण्डों को दीपों में रखकर जलाते हैं तथा काढ़े बनाने में काम आते हैं। निःशक्तों को बल देने के लिये इसका स्वेद (उष्ण स्नान) कराया जाता है।

प्राचीन समय की संस्कृत पुस्तकों से ज्ञात होता है कि कुष्ठ प्रायः सभी बीमारियों में प्रयोग किया जाता था किन्तु आजकल चीन और जापान के बाहर इसका प्रयोग प्रायः बहुत कम किया जाता है। मूल से एक तैल निकलता है जिसे आम वात में अति लाभदायक बताया जाता है।

कुठ का काश्मीर से बाहर भेजना राज्य के एकाधिकार में है। तथा विशेष नियम द्वारा इसका बाहर लेजाना बिना आज्ञा निषिद्ध है।

वाईल्ड फ्लावर आफ काश्मीर
वैद्यकीय वर्णन

व्यवहार्य अंग – मूल

मात्रा—मूल चूर्ण–४ रत्ती से १ माशा तक

प्रभाव्यअवयव—फुफ्फुस

रस—कटु मधुर तिक्तरस

वीर्य—उष्ण, विपाक –मधुर

गुण—उष्ण अनुलोमक, कफ निष्कास, मूत्रल, वृष्य

रोग—आमवात, श्वासकास, शुक्रविकार, वातव्याधि तथा वातकफ रोगशामक

नामानि

कपालपावकं (पाकल) कुष्ठकं त्वग्दोषो-वाप्युत्पलं।
आमयं रुग्गदो रोगो रामं वाणी रुज रुजा।
परिहार्यं पारिभद्रं कौवेरं हरिभद्रकम्।
मांसं जाप्यं परिभाव्यकामुत्पल कुष्ठकम्॥

उक्त नाम कुष्ठ के स्वरूप उत्पत्ति स्थान गुणादि के बोधक हैं यहां पर इनकी विशेष व्याख्या की आवश्यकता नहीं है तथापि संक्षेप में वर्णन कर दिया जाता है।

कुष्ठ का तात्पर्य है दृष्टि को अच्छा न लगने वाला इसके ऊपर का वर्णन कोई आकर्षक नहीं होता। अतः इसे कुष्ठ, आमय (रोगों का नाम वाला) कहा गया है। आचार्य चक्रपाणिदत्त ने "हरिणश्चंगोपमम्" कह कर इस के वाह्य स्वरूप वर्ण आदि का परिचय दिया है तात्पर्य उत्पल परिभाव्यं इत्यादि उत्पत्ति बोधक नाम है। यह सजल स्थानों पर अधिक होता है। पत्र का आकार कमल पत्र के समान होता है। यह तो वानस्पतिक वर्णन से ही स्पष्ट है। कुष्ठ का प्रयोग अत्यन्त प्राचीन काल से होता रहा है। चरक में लेखनीय शुक्रशोधक, आस्थानोपग आदि महाकषायों में तथा सुश्रुत एलादि गण में कुष्ठ का उल्लेख मिलता है।

गुणः

कुष्ठ वातहरा भ्यंगोपनाह योगिनाम्। (च-सू-अ-२५)
कुष्ठ मुष्णं कटु स्वादु शुक्लं तिक्तकं लघु।
हन्ति वाताम्र वीसर्प कासकुष्ठमरुत्कफान्। भाव
कुष्ठ कटूष्णं तिक्त स्यात्कफ माहतकुष्ठ जित।
वीसर्प विष कण्डूति खर्जू दद्रुघ्न कान्तिकृत्। रा-नि-॥
कुष्ठ वातकफश्वासकासहिक्का ज्वरायहम्। राजबल्लभ॥

गुण—

वातहर द्रव्यों में तथा अभ्यंग, उपनाह हरों में सर्वश्रेष्ठ है। यह गरम, कड़वा, चरपरा, मीठा, लघु, वीर्य वर्धक, उत्तेजक, वातरक्त, वीसर्प कास, कुष्ठ, वायु और कफ का शामक है। त्वचा रोगों में दाद, खाज, आदि का नाशक है। वातकफ श्वासकास ज्वर आदि का शामक है।

भेद—

मधुर और तिक्त भेद से इसके दो भेद हैं। मधुर का उपयोग यूनानी चिकित्सा में किया जाता है यह शायद अरब से आता है इसका वर्णन हमारे ग्रन्थों मे नहीं मिलता कटु का ही उपयोग हमें करना चाहिये।

प्रभाव—

कुष्ठ में एक विशिष्ठ तैल पाया जाता है जो आमाशय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और आंतों को उत्तेजित करना है जिससे पाचक रस अच्छी तरह निकलते हैं तथा वायु का भी अनुलोमन होता है। आपभाव उदर शूल आदि शान्त होते हैं। इसमें उपस्थित सोसेरिन नामक तत्व फुक्फुस की मांस-पेशियों पर सीधा प्रभाव करता है और उनके आक्षेप को शिथिल करता है जिससे तनाव कम होजाता है और श्वास सरलता से लिया जाता है प्राणदा नाड़ी (Vagus Nerue) पर भी इसका प्रभाव होता है। कुष्ठ में उपस्थित तैल के प्रभाव से कफ भी पतला होकर बाहर निकलता हैं अतः श्वास कास में अति उपयोगी हैं। वात कफ और न्यूमोनियां आदि में इसका प्रयोग लाभ दायक रहता है। शरीर में से बाहर यह अधिकांशतः मूत्र द्वारा निकलता है। मूल मार्ग से बाहर निकलते हुये यन प्रजननांगों को भी उत्तेजित कर देना है फलतः इसे कामोत्तेजक भी समझा जाता है हिक्का ज्वर श्वास कास में इसका विशेष उपयोग किया जाता है। मुख में रखकर चबाने से कटुरस के कारण चिमचिमायन होती है। आम वात में कुष्ठ का तैल अथवा इसका चूर्ण एरण्ड के तैल में मिला कर खाने के लिये दिया जाता है। अनार्त्तव कष्टार्तव में भी कुष्ठ को अन्य रजः स्रावकों के साथ मिला कर देते हैं। शिर शूल, आमवात, पार्श्वशूल में इसका लेप भी किया जाता है। यह क्षोभक होने से शोथ शामक और अन्तिम अवस्था में व्रणशोथ पाचक भी है अतएव इसका पाकल पाचक यह नाम भी है। चूर्ण को कपड़ों में रखने से कीड़े नहीं काटते।

अपस्मार में कुष्ठ और वचा (च-चि-अ-१५) कुष्ठ चूर्ण को मधु और घी के साथ मिलाकर खानाचाहिये (राजमार्त्तण्ड) त्वच्य रोग में उद्वर्त्तनार्थ इसकाउपयोग किया जाता है।

फुफ्फुस के रोगों न्यूमोनियां आदि में इसे अन्तः और वाह्य (लेप) दोनों ही प्रकारों से प्रयोग में लाना चाहिए। इनमें विशेष लाभ प्रद है, यह हमारा अपना अनुभव है। यह अनेक क्वाथों में डाला जाता है।

योग—

सट्यादि क्वाथ (चरक चि०) श्वास, कास, ज्वर वातकफ ज्वर, न्यूमोनियां, पार्श्वशूलादि, में अति उत्तम है।

असली दशमूल

दशमूल के दसों द्रव्य अलग-अलग कूट कर बनाया गया है। इसके सेवन से प्रसूति के उपरान्त ज्वर, दर्द, वायुशूल, कमर का दर्द सभी में आराम होता है।

सेवन विधि–१ माशा औषधि को पावभर पानी में डालकर औटावें १ छटांक पानी बचने पर छान कर शहद डाल कर सेवन करें।

प्राणाचार्य भवन प्रायवेट लि०, विजयगढ़ (अलीगढ़)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अ० भा० आयुर्वेद महासम्मेलन की आर्थिक स्थिति का
सिंहावलोकन एवं स्पष्टीकरण

महासम्मेलन का आजीवन सदस्य होने के नाते जब मुझे यह ज्ञात हुआ कि महासम्मेलन की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं तभी इसके कारणों के जांच करने की इच्छा हुई। १९५६ के अप्रैल मास में मैंने महा सम्मेलन के कार्यालय महालक्ष्मी मार्किट चांदनी चौक, देहली में जाकर १९५४-५५ वर्ष का हिसाब सरसरी तौर पर चैक किया था उसकी कई मदों में अनियमित रूप से रुपया निकाला और खर्च किया गया दिखाई दिया। वह सारे नोट मेरे पास हैं। इस साल १९ और २० अप्रैल १९५७ के दिन दुबारा अ० भा० आयुर्वेद महासम्मेलन का १९५५-५६ वर्ष का हिसाब चैक किया। इससे मुझे स्पस्ट दिखाई दिया कि महामण्डल की आर्थिक स्थिति भयंकर रूप से चिन्ताजनक होगई है। उसके खर्च बहुत अधिक हैं। पदाधिकारी उसकी आय बढ़ाने की और कोई ध्यान नहीं देते। उसका स्थिर कोष प्रायः समाप्त हो गया है और विद्यापीठ के कोष से प्रति वर्ष रुपया कर्ज (ऋण) के नाम पर निकाल कर खर्च किया जा रहा है! इसका विवरण महा मण्डल सदस्यों की जानकारी के लिये संक्षेप से दे रहा हूं ताकि महामण्डल के हितैषी इसपर विचार कर सकें।

-गौरीलाल चालना बी० ए० वैद्य वाचस्पति
आजीवन सदस्य अ० भा० आ० महासम्मेलन, देहली

मार्च १९५७ की सम्मेलन पत्रिका में ३१ अक्टूबर ५६ को समात होने वर्ष के आयुर्वेद महासम्मेलन तथा विद्यापीठ के आय व्यय पत्र और संतुलन पत्र प्रकाशित हुये हैं। इसके हिसाब को आडिट करने वाले आडीटर ने अपनी रिपोर्ट भी इसके साथ दी है, वह निम्न है:-

"महासम्मेलन का स्थिर कोष लगातार घटता जा रहा है अतः संस्था को स्वावलम्बी बनाने व उसकी आर्थिक स्थित सुधारने की आवश्यकता है।"

इस आडीटर की रिपोर्ट को पढ़कर मुझे महासम्मेलन के हिसाब को पुनः देखने और समझने की इच्छा हुई। जो कुछ हिसाब मुझे दिखाया गया उसे देखकर यह दिखाई दिया कि महासम्मेलन का स्थाई कोष घटता ही नहीं जा रहा प्रत्युत वह समाप्ति के बिल्कुल समीप है।

१९५०-५१ के सन्तुलन पत्र में २४३५८-१४-४ स्थिर कोष में था (देखो सम्मेलन पत्रिका दिसम्बर १९५१)। इस पांच वर्ष में ३१ अक्टूबर ५६ को वह घटकर २२७६-०-४ रह गया है। अर्थात् इस पांच वर्ष में ही महासम्मेलन के पदाधिकारियों ने अपनी सारी पूंजी समाप्त करदी है।

साथ में विद्यापीठ का धन भी समाप्त हो रहा है

विद्यापीठ और महासम्मेलन का हिसाब देखने से यह भी स्पष्ट है कि महासम्मेलन अपने स्थिर कोष को खर्च करने के साथ प्रति वर्ष विद्यापीठ से भी ७०००-८००० रुपया कर्ज (ऋण) लेता जा रहा है। ३१ अक्टूबर १९५५ को महासम्मेलन पर विद्यापीठ का ९३३३६-१०-२ का ऋण था। वह ३१ अक्टूबर १९५६ को समाप्त होने वाले वर्ष के अन्त में बढ़कर १०३६४७-१०-२ हो गया है। अर्थात् इस गत् वर्ष में महासम्मेलन ने अपनी आमदनी का तथा अपने स्थिर कोष का ६२५५-१२-३ खर्च तो किया ही, इससे भिन्न १०३००) रु० विद्यापीठ का ऋण और बढ़ा लिया है।

गत वर्ष का अनुमानक बजट क्या कहता है?

जनवरी १९५६ की सम्मेलन पत्रिका में १९५५-५६ वर्ष का आनुमानिक आय व्यय पत्र छपा है। उसमें १८४००) रु०की आय और इतना ही खर्च सन्तुलन में दिखाया गया है। परन्तु वास्तव में इस वर्ष में इतनी आय नहीं हुई और वर्षान्त में ६२५५) रु० का घाटा रहा है। यद्यपि बजट घाटे में जा रहा था तथापि वर्ष के बीच में कभी किसी मीटिंग में सदस्यों को यह बात नहीं बताई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गई और न उनसे यह स्वीकृति ली गई कि यह घाटा कैसे पूरा किया जाय। प्रत्युत चुपचाप यह घाटा महासम्मेलन के स्थिर कोष में से ६२५५) रु० खर्च करके पूरा कर लिया गया। और बिना किसी की स्वीकृति के विद्यापीठ से १०३११) रु० की भारी रकम ऋण के रूप में ले ली गई। विद्यापीठ से जो ऋण इस तरह लिया जा रहा है उसको पुस्तक ऋण का नाम दिया गया है जिसका अर्थ यह है कि यह ऋण कभी वसूल नहीं किया जा सकता।

जो संस्था अपना स्थिर कोष भी खो चुकी है और प्रति वर्ष ऋण भी लेती जा रही हो, उसकी आर्थिक स्थिति कितनी गम्भीर है, सदस्य अनुमान करें विशेष कर उस अवस्था में जबकि महासम्मेलन के पास न कोई चल सम्पत्ति है न अचल सम्पत्ति।

विद्यापीठ की बचत निधि समिति कोष में क्यों नहीं दी जाती

महामण्डल के किसी सदस्य से यह बात छिपी हुई नहीं है कि महामण्डल और विद्यापीठ की बची हुई धन राशि निधि समिति को देदी जाती है और इसे हम निधि समिति कोष कहते हैं। निधि समिति ने इस कोष को नेशनल सेविंग सर्टीफिकेट और ट्रेजरी सेविंग सर्टीफिकेट खरीद कर सुरक्षित रखा हुआ है। १९५१ में यह कोष ८१३६०-१३-६ था। १९५६ के अन्त में यह कोष ८५११२-०-० है। अर्थात् इन ५ वर्षों में केवल ४०००) रु० की रकम निधि समिति कोष में दी गई, जबकि गत ४ वर्षों का विद्यापीठ का हिसाब देखने से ज्ञात होता है कि उसे इस काल में खर्च निकालकर ४० हजार रु० के लगभग बचत हुई है। इसमें से केवल ४०००) रु० के लगभग निधि समिति को दिया गया है जबकि महासम्मेलन को गत ४ वर्षों में ३०७२९-१-६ विद्यापीठ कोष से ऋण के रूप में दिया गया है। अर्थात् १९५२ के अन्त में महासम्मेलन पर विद्यापीठ का ७२९१८-८-८ ऋण था जो १९५६ के अन्त में बढ़कर १०३६४७-१०-२ हो गया है। इस ३०७२९-१-६ ऋण में से १० हजार रुपया तो इसी अन्तिम १९५५-५६ वर्ष में ही दिया गया है।

१९५५—५६ के अन्त में २००००) रु० के लगभग विद्यापीठ के चालू हिसाब में बैंक में जमा है।

विद्यापीठ के चालू हिसाब में इतनी भारी धनिराशियाँ रक्खी जाती हैं

सदस्यों को ज्ञात है कि विद्यापीठ की आय प्रति वर्ष इसके व्यय से कई हजार रुपये अधिक होती है! और इस आय का अधिकांश भाग परीक्षा शुल्कों के रूप में वर्ष के आरम्भिक दो तीन मास में विद्यापीठ कार्यालय में एकत्रित हो जाता है। फिर वर्षारम्भ में विद्यापीठ के चालू हिसाब में २००००) रु० की बड़ी धनराशि रोकने की क्या आवश्यकता है?

यदि विद्यापीठ की बचत का यह रुपया निधि समिति कोष में जमा हो जाया करे तो फिर इसे निकालना कठिन होता है! इसीलिए पदाधिकारी यह बचत का रुपया निधि समिति कोष में जमा नहीं कराते। २०—२० हजार रुपया विद्यापीठ के चालू हिसाब में जमा रखने का उद्देश्य यही होता है कि इच्छानुसार जब चाहे बिना सदस्यों से स्वीकृति लिये रुपया निकाला जा सके।

महासम्मेलन नियमावलि की धारा २२ के विशेष नोट संख्या २ में स्पष्ट कहा है कि "महामण्डल और विद्यापीठ का हिसाब पृथक् २ रहेगा"।

और महासम्मेलन की नियमावली की धारा २९ में स्पष्ट निर्देश है कि "विद्यापीठ द्वारा जिन २ उद्देश्य से धनिराशि और सम्पत्ति संग्रह की गई हो उन्हीं २ उद्देश्यों की पूर्ति के लिए उनका उपयोग होगा"।

अब सदस्य स्वयं ही फैसला करें कि क्या कभी विद्यापीठ ने कोई रुपया महासम्मेलन को ऋण के रूप देने के उद्देश्य से भी एकत्रित किया था यदि नहीं तो महासम्मेलन को दिया गया यह एक लाख का ऋण नियम विरुद्ध नहीं तो क्या है?

महासम्मेलन के व्यय के सम्बन्ध में भी नियमावली की धारा ३१ (ख) में स्पष्ट है समिति (अर्थात् निधि समिति) महासम्मेलन के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए केवल सम्पत्ति या मूलधन की आय या ब्याज को ही स्थायी समिति को देगी। मूलधन एवं सम्पत्ति का उपयोग भी हो सकता किन्तु इसके लिए महासम्मेलन के खुले अधिवेशन में उपस्थित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

सदस्यों के ७५ प्रतिशत के मत से स्वीकृत प्रस्ताव अनिवार्य होगा।

महासम्मेलन नियमावली के उक्त नियमों की उपस्थिति में जो रुपया महामण्डल ने अपने स्थिर कोष का तथा विद्यापीठ के स्थिर कोष का खर्च किया है क्या यह खर्च विधान के नियमानुसार किया गया है ?

नियमावलि के आधार पर मेरा तो मत है कि महा-सम्मेलन सञ्चित कोष का केवल ब्याज मात्र अपने खर्च में बिना स्थाई समिति की स्वीकृति के आयोजित कर सकता है। बचा हुआ धन स्थिर कोष है वह मूलधन में जमा होना चाहिए। उसे खर्च करने का अधिकार महासम्मेलन नियमावली की उक्त धारा ३१ (ख) में खर्च की मर्यादा बांधने का उद्देश्य यही था कि महा-सम्मेलन पदाधिकारी सावधान रहें और अधिक व्यय की आवश्कता होने पर या तो उसकी पूर्ति का ऊपर से प्रवन्ध करें अथवा महासम्मेलन से स्वीकृति लें, किन्तु ऐसा नहीं किया गया।

मैंने कई वर्षों के अनुमानिक बजटों पर दृष्टिपात किया है। यह बात बड़े दुःख से कहनी पड़ती है कि प्रत्येक बजट प्रायः आय व्यय में सन्तुलित दिखाये गये हैं, जबकि हर एक बजट व्यवहारिक रूप में घाटे के सिद्ध हुए हैं। गलत अनुमानिक बजट बनाने का मुख्य उद्देश्य महासम्मेलन सदस्यों को अंधेरे में रखना नहीं तो और क्या है ? अनुमानिक बजट में आय और व्यय की सन्तुलित मद को सदस्यगण देखकर सन्तोस कर लेते हैं कि महासम्मेलन की आर्थिक स्थिति ठीक है। किंतु बजट बनाने वाले अधिकारी महामण्डल की हित कामना ले न तो सदस्य बनाते है, न महामण्डल की आय बढ़ाने का कोई आयोजन ही कराते हैं। तब रुपया आवे कहां से ? जोड़ तोड़ की उधेड़ बुन में ही उनका सारा वर्ष समाप्त हो जाता है और आर्थिक संकट से निवृत्ति पाने के लिए स्थिर कोष जब था तब था अब तो एक मात्र कामधेनु विद्यापीठ रह गई है। अगले वर्ष से यही विचारी इस के लिए दुही जाया करेगी।

१९५६-५७ का अनुमानिक बजट तो पिछले सभी अनुमानिक बजटों से बाजी लेगया है। इसमें ३०००) रु० के लगभग बचत दिखाई गई है जबकि पिछले कुछ वर्षों से प्रति वर्ष ६-७ हजार का उसे घाटा होरहा है। क्या महासम्मेलन पदाधिकारियों ने इसकी आय के लिए इस वर्ष कोई नया कल्पवृक्ष रोपण किया है ? दुःख से कहना पड़ता है कि पिछले कुछ वर्षों के पदाधिकारियों ने तो महासम्मेलन की आर्थिक स्थिति को रसातल तक पहुंचा दिया है। नये प्रधान यदि इस सिंहासन पर विराजमान होकर अनुमानिक बजट को सन्तुलित बनाये रखने में समर्थ हों तो महासम्मेलन का भाग्य जागा समझना चाहिए। तब तो हमें हर्ष होगा कि हमारे नये प्रधान महासम्मेलन को जीवन दान देने आये। परन्तु महासम्मेलन के साथ तो उनका सम्पर्क इसी अधिवेशन से आरम्भ हो रहा है वह अभी २ सदस्य बने हैं अधिकांश सदस्यों ने भी उनका नाम अभी ही सुना है, इस लिए वह महासम्मेलन की वास्तविक आंतरिक स्थिति से परिचित नहीं। राजनीतिक संस्थाओं में प्रभावशाली कुछ व्यक्तियों द्वारा अज्ञात व्यक्ति को आगे करके उनकी आड़ में अपनी नीति चलाते रहने एवं अपने अधिकारों को अक्षुण्ण बनाए रखने की प्रवृत्ति प्रायः देखी जाती है। क्योंकि अपरिचित अधिपतियों की प्रायः पुराने अधिकारियों से पथ प्रदर्शन प्राप्त करने की प्रवृत्ति स्वभावतः होती है। महासम्मेलन के पुराने अधिकारियों की नीति इसकी आर्थिक स्थिति को कहांतक ले जाने वाली है सदस्य विचार करें।

इस सम्बन्ध में मेरे सुझाव

१—महासम्मेलन को आर्थिक दृष्टि से स्वावलम्बी ब[...] जावे। प्रति वर्ष के पदाधिकारी इसका उत्तरद[...] अपने ऊपर लें। विद्यापीठ से ऋण लेना [...] विरुद्ध है अतः इसे बन्द किया जाये।

२—विद्यापीठ की प्रति वर्ष की बचत वर्षान्त में अ[...] रूप से निधि समिति को देदी जाया करे। १९५[...] के अन्त में जो २० हजार के लगभग रुपया वि[...] के चालू हिसाब में जमा है वह तुरन्त निधि [...] को दे दिया जावे।

(स्पष्टीकरण आगे पृष्ठ ३१७ पर प्रारम्भ)

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्पष्टीकरण

हमारे एक सदस्य वैद्य श्री गौरीलाल चानना द्वारा अ० भा० आयुर्वेद महासम्मेलन" की आर्थिक स्थिति का सिंहावलोकन शीर्षक वाला एक पत्रक प्रकाशित किया गया है। साधारणतया मैं इस पत्रक का स्वागत करता हूं क्योंकि इसके कारण इस संस्था की सम्पूर्ण आर्थिक स्थिति का अपने सम्मानित सदस्यों के सम्मुख विषद विवेचन करने का मुझे एक अवसर मिला है। परन्तु इस पत्रक पर मुझे कुछ खेद भी है और वह है इसके कुछ अर्धसत्यों अधूरे आंकड़ों, मिथ्यारोपों कल्पित धारणाओं भ्रमोत्पादक विश्लेषणों मनवांछित निर्णयों एवं व्यंगपूर्ण वाक्यों के प्रति। विशेष खेद मुझे इस पत्रक के उन वाक्यों पर हुआ है जो हमारे मनोनीत अध्यक्ष को संकेत करके कहे गये हैं क्योंकि वे अच्छे स्वाद के सूचक नहीं है। पत्रक के लेखक ने एक मात्र संस्था की हित कामना से प्रेरित होकर और शुद्ध सात्विक भावना से यह लेख लिखा है यह भी मानना मेरे लिये कठिन है, क्योंकि संस्था के लिए उनका व्यवहार कुछ भिन्न है जिसके विषय में यहां इसलिये नहीं लिख रहा हूं क्योंकि उनका सम्बन्ध दो न्यायालयों में चल रहे अभियोगों से है। अस्तु अब इस पत्रक पर अपना स्पष्टीकरण विज्ञ एवं विद्वत् समाज के निर्णयों के लिये प्रस्तुत करता हूं।

लेखक ने अपने विस्तृत वक्तव्य द्वारा निम्नलिखित ६ "निष्कर्षों" को प्रदर्शित करने का प्रयत्न किया है।

१—अ० भा० आयुर्वेद महासम्मेलन घाटे में चल रहा है।

२—महामण्डल की आर्थिक स्थिति भयंकर रूप में चिन्ताजनक होगई है।

३—महासम्मेलन "के खर्च बहुत अधिक है।"

४—महासम्मेलन "साथ में विद्यापीठ का धन भी समाप्त" कर रहा है।

५—विद्यापीठ का धन महासम्मेलन को देना अनियमित है।

६—विद्यापीठ की बचत निधि-समिति को नहीं दी गई।

७—विद्यापीठ के चालू कोष में गत वर्ष भारी धनराशि रक्खी गई।

८—अनुमानिक बजट गलत बनाया जाता है।

९—पदाधिकारी वास्तविक स्थिति से सदस्यों को अंधेरे में रखते हैं।

उपर्युक्त विषयों को ठीक से समझने के लिये यह परमावश्यक है कि महासम्मेलन का आर्थिक इतिहास संक्षेप में सदस्य महानुभावों के समक्ष प्रस्तुत किया जाय। अ० भा० आयुर्वेद महासम्मेलन की सन् १९०७ में स्थापना हुई। सन् १९०७ से २३ मार्च १९२० तक की महासम्मेलन के आय-व्यय की कोई किताबें रिकार्ड में उपलब्ध नहीं है। २४ मार्च १९२० को आरम्भ होने वाली रोकड़ शून्य से प्रारम्भ की गई है। इस स्थिति में तब तक महा सम्मेलन विद्यपीठ का कार्य कैसे चलता था और इनकी आर्थिक स्थिति क्या थी इनके विषय में कुछ भी लिखने में असमर्थ हूं परन्तु इससे एक बात सुस्पष्ट है कि २४ मार्च १९२० को अर्थात् वैक्रमाब्द १९७७ के प्रारम्भ में महासम्मेलन-विद्यापीठ के कोष में कोई धन नहीं था।

२४ मार्च १९२० से प्रारम्भ होने वाली हिसाब की पुस्तकें महासम्मेलन-विद्यापीठ की सांझी हैं अर्थात् सब लेन-देन उस समय इकट्ठा हो रखा जाता थ।

१९२० से लेकर ३१ अक्टूबर सन् १९३८ तक महासम्मेलन विद्यापीठ के हिसाब के वर्षान्त चिट्ठे एक ही रहते थे। उस काल में वर्षान्त में हानि लाभ कभी नहीं निकाला गया और वर्षान्त की हाथ और बैंक रोकडों को लेकर अगले वर्ष का लेन देन प्रारम्भ कर दिया जाता था। परन्तु आय-व्यय की मदोंको देखने से स्पष्ट हो जाता है कि विद्यापीठ के कार्य मेंलाभ होता था जो कि महासम्मेलन और आयुर्वेद महासम्मेलन पत्रिका के कार्यसंचालन में उपयोग में लाया जाता था। तब तक महासम्मेलन तथा विद्यापीठ का सांझा अथवा प्रथक् प्रथक् कोई स्थिर कोष भी नहीं था यह भी हिसाब से स्पष्ट है पत्रिका प्रति वर्ष विद्यापीठ की आर्थिक सहायता से चलती थी यह भी स्पष्ट है परन्तु क्योंकि महासम्मेलन तथा विद्यापीठ के वार्षिक आय-व्यय के हिसाब इकट्ठे थे। तथा क्योंकि वार्षिक आय-व्यय एवं वर्षान्त स्थिति के चिट्ठे सांझे ही बनते थे अतएव पृथक-पृथक विभागों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में हानि अथवा लाभ का न हिसाब दिखाया जाता था और न ही हानि लाभ की स्पष्टतया प्रतीति होती थी। इस प्रकार अग्रसर होते हुए ३१ अक्टूबर सन् १९३८ को जब कि कार्यालय बनारस में था महासम्मेलन विद्यापीठ की संयुक्त सम्पत्ति १५४२० रु० १ आना ८ पाई की थी।

तत्पश्चात् सम्भवतः महासम्मेलन के विभिन्न विभागों की हानि-लाभ का सुस्पष्ट ब्यौरा जानने की इच्छा से ही यह निश्चय किया गया होगा कि महासम्मेलन और विद्यापीठ का हिसाब सर्वथा पृथक् पृथक् रक्खाजायऔर १ नवम्बर सन् १९३९ से ऐसा ही किया गया। हिसाब के पृथक्करण के समय जो धन संस्था के पास तब तक की सम्पूर्ण बचत के रूप में बचा हुआ था उससे महासम्मेलन का स्थिर कोष प्रारम्भ किया गया और हिसाब के पृथक्करण के पश्चात् पहिले वर्ष में विद्यापीठ को जो बचत हुई उससे विद्यापीठ का भी पृथक स्थिर कोष प्रारम्भ किया गया। सर्वप्रथम ३१ अक्टूबर १९४० को महासम्मेलन तथा विद्यापीठ के पृथक् पृथक् आय-व्यय पत्र एवं वर्षान्त स्थिति के सन्तुलन पत्र भी चार्टर्ड आडिटर्ज द्वारा प्रमाणित कराकर तैयार किये गये। इसी बीच में यह भी प्रस्ताव हुआ था कि सन् १९३९ से पहिले १५ वर्षों के हिसाब का आडिट कराया जाय। वह १५ वर्षों का भी आडिट कराया गया परन्तु इसका कोई विशेष परिणाम नहीं निकला। तभी आगे के लिये हिसाब किताब पृथक् पृथक् ठीक प्रकार रखने उसके प्रत्येक वर्ष चार्टर्ड आय-व्यय निरीक्षक द्वारा प्रमाणित कराने तथा सदस्य महानुभावों के विचार-विमर्श के अनन्तर उसके स्वीकृत कराने की कार्य पद्धति निर्धारित हुई जो तब से अब तक बराबर प्रचलित है।

इस प्रकार संस्था के ५० वर्ष के आर्थिक इतिहास एवं विगत ३६ वर्षों के आय-व्यय के देखने से विदित होता है कि अ० भा० आयुर्वेद महासम्मेलन के पत्रिका और प्रचार विभाग प्रायः घाटे में ही चलते रहे हैं जबकि इसका शिक्षण एवं परीक्षा विभाग (विद्यापीठ) लाभ में चलता रहा है और इसके पहिले दो भागों को आर्थिक सहायता देता आया है।

अब वैद्य बन्धुओं से प्रार्थना है कि महासम्मेलन की उपर्युक्त इतिहास की पृष्ठभूमिका में पत्रक के लेखक ने उन ९ निष्कर्षों पर विचार कीजिये जिनका उल्लेख प्रारम्भ में किया गया है। अकेले-अकेले विषय पर मेरा निवेदन निम्न प्रकार है—

१—लेखक का यह कथन कि महासम्मेलन घाटे में चल रहा है एक मात्र केवल उस दृष्टिकोण से ठीक है जबकि महासम्मेलन को नि० भा० आयुर्वेद विद्यापीठ से बिल्कुल पृथक् समझा जाय—जो कि वास्तव में एक नितांत दूषित धारणा ही होगी। लेखक महोदय को जान लेना चाहिए कि विद्यापीठ महासम्मेलन का एक प्रमुख अंग है। महासम्मेलन एक वृहत् संगठन है और नि० भा० आयुर्वेद विद्यापीठ इसके द्वारा संजीवित एवं संचालित एक भाग है। दोनों एक दूसरे पर आश्रित हैं। इस प्रकार यदि सम्पूर्ण महासम्मेलन को एक स्वरूप में देखा जाय तो महासम्मेलन घाटे में कदापि नहीं चल रहा, वास्तव में लाभ में चल रहा है।

यहां मैं यह लिख देना भी उचित समझता हूं कि पत्रक के लेखक का घाटे का यह एक पक्षीय दृष्टिकोण अर्धसत्य होता हुआ भी उनकी कोई नवीन सूझ अथवा खोज नहीं क्योंकि महासम्मेलन के एक विभागीय इस घाटे कीकथा सर्वविदित है। सभी पुरातन सदस्य एवं समय २ के पदाधिकारियों को यह स्थिति सुविदित है और इनमें कुछ छिपा नहीं है। मेरे पूर्वज पदाधिकारियों तथा स्वयं मैंने बहुत बार अपने प्रकाशित वक्तव्यों द्वारा यह बात सदस्य महानुभावों तक पहुंचाई है। इसलिये मैं नहीं समझ सका कि इसमें इतने कोलाहल की क्या बात है? और इस सर्वविदित सत्य स्थिति के आधार पर पदाधिकारियों पर मिथ्यारोप लगाने की चेष्टा का क्या अभिप्राय है?

हां, कोलाहल इस बात पर अवश्य हो सकता है कि (क) इस एक विभाग में भी घाटा क्यों होता है? और (ख) इस घाटे को मिटाना चाहिये। लीजिये आपत्ति (क) का उत्तर सुनिये—

क्रमशः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वातकफज्वर (सांसर्गिक इन्फ्ल्युएन्जा)

प्रतिबंधक तथा शामक उपचार

भारतमें इन दिनों वातकफज्वर का आक्रमण जोरों-पर है। इसके प्रतिकार के लिये मुंबई राजकीय आयुर्वेदीय अन्वेषण-समिति (मुंबई सरकार स्थपित बोर्ड ऑफ रिसर्च इन् आयुर्वेद) की ओर से प्राचीन महर्षियों द्वारा पुरस्कृत एवं वैद्य-समाज द्वारा सहस्रों वर्षों से व्यवहारमें लायी गयी योजना जनता के लाभार्थ प्रकाशित की जा रही है।

१. अङ्गमर्द (शरीर टूटना)
२. शिरःशूल (सिर दर्द)
३. नेत्रदाह (आंखों में जलन)
४. तीव्र ज्वरमान (अनियमित चढ़ने -उतरनेवाला)
५. प्रतिश्याय (जुकाम, सर्दी)
६. कास (सूखी खांसी)
७. अरुचि तथा क्षुधानाश
८. ज्वर कम होने के बाद अत्यधिक अशक्ति.

वातकफज्वर का प्रचार होरहा हो तब उसके प्रतिबंध के लिये तीन प्रकार का उपचार करना आवश्यक है—

१. औषधोपचार
२. आहार या पथ्यापथ्य
३. विहार

पेट सदा साफ रखें। सुदर्शन चूर्ण, त्रिफला, सोना-मुखी, हरड आदि हलका जुलाब समय-समयपर लेते रहें।

अवधि—एक से आवश्यकतानुसार दो सप्ताह यह क्रम रखें!

आहार या पथ्यापथ्य-

जब तक रोग का प्रसार हो तब तक हलका भोजन करें, जैसे चावल, मूंग की दाल, मूंग की दाल की खिचडी, गेहूं, जुवार, बाजरी की रोटी, चा, कॉफी, परवल, तुरई, गलका (नेनुआ), दूधी, चौलाई, मेथी की भाजी, पालक, चूसने के आम। प्याज, लहसुन, अदरख, अजवायन, हींग, दालचीनी, लवङ्ग, काली मिर्च, सौंठ का प्रयोग विशेषतया करें। दूध लेना हो तो सौंठ, दालचीनी आदि मिलाकर लें।

नीचे लिखी चीजें सर्वथा उपयोग में न लानी चाहिए: दही, छाछ, लस्सी, बरफ मिश्रित खानपान, नारियल का पानी, केला, टमाटर, ककड़ी; आफुस आदि आम; पूरी, पकौड़ी, भजिया, भेल आदि तली हुई वस्तुएँ।

विहार—खुली जगह पर घूमना, तेल लगाकर गरम जलसे स्नान, नाक में तेल या घी डालना, कान में तेल डालना भोजन के बाद कुछ विश्रान्ति इस रोग से पीड़ित रोगियों के संपर्क से बचना—ये पथ्य हैं। ठंडे जल से स्नान, पंखे की हवा, सिनेमा थियेटर आदि भीड़ की जगहों में जाना—इन विहारों से बचें।

इस उपचार से सामान्यतया रोग का आक्रमण न होगा उपचार देरी से चालू करना इत्यादि कारणों से कदाचित आक्रमण हो जाए तो उसकी तीव्रता तथा मर्यादा अल्प होगी। इस लिए प्रारम्भ से ही नियमित ये उपचार करना आवश्यक है।

शामयिक उपचार (केवल वैद्यों के लिए सूचना)-

किसी कारण वातकफज्वर का आक्रमण होजाय तो त्रिभुवनकीर्ति रस बड़ों को २-२ गोली दिन में चार बार उक्त अनुपान से दें छोटे बच्चों १-१ गोली दिनमें यथावश्यक तीन से चार बार दें।

जिस दिन ज्वरका आक्रमण हो उस पूर्ण लङ्घन कराए अगले दिन मूंग का पानी आदि हलका आहार लेने की सलाह दें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृष्ठ ३८८ का शेषांश

एलोपैथी के लिये केवल ४० लाख रुपया मिला है।क्योंकि सारे विकास का आश्रय पंचवर्षीय योजना है।वहां आयुर्वेद को अधिक राशि न दी गई तो आयुर्वेद का विकास सम्भव नहीं है। अतः सभी कार्यों की पूर्ति के लिये पंच-वर्षीय योजना में आयुर्वेद को अधिकतम धनिराशि दिलाना ही होगा।

विभागीय प्रशासन—

आयुर्वेद विभाग का डायरेक्ट (अ) श्रेणी के अधिकारों वाला होना चाहिये (२) आयुर्वेद विभाग के इन्सपेक्टर गजटेड होने चाहिये जहां डिप्टी इन्सपेक्टर गजटेड हो वहां आयुर्वेद के इन्सपेक्टर गजटेड न हो अजीब आश्चर्य है। (३) प्रत्येक जिले में एक २ जिला आयुर्वेद अधिकारी प्रत्येक डिवीजन में एक एक प्रादेशिक अधिकारी तीन डिप्टी डाय-रेक्टर एक असिसटेन्ट डायरेक्टर एक टेक्नीकल एडवाइजर, एक प्रचार अधिकारी नये नियुक्त किये जाने चाहिये।

विभाग के वर्तमान कार्यालयों में कर्मचारियों का सर्वथा अभाव है। जहां ५०० व्यक्तियों को प्रति माह वेतन देना पड़ता है वहां केवल दो क्लर्क होने से न तो वेतन ही ठीक समय पर मिल पाता है और न साधन सामग्री मिल पाती और न समय पर निरीक्षण हो पाता है अतः जब तक उक्त व्यवस्था न हो तब तक एक एक निरीक्षक के पास ५ पांच क्लर्क और एक डिप्टी इन्सपेक्टर दिया जाना उचित है।

अन्य आवश्यक—

(१) भारत से बाहर विभिन्न स्वास्थ्य संगठनों के सम्मेलनों पर आयुर्वेद के भी प्रतिनिधि भेजे जाने चाहिये (२) आयुर्वेद के चिकित्सा शिविरों के आयोजन राज्य द्वारा किया जाना चाहिये। (३) इन्डियन मेडिशन बोर्ड के अधि-कारी को उचित मान्यता प्रदान की जानी चाहिये। (४) राजस्थान में राजकीय पैमाने पर आयुर्वेदिक सेमिनारों की आयोजना होनी चाहिये।

आशा है आपकी शक्तिशाली आवाज उक्त तथ्यों को शीघ्र ही अनुपालित करा राजस्थान के गौरव को अक्षुण्ण रखेगी।

आपके सहयोग के लिये अनेक अनेक धन्यवाद

प्रस्तुतकर्ता— वैद्य मिश्री प्रसाद शास्त्री
प्रचार मन्त्री— राजस्थान प्रदेश वैद्य सम्मेलन राजस्थान।

एक खुला पत्र

(इस लेख के भावों के लिये सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। लेखक पूर्ण रूपेण उत्तरदायी है। सम्पादक।)

श्री श्री १०१ चिकित्सक चूड़ामणि श्री सुरेन्द्रनाथ जी दीक्षित महाराज, मंत्री अखिल भारतीय आयुर्वेदिक चिकित्सा प्रचारक संघ व प्रधान सम्पादक "आयुर्वेद सन्देश" लखनऊ। मित्रवर नमस्कार,

मैं ने सुना है कि आप लखनऊ फैजाबाद क्षेत्र से इन्डि-यन मैडिसिन बोर्ड के प्रत्याशी बन रहे हैं मेरी समझ से यह क्षेत्र आप के लिये अनुपयोगी सिद्ध होगा या क्यों कि यहाँ के वैद्य पढे लिखे विद्वान हैं और आप की पूरी जीवनी व चरित्र से भली प्रकार परिचित है, अस्तु आपका जीतना यहाँ से असम्भव है अतएव आप रुहेल खण्ड कुमांयू के क्षेत्र से ही खड़े हो अवश्य जीतजावोगे पुवायां तो आपका दुर्ग बन ही चुका है वहां के सभी वैद्य आप पर पतंगा जैसी आहुति दे रहे हैं फिर जीतने में विलम्ब ही क्या ऐसा सुअवसर और अनुकूल वातावरण पुनः पुनः हाथ नहीं। आप जीत जावेंगे तो आपको स्वर्ण सिंहासन इन्द्रासन जैसा मिलेगा और मस्तक पर स्वर्ण मुकुट बंध जावेगा। बेकारी सब दूर हो जावेगी और फिर भोले भाले ग्रामीण वैद्यों का संचित धन मधु जैसा निकाल लेने में कितना सुन्दर आनन्द आवेगा मेरे दोस्त फिर हमें मद पाकर न भुला देना हमें तो पेट भरने भोजन ही चाहिए और चाहिये रेल आदि का किराया हम तो आपके साथी ही हैं। आपके हार जाने का सब से अधिक दुखः तो यह होगा कि आपकी पत्नी दीक्षि-ताइन जी को भी प्राइवेट प्रेक्टिस प्रारम्भ कर देनी पड़ेगी और हम लोग देहरादून वाले वाणप्रस्थी के शिष्य बन जावेंगे।

आपका-अभिन्न मित्र :
वैद्य मन्डल लखनऊ फैजाबाद क्षेत्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रसायन—

(मधुमेह-विशेषांक)

सम्पादक—गौरीलाल चानना बी० ए० वै० वा०

प्रकाशक—रसायन फार्मेसी, ३. दरियागंज, देहली

मूल्य—॥)

प्रस्तुत अंक में कई लेख न होकर केवल एक विवेचनापूर्ण आधुनिक विचारों से मिश्रित लेख है। इस से मधुमेह का परिचय, इतिहास, निदान, शर्करा के निर्माण का कारण व स्थान, मूत्र में शर्करा कैसे आती है, लक्षण, पहचान, शर्करा की परीक्षा विधि, मूत्र परीक्षा, चिकित्सा एवं भोजन व्यवस्था आदि शीर्षक देकर मधुमेह का पूरा विवरण स्पष्टकर दिया है।

प्रस्तुत अंक में चिकित्सा पर उतना प्रकाश नहीं डाला गया है जितना कि अपेक्षित था। मधुमेह पर रोज नवीन प्रयोग चल रहे हैं और कई बनौषधियां इतनी गुणकारी सुनने में आती हैं कि उनके प्रयोग से मधुमेह निश्चित एवं शत प्रतिशत दूर हो जाता है आज के युग में अपना अनुभव सर्वसाधारण एवं अन्य साथी चिकित्सकों पर प्रकट करना आवश्यक है पर कुछ विद्वान एवं अनुभवी चिकित्सक इस कार्य में दिलचस्पी नहीं लेते एवं चिकित्सा स्पष्ट नहीं करते।

फिरभी प्रस्तुत अंक में काफी ज्ञान वर्धन की सामिग्री है और इससे सर्वसाधारण भी लाभ उठा सकते हैं।

जटिल रोगों की सफल चिकित्सा

लेखक—वैद्य एस० वासुदेव

प्रकाशक—वासुदेव आरोग्य वाटिका, जम्मू

प्रस्तुत पुस्तक सम्पूर्ण पुस्तक का केवल परिचय है इसमें वैद्य जी ने अपने द्वारा विभिन्न रोगों से ग्रसित रोगियों की अनुभूत चिकित्सा का वर्णन किया है।

पूर्ण पुस्तक सम्पूर्ण 'स्वानुभव सार समुच्चय' का मुद्रण होने वाला है। ऐसे रोगी प्रत्येक चिकित्सक को अपने जीवन में मिलते रहते हैं जिनकी चिकित्सा जटिल एवं असम्भव समझी जाती है। परन्तु यदि परिचारक श्रद्धावान हों एवं वैद्य धैर्यवान हो तब रोग अवश्य निर्मूल हो जाता है। ऐसे अवसर पर ही आयुर्वेद की महत्ता का ज्ञानहोता है और विरोधी अपना सा मुंह लिये रह जाते हैं। इसमें थोड़ी सी लगन एवं मनन की आवश्यकता है।

इस पुस्तक से आपको जहां पता चलेगा कि वैद्य को चिकित्सा के समय कितनी लगन एवं अदम्य विश्वास की आवश्यकता है वहां पर कुछ विशेष औषधियों एवं रोगों की चिकित्सा क्रम का भी परिचय होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

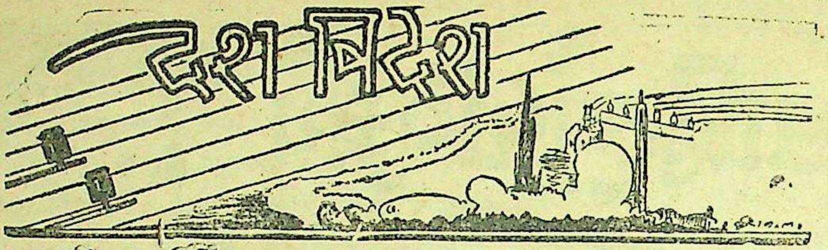

आयुर्वेद विद्यार्थियों को सूचना

श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन द्वारा संचालित ३३ वर्ष का प्राचीन विद्यालय मुं० कांसली, जिला जयपुर में नया प्रवेश जुलाई में होगा। शिक्षा और निवास स्थान निःशुल्क है। संस्कृतमध्यमा पास १० छात्रों को छात्र वृत्तियां मिलती हैं। राजस्थान का पाठ्यक्रम पढ़ाया जाता है। विद्यापीठ की परीक्षायें बन्द करदी गयी हैं।

निवेदकः—

प्रधानाचार्य आयुर्वेद संस्कृत विद्यालय
मु० पो० कांसली जिला जयपुर

आवश्यक-सूचना

यह घोषित किया जाता है कि वैद्य हकीम जिनके रजिस्ट्रेशन के प्रार्थना पत्र यू० पी० इन्डियन मेडिसिन ऐक्ट १०, १९३९ संकलन के पैराग्राफ ४ के अनुसार अस्वीकृत कर दिए गये हैं और जो भारतीय चिकित्सा-परिषद, उत्तर प्रदेश, मोती महल, लखनऊ के कार्यालय में पड़े हैं शीघ्र ही अध्यक्ष भारतीय चिकित्सा परिषद, लखनऊ के नाम ऐसी अस्वीकृत आज्ञा के विरुद्ध अपील दे सकते हैं जिनमें वे उन कारणों को स्पष्ट करें जिनके आधार वे रजिस्ट्रेशन का दावा करते हैं।

पांच रुपये का शुल्क अपील के साथ आना आवश्यक है, यदि रजिस्ट्रेशन के प्रार्थना पत्र के साथ उन प्रमाण पत्रों की प्रतिलिपि जिनके आधार पर रजिस्ट्रेशन का दावा किया गया है उनसे न संलग्न किये हों तो अपील के साथ उनका आना आवश्यक है। अध्यक्ष की प्रदत्त आज्ञायें रजिस्ट्रार द्वारा लिखित रुप में प्रार्थी को यथा समय सूचित की जावेगीं।

रजिस्ट्रार—उत्तर प्रदेश
भारतीय चिकित्सा परिषद्
लखनऊ

अर्श चिकित्सा शिविर

शिविर आयोजन—

राजस्थान प्रान्तीय वैद्य सम्मेलन की गत पत्रिकाओं में जोधपुर निवासी कविराज श्री सत्यदेव शर्मा द्वारा प्रकाशित अर्श भगन्दर नाड़ी व्रण के पारिवारिक प्रयोगों को प्रकाशित देखकर तथा राजस्थान प्रान्तीय वैद्य सम्मेलन कोटा के अवसर पर उनसे बारां तहसील वैद्य सभा के मंत्री श्री कृष्ण गोपाल शर्मा के प्रत्यक्ष वार्तालाप से बारां नगर में आयुर्वेदिक पद्धति से एक अर्श चिकित्सा शिविर लगाने की प्रेरणा ली। वहाँ से इस सद्विचार को लेकर आपने इस तहसील वैद्य सभा की बैठक दिनांक ११-५-५७ में प्रस्तुत किया और सर्व सम्मति से शिविर लगाया जाना दिनांक २७ मई सन् ५७ से ३ जून सन् ५७ तक निश्चय किया गया। एतदर्थ एक शिविर संचालन समिति २५ सदस्यों की बनाई गई जिसका अध्यक्षीय भार कविराज श्री द्वारका प्रसाद बिजयवर्गीय बी. ए. ए. एम. एस. को दिया गया और कार्यालय मंत्री एवं रिकार्ड कीपर कार्य श्री नन्द किशोर बी. ए. आयुर्वेदरत्न को दिया गया तथा शिविर में प्रधान चिकित्सार्थ श्रीयुत कविराज सत्यदेव शर्मा से पत्र व्यवहार किया जाकर अर्थ एवं सामग्री संग्रह का कार्य प्रारंभ किया गया।

नगर के उदारदानियों एवं श्री सार्वजनिक धर्मादा संस्था बारां की ओर से इस कार्य के हेतु ११७३) ग्यारह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सौ तेहत्तर रुपयों की राशि संग्रह की गई तथा श्री कल्याण जी व तेजमल जी छीपा द्वारा रोगी शैयाओं के निमित्त निःशुल्क चद्दरों का उपयोग इस शिविर का स्थल सराव-गियों के नोहरे में रक्खा गया। श्रीयुत संचालक आयुर्वेद विभाग राजस्थान से भी शिविर में सहयोग एवं सहायतार्थ पत्र व्यवहार किया गया किन्तु आपकी सहायता उपलब्ध नहीं हो सकी।

उद्घाटन—

राजस्थान में आयुर्वेदिक पद्धति से इस प्रकार अर्श चिकित्सा शिविर का आयोजन करने का सौभाग्य बारां निवासियों को सर्व प्रथम ही मिल रहा था इस हेतु जनता में आयुर्वेद के प्रभाव को और अधिक बढ़ाने का यह अच्छा अवसर पाकर इसके उद्घाटन के निमित्त श्रीयुत संचालक आयुर्वेद विभाग राजस्थान अजमेर से सम्पर्क स्थापित किया गया किन्तु अन्य कार्य क्रमों के कारण हम आपके सदुपदेश से वंचित रहें तदन्तर राजस्थान प्रदेश वैद्य सम्मेलन के अध्यक्ष श्री युत कविराज श्री माधव प्रसाद शास्त्री जोधपुर से भी तार द्वारा वार्तालाप किया गया किन्तु दुर्भाग्यवश आप भी इस अवसर पर नहीं पधार सके। अन्त में स्थानीय उपजिलाधीश एवं एडमिनिस्ट्रेटर म्यूनिसिपल बोर्ड बारां श्री अमरचन्द जी बापना के कर कमलों में से दिनांक २७-५-५७ की प्रात शुभ बेला में भगवान धन्वन्तरि जी की पूजन के साथ शिविर का उद्घाटन हुआ। इस अवसर पर नगर के कई गणमान्य सज्जन उपस्थित थे। आपने अपने उद्घाटन भाषण में विचार व्यक्त करते हुए आयुर्वेद के महत्व को समझाया और जोरदार शब्दों में कहा-जहां पर आजका विज्ञान समाप्त होता है हमारा विज्ञान वहां से प्रारम्भ होता है। आपने यह भी बताया कि भारतीय आयु-र्वेद का सम्बन्ध आत्मा के साथ है और इसलिये इसका महत्व अन्य विज्ञानों से बढ़कर है।

व्यवस्था—

शिविर संचालक समिति एवं प्रशिक्षणार्थ आये हुए वैद्य बन्धुओं के सहयोग से रोगियों की सेवा सुश्रुषा औषधि एवं भोजन व्यवस्था का सुन्दर प्रबन्ध किया गया। इस शिविर का उद्देश्य जहां एक ओर रोगियों को नारकीय यातना से छुटकारारा दिलाना था वहां दूसरी और अधिका-धिक वैद्य बन्धुओं को इस पद्धति से प्रशिक्षित करना भी था। अस्तु शिविर की विविध क्रियाओं से इन बन्धुओं को परिचित किया गया एवं उन्हें कार्यभार भी सौंपा गया जिसमें वे पूरा पूरा अनुभव कर सकें इसमें २६ वैद्य वैद्या-ओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

रोगी विवरण—

शिविर आतुरालय में कुल ५५ रोगियों ने प्रवेश पाया जिनमें २८ बाह्य आभ्यंतर वात एवं रक्तार्श, ३ भगन्दर, ५ गुद्भ्रंश, ८ गुद्विदीर्ण एवं ४ गुदकण्डू के रोगी पूरे समय तक रहे तथा अर्शके साधारण ७ रोगी शिविर में आकर तथा व्यवस्था लेकर चले गये। उपर्युक्त रोगियों में से कुछ ने तो दिल्ली तथा अन्य स्थानों पर अपनी चिकित्सा करवाई थी पर उन्हें फिर से यह रोग हो गया था। उन रोगियों में ४ महिलायें ५ बाल बालिकाएं तथा ४६ पुरुष थे।

रोगियों का प्रवेश दिनांक २१-५-५७ तकही सीमित रक्खा गया। इस हेतु बाद में आनेवाले लगभग १५० रोगियों को निराश होना पड़ा फिर भी प्रविष्ट रोगियों के पूर्ण लाभ को ध्यान रखकर शिविर ६ दिन तक और अर्थात् दिनांक ९-६-५७ को समाप्त किया गया। इनके पश्चात् ४-५ रोगियों का शेष उपचार श्री महावीर जैन औषधालय बारां में किया गया। यह कहते हुए अतीव हर्ष है कि अब सब रोगी अपने कष्ट से पूर्ण मुक्त है।

प्रेक्षार्थीगण—

शिविर काल में राज्य कर्मचारी एवं मान्य सज्जन प्रेक्षणार्थ पधारे। आप सब चिकित्सा कार्य एवं व्यवस्था का प्रत्यक्ष दर्शन किया और अपनी सम्मतियों में शिविर को सफल बतलाया। उनमें श्रीराजाबाबू कोठारी, सब जज बारां श्री धन्नालाल हरीत एम० एल० ए०, श्रीयुत रतनसिंह कोठिया मंत्री सड़ोती खादी ग्रामोद्योग संघ बारां आदि एवं कोटा के श्रीयुत वैद्य कृष्णगोपाल शास्त्री, श्री मोतीशंकर जी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री बैजनाथ जी श्री नन्दलाल जी शर्मा तथा अन्ता के वैद्य श्री भैरवलाल जी के नाम उल्लेखनीय है।

आगन्तुक सज्जनों में श्री परमानन्द जी शर्मा प्रधान मंत्री राजस्थान प्रदेश वैद्य सम्मेलन जोधपुर का नाम विशेष स्मरणीय है। आपने प्रदेश वैद्य सम्मेलन की ओर से आकर हमारा उत्साह बढ़ाया। ४-६-५७ को श्री धन्नालाल हारीत एस० एल०ए० के सभापतित्व में एक सार्वजनिक भाषण देकर जनता को आयुर्वेद का महत्व समझाया।

शिविर का सफल समारोह–

दिनांक ६-६-५७ रोगियों की सफल चिकित्सा के विषय में सायंकाल ८ बजे से श्रीयुत अमरचन्द जी बापना उप-जिलाधीश की अध्यक्षता में एक समारोह किया गया। इस अवसर पर श्रीयुत परमानन्द जी शर्मा प्रधान मन्त्री राजस्थान प्रदेश वैद्य सम्मेलन ने अपने विद्वत्ता पूर्ण भाषण में आयुर्वेद का अमृत पान कराया और श्रोताओं में एक नया जीवन प्रवाहित किया।

इसी अवसर पर तहसील वैद्य सभा की ओर से श्री सत्यदेव जी शर्मा को एक मानपत्र एवं मार्ग व्यय के अतिरिक्त ३०१) रुपये की एक थैली भेंट की गई।

आय-व्यय–

शिविर के निमित्त ११७३) संग्रह और १०२८।।≡)। खर्च हुआ, जिसकी जांच नियुक्त आय-व्यय निरीक्षक श्री पुरुषोत्तम स्वरूप जी एडवोकेट ने जांच करके हिसाब को सही बतलाया।

धन्यवाद–

इस पवित्र कार्य में सभी सहयोगियों का मैं आभारी हूं जिन्होंने आयुर्वेदोन्नति के इस कार्य में तन-मन-धन से सहयोग दिया है और कामना करता हूं कि ऐसे शिविर अधिकाधिक लगाये जांए जिस में आयुर्वेद का अधिकाधिक प्रचार हो सके। श्री वैद्य वर सत्यदेव जी शर्मा एवं उनके सहयोगी श्री रामलाल जोशी ने अपना अमूल्य समय और सेवाओं के निमित्त नगर एवं तहसील वैद्य सभा कृतज्ञ रहेगी। मैं आशा करता हूं कि ऐसा ही उदाहरण अन्य आयुर्वेद विज्ञ भी प्रस्तुत करेंगे।

डा० द्वारका प्रसाद विजयवर्गी
बी० ए०, ए० एम० एस०
शिविर संचालक, बारां

देशी-चिकित्सा प्रणालियों के लिए सलाहकार समितियों का पुनर्गठन

नई दिल्ली, ४ जून। भारत सरकार ने आयुर्वेद, यूनानी और होमियोपैथिक चिकित्सा-प्रणालियों से सम्बन्धित सलाहकार समितियों का पुनर्गठन किया है।

आयुर्वेद सम्बन्धी सलाहकार समिति के सदस्य ये हैं: केन्द्रीय स्वास्थ्य मन्त्रालय के सचिव (अध्यक्ष), स्वा... सेवाओं के महानिर्देशक, वित्त मन्त्रालय और आयोजना आयोग का एक-एक प्रतिनिधि; भारतीय चिकित्सा गवेषणा परिषद् के निर्देशक, पंडित रामप्रसाद, 'आयुर्वेद विभा... पटियाला के अवकाश प्राप्त निर्देशक, प्रधानाध्यापक- आयु... स्नातकोत्तर प्रशिक्षण केन्द्र, जामनगर, और कप्तान जी श्रीनिवासमूर्ति।

स्वास्थ्य मन्त्रालय में देशी-चिकित्सा प्रणाली के अ... तनिक सलाहकार इस समिति के सदस्य-सचिव हैं।

पंजाब राज्य आयुर्वेद सम्मेलन कार्यकारिणी के निश्चय

पंजाब राज्य आयुर्वेद सम्मेलन की कार्यकारिणी का विशेष अधिवेशन, तिवारी फार्मेसी, भैरों बाजार जालन्धर में हुआ। उसमें १७ वें पंजाब राज्य आयुर्वेद सम्मेलन के लिये, मुक्तसर आयुर्वेद मण्डल का निमन्त्रण सधन्यवाद स्वीकार किया गया।

यह भी निश्चय किया गया कि सम्मेलन पर अम्लपित्त पर निबन्ध लिखवाया जाय तथा सर्वोत्तम प्रस्ताव के लेखक को २५) रु० तथा स्वर्णपदक तथा दूसरे दर्जे के प्रस्ताव पर १५) रु० तथा रजत पदक स्वागत समिति द्वारा दिये जायें।

सम्मेलन का उद्घाटन पंजाब के माननीय स्वास्थ्य मन्त्री द्वारा कराने का निश्चय किया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैद्य-डाक्टरों के लिये चुनिन्दा अनुभव पूर्ण ग्रन्थ

तत्काल फलप्रद प्रयोग	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ	पंचम भाग
साधारण-संस्करण	१॥)	२)	२)	२)	३॥)
राज-संस्करण	×	२॥)	२॥)	२।)	४॥)

सौ रोगों का सरल इलाज (परिवर्धित-अत्युपयोगी संस्करण) २)

प्राकृतिक चिकित्सा (मिट्टी, पानी, वायु, व्यायाम द्वारा इलाज) १)

धर्मार्थ औषधालयों के प्रयोग (२२ वर्ष के अनुभव का निचोड़) १।)

धर्मार्थ औषधालयों के चिकित्सानुभव (प्रथम भाग) खोज पूर्ण १॥)

उपदंश-सूजाक चिकित्सा (एक हजार प्रयोग युक्त) साधा०) राज० १।)

पथ्य दर्शक (३२ रोगों पर सरल खोज पूर्ण पथ्य-चिकित्सा) ३२ पृष्ठ ।)

आठ औषधियों से दवाखाना चलाना (अवश्य पढ़ने योग्य) ॥=)

अष्टविधि रोग-परीक्षा (विस्तृत नाडी परीक्षा युक्त) ६४ बड़े पृष्ठ १)

कुमारी विज्ञान (१०१ प्रयोग युक्त) ।=)

तिलस्मी अंग्रेजी-देशी योग (प्रेस में) १॥)

आयुर्वेद चिकित्सक की फायलें सन् ५३-४।), सन् ५४-५), सन् ५५-५), ४॥) भेजकर 'आयुर्वेद-चिकित्सक' के ग्राहक बनें। २५) में सब ग्रंथ और फायलें मँगालें।

वैद्य पं० चन्द्रशेखर जैन शास्त्री, लाखाभवन, पुरानी चरिहाई, जबलपुर एवं
प्राणाचार्य भवन प्राइवेट लि० विजयगढ़ (अलीगढ़)

—कासान्तक—

हर प्रकार की खांसी के लिए अत्यन्त लाभप्रद औषधि है। इसके सेवन से जुकाम की खांसी, सूखी खांसी, कुकर खांसी आदि सभी में लाभ करती है। एक बार परीक्षा कर देखें।

मूल्य—४ औंस १।), १ औंस ।=)

❀ ईख का सिरका ❀

हमने अपनी प्रत्यक्ष देख रेख में इसका निर्माण कराया है। सिरका सेवन व उपयोग करने वालों से निवेदन है कि एक बार इसका उपयोग करके देखें। मूल्य—२) प्रति बोतल

शारीरिक चार्ट सैट के मूल्यों में वृद्धि—

प्रकाशक द्वारा मूल्य बढ़ाये जाने के कारण चार्टों के मूल्य में ॥) प्रति चार्ट की वृद्धि करदी गई है। केवल प्राथमिक चार्ट का मूल्य पूर्ववत् रहेगा। इस प्रकार चार्ट सैट का मूल्य २०) कर दिया गया है। पोस्ट व्यय पृथक् रहेगा।

प्राणाचार्य भवन प्रायवेट लिमिटेड, विजयगढ़ (अलीगढ़)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मलेरिया (जूड़ी-बुखार) के लिये शुद्ध आयुर्वेदीय

मीठी और स्वादिष्ट शर्तिया दवा

ज्वर निग्रह

(मीठी एवं स्वादिष्ट)

इस दवा के सेवन से एक बार जो मलेरिया के कीटाणु नष्ट हो जाते वह दुबारा उत्पन्न नहीं होते। गर्भावस्था या अन्य कैसी भी परिस्थिति क्यों न हो इसे निर्बाध रूप से दे सकते हैं। यह सभी अवस्थाओं में लाभ करती है। सैकड़ों द्वारा प्रसंशित है। एक बार परीक्षा करें।

- भारतीय वनस्पतियों से निर्मित यह दवा विशुद्ध आयुर्वेदीय औषधि है।
- इसमें कुनीन अथवा अन्य कोई हानिप्रद औषधि के मिश्रण न किये जाने के गारन्टी है।
- २-३ मात्रा में ज्वर को रोक देती है।
- मीठी और स्वादिष्ट है अतः छोटे बड़े सभी सरलता से पी सकते हैं।
- भारत के कोने कोने में मिलती है।

खरीदने से पहले "प्राणाचार्य" एवं "प्राणाचार्य भवन लिमिटेड विजयगढ़ (अलीगढ़)" अवश्य देखलें। नक्कालों से सावधान रहें।

मूल्य—बड़ी शीशी १), छोटी शीशी ॥≈)

प्राणाचार्य भवन प्रायवेट लिमिटेड

विजयगढ़ (अलीगढ़)

श्रीगोपाल गुप्त के प्रबन्ध से प्राणाचार्य प्रेस विजयगढ़ में मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

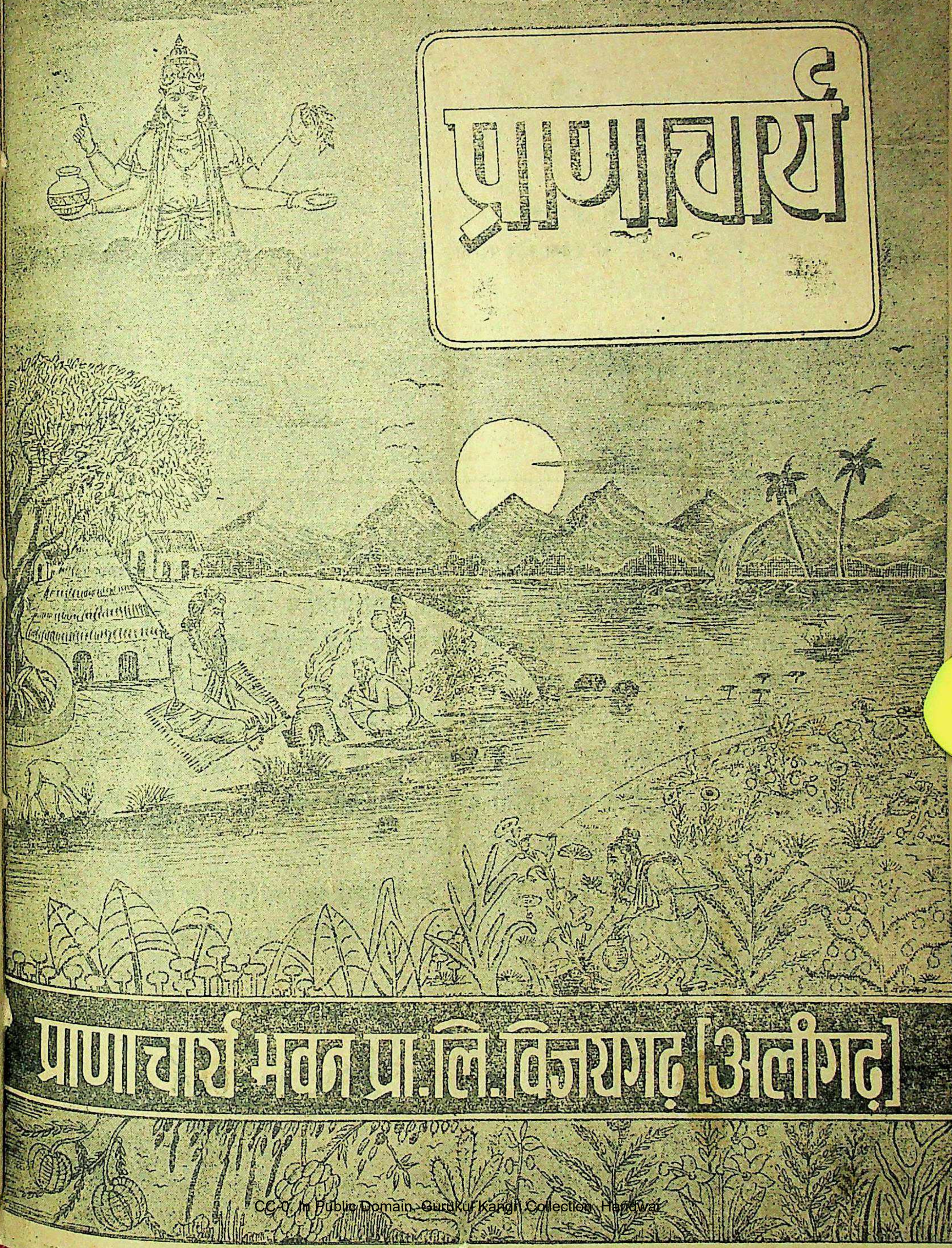

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

भाग ७ अङ्क ६

१.	कविता	४०७
२.	सम्पादकीय	४०८
३.	ब्लड प्रेसर की चिकित्सा	४०६
४.	फुफ्फुसों की रचना और परीक्षा	४१८
५.	ग्रीष्मचर्या	४२३
६.	पुष्करमूलम्	४२६
७.	सिद्ध प्रयोग	४२८
८.	प्रश्न	४३२
६.	समाचार	४३३

सेन्ट्रल सेल्स टैक्स

भारत सरकार ने १-७-५७ से अन्तर्प्रान्तीय सेल्सटैक्स भी लागू कर दिया है। उत्तर प्रदेश से बाहर के प्रान्तों में स्थिति व्यापारियों, विक्रेताओं व वैद्यों को औषधियों पर १॥-) प्रतिशत सेन्ट्रल सेल्सटैक्स देना पड़ेगा। परन्तु जो सज्जन सेल्सटैक्स में रजिस्टर्ड व्यापारी हैं और सेन्ट्रल सेल्सटैक्स का नम्बर व फार्म "C" ले लेंगे तथा आर्डर के साथ फार्म "C" की दो प्रतियां भरकर अपने हस्ताक्षर कर भेज देंगे तो उनसे केवल १) प्रतिशत टैक्स लगेगा।

अतः सेल्स टैक्स में रजिस्टर्ड व्यापारियों को चाहिये कि वह आर्डर के साथ "C" फार्म अवश्य भेजें। केवल रजिस्टर्ड नम्बर से कार्य नहीं चलेगा।

भवदीय-

[signature]

-व्यवस्थापक

सेन्ट्रल सेल्स टैक्स नं०
HT ४७६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाग ७ अङ्क ६

संस्थापक—स्वर्गीय वैद्यभास्कर बांकेलाल गुप्त "प्राणाचार्य"
प्राणाचार्य भवन प्रायवेट लिमिटेड, बिजयगढ़ का मुखपत्र

वार्षिक मूल्य ४॥=)

कामना और शान्त्वना

प्राणाचार्य ! तुम्हारी उन्नति दिन–दिन बहुगुण बढ़ती धरती पै ।
नर-नारी पशु पंछी गन छन–छन देखें ऊखर परती पै ॥

शस्य समृद्धि लहराती शोभित, देख देख मन मोद बढ़ावें ।
भारत शासक तुझे स्वीकृतिका, शिर पै सौमन माल चढ़ावें ॥

सुन्दर स्वर्णमय रत्नजड़ितशिर–ताज तुम्हारी जगमग जगमग ।
उज्वल रग जग सदा सुसज्जित लज्जित कारी रिपु दल पग पग ॥

प्राणाचार्य ! जाग जाग है तेरा बेरा पार कर हुआ सवेरा ।
रिपु–पुर रात बिताई तूने पाया भारत भाव दिन दूने ॥

तेरा अवश्यं दुख दूर होगा हे प्राण आचार्य ! प्रचार होगा ।
मन्त्री तेरे मान्यता रूप माला कण्ठ खरे हैं पह्नाने रसाला ॥

रचयिता—पं० युगेश्वर झा शास्त्री ज्योतिषाचार्य, ज्यो० ती०, आयुर्वेदाचार्य, कलकत्ता ६ ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ श्री धन्वन्तरयेनमः ॥

प्राणाचार्य

स्वास्थ्योपदेशकुशलः सौख्यायुष्यप्रवर्धकः
आयुर्वेद प्रबोधार्थं प्राणाचार्य प्रकाशितः ॥

आयुर्वेद पत्रों का उत्तरदायित्व

आयुर्वेद संसार में काफी पत्र प्रकाशित होते हैं, परन्तु खेद के साथ लिखना पड़ता है कि कितने पत्र उस उत्तर-दायित्व से परिपूर्ण हैं। पत्रों का कार्य लोक मानस का शिक्षण है, तथा च आज-कल से प्रजातन्त्र युग में जन-मानस को सद् सत् के प्रति अपने उत्तर दायित्व के प्रति एवं अपने प्रति अति जागरन रहने की आवश्यकता है।

आजकल आयुर्वेद के अधिकांश पत्र आयुर्वेदिक फार्मेसियों का प्रतिनिधित्व करते हैं इसी आधार को लेकर औषधियों के विज्ञापन, अनुभूत प्रयोग सिद्ध चिकित्सा, वनौषधि इत्यादि की ओर हीं उनका अधिकांश समय लगता है। यहां तक आयुर्वेद का महत्व, उसके प्रति जनता एवं सरकार की अभिरुचि, उसके विरोधी एवं समर्थक इत्यादि के प्रति उसके क्या कर्तव्य हैं, कोई ध्यान नहीं दिया जाता या दिया भी जाता है तो वह नगण्य सा ही है।

आयुर्वेद में कितनी गवेषणा हो रही है उसके विरोधी क्या प्रहार कर रहे हैं या करने वाले हैं हमें कोई जानकारी नहीं मिलती, आयुर्वेद का उत्थान के लिये प्रदत्त धन छद्मचर प्रकारान्तर से एलोपैथी के उत्थान में समाविष्ट कर लिये जाते हैं क्या हम कभी सोचते हैं। बी० सी० जी० के सम्बन्ध में आदरणीय श्री राजगोपालाचार्य जी द्वारा ठोस विरोध हुआ वह जनता तक कितने आयुर्वेद के पत्रों ने पहुचाया अभी-अभी हिन्दुस्तान में एक बी० सी० जी० की कारुणिक कहानी कितनी दिल दहलाने वाली थी।

हमारा अखिल भारतीय आयुर्वेद सम्मेलन कितने दिन से एक सर्वाङ्गपूर्ण आयुर्वेद विद्यालय बनाने के लिये प्रचार कर रहा है लेकिन क्रियात्मक रूप से उसने अब तक क्या किया? क्या वैद्यों को विद्यालय बनाना असम्भव है? क्या धन नहीं मिल सकता? यह सब मखौल है कोई कुछ नहीं करना चाहता, केवल पदाधिकार प्राप्त कर लेना और वर्ष भर बैठे रहना क्या कार्य पूरा कर सकता है? क्या हमारे पदाधिकारी इतने निःस्वार्थ हैं कि अपना पूरा कार्य काल सम्मेलन की उन्नति में लगा सकें? देश के अधिकांश सदस्य तो सम्मेलन का नाम ही नहीं जानते।

क्या यह असम्भव है कि यदि देश के प्रत्येक वैद्य तथा आयुर्वेद प्रेमी से सम्पर्क कायम किया जाय तो विद्यालय का कार्य रुका रहे। अलीगढ़ वैद्य सम्मेलन के एक वार्षिक अधिवेशन में जिले के वैद्यों ने दस सहस्र रुपया इकट्ठा करने का आश्वासन दिया था।

मेरे विचार में देश में दस लाख से कम वैद्य नहीं हैं प्रत्येक वैद्य दस रुपया विद्यालय के लिये सहर्ष दान कर सकता है और अनेक तो शत और सहस्र तक दे सकते हैं और देंगे फिर क्या कारण है? केवल यह है कि हमारा प्रचार नहीं, प्रत्येक वैद्य से सम्पर्क नहीं, कार्यकर्ता नहीं क्या आयुर्वेद के नेताओं में कोई एक भी एक वर्ष सम्पूर्ण देश का दौरा करने को उद्धृत है, कार्य में जितनी कठिनाई दीखती है उतनी है नहीं। हमारे पास शिक्षित समाज है और प्रत्येक वैद्य सहयोग दे सकने को लालायित हो जायगा यदि हम कुछ करें।

आगामी अङ्क में विद्यालय के धन संग्रह की योजना पर विचार करेंगे।

—सम्पादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्लड प्रेशर की चिकित्सा

लेखक--अज्ञात।

गताङ्क से आगे --

चिकित्सा क्रम

चिकित्सा आरम्भ करने के पहले रोग के कारणों का पता लगाना चाहिए क्योंकि निदान विपरीत चिकित्सा करने में उसकी अत्यावश्यकता पड़ती है। जब तक रोगोत्पत्ति के कारणों का परिहार न किया जायगा तब तक रोग वृद्धि का क्रम बन्द नहीं हो सकता। सर्व प्रथम दांतों की परीक्षा करें। यदि दांत सड़ गये हों या हिलते हों तो दांत उखड़वा लेना चाहिए। यदि दांतों में से मवाद जाता हो तो दन्त चिकित्सक की सलाह से उसका प्रतिकार करे। यदि गले में गांठ पड़ गई हों तो कांचनार गूगल आदि के प्रयोग द्वारा उसे दूर करने का प्रयत्न करे। यदि रोगी का वजन अधिक बढ़ गया हो तो उसे घटाने का प्रयत्न करे। आहार द्रव्य पदार्थों में पौष्टिक पदार्थों की कमी करदें। मांस, घटक द्रव्य और पिष्टमय पदार्थ कम करदे। पेशाब साफ और अधिकता के साथ हो तो इसका प्रयत्न करें। स्नान नित्य करावें जिससे चमड़ा साफ रहे और आवश्यकतानुसार पसीना भी निकलता रहे।

यदि निद्रा नाश न हो तो सहसा रक्तचाप कम करने का प्रयत्न न करें। क्योंकि वृक्क विकार और मस्तिष्कगत धमनियों की कठोरता में रक्त की पूर्ति करने के लिए प्रकृति रक्तचाप बढ़ाकर स्वास्थ्य साम्य लाने का प्रयत्न करती है। ऐसी दशा में यदि हठात् रक्तचाप घटाने का प्रयत्न किया जायगा तो शरीर में क्षीणता बढ़ेगी। पेशाब के द्वारा विषाक्त अंश बाहर न हो पायेंगे और मस्तिष्कगत धमनियों में रक्त की गांठ बनने का भय रहेगा। आराम करने दो किन्तु एकदम काम न बन्द करावें। नहीं तो निम्न विक्षेप होने का भय रहता है किन्तु काम उतना ही कराया जाय जिससे थकावट न हो, निद्रा में सहायता पहुंचाने के लिए और पाचन शक्ति ठीक रखने के लिए कुछ द्राक्षासव और सारस्वतारिष्ट दिया जा सकता है। पाखाना साफ होता रहे इसके लिए कभी-कभी वस्ति दें अथवा-सनाय, सौंफ, गन्धक, मुलहठी और मिश्री का चूर्ण सप्ताह में एक बार रात में गाय के दूध या गरम पानी के साथ दिया करें।

यदि रक्त की अधिक वृद्धि हो गई हो और रक्त के दबाव से हृदय बन्द होने का भय हो अथवा मस्तिष्क पर रक्त का दबाव बढ़ने का भय हो तो शिरा मोक्षण करावें। आवश्यकतानुसार आध सेर से १ सेर तक रक्त निकलवावें! आवश्यकतानुसार समय-समय पर रक्त मोक्षण करावें।

वृद्ध मनुष्यों के रक्त में रक्त की गांठ न पड़े इसलिए भी कभी-कभी रक्त मोक्षण कराना चाहिए। यदि हाथ, पांव, यकृत, प्लीहा में वायु रक्त का मार्ग रोककर एक दूसरे के सम्बन्ध में अन्तर उपस्थित कर दे तो स्थिति प्राणान्तक हो जाती है। ऐसी दशा में रक्त मोक्षण कर रक्त निकाल देना चाहिए।

तुम्बी और सिंगी लगाकर भी रक्त निकाला जा सकता है। यदि दाह और शूल अधिक हो तो ६४ तोले तक रक्त निकाला जा सकता है।

वायु शिराओं में प्रवेशकर तत्रस्थ रक्त को दूषित करता है उनमें शूल सिरा संकोच सिरा को परिपूर्ण करदे और वाह्यायाम और अन्तरायाम वक्रता ले आता है जिससे खल्ली और कुकुत्व हो जाता है। यथा—

कुर्याच्छिरागतः शूलं शिरा कुचन पूरणम्।
स वाह्यास्यन्तरायामं खल्ली कुकुत्वसे वच॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रक्त विक्षेप में दोष वायु प्रधान रहता है अतएव चिकित्सा में सर्वप्रथम वायु शान्ति का ध्यान अवश्य रखे वायु शान्ति के लिये रास्नादिपंचक क्वाथ देना चाहिये

६८१—रास्ना पुनर्नवा
सोंठ गुडूची
एरन्ड मूल प्रत्येक समान भाग

—लेकर पानी में पकावें चौथाई शेष रहने पर छान कर मधु मिलाकर पीवें।

समय—प्रातः सायं।

गुण—इसके सेवन से सप्रधातुगत वायु, आम युक्त वायु तथा सर्वाङ्ग गत वात दोष शान्त हो जाते हैं।

रक्त विक्षेप रोग में वात व्याधि की प्रधानता रहती है। साथ ही इसमें आक्षेप आते हैं। पक्षाघात का भी उपद्रव होता है। शाखागत और शिरोगत विकार होते हैं। ऐसी स्थिति के लिये महामाषादि तैल की मालिश अच्छी होती है।

रक्त विक्षेप में यदि मन्दाग्नि, शूल, अरुचि, आम दोष, कफ दोष दिखाई दे तो पञ्चकोल चूर्ण भोजन के पहले लेकर भोजन करें।

इस रोग में हृदय विकार, वात विकार, यकृत और प्लीहा के विकार, ग्रन्थि शूल, आनाह, विबन्ध और उदर विकार रहा करते हैं। अतएव वैश्वानर चूर्ण लाभकारी होता है। यदि प्रदाह ज्यादा हो तो उसकी शान्ति के लिए-

६८२—परवल कुटकी
शतावरी आंवला
हरड़ बहेड़ा
गुर्च प्रत्येक समान भाग

—लेकर क्वाथ बनाकर पिलावें।

गुडूची कफ और वात को नष्ट करती है कफ और मेद का शोषण करती है। कण्डू और विसर्प को नष्ट करती है अतएव रक्त विक्षेप में ऐसे उपद्रव होने पर इसका चूर्ण अथवा स्वरस, क्वाथ अवश्य पीना चाहिए।

यदि शरीर में रक्त की उल्वणता या रक्ताधिक्य हो तो शतधौत घृत में राल मिलाकर शरीर पर लेप करें। इससे रक्त की उल्वणता में विशेष फायदा होता है।

रक्त और पित्त की अधिकता होने पर शीतल पदार्थों से परिषेचन करे। यदि शरीर में ललाई हो तो रक्त मोक्षण करा कर—

६८३—तिल चिरौंजी
मुलहठी कमलकन्द
वेत प्रत्येक समान भाग

—लेकर दूध में पीस कर उसमें घी मिलाकर लेप करे।

रक्तभार वृद्धि में अक्सर वृक्क विकृति होते हैं। अतएव जहां तक हो सके पारद का प्रयोग कम करना चाहिए। वृक्क विकृति होने पर पुनर्नवादि मांडूर, अर्क मकोय लाभदायक सिद्ध हुए हैं। ऐसे रोगी को आर्द्र स्थान में नहीं रखे।

सर्पगन्धा का प्रयोग इसकी प्रत्येक अवस्था में अमूल्य सिद्ध हुआ है। किसी भी कारण से रक्तभार वृद्धि हुई हो तो वह निर्भय पूर्वक प्रयोग में ली जा सकती है। जब रक्तभार बढ़ जाने के कारण निद्रा नाश, शिरःशूल हो तो सर्पगन्धा का प्रयोग बहुत गुणकारी होता है। इसका प्रयोग निम्नलिखित रूप से करें।

६८४—सर्पगन्धा चूर्ण ५ सेर
पानी ४० सेर

—लेकर क्वाथ करें। अष्टांश शेष रहने पर छान कर दोनों क्वाथों को एकत्र कर मन्दाग्नि पर पकाकर घन करे, यह घन लगभग ४० तोला होगा, इसमें खुरासानी अजवायन ५ तोला पीपरामूल ५ तोला, चरस २॥ तोला, मिलाकर २-२ रत्ती की गोली बनाले।

मात्रा—१ से २ गोली दूध या जल से रातको सोते समय

अनेक रोगियों में सिर्फ अजीर्ण के जीर्ण होजाने पर रक्तभार बढ़जाता है इस अवस्था में आमाशय को सबल बनाने का प्रयत्न करना चाहिये। इसके लिये वृ० क्रव्यादिरस और ६४ पहरा पीपल २ रत्ती की मात्रा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

115882

में दिन में दो बार सफेदजीरा भुना हुआ के साथ देने से लाभ होजाता है।

अगर वायु उत्पन्न होकर बाधा उपस्थित करती हो और रोगी शिकायत करता हो कि हवा का गोला ऊपर चढ़ चढ़ कर आता है, और मस्तिष्क में बेचैनी पैदा करता है तो भोजन के पश्चात् धनंजय वटी या हिंग्वाष्टक चूर्ण देने से लाभ होता है।

अगर धमनी काठिन्य के कारण रक्त दबाव बढ़ा हो तो रक्त वाहिनियों को प्रसारित कर देने वाली औषधियां देनी चाहिए। चन्द्रप्रभा वटी और शिलाजीत से इसमें लाभ होता देखा गया है। मुक्ता, शौक्तिक, प्रवाल, शङ्ख, मांडूर मिलाकर त्रिफला और घी के साथ लेवें। ऊपर से दूध या क्षीर पाक किया हुआ दूध लेवें।

अनार, अंगूर, अंजीर, सन्तरा, सेव, नासपाती, पपीता, टमाटर आदि लिया करें।

६८५—मुलहठी जीवक
ऋषभक प्रत्येक १-१ माशा
घी १ तोला
—में मिलाकर चाटें और ऊपर से दूध पीवे अथवा—

शतावरी	गंगेरन
विधारा दूध में शोधी और छिलका उतरी हुई	घुंघची
गुडूची	पुनर्नवा
पीपर	असगन्ध
गोखुरू	प्रत्येक १०-१० तोला

—लेकर चूर्ण करें। सब औषधियों की आधी मिश्री मिलाकर घोटें। इसे एक अमृतवान में रख कर ऊपर से—

मधु	३२ तोला
घी	१६ तोला
कलमी तज	तेजपात
इलायची का चूर्ण	प्रत्येक ४-४ तोला

—डालकर रखदें।

अनुपान—अग्नि बलानुसार इसका सेवन करें।

गुण—यह योग ब्लड प्रेशर के लिए सर्वोत्तम है। हाई ब्लड प्रेशर को भी यह साम्यावस्था में लाता है।

यदि रक्त विक्षेप के साथ शिरःशूल हो तो महा लक्ष्मी विलास रस इसका सेवन करावें अथवा स्वर्णमाक्षिक भस्म, मौक्तिक, प्रवाल और यशद भस्म घृत मधु या केवल मधु में मिला कर सेवन करें।

सन्धि वातों के समान सन्धि में पीड़ा होती हो तो बकरी के दूध में अलसी पीस पकाकर बांधे अथवा महुआ के फूल पीसकर गर्म बांधें।

शुद्ध गन्धक भैंस के घी में मिलाकर चाटें ऊपर से गौमूत्र पीवे तो वृक्क दोष नष्ट हो जाता है। आंतें साफ रखने के लिए बीच बीच में बस्ति लिया करें। रक्त शोधनार्थ—

६८६—अनन्तमूल रास्ना
पद्माख मुलहठी
मुन्डी प्रत्येक समभाग
—ले इन सब का क्वाथ कर अर्क खींचलें। इससे रक्त दोष शान्त होते हैं। पित्त जनित बिकार शान्त्यर्थ—

६८७—सुगन्ध वाला लाल चन्दन
हल्दी प्रत्येक समभाग
—ले क्वाथ बना कर पीवें। ऐसे काढ़े में यदि एरन्ड तैल मिला लिया जाय तो और अच्छा हो।

क्वाथ में प्रक्षेप के लिए अथवा किसी औषधि के अनुपान के लिये यदि कफ की अधिकता हो तो मधु लें। पित्त की अधिकता में घी और वायु की अधिकता में एरन्ड तैल या वातघ्न औषधि द्वारा सिद्ध कोई तैल लें।

यदि नाड़ी तन्तुओं के अन्त में पीड़ा हो तो मुलहठी मिलाकर (पकाकर) लगावें। इससे ज्ञान-तन्तुओं की कैसी भी पीड़ा हो तो शान्त हो जायगी। नाड़ी तन्तु की उत्तेजना घी से मिटती है।

यदि शरीर में ओज की कमी हो और मस्तिष्क तथा ज्ञान तन्तुओं में क्षीणता आगई हो, तो चन्द्रप्रभा के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अतिरिक्त–वृ० बातचिन्तामणि या चतुर्मुख चिन्तामणि घी के साथ अथवा सारस्वतारिष्ट और ब्राह्मी अर्क के साथ मिलाकर देवे । पाखाना साफ करने के लिये आरोग्यवर्द्धिनी वटी दूध के साथ लेवें अथवा अभयादि क्काथ के साथ देवें।

चन्द्रप्रभावटी के साथ प्रवाल भस्म, मोती भस्म और गुर्च का सत्व मिलाकर दें । यदि इसमें स्वर्ण बसन्तमालती और मिला दिया जाय तो ज्वर क्षीणता और रक्तागम का भय नहीं रहता । यदि मधु मेह की शिकायत हो तो बसन्त कुसुमाकर भी देते रहें ।

एक गुजराती पत्र में एक पाक लिखा है यथा—२ सेर चावल दूध में मिलाकर रखें पीछे निकालकर रखें और आटा बनावें । उसमें तीन पाव चीनी, हल्दी आध सेर सोंठ पाव भर सबका चूर्ण मिलाकर घी में पकाकर २॥-२॥ तोले के लड्डू सवेरे नित्य सेवन किया करें तो इससे ब्लड प्रेशर बहुत जल्दी अच्छा हो जाता है ।

अथवा—

६८८—शुद्ध गन्धक	१ माशा
ताम्र भस्म	१॥ रत्ती

—दोनों को मिलाकर मधु के साथ दिन भर में २ वार चाटने से रक्त शुद्ध होता है और रक्त विक्षेप घटता है ।

हमारे यहां कुछ दिव्यौषधियां भी हैं । जिनका प्रभाव अनन्त होता है । उनके धारण से भी लाभ होते देखा गया है । जैसे हृद्रोग में हरा पत्थर नांदली पहनने से दिल की धड़कन कम हो जाती है । उसी प्रकार ब्लड प्रेशर में रुद्राक्ष की माला पहनने से ब्लड प्रेशर कम हो जाता है । अथवा गुलाब जल में रुद्राक्ष घिसकर पिलाने से भी लाभ होता है।

निम्न विक्षेप में-

६८९—रस सिन्दूर	२ रत्ती
मोती	२ रत्ती
प्रवाल	२ रत्ती
लोह भस्म	१ रत्ती

—ले मिलाकर दो पुड़िया बनावें ।

समय— प्रात: सायं ।

अनुपान — मधु ।

रस सिन्दूर के बदले मकरध्वज या चन्द्रोदय भी ले सकते हैं ।

किस प्रकार के आहार विहार से उचित रस बन सकता है और किस प्रकार रक्त का दूषित होना रोका जा सकता है । यदि इस रहस्य को समझ लिया जाय तो इस रोग से छुटकारा पाना सम्भव है । रक्त शुद्ध रहे इसका सदा ध्यान रखे क्योंकि शुद्ध रक्त पाचन क्रिया में सहायक होता है । रोगी को शारीरिक और मानसिक परिश्रम विशेष न करदे आराम करना इस रोग का अनेक औषधियों के बराबर है । हां नित्य टहलना और साधारण व्यायाम अवश्य करे । जिससे चित्त उद्विग्न हो और शरीर में थकावट मालूम पड़े ऐसा परिश्रम न करें जिस स्थान की आब हवा अच्छी हो गंगा या किसी झरने के पास रहना अच्छा है , और हल्का भोजन करें यदि रात में खूब भूख न लगे तो भोजन बन्द करदें केवल दूध मात्र पीकर रहजाय क्योंकि दुग्धाहार हल्का और सुपाच्य है । इससे आंतोंकी पाचन क्रिया में बोझ नहीं पड़ता दूध से धमनियों की क्रिया में तेजी आती है क्योंकि उन्हें पोषण मिलता है । दूध से सर्वाङ्ग में नव चेतना आजाती है । वृक्क दोष भी इससे मिलता है । और रोग प्रतीकारक शक्ति भी इससे उत्पन्न होती है ।

पिष्टाना आवश्यकतानुसार ही सेवन करें मांस मछली जहां तक हो परित्याग करदें यदि खाना ही हो तो यदा कदा वह भी बहुत थोड़ी मात्रा में इसी तरह अण्डा और चाय काफी में भी अधिकता नहीं करें शराब अधिक उत्तेजना उत्पन्न करती है । अतएव इससे सर्वदा बचते रहें फलशाक और पत्र शाक लेते रहें अंगूर, अनार, पपीता, अमरूद, सेब, अनन्नास, नासपाती, आदि साधारण तथा लेते रहें स्वच्छ झरने का अथवा तीव्र प्रवाह वाली नदियों का पानी पीना चाहिये ।

दाल उर्द वायुकारक होते हैं किन्तु मूंग की दाल और अरहर की दाल का पानी लेना चाहिये पूरी कचौड़ी आदि प्रायः नहीं खाना चाहिये नमक शरीर में कुण्ठता पैदा करता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तथा क्षार बनाता है अतएव इसका भी सेवन थोड़ी ही मात्रा में करें। वह भी सेंधा नमक के अतिरिक्त अन्य कोई भी नमक नहीं खाये। सप्ताह में १ दिन नमक बिल्कुल न खाय।

स्नान सुखोष्ण जल से करें। इनका बराबर ध्यान रहे कि दस्त में कब्जियत न होने पावे यदि बद्ध कोष्ठ रहता हो तो सप्ताह में दोबार वस्ति क्रिया करें। शिरका दर्द बेचैनी और चक्कर दूर करने के लिये मक्खन मिश्री या फल लेवे।

सम्भोग से रक्त विशेष बढ़ता है। अतएव जहां तक हो इससे बचता रहे। बीच बीच में उपवास भी करता रहे इससे भी पूर्ण फायदा होता है। भोजन के साथ नींबू और मट्ठे का उपयोग करें सम प्रदेश (न अधिक गर्म न शीत) में रहे दिन को कदापि न सोवे और रात का जागरण भी हानिकर है। धूप में घुमना फिरना ऊंचे नीचे चढ़ना उतरना, व्यायाम, उष्ण, गुरु और अभिष्यन्दी पदार्थों से बचते रहना चाहिये।

पुराने गेहूं और जौ तथा चावल की रोटी हितकारी है मूंग, अरहर, चना, कुल्थी की दाल हितकारी है। चौपतिया मकोय, पुनर्नवा, बथुआ, लौकी, मूली, टमाटर, परवल आदि का शाक हितकर है। लहशुन भी उपयोगी है क्यों कि यह पेट में वायु (गैस) उत्पन्न होने के कारणों को दूर करता है और इसमें रोग नाशक शक्ति है। इससे आंतों की कीटाणुओं की उत्पत्ति भी रुकती है। किन्तु यह उत्तेजना बर्द्धक है। अत एव यदि रक्तसंचार की उत्तेजना बढ़कर हानि होने की सम्भावना हो तो इसका सेवन बन्द करदें।

भोजन खूब चबा चबा कर करें शीघ्र शीघ्र भोजन करने से उसका परिपाक अच्छा नहीं होता जिससे रस भी अच्छा नहीं बनता। गर्म पदार्थ का सेवन कतई न करें। यदि प्रातः जलपान करने की इच्छा हो तो आंवले का मुरब्बा या सेव का मुरब्बा लें। गर्म पदार्थों से रक्त भी गर्म होता है। आंतों में भी रूक्षता आजाती और मल सूख जाता है आंतों में लिपटकर रह जाता है मल संचित्त हो जानेसे अपान वायु ऊर्द्ध गामी होजाता है जिससे रक्त .. दबाव बढ़ जाता है। ऐसी गर्मी धातु को भी उष्ण करती और सुखाती है। रक्त सूखने से धमनी का पोषण ठीक नहीं हो पाता अतएव वे सूखती अकड़ती और कड़ी पड़ जाती है। लाल मिर्च कतई न लें।

किसी प्रकार का तैल भी न ले। वनस्पति का घी तो एक दम बन्द करदे। इससे खुश्की बढ़ेगी।

शाक में—

बैंगन, मूली, करेला, सूरण, खेकसा, कुम्हड़ा, मैथी न लेवे।

मसालों में—

राई, मेंथी, हींग, लहसुन, अजवायन दाल चीनी, तेजपात, लौंग आदि से यथा शक्य बचता रहे।

खट्टी चीजों में—

विशेष कर आम की खटाई और सिरका नहीं खाना चाहिये। खट्टी वस्तुओं से पित्त प्रकोप बढ़ता है पित्त स्वयं अम्ल और कटु है। अतएव अम्ल पदार्थ से यह और भी बढ़ता है।

यदि संधि गत दोष में चूने का अंश बढ़ गया हो तो आंवला, खट्टा अनार, नीबू, सन्तरा ले सकते हैं। खट्टी वस्तुओं में सेंधा, सोंचर नमक या सोड़ा मिला देने से खट्टापन कम हो जाता है। द्विदल धान्य और फली वाले अन्य शाक भी लेने से बचे क्योंकि यह वायु को बढ़ाता है। उड़द, मटर, चटरी, सैम, चना, मोंठ, भिण्डी, तोरई, कटहल आदि पदार्थ वायुको बढ़ाने वाले हैं अतएव रक्तचाप की भी वृद्धि करता है। तेल की मालिश लाभ कर है। इससे शारीरिक उष्णता कम होती है और यदि रक्त में उष्णता की कमी हो तो उसकी पूर्ति भी करता है। शरीर में स्फूर्ति आती है। और रूक्षता का नाश हो जाता है।

महामाषादि तैल, गुडूच्यादि तैल, लाक्षादि तैल, चन्दनादि तैल, नारायण तैल, बादाम तैल यथावश्यक लगाना चाहिये।

ब्लड प्रेशर मापक यन्त्र---

ज्वर की उष्णता मापक जैसे थर्मामीटर प्रचलित है वैसे ही ब्लड प्रेशर के लिये भी एक यन्त्र है जिसे डाक्टर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"स्फिगमोमोनो मीटर" कहते हैं। इस से यह ज्ञात हो जाता है कि रक्तचाप कितना बढ़ा हुआ है। अथवा कितना घटा हुआ है।

कार्टकोफन १६०५ में स्टेथिस्कोप द्वारा व कान द्वारा फेफड़ों की दशा जानने की विधि का प्रवर्तन कर इन निर्णय विधियों को सुधार दिया जिस से हृत् संकोच चाप और हृत् प्रसार चाप सुविधा पूर्वक जाने जा सकते हैं।

यन्त्र परिचय–

यह एक काठ की पेटी में बन्द होता है। जिसके ढक्कन में थर्मामीटर के समान लम्बी पारद नलिका लगी रहती है। एक रबड़ की पट्टी होती है। जिसे भुजा पर बांधकर दबाव डाला जाता है। और एक रबड़ का बल्ब या धातु का पम्प-हवा भरने के लिये होता है। कांच नलिका मिलीमीटर में विभक्त होती है। (मिलीमीटर अर्थात् मीटर का हजारवां हिस्सा) (१ मीटर की लम्बाई ३६.३७१ अर्थात् ३६३/८ इंच के लगभग होती है इस हिसाब से मिलीमीटर की लम्बाई १/२५ इञ्च तक होती है) जिन यन्त्रों की बनावट अच्छी होती है उनमें से पारद को निकालकर साफ किया जा सकता है और पारद फैलने नहीं पाता भुजाकी पट्टी लम्बी और चौड़ी रबर की थैली होती है। यह लगभग १२ सैन्टीमीटर चौड़ी होनी चाहिये। क्योंकि यदि इससे कम चौड़ी होगी तो अनेक समय मुख्यतया धमनी कठोर होने पर रक्तभार गलत मालूम हो जाता है यंत्र के उपरोक्त तीनों हिस्से (पारद नलिका, भुजा पट्टी, रबरबल्ब) रबर नलिकाओं द्वारा आपस में सम्बन्धित होती है बल्ब में एक कपाट होता है जिसकी सहायता से परीक्षक अपनी इच्छानुसार वायु भुजा पट्टी से बाहर निकाल सकता है।

यन्त्र प्रयोग विधि–

इस यन्त्र के प्रयोग करने के लिये रोगी को शान्ति से बैठना चाहिये या लेटादें उसके एक हाथ को जिसमें रक्त की परीक्षा की जायगी वक्ष के समानान्तर ऊँचाई पर फैलाकर रखदें फिर यन्त्र का ढकन हटाकर सीधा खड़ा करदें यन्त्र ऐसे स्थान तथा इतनी ऊँचाई पर रखना चाहिये कि उसमें स्थित "मैनोमीटर" परीक्षक की आंखों के बिल्कुल सामने रहे ताकि अंक पढ़ने में सुविधा हो रोगी अगर बैठा हो तो उसके हाथ को सम्मुख रखी हुयी मेज पर या यदि लेटा हो तो शय्या पर ही रहने दे। तत्पश्चात् बाहु पर पट्टी बांधे पट्टी सावधानी से बांधे क्योंकि जरासी भी असावधानी में रक्त भार में काफी अन्तर पड़ जाता है। अब परीक्षक अपना एक हाथ नाड़ी पर रखे और दूसरे हाथ से बल्ब को दबा-दबा कर उस समय तक हवा भरता रहे जबतक कि नाड़ी का स्पन्दन बन्द न हो जाय इसके बाद रक्तभार जानने की दो विधियां हैं बिल्कुल ठीक ठीक अङ्क ज्ञात करने के लिये दोनों विधियों को क्रमशः प्रयुक्त करे।

स्पर्श विधि–

इससे सिर्फ संकोचीय रक्त भार ज्ञात हो सकता है उपरोक्त क्रिया करने के बाद बल्ब में लगे हुये कपाट को दबाकर शनैः २ वायु निकालते जांय। वायु बहुत धीरे धीरे निकालनी ताकि बाहु पट्टी का दबाव भी भुजापर बहुत धीरे धीरे ही कम हो इस समय परीक्षक को अपनी ओरसे यन्त्र में स्थित पारद नलिका पर साथ ही सम्पूर्ण ज्ञान शक्ति नाड़ी का स्पर्श अनुभव करने की ओर लगा देनी चाहिये। वायु निकलते रहने पर ज्यों ही नाड़ी स्पन्दन प्रारम्भ हो उस समय जहां तक यन्त्र में पारा चढ़ा हो उतना ही मिली मीटर संकोचीय रक्तभार माना जाता है। किन्तु रक्तभार दर्शक अङ्क पढ़ने में खूब सावधानी और शीघ्रता करनी चाहिये। क्यों कि थोड़ी भी देर होजाने पर रक्तभार सहज ही १०–२० मिली मीटर न्यूनाधिक हो जाता है।

श्रवण विधि–

इससे संकोचीय और प्रसारीय दोनों प्रकार के रक्तभार ज्ञात किये जा सकते हैं। परीक्षा करने के लिये उपरोक्त विधि के अनुसार ही बल्ब द्वारा बांह की पट्टी में उस समय तक हवा भरे जब तक कि पारद "मैनो मीटर" में स्पर्श परीक्षा द्वारा प्रतीत अङ्कों से ३० मिली मीटर ऊपर चढ़जाय। इसके पश्चात् बाहु पर बंधी हुई पट्टी के नीचे को कोहनी के ऊपर रही हुई प्रगंडिया धमनी पर स्टेथिस्कोप रख आवाज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुनते रहें और धीरे धीरे वायु निकाल कर दबाव कम करते जांय। इस समय परीक्षक की आंखें "मैनो मीटर" पर सम्पूर्ण ज्ञान शक्ति स्पन्दन सुनने के लिये प्रयुक्त करनी चाहिये। जब नाड़ी की गति की सूक्ष्म आवाज (स्पन्दन) सुनने में आजाये तब यह देखें कि पारा कहांतक चढ़ा है। यह संकोचीय रक्तभार है। फिर वायु निकलने पर कभी तीव्र कभी मर्मर ध्वनि और कभी भिन्न प्रकार की आवाज होती है। इन शब्दों पर किसी प्रकार का ध्यान न देते हुये वायु निकलाते जांय जब आवाज अकस्मात् मृदु और अश्रवण युक्त हो जाय उस समय पारा यन्त्र में जहांतक चढ़ा हो उतना मि० मी० हृदय का प्रसारीय रक्तभार मान लें।

जहां तक संकोचीय रक्तभार का सम्बन्ध है स्पर्श और श्रवण दोनों विधियों द्वारा मालूम किया हुआ रक्तभार करीब करीब समान ही होता है। साधारणतया श्रवण विधि में ५–१० मि० मी० अधिक रहता है। सर्वदा द्वितीय विधि ही ज्यादा लाभदायक होती है। क्यों कि इस से संकोचीय और प्रसारीय दोनों रक्तभार ज्ञात हो जाता है। अगर दोनों विधियों से क्रमशः परीक्षा की जायगी तो गलती होने का भय कम रहता है।

विशेष वक्तव्य—

रोगी के स्थिति परिवर्तन भोजन के पश्चात करने से रक्तदबाव में अनेक अस्थाई परिवर्तन होजाते हैं और मनोद्वेग के कारण रक्त दबाव बहुत बढ़ जाता है। अतएव इन बातों को ध्यान रख कर ही यान्त्रिक प्रयोग करें।

जब रोगी बिल्कुल आराम की स्थिति में मनोद्वेग से रहित हो तब उसका हाथ बिल्कुल शिथिल रखवा कर परीक्षा करें जो रोगी निरुत्साहित हो गये हों उनके प्रथम बार प्राप्त रक्त दबाव के अङ्क अक्सर बहुत ऊंचे होते हैं परन्तु इसे अस्वीकृत कर द्वितीय बार पुनः परीक्षा करें द्वितीय बार के अङ्क उचित रक्त दबाव दिखला देंगे। रक्त दबाव से पूर्व नाड़ी की गति की परीक्षा करलें क्योंकि हृदय की गति के साथ इसका घनिष्ट सम्बन्ध है अर्थात् रक्तदबाव में वृद्धि या हृदय की गति पर बहुत कुछ निर्भर है रक्त दबाव की परीक्षा में शीघ्रता करनी चाहिये क्योंकि रोगी के जरा हाथ को संकुचित कर लेने से रक्त दबाव बहुत ऊंचा मालूम हो सकता है। अतएव पूर्ण निश्चित करने के लिये अनेक बार परीक्षा करें एक बार अङ्क मालूम कर लेने के पश्चात् भुजा पट्टी में से सम्पूर्ण वायु को निकाल कर दबाव शून्य पर ले आवे पुनः दूसरी बार नये सिरे से वायु भर कर अङ्क का ज्ञान करे कुछ रोगी ऐसे भी देखे गये हैं, जिनमें स्टेथिस्कोप से रक्तभार की परीक्षा करने पर नाड़ी स्पन्दन २०० मि० मी० के नीचे कुछ समय के लिये बन्द हो जाता है। और फिर प्रगट होता है। तथा अन्त में प्रसारीय दबाव पर स्थाई रूपसे नष्ट हो जाता है। अतः जब पारा २१० मि० मी० गिरता है। तब ही नाड़ी स्पन्दन शब्द उत्पन्न होजाता है। और वही संकोचीय दबाव होता है। और फिर १०० से १६० तक नाड़ी स्पन्दन गायब रहने के पश्चात् फिर उत्पन्न हो जाता है। तथा अन्त में स्थाई रूप से १२० मि० मी० पर गायब होता है। जो कि प्रसारीय दबाव होता है जो रोगी धमनी काठिन्य से पीड़ित हो उन्हीं में यह मध्य में गति गायब होने की दशा पाई जाती है। यद्यपि रोग निदान की दृष्टि से इस बात का कुछ भी महत्व नहीं है। परन्तु इससे स्पष्ट हो जाता है कि रक्तभार परीक्षा करने में सर्वदा भुजा पट्टी में वायु का दबाव इतना अधिक डालना चाहिये कि "मैनोमीटर" में पारा २०० मि० मी० से भी ऊपर चला जाय।

परीक्षण द्वारा ज्ञात हुआ है कि धमनी काठिन्य से रक्त दबाव में १० मि० मी० से ज्यादा अन्तर नहीं पड़ता यद्यपि बहुत कठोर और संकुचित धमनी के कारण रक्त दबाव में काफी वृद्धि ह्रास हो सकता है। अगर मांस पेशियां संकुचित हो जैसा धनुर्वात् में रोगी भयभीत हो तो रक्तदबाव के अङ्क विश्वसनीय नहीं उठते, अतएव उपरोक्त अवस्थाओं में विश्वास किये हुये रक्तभार के अङ्कों का कुछ भी मूल्य नहीं है।

कभी यह भी जरूरी होजाता है कि हाथकी धमनी से प्राप्त सङ्कोचीय दबाव के अङ्कों को तुलना पैर के सङ्कोचीय दबाव से की जाय। इसमें रोगी को अपने सम्मुख टांग फैलाकर बैठालें और भुजा पट्टी को घुटने से ऊपर बांध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दें ।- और स्टेथिस्कोप से जान्वी धमनी पर श्रवण करे। स्वस्थावस्था में पैर समतल रखकर सावधानी से परीक्षा की की गई तो देखा गया कि पैर और हाथ का संकोचीय दबाव लगभग समान ही है । ऐसी अवस्था में अगर महाधमनी कार्यभार सम्भालने को अयोग्य है, तो पैर का संकोचीय दबाव हाथ से बहुत ऊँचा हो सकता है । जब कि महाधमनी में किसी प्रकार का अवरोध होगा तो पैर का संकोचीय दबाव हाथ की तुलना में कम हो जाता है।

प्राकृतिक रक्तभार-

मनुष्य की आयु के अनुसार रक्तभार बदलता रहता है, छोटी आयु में दबाव कम पड़ता है । ज्यों २ आयु बढ़ती है दबाव भी बढ़ता जाता है । स्वस्थ युवा पुरुष के आकुंचनकाल का दबाव १०० से १४० मि० मी० और प्रसार काल का ६० से ९० मि० मी० रहता है ।

आयु के अनुसार स्वस्थावस्था में रक्तभार का परिणाम जानने के लिये निम्न तालिका दी गई है ।

आयु—वर्षों में	आकुंचन रक्तभार		प्रसारीय रक्तभार		अन्तर या नाड़ी का दबाव	
२ से ४ वर्ष तक	६१	मि० मी०	४५	मि० मी०	३६	मि मी.
५ से ९ वर्ष तक	९०	,,	९३	,,	३७	,,
१० से १४ वर्ष तक	१००	,,	६२	,,	३८	,,
१५ से १९ वर्ष तक	११०	,,	७१	,,	३९	,,
२० से २९ वर्ष तक	१२०	,,	८०	,,	४०	,,
३० से ३४ वर्ष तक	१२४	,,	८२	,,	४२	,,
३५ से ३९ वर्ष तक	१२६	,,	८३	,,	४३	,,
४० से ५९ वर्ष तक	१३२	,,	८६	,,	४६	,,
६० से ६९ वर्ष तक	१४०	,,	९०	,,	५०	,,
७० वर्ष की आयु	१४५	,,	९२	,,	५३	,,

रक्तभार में परिवर्तन-

इसमें २ तरह के परिवर्तन हो सकते हैं १—वृद्धि २—ह्रास ।

रक्तभार वृद्धि—अनेक रोगों में महत्व पूर्ण चिह्न है । परन्तु कुछ मि० मी० वृद्धि कुछ समय के लिये होजाने पर उसे किसी रोग का चिह्न समझ ने की भूल न करें । रक्तभार वृद्धि स्थाई हो और १६० मि० मी० से कम न हो तभी इसे किसी रोग का सूचक समझना चाहिये इसे तीन भेदों में विभक्त किया गया है ।

	संकोचीय	प्रसारीय
१—अत्यधिक वृद्धि	२८० से ३२० तक	१६५ से १८० तक
२—अत्यधिक	२४० से २७५ तक	१४० से १६० तक
३—अति	१६० से ३३० तक	१२० से १३० तक
४० वर्ष की आयु से पहले अति—	१४५ से १५० तक	९० से १२० तक

चिकित्सक को उपरोक्त सभी बातों का ध्यान रख कर इसकी चिकित्सा में प्रवृत्ति होना चाहिये तभी वे इस भयंकर रोग में सफलता प्राप्त कर सकते हैं ।

शिराओं और केशिकाओं के रक्तचाप के निर्णय

एक साधारण यन्त्र – शिराचाप नापने के लिये हूकर का बनाया हुआ है । इसमें शीशे का एक कोष कोलाडियन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घोल द्वारा शिरा के ऊपर की त्वचा से कस दिया जाता है इस कोष का अन्त मार्ग रबर की नलों द्वारा पानी के दबाव मापक से जुड़ा हुआ रहता है। चाप लट्टू द्वारा अन्दर के कोष की दबाव इतना बढ़ाया जाता है कि शिरा देखने में न आवे यह दबाव भार मापक में आसानी से पढ़ा जा सकता है। रक्तचाप शिरा की स्थिति पर बहुत कुछ निर्भर है। ज्यों ज्यों हाथ ऊपरकी ओर उठेगा रक्तभार कम होता जायगा जिन परिस्थितियों में हृदय की ओर रक्त का प्रभाव बढ़ जाता है उनमें शिराचाप भी बढ़ जाता है परन्तु हृदय यदि पुष्ट हो तो वह इस बढ़ी हुई मांग को पूरी करता और धमनियों में रक्त के आधिक्य को बहाता रहता है। और शिरा में रक्त चाप केवल अस्थाई रूप से ही थोड़ी देर को बढ़ जाता है। यदि हृदय रोग ग्रस्त होने के कारण इस कार्य के अयोग्य हो तो साधारण अवस्था में भी शिराओं का रक्तचाप बढ़ सकता है। और एक अस्थाई चापाधिक्य रहे तो हार्टफेल की सम्भावना रहती है। शिराचाप की दशा हृदय पेशी के सुचारू रूप से क्रियावत् न होने का अच्छा परिचय देता है।

केशिका चाप-

केशिकाओं में रक्तचाप का निर्णय करने की कई विधियां हैं। सामान्य सिद्धान्त जो इसके लिए प्रयुक्त हुआ था वह ज्ञात करना है कि किस दबाव पर त्वचा का रंग बदल जाता है, यह मान लेना कि त्वचा का रंग केशिकाओं में रक्त सञ्चार के कारण हैं यह निर्विवाद नहीं है।

"हूकर" ने इसके पक्के प्रमाण दिए हैं कि त्वचा का रङ्ग पृष्ठ तल पर के शिरा के नाड़ी सूत्रजाल के कारण होता है। अतएव उक्त विधि से केशिकाओं का चाप नहीं वरन् छोटी शिराओं का चाप ज्ञात होगा। अतएव भिन्न भिन्न परीक्षणों द्वारा भिन्न भिन्न आंकड़े प्राप्त हुए हैं। "हूकर" ने दूसरे सिद्धान्त पर एक और दूसरा यन्त्र बनाया है। यथा—

त्वचा की केशिकाओं पर तैल मलकर उन्हें तेज रोशनी सूक्ष्म दर्शक यन्त्र द्वारा देखा जाता है और यन्त्र इस प्रकार बना हुआ है कि त्वचा पर वायु का दबाव डाला जा सकता है। जब कि रक्त प्रवाह का निरीक्षण कर रहे हों। जब दबाव किसी खास अंश तक बढ़ जाता है तो केशिका की धारा रुक जाती है। फिर जब दबाव कम करते हैं तो प्रवाह आरम्भ हो जाता है। बाद का दबाव केशिका का दबाव है।

यह दबाव भी मनुष्य की आयु पर निश्चित है जैसा कि पहले लिख दिया गया है। १७.५ और २६.५ मि० मी० के बीच में केशिका चाप का अनुमान है।

❀ सर्पगन्धा ❀

आयुर्वेद शास्त्र की एक अनुपम देन है जिसकी विदेशी वैज्ञानिकों ने भी मुक्त कंठ से प्रशंसा की है। यह औषधि रक्तचाप उन्माद में अत्यन्त लाभप्रद है इसका उपयोग नींद लाने के लिये भी किया जा सकता है। हृदय पर बुरा प्रभाव भी नहीं लाती।

मूल्य--सर्पगन्धा जड़ी--१८) सेर सर्पगन्धा टेबलेट--५० टिकिया १।)

प्राणाचार्य भवन प्रायवेट लिमिटेड
विजयगढ़ (अलीगढ़)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फुफ्फुसों की रचना और परीक्षा

लेखक---वैद्य कृष्णगोपाल गुप्त आयुर्वेदाचार्य B. I. M. S.

गताङ्क से आगे—

फुफ्फुस परीक्षा

किसी भी अङ्ग की परीक्षा दर्शन, स्पर्शन, ठेपन, श्रवण तथा अङ्ग के श्राव से की जाती है। यही क्रम फुफ्फुस परीक्षा में होता है। हम यहां क्रमशः प्रत्येक का वर्णन दे रहे हैं। जिससे पाठकों को सरलता रहेगी।

दर्शन परीक्षा

इसमें वक्ष की आकृति तथा श्वासोच्छ्वास के समय वक्ष का विस्फार और संकोचन आदि देखना होता है।

प्राणियों में वक्ष कई आकृति की देखने को मिलती है इस विषमता के दो कारण हैं– स्वाभाविक (जंमज) और आगन्तुक (किसी कारण विशेष से)। हम यहां बहुधा पाई जाने वाली आकृतियों का प्रथक २ वर्णन देते है।

निरोग अर्थात स्वस्थ वक्ष– ऐसी वक्ष स्वस्थ और व्यायाम शील मनुष्यों में पाई जाती है। इसमें दोनों पार्श्व सम होते हैं कक्ष के समीप की वक्ष की चौड़ाई व गोलाई से कटि तक क्रमशः वक्ष कम चौड़ी व गोल होती जाती है। स्तन प्रान्त मांस युक्त होने से उभरा रहता है। श्वासोच्छ्वास के समय गति (विस्फार संकोच) दोनों पार्श्वों में सम होती है। अक्षक के निम्न प्रदेश में हल्का गर्त रहता है। यह गर्त अधिक होना निर्बलता का बोधक है। अधिक व्यायाम शील व्यक्तियों में वक्षस्थल से पार्श्व उन्नत होते हैं पृष्ठवंश सीधा होता है।

चपटी वक्ष—यह आकृति उपपर्शुकाओं के सपाट होने से आती है। इसमें वक्ष आगे की ओर उन्नतोदर होती है।

पक्षाकार वक्ष— इस प्रकार की वक्ष में पृष्ठ की ओर स्कन्धास्थि की वक्षानुगाधारा अति उठी हुई तथा स्कन्ध नीचे झुके होते हैं। इस कारण ऐसी वक्ष वालों की ग्रीवा कुछ लम्बी प्रतीत होती है तथा चुल्लिका कोण भी स्पष्ट होता है।

कपोत वक्ष–शिशुओं की जब अस्थियां मृदु होती हैं उस समय तब दबाव के कारण जो अज्ञात होता है यह आकृति होजाती है। इसमें वक्ष की आकृति ठीक कपोतवक्ष से मिलती है अर्थात वक्षास्थि अक्षक के पास आगे को उभर आती है।

रेकेटिक वक्ष—रेकेट्स के कारण शिशुकाल में यह आकृति बन जाती है जो आजीवन रहती है। इसमें पर्शुका और कारटीलेज के सन्धि स्थान पर विकृति होती है जिससे वक्षास्थि के दोनों ओर खात सा बन जाता है। जिससे वक्ष की आकृति पृष्ठ की ओर से देखने पर कुछ २ अमरूद के समान बीच में खात युक्त प्रतीत होती है।

राजयक्ष्मा जन्य वक्ष—इसमें दोनों पार्श्व अन्दर की ओर दब जाते है।

इसी प्रकार कुछ अन्य फुफ्फुसीय रोगों के कारण वक्ष की आकृति में अन्तर आजाता है जिसका रोग प्रकरण में वर्णन करेंगें।

उक्त आकृतियों के अतिरिक्त अन्य विकृति भी रोग के चिह्न स्वरूप दृष्टि गोचर हो सकती है जो निम्न है।

१—एक पार्श्व का अधिक उभरा होना तथा दूसरे का श्वास लेने पर कम गति युक्त होना। जब एक फुफ्फुस विकार युक्त होजाय तब दूसरे फुफ्फुस को दोनों का कार्य करना पड़ जाता है जिससे ऐसी स्थिति उत्पन्न हो जाती है या किसी एक ओर के फुफ्फुसावरण में तरलाति वृद्धि होने से यह दशा उत्पन्न हो जाती है।

२—किसी एक पार्श्व का अन्दर की ओर दबा होना। फुफ्फुस सङ्कोच, राजयक्ष्मा, फुफ्फुसावरण तरल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की न्यूनता या किसी एक ओर की वायु प्रणाली में बाधा होने से यह स्थिति आती है।

३—किसी स्थान पर उभार प्रतीत होना—यह फुफ्फुस में कुछ वायु कोष्ठ विस्तृति के कारण अर्बुद, विद्रधि, शोथ, पर्शुकाओं या मांसपेशी में शोथ आदि होने से प्रतीत होता है।

४—श्वासोच्छ्वास के समय उदर और वक्ष की गति में अन्तर–इन दोनों की गति समान रहती हैं किन्तु जब उदर में विकार हो तो वक्ष ही गति करता है उदर की गति प्रतीत नहीं होती इसी प्रकार वक्ष में विकृति होने पर उदर अधिक गति करता है।

५—निःश्वास और उच्छ्वास की न्यूनता व अधिकता भी वक्ष के दर्शन से देखी जाती है। इससे रोगी की गम्भीर, मध्यम व स्वस्थावस्था आदि को देखना चाहिए। जैसे कि—श्वास रोग में श्वास की अवस्था विचित्रता लिए होती है जब इस रोग के रोगी की मृत्यु सन्निकट होती है उस समय श्वास प्रतिक्षण गम्भीर होती जाती है। प्रथम अति गम्भीर होकर उथला फिर और भी अधिक उथला होकर शान्त सी हो जाती है पुनः अति गम्भीर आदि क्रम चलता है और शनैः २ शान्ति काल अधिक हो जाता है यहां तक कि रोगी की मृत्यु हो जाती है।

६—पर्शुकाओं का बाहर की ओर अधिक वक्र होना तथा पृष्ठवंश का पीछे की ओर उभर आना। यह अवस्था भी कभी २ जीर्ण कास या तमकश्वास के पुराने रोगियों में पाई जाती है।

इस प्रकार प्रथम दर्शन से रोगी की अवस्था का ज्ञान करना चाहिए जिससे अन्य साधनों से परीक्षा करने में सहयोग मिलता है।

स्पर्शन

स्पर्श परीक्षा से दर्शन द्वारा जो चिन्ह ज्ञान होते हैं उनकी पुष्टी की जाती है तथा वेदना आदि अन्य विकृतियों का ज्ञान भी हो जाता है।

इस परीक्षा के लिए चिकित्सक में कुशलता व लघु स्पर्श से ही विकृति को ज्ञात करने का अभ्यास होना आवश्यक है। परीक्षा के लिए चिकित्सक को सपाट हाथ से शनैः २ वक्ष को आगे पीछे और पार्श्व से देखना चाहिए कि कहीं उभार या गर्त तो नहीं, स्पर्श से वेदना तो नहीं होती (मांस पेशी, शोथ, विद्रधि, फुफ्फुसावरण प्रदाह, नाड़ी शूल आदि में मृदु स्पर्श से ही वेदना होती है)। शोथ, विद्रधि आदि की शङ्का होने पर मृदु स्पर्श से उस स्थान को ज्ञात करे यदि फुफ्फुसावरण में पूय आदि तरल की आशङ्का हो तब तरङ्ग (फुफ्फुसावरण में पूय आदि होने से श्वास प्रश्वास के कारण तरंगें उठती रहती हैं) का अनुभव करें।

इसके अतिरिक्त श्वास प्रश्वास के समय वक्ष का फैलाव पार्श्वों के फैलने का अन्तर आदि भी देखना चाहिए। इसके लिए चिकित्सक को अपने दोनों हाथ सपाट रूप में इस प्रकार वक्ष पर रखने चाहिए कि अंगुष्ठ वक्षास्थि पर बीच में मिल जाय। अब रोगी से गम्भीर श्वास लेने को कहे और देखे कि वक्ष का फैलाव सम है या नहीं? वक्ष का उभार दोनों पार्श्वों में सम है या विषम (राजयक्ष्मा, वायु कोष्ठ विस्तृति में एक पार्श्व कम उभरता है)। हाथ से वक्ष पर दबाव डाल कर देखें कि वक्ष कम या अधिक दब सकती है क्योंकि अधिक दबना स्वस्थावस्था का दिग्दर्शन है और कम दबना रुग्णावस्था का चिन्ह है जैसे राजयक्ष्मा आदि फुफ्फुसीय विकारों में।

हमने ऊपर लिखा है कि मृदु हाथ से स्पर्श कर तरंगों को प्रतीत करना चाहिए। अब हम उसका पूर्ण विवरण देते हैं ताकि तरंगों के भेद से निदान में सहयोग मिल सके।

चिकित्सक को सपाट हाथ रख न्यून से न्यून तरंगों का ध्यान से अनुभव करना चाहिए। यह ध्यान रहे कि तरंगों का अनुभव सदैव एक ही हाथ से किया जाय क्यों कि दोनों हाथों की स्पर्श ज्ञान शक्ति न्यूनाधिक होती है अतः एक ही हाथ सब स्थानों पर रख तरंग अनुभव करनी चाहिए। साधारणतया फुफ्फुस प्रधान तीन प्रकार की तरंग ही अनुभव में आई हैं। अतः नीचे उनका ही संक्षिप्त वर्णन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया जा रहा है।

१-घर्षण तरंग—फुफ्फुसावरण में रहने वाले तरल के शुष्क होने पर जब श्वास के समय फुफ्फुसावरण रगड़ते है तब यह तरंग अनुभव में आती है। स्टैथिसकोप से यह शब्द सरलता से ज्ञप्त हो जाता है।

२-कूजन तरंग—यह तरंग हाथ द्वारा कठिनता से अनुभव में आती है फिर भी रोग की गम्भीरावस्था में कभी कभी इसे प्रतीत किया जा सकता है। वायु प्रणाली शोथ होने पर वायु मार्ग कम रह जाता है अतः जब वायु प्रवेश करती है तब यह शब्द उत्पन्न होता है जो तरल में लगकर तरङ्ग उत्पन्न करता है।

३-शब्द तरंग—रोगी के बोलने पर वक्ष पर हाथ रखने से यह तरंग प्रतीत की जा सकती है। फुफ्फुसीय रोगों के न्यूनाधिक से यह भी न्यूनाधिक होती है। जैसे कि—फुफ्फुसीय शोथ, विद्रधि, राजयक्ष्मा में शब्द तरंग उन्नत हो जाता है और फुफ्फुसावरण शोथ, फुफ्फुसावरण प्रदाह में शब्द तरंग न्यून हो जाती है। इस प्रकार स्पर्शन परीक्षा का भी निदान में विशेष महत्व रहता है।

ठेपन

फुफ्फुस रोगों के निदान में ठेपन परीक्षा श्रवण परीक्षा के सम मानी जाती है। यद्यपि श्रवण से जो ज्ञान हो जाता है वह ठेपन से नहीं हो पाता फिर भी इससे रोगों के निदान में बहुत सहायता मिलती है। स्थान २ पर ठेपन करने ठेपन शब्द में भिन्नता मिलती है। अतः ठेपन परीक्षा में सिद्ध हस्त होने के लिए चिकित्सक को अङ्गों की आकृति व स्थिति का उत्तम ज्ञान होना अनिवार्य है। यहां हम फुफ्फुस की आकृति और स्थिति को लेकर ठेपन परीक्षा का संक्षिप्त वर्णन करते हैं।

ठेपन परीक्षा

फुफ्फुस रोगों के निदान में ठेपन परीक्षा, श्रवण परीक्षा सम मानी जाती है। यद्यपि श्रवण से जो ज्ञान हो जाता है वह ठेपन से नहीं हो पाता।

ठेपन परीक्षा द्वारा विशेषकर तीन अवस्थाओं को ज्ञात करना है।

१—फुफ्फुस प्रदेश के भिन्न भिन्न स्थानों पर ठेपन कर ठेपन शब्द का ज्ञान करना कि वह स्वस्थवत् है वा व्याधि चिन्हवत्।

२—फुफ्फुस की वाह्य स्थिति का ज्ञान करना अर्थात यह जानना कि फुफ्फुस के शिखर, धारा आदि यथा स्थान हैं वा ऊपर या नीचे।

३—फुफ्फुसों में अर्बुद, शोथादि तथा फुफ्फुसों के आवरण में कोई विकृति या बाधा तो नहीं।

उक्त तीनों बातें क्रमशः नीचे वर्णन की जाती हैं ताकि चिकित्सक वर्ग को सुविधा रहे और ज्ञान वृद्धि भी हो।

१—फुफ्फुस प्रदेश के विभिन्न स्थानों की ठेपन परीक्षा—

इसमें विशेष ध्यान इस पर देना चाहिए कि दोनों पार्श्वों के समान स्थान पर ठेपन कर भिन्नता देखी जाव अन्यथा वास्तविकता का ज्ञान नहीं हो पाता। इसमें भी अन्य अंगों की स्थिति के कारण असमानता आ जाती है जैसे कि दाहिनी ओर अधिक भाग यकृत का रहता है तथा बांई ओर हृदय का। इस प्रकार समान स्थानों के ठेपन में भी अन्तर हो जाता है। किस स्थान पर किस अवस्था में कैसा शब्द होता है यह वर्णन करना कठिन है क्योंकि प्रत्येक प्रदेश सुषिर होता है। फिर भी यह सुषिरता सर्वत्र सम न होकर कहीं अधिक सुषिर, कहीं मृदु सुषिर तो कहीं घन होती है। अत; यह ज्ञात करने के लिए कि किस स्थान पर सुषिर, मृदु सुषिर या घन शब्द होता है। अभ्यास की परम आवश्यकता है। अभ्यास से किस स्थान पर कैसा शब्द होता है। यह ज्ञान हो जाने पर अस्वस्थ दशा के तनिक से अन्तर को जाना जा सकता है। सामान्यतया शिखर पर अधिक सुषिरता होती है। पीछे से आगे की ओर शब्द अधिक सुषिर उत्पन्न होता है और यकृत व हृदय प्रदेश पर सदैव घन शब्द उत्पन्न होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीचे हम इन शब्दों में अन्तर लाने वाले कारण लिख रहे हैं—

सुषिर शब्द में अन्तर लाने वाले कारण—

वायु-कोष्ठ-विस्तृति फुफ्फुसावरण तरल की अधिकता से, फुफ्फुस का अधो भाग शोथ युक्त होने से सुषिरता अधिक हो जाती है। फुफ्फुसों में वायु की अधिकता होने पर तथा कोटर बन जाने पर शब्द रिक्त सा होजाता है।

सुषिर शब्द में घनता लाने वाले कारण—

घन शब्द इस समय हो जाता है जब फुफ्फुसों में किसी कारण ठोसता आजाय लोवर-न्यूमोनियां नांको-न्यूमोनियां, फुफ्फुस वेष्टों का शोथ के कारण मोटा हो जाना, फुफ्फुसावरणों में पूय उत्पन्न हो जाने आदि से ठोसता आजाने पर शब्द घन हो जाता है।

२—ठेपन द्वारा स्थिति ज्ञात करना—

अक्षक से ३/४ या १ इञ्च ऊपर तक फुफ्फुस शिखर रहता है यहीं तक ठेपन शब्द सुषिर रहता है। यदि ठेपन शब्दों में अन्तर आने पर यह बात हो जाय कि बांया शिखर दाहिने से नीचे है तब बांया फुफ्फुस विकार युक्त जानना चाहिए। यदि दोनों ही नीचे हों तो दोनों फुफ्फुस विकारी होते हैं। इसी प्रकार पृष्ठ और पार्श्व भागों पर ठेपन कर शिखर की स्थिति जाननी चाहिए। शिखर की स्थिति ज्ञात कर लेने पर अधो धारा, अग्र धारा तथा पाश्चात्य धारा कि स्थिति ज्ञात करनी चाहिए। इसके लिए प्रथम वायु कोष्ठ प्रकरण में वर्णित वक्ष में फुफ्फुस की स्थिति का अध्ययन उत्तम कार्य करता है।

फुफ्फुसों में विशेष शोथ, फुफ्फुसावरण शोथ, युक्त व तरल युक्त होने पर तथा फुफ्फुसावरण के मोटे हो जाने पर ठेपन से घन शब्द आता है।

श्रवण परीक्षा

प्रथम ही लिख चुके हैं कि फुफ्फुस परीक्षा में श्रवण परीक्षा ही मान्य है। इस परीक्षा द्वारा फुफ्फुस में उत्पन्न होने वाली सूक्ष्म से सूक्ष्म ध्वनि को श्रवण किया जासकता है जिससे रोग के ठीक २ निदान करने में सरलता रहती है। अतः यहां विस्तार में श्रवण परीक्षा के उपयोगी ज्ञातव्य का वर्णन किया जाता है।

परीक्षा विधि— इस परीक्षा को उचित रूपेण करने के लिये रोगी को ऐसी स्थिति में रखना चाहिए जिससे दोनों पार्श्व समान स्थिति में रहें। इस स्थित को उचित बनाने के लिये अग्रभाग की परीक्षा करते समय रोगी को पृष्ठ के बल लिटाएं तथा पृष्ठ की ओर परीक्षा करनी हो तब रोगी को उचित प्रकार से शिर झुका कर बैठाना चाहिए।

अब ध्वनि श्रवण यंत्र के ध्वनि ग्रहण भाग को समतल रूप से वक्ष पर जहां परीक्षा करनी हो लगाना चाहिए। इस ध्वनि ग्रहण भाग को न अधिक न इतना कम कि वायु प्रवेश कर जाय दबाना चाहिए अब रोगी को कहें कि नासा द्वारा इस प्रकार दीर्घ श्वास ले कि शब्द न हो। इस समय तत्परता से सूक्ष्माति सूक्ष्म ध्वनियों को सुनना चाहिये।

श्रवण द्वारा ज्ञातव्य ध्वनियां

श्वास प्रश्वास के समय होने वाला श्वास शब्द किस प्रकार का है। श्वास शब्दों के अतिरिक्त है या न नहीं तथा उच्चारित शब्द श्रवण किस भांति का प्रतीत होता है। इस ध्वनियों का ज्ञान करने के लिये अभ्यास आवश्यक है फिर भी कुछ शब्द का यथा शक्ति वर्णन नीचे दिया जाता है।

श्वास शब्दों का स्वाभाविक रूप

श्वास शब्दों का वास्तविक रूप उसे कहते हैं जो पूर्ण स्वस्थावस्था में श्रवण किया जाता है। यह श्वास शब्द दो प्रकार के सुनाई देते हैं। प्रथम कोष्ठीय शब्द तथा दूसरा प्रणालीय शब्द।

प्रथम कोष्ठीय शब्द—

वायु के आने जाने से कोष्ठों में होने वाले शब्द जो फुफ्फुस प्रदेश पर सर्वत्र सुनाई देता है कोष्ठीय शब्द कहते हैं। श्वास की दो गति होने से यह दो शब्द सुनाई देता है फिर भी किसी विराम के निश्वास के समय होने वाले शब्द प्रारम्भ हो जाते हैं। यह प्रथम से कुछ धीमा व कुछ अस्पष्ट होता है। यह शब्द प्रथम शब्द की भांति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्ण सुनाई नहीं देता। इस प्रथम तिहाई भाग को सुनाई देता है शेष नहीं। साधारणतया उच्छ्वास के समय देखे वाला शब्द निश्वास के समय देखे वाले शब्द से द्विगुण तक दीर्घ हो सकता है।

द्वितीय प्रणालीय शब्द—

वायु के श्वास प्रणाली अथवा श्वास नलिका से आने जाने के कारण यह शब्द होता है। यह बड़ी वायु प्रणाली पर अथवा टेंटुवे पर श्रवण किया जाता है। कोष्ठीय शब्द की अपेक्षा प्रणालीय शब्द तीव्र होता है। निश्वास उच्छ्वास से कुछ तीव्र व तीक्ष्ण होता है। इस प्रकार के शब्द का अन्य भागों पर प्रतीत होना किसी व्याधि का बोधक माना जाता है।

इस प्रकार के दो शब्द स्वस्थावस्था में श्रवण होते हैं। इन शब्दों में रोगों के कारण परिवर्तन हो जाते हैं। जिसका संक्षिप्त वर्णन नीचे करते हैं।

कोष्ठीय शब्द के परिवर्तित रूप —

१—तीक्ष्ण —यह वास्तविक शब्द से कुछ तीक्ष्ण होता है। तथा इसमें उच्छ्वास से निश्वास कुछ लम्बा रहता है। राजयक्ष्मा की प्रथमावस्था में और कभी २ कास (खांसी) में भी पाया जाता है।

२—दीर्घ—इसमें निश्वास स्पष्टतया दीर्घ प्रतीत होती है। वायुकोष्ठ विस्तृति तथा तमक श्वास वाले रोगी के निदान में दीर्घ श्वास स्पष्ट श्रवण होता है।

३—खर—वास्तविक शब्द से कुछ मोटा खर भिन्न प्रतीत होता है। साधारण कास तथा फुफ्फुस शोथ में ऐसा शब्द प्रायः मिलता है।

४—मन्द —यह शब्द अस्पष्ट अर्थात् धीमा होता है जिसमें श्वास शब्द न होने तक का कभी २ भ्रम हो जाया करता है।

कफज्वर अथवा फुफ्फुसावरण के मोटे होजाने से तथा तरल वृद्धि से यह अवस्था होजाती है।

शब्दाभाव—कभी कभी यह अवस्था हो जाती है कि ध्वनि विस्फारक यंत्र से भी श्वास शब्द श्रवण नहीं हो पाता। इसमें फुफ्फुसावरणों के तरल का वृद्धि करना मुख्य कारण होता है।

त्रुटित—रुक रुक कर शब्द का श्रवण होना त्रुटित शब्द कहलाता है। यह शब्द कभी कम और कभी अधिक होता रहता है। राजयक्ष्मा की द्वितीय अवस्था में यह प्रतीत किया जाता है।

कर्कश—अप्रिय शब्द अर्थात् कण्ठ में शोथ होने पर जब रोगी तीव्रता से बोलता है उस समान शब्द को कहते हैं। फुफ्फुस निर्बलता पर यह शब्द मिलता है।

प्रणालीय शब्द के परिवर्तित रूप

नालीय शब्द— किसी नलिका द्वारा वायु के निकलने के समान शब्द होता है। यह छोटी वायु प्रणालियों से संबंध रखने वाले फुफ्फुस खण्ड में उस समय प्रतीत होता है जब यह खण्ड शोथ युक्त हो। लोबर न्यूमोनियां (श्वसन ज्वर) में इसको स्पष्ट श्रवण किया जाता है।

धौंकनीवत्—धौंकनी से वायु फेंकने के समान शब्द होता है। यह बड़ी वायु प्रणाली से सम्बन्धित फुफ्फुस खण्ड के शोथ के कारण होता है। फुफ्फुस में कोटरों की अधिकता होने पर जैसे राजयक्ष्मा की गम्भीर अवस्था में कभी कभी मिलता है।

मध्यम—उक्त दोनों शब्दों के बीच का शब्द जो मध्यम आकार नामी वायुप्रणालियों से संबन्धित फुफ्फुस कोष्ठों के शोथ में होता है। राजयक्ष्मा की द्वितीय अवस्था और न्यूमोनिया में कहीं २ यह शब्द मिलता है।

कौप्यक—ऐसी शीशी के मुंह पर जिसका मुख संकुचित तथा उदर बृहत हो वायु फैंकने से उत्पन्न हुए शब्द के समान होता है। राजयक्ष्मा की अति गम्भीर अवस्था में बड़ी वायु प्रणाली के पास जब कोटर बन जाते हैं तब यह शब्द बनता है।

विशिष्ट शब्द—

एक विशेष प्रकार का शब्द और भी कभी कभी प्रतीत होता है। जो कोष्ठीय और प्रणालीय के मध्य का माना जाता है। इसमें निश्वास मोटा और दीर्घ तथा उच्छ्वास कर्कशवत् होता है। यह फुफ्फुस के ऊर्ध्व भाग में शोथ होने से होता है।

क्रमशः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रीष्मचर्या

लेखक—डा० श्रोउमप्रकाश शर्मा B. I. M. S. आयुर्वेदाचार्य
प्रकाश चिकित्सालय, गवां (बदायूं)

"शतं जीवेमशरदः,,(वेद) की प्रार्थना करने वाले देश की मृत्यु संख्या बढ़ी हुई है इस देश व्यक्ति की आयु कई वर्ष पूर्व २७ थी अब इसमें कुछ और कमी आगई है। बढ़ती हुई रोगों की भीषण बाढ़ चिकित्सा की न्यूनता एवं भिन्नता जहां इसके कारण गिने जाते हैं उन सब से अधिक है अपने प्रति अज्ञान, आरोग्य नियमों का न जानना, रोग न हो इस हेतु आयुर्वेद का स्वस्थवृत बहुत महत्वपूर्ण है। उसी स्वस्थवृत का एक अंग समूह है दिनचर्या, रात्रिचर्या एवं ऋतुचर्या। इसी ऋतुचर्या के विषय में यह लेख है।

काल का विभाजन सवंत्सर (वर्ष) में करने के बाद उसके दो भाग सूर्य की गति के आधार पर किये गये हैं जिनमें पहला है विसर्ग (दक्षिणायन) काल, यह सौम्य है। स्वास्थ्य के लिये उत्तम है दूसरा आदान (उत्तरायण) काल यह स्वास्थ्य के लिये अच्छा नहीं है। क्योंकि:—

आदानं पुनराग्नेयं तावेतावर्कं, वायु सोमश्च काल स्वभाव मार्ग परि ग्रहीताः कालर्तु रसो देहाबमानिवृत्ति प्रत्यय भूता समुपदिश्यन्ते। तत्र रविर्भाभिराददानो जगतः स्नेहं वाय वस्ती रुक्षाश्चोप शोषयन्त शिशिर वसन्ते ग्रीष्म यथा क्रमं रौक्ष्यंमुत पादयन्तोरुथान रसान तिक्त कषाय कषा-यकटुकांश्चाभि वर्द्धयन्तोनृणां दौर्बल्यं या वसन्ति।

—च० सू०

साथ ही असावधानी पर भयंकर विशूचिका जैसी कई संघातिक रोगों का उद्भव भी है। इस आदान काल को भी तीन ऋतुओं में विभाजित किया है। शिशर, बसन्त, ग्रीष्म जिनमें पूर्व दो ऋतुओं का काल समाप्त है अन्तिम ग्रीष्म अब ही प्रारम्भ हुआ है।

सुश्रुत में दोषों के साथ ऋतु के मासों के वर्णन के अनुसार 'वैशाख ज्येष्ठो ग्रीष्म' के अनुसार यह वैशाख मास में प्रारम्भ होता है सूर्य की तेज किरणें पृथ्वी और वायु को तप्त कर देती हैं जगत का तरल भाग शुष्क हो जाता है। शरीर शुष्क तृषित हो जाता है क्षुधा कम लगती है आलस्य रहता है स्वास्थ्य के लिये यह काल निकृष्ट है "मयूखैर्जगतः सारं ग्रीष्मेपे पीयतेरवि" अतएव प्रकति के नियमानुसार जो चर्या परिवर्तन नहीं करते उनके शरीर 'शरीरं व्याधिमन्दिरम्' हो जाते हैं किन्तु धर्मार्थ काम मोक्ष को साधने के लिये ऋतुचर्या ज्ञान प्राप्त कर शरीर को स्वस्थ रखना चाहिए।

ग्रीष्मे तीक्ष्णांशु रादित्यो नैऋतोऽसुखः
भूस्तप्ता सरितस्तन्व्यो दिशः प्रज्वलता इव।
भ्रान्त चक्रा ह्युगला पयः पाना कुला मृगाः,
ध्वस्त वीरु तृण लता विपर्णाङ्कित पादपाः॥

सत्य एवं भीषण वर्णन है इस ऋतु का तृषित पक्षी,मृग जन सभी आतुर हो जाते हैं जगत स्नेह तरल सभी रूक्ष और शुष्क होजाता है पिछली ऋतु में यदि कफ का वमन न हो तो जो वसन्त के रोग हैं वे और उपद्रवों के साथ भीषण हो जाते हैं पित्त (अग्नि) की गति ऊर्ध्व है ही उसमें यदि वात का संयोग हो जाए तो गति में शक्ति आजाती है यही कारण है इस ऋतुमें ऊर्ध्व जत्रु एवं मानसिक अभिष्यन्द आदि रोग बहुत होते हैं शरीर एवं मन में गरमी एवं आलस्य स्वाभाविक है होना इस ऋतु में।

अतएव वातपित्त को संचित एवं कुपित करने वाला आहार व्यवहार त्याग देना चाहिए। इस ऋतुचर्या का वर्णन 'त्रयोउपस्तम्भाः आहार निद्रा ब्रह्मचर्यमिति' विभाग में करेंगे।

आहार—

इसमें व्यहार का भी समावेश होजाता है। इस ऋतु में तिक्त एवं कषाय और कटुरस का अधिक सेवन वर्ज्य है तथा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जितना उपयोग अन्य ऋतुओं में होता है उससे भी कम करना ठीक है। भोजन रुक्ष गुरु, बासी त्याग देना चाहिए। सदैव क्षुधा से कम करना चाहिए अधिक भोजन हानिप्रद है विशेषकर इस ऋतु में भोजन सदैव ताजा मधुर हल्का शीतल स्निग्ध पौष्टिक एवं तरल श्रेयस्कर है। "स्वादु शीतं द्रवं स्निग्धं मन्नपान तराहितम, शीत सशर्कर मन्थ जांगलान मृग पाक्षिणः घृतं पयः सशालमन्न भजन् ग्रीष्मेन सीदति ॥ उपर्युक्त मन्थ शब्द अर्थ टीकाकारों ने तक्र किया है मेरे अपने विचार से तक्र उपर्युक्त नहीं क्योंकि 'नोष्णकाले न दुर्बले' ग्रीष्मऋतु में मट्ठा त्याज्य है अतएव मन्थ शब्द से प्रचलित सत्तू ग्रहण करना उपयोगी है क्योंकि—शीतवारि गोलितघृतास्यक्ताः नाति स्वच्छा नाति सान्द्राः सक्तवो मन्थ – इस ऋतु में शीत वारि एवं सत्तू का विषेश प्रयोग है शीतवारि के विषय में देखिये – वसन्ते कौपं प्रासवणं वा ग्रीष्मेस्त्वप्येव (सु०सू०) ग्रीष्म ऋतु कूए एवं झरने का शीतल पान विशेष हितकर है कूप जल के गुण–श्लेष्मेघ्न दीपनं लघुः–कफ का नाशक क्षुधा वर्धक हल्का कूए का जल गर्मी में पेय है। इसी प्रकार झरने का जल कफघ्न दीपनं हृद्यं लघु प्रासवणेपि–यह हृदय को रुचिकर कफ का नाशक हल्का दीपन करने वाला झरने का जल भी पीना चाहिए–जल को शीतल करने के उपाय—सप्त शीती करणानि भवन्ति तद्यथा अष्टिका भ्रमणं व्यन्जनं वस्त्रोद्धरण वालुका प्रकोपणं शिक्यावलम्बनचेति। शीतल जल के गुण—

निर्गन्धम व्यक्त रसं तृष्णाघ्नं शुचि शीतलम।
अच्छं लघु च हृद्यं तोय गुण वहुच्यते॥

अतएव शीतल जल का विधान है इस ऋतु में खूब शीतल जल पेय लें कम से कम प्रातः और अपरान्ह में अवश्य लें।

त्याज्य–

१–वात एवं पित्त को कुपित करने वाला आहार विहार छोड दें। इस ऋतु में व्यायाम भी हितकर नहीं। स्वास्थ्य के लिये थोड़ा प्रातःकाल एवं सायंकाल भ्रमण तथा हो सके तो थोड़ा स्वच्छ शीतल प्रवाही जल में तैरना पर्याप्त है।

२–शराब इस ऋतु में बिलकुल नहीं पीनी चाहिए। यदि न सरे तो अल्प मात्रा शराब अधिक मात्रा में शीतल जल मिलाकर लें।

मद्य मल्पं नवोपम मथवासु बहूरकम्।
लवणाम्ल कटूष्णानि व्यायाम चात्रवर्जयेत्॥
—ग्रीष्म ऋतु

अतएव सादा सात्विक आहार–विहार करना चाहिए साथ ही प्रकृति पदत्त फलों को यथा ककड़ी, खरबूजा, तरबूज, आम आदि को भी न भूलना चाहिए।

इस ऋतु का परिधान स्वच्छ एवं सफेद रंग का होना चाहिए, सफेद रंग सूर्य रश्मियों को आत्मसात न कर परिवर्तित कर देता है। अतएव अधिक उष्णता नहीं होती कपड़ा मोटा हो जिसमें वायु का प्रवेश न हो सके बल्कि स्वेद एवं शीतलता रहे।

इस ऋतु में जूता एवं छाता भी अत्यन्त आवश्यक है, जिससे शारीरिक एवं मानसिक उष्णता न बढ़े। इस ऋतु में नंगे सिर पैर धूप में चलने से, शीतल जल अल्प पीने से लू अंशुघात रोग प्रायः होता है। इसकी चिकित्सा प्रथक् लिखेंगे पर उपर्युक्त कारणोंसे सावधानी वरतनी चाहिए, इमली एवं आम का पानक, पोदीना एवं प्याज भी लाभकारी है।

निद्रा–

इस ऋतु में प्रायः शारीरिक एवं दिन तापमान बढ़ने से नींद नहीं आती, रातों करवटें बदलनी पड़ती हैं, जिससे कोष्ठबद्धता, अजीर्ण स्वाभाविक है, अतएव इसमें नींद आने का उपाय करें, रात्रि कम होने से ग्रीष्म ऋतु की अपनी विशेषता के कारण इसमें दिन के भोजनोपरान्त मध्याह्न में भी २ घण्टे शयन भी उपयोगी है। ग्रीष्म वर्जेषु कालेषु कहकर दिन में सोने के लिए गरमी को छोड़ कर अन्य ऋतुओं में दिन में सोने का निषेध किया है।

श्लेष्मा चादान रुक्षाणां वर्द्धमाने मारुते,
रात्रिणां चाति संक्षेपाद्दिवास्वप्न प्रशस्यते।

अतएव निद्रा का भी इस ऋतु में विशेष ध्यान रखें। रात्रि की शुभ्र चांदनी एवं शीतल आकाश में, दिन में कच्चे शीतल घर में छिड़काव कर खस की टट्टियों का उपयोग कर मुलायम सुखकर बिछौने पर शयन करें। शयन गृह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुलाब, कमल आदि शीतल सुगन्ध का भी प्रबन्ध हो सके तो करें।

दिवा शीत गृहे निद्रां शशी चन्द्रांशु शीतले,
भजेच्चन्दन दिग्धाङ्क प्रवाते हर्म्य मस्तके।

शैय्या सुख कर हो—

स्वास्तीर्णं शयनं वेश्य सुखं कालस्तथोचितः।
आनयन्त्य चिर निद्रां प्रनष्टायानि मित्ततः॥

जिससे निद्रा अच्छी आए।

ब्रह्मचर्य--

तीसरा उपस्तम्भ है ब्रह्मचर्य। आयुर्वेद के आचार्यों ने कवाय बिल्कुल मना लिखा है—

ग्रीष्मकाले निषेवेत मैथुनात द्विरतो नरः।

मैथुन से शरीर में वायु कुपित होगा, क्षीणता आएगी जब कि इस ऋतु में स्वाभाविक क्षीणता होती है उष्मा बढ़ने से उन्माद एवं नपुंसकता जैसे रोग न भी हों तो रोग क्षमता तो घटेगी ही, अतएव इस ऋतु में पूर्ण ब्रह्मचर्य आवश्यक है।

अब संक्षेप में दिनचर्या के नमूना लिखकर समाप्त करता हूं।

दिनचर्या--

प्रातः ब्रह्ममूहुर्त में ४ बजे उठकर कुल्लाकर शौचादि से निवृत्त हो उषःपान कर भ्रमण करें तत्पश्चाद् स्नान करें सम्भव हो तो तैरकर स्नान करें फिर अपना पूजन आदि कर कुछ जल पान कर ७ या ८ बजे तक उपरोक्त कार्य क्रम से निवृत्त होजांए।

८ बजे से १२ बजे तक स्वाध्याय, पठन, लेखन एवं अन्य व्यवसायिक कार्य करें। १२ बजे से १ बजे के मध्य भोजन कर दिवा शयन करें, ३ बजे के लगभग उठकर कुछ थोड़ा शीतल जल पेय सत्तु, शर्बत ठण्डाई आदि के साथ मौसमी फल लें। फिर ६ बजे तक शेष व्यवसायिक कार्य करे। सायं ६ बजे से ८ बजे तक मनोरञ्जन, शौच आदि से निवृत्त हो भोजन करे। रात्रि के ९ बजे तक आप अन्य कार्यों को करें १० बजे प्रभु की प्रार्थना कर नींद की गोद में चले जाएं। आहार-विहार खान-पान के सम्बन्ध में पहिले काफी लिखा जा चुका है।

शीतल पेय में, बेल एवं ब्राह्मी तथा शहतूत का शर्बत बहुत अच्छा है यह मस्तिष्क की उष्णता को कम करने में विशेष उपयोगी है बेल उष्मा कम कर दृष्टि शक्ति भी बढ़ाते हैं सत्तुओं में जौ और चावल के श्रेष्ठतम हैं चने का भी अच्छा है। नीचे एक ठण्डाई का नुस्खा है जो मेरे अनुभव से बहुत अच्छा है कम कीमत में पर्याप्त समय से ग्रीष्म ऋतु में मैंने स्वयं पीकर एवं अन्य उपयोगों से लाभ होते देखा है।

ठण्डाई

ब्राह्मी	मुनक्का	गुलाब फूल
गुल निलोफर	बीज खरबूजा	मग्ज कद्दू
मग्ज ककड़ी	मग्ज खीरा	पोस्त खस
सौंफ	कालीमिर्च	चन्दन चूरा
बादाम	इलायची	—प्रत्येक समान भाग

—यवकुटकर रखें, एक आदमी को १ तोला ले, भांग के समान सिल पर खूब पीस कर घोल लें मिश्री मिला कर पीए पिलाएं।

इस ठण्डाई के उपयोग से तृष्णा मिटेगी, दिल को ताकत मिलेगी, मन शीतल एवं प्रफुल्ल रहेगा, शारीरिक एवं मानसिक उष्णता कम होकर नेत्राभिष्यन्द, अनिद्रा आदि रोगों से बचे रहेंगे साथ ही सोडा, लेमन, आइस-क्रीम जैसी हानिकारक वस्तुएं तात्कालिक शीतलता के बदले दांत और आंत्र रोग की मुक्ति एवं धन के अपव्यय से बचे रहेंगे। एक बार परीक्षा अवश्य करें इस ठण्डाई की।

स्वर्ण बसन्तमालती नं०१— जीर्ण ज्वर और ज्वर के बाद की कमजोरी को दूर करने के लिये अव्यर्थ औषधि है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुष्करमूलम्

लेखक – आचार्य कविराज महेन्द्रकुमार शास्त्री बी० ए०, आयुर्वेदाचार्य, वैद्यवाचस्पति

पुष्करमूल आयुर्वेद की सन्दिग्ध वनस्पतियों में से है। इसका पूर्ण निर्णय अभी तक नहीं हुआ आचार्य भावमिश्र ने जैसा कहा है—"पद्मपत्रं च काशमीरं कुष्ठभेदमिम जगु" इसके अनुसार तो यह काश्मीर में उत्पन्न होने वाली वनस्पति है और कुष्ठ का ही एक भेद है अथवा उससे मिलती जुलती वनस्पति है। गुणों में भी दोनों लगभग समान है। आचार्य चरक ने अग्रयों के वर्णन में पुष्करमूल को हिक्का श्वास कास पार्श्वशूल हराणां द्रव्यों को श्रेष्ठ बताया है।

आधुनिक वनस्पति शास्त्रियों ने सूर्यमुखी जाति के उद्‌भिज्जों का पता लगाया है। इनका काश्मीर की लोकभाषा में प्रचलित नाम भी "पोष्कर" है। संभवतः इन्हीं में से कोई पुष्करमूल हो। इस लेख में जिस वनस्पति का विवरण दिया गया है उसे उद्भिज्ज शास्त्र में इन्युला ग्रान्डि-फ्लोरा (Inula Grandi flora) कहते है। यह सूर्यमुखी कुल (Compositeae) की वनस्पति है। इसी के साथ की वनस्पति इन्युला रेसमोसा तथा इन्युला रायेलियाना हैं। यहां पर इनका वानस्पतिक वर्णन करना उचित है। यह वर्णन श्री बी. श्रो. कावेन्ट्री नामक वनस्पतिविशारद की 'वाईल्ड फ्लावर आफ कश्मीर' (Wild flowers of Kashmir) नामक पुस्तक से लिया गया है। जो पाठक अंग्रेजी और बाटनी जानते हों उनसे हमारा आग्रह है कि वे इस पुस्तक का अवश्य अध्ययन और संग्रह करें। यह पुस्तक शायद आज कल दुष्प्राप्य हो चुकी है।

इन्यूला ग्रान्डि फ्लोरा

पुष्करमूलम्

परिचयः—यह एक सरल, दृढ़, बहुवार्षिक वनस्पति है। काण्ड पत्र बहुल और लम्बा होता है। जिसके शिखर पर अन्तिम पुष्पकलिका रहती है।

काण्ड—१–१½ फुट ऊंचा सरल दृढ़ और शाखाओं से रहित।

पत्र—उपपत्र रहित, साधारण, अन्तरित, अवृन्त, दीर्घ लम्ब व अण्डाकार अथवा दीर्घ लम्ब मालाकार, तीक्ष्णाग्र अथवा कुण्ठाग्र, ग्रन्थिमय, धारा दन्तुरित, अत्यल्प रोमयुक्त।

पुष्प—चमकदार पीला, एकाकी, शिखरान्त पर स्थित, पुष्पाधार नग्न।

फल—एकाकी,

विशिष्ट लक्षण—इसका साधारण सरल तना और तने के सिर पर अवस्थित एकाकी पीला पुष्प इसे इन्युला रायलीना से पृथक् करता है।

पुष्पकाल—अगस्त, सितम्बर।

प्राप्ति स्थान—९ से १३ सहस्र फुट की ऊंचाई पर काश्मीर के आकर्व, शीशनाग, जोजपाल, टेनिन आदि स्थान हैं।

उद्भव—पश्चिमी हिमालय, काश्मीर से कमायूं, नेपाल आदि तक तथा काकेशस में भी।

उपयोग—इसकी मूल सुगन्धित होती है और कुष्टमूल में मिलाकर बेची जाती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैद्यकीय वर्णन

व्यवहार्य—अंग-मूल।
मात्रा—४ रत्ती से ८ रत्ती तक।
प्रभाव्य अवयव—फुफ्फुस
रस—कटुतिक्त
गुण—उष्ण, शोथ शामक, पाचक, वात कफहर।
रोग—श्वास कास, पार्श्वशूल।
नामानि—

पौष्करं पुष्करजटा काश्मीरं पुण्यसागरम्।
पद्मपर्णं वृत्तरुहं वातालूयं पुष्कराह्वयम्॥
ब्रह्मतीर्थं पुष्करांघ्रिमूलं चीरं सुगन्धिकम्।

नाम—इन नामों से पुष्कर का परिचय मिलता है। यह भी कुष्ठ का ही कोई भेद है या उसी के समान क्षुप है। अतएव भावमिश्राचार्य ने कहा है—

"पद्मपत्रं च काश्मीरं कुष्ठमेद्वमिमं जगुः।"

वानस्पतिक वर्णन ऊपर किया गया है।

गुण—

पौष्करं कटुकं तिक्तमुष्णं वात कफ ज्वरान्।
हन्ति श्वासारुचिकासान् विशेषात् पार्श्वशूलनुत्॥
—भाव०

पुष्करं हिक्का श्वासकास पार्श्वशूल हराणाम्।
—चरक० सू० अ० २५

गुण—पुष्करमूल–चरपरा, कड़वा, उष्ण वीर्य मधुरविपाकी वात कफ के रोगों का नाशक, श्वास, अरुचि और कास एवं विशेषकर पार्श्वशूल नाशक है। यह हिचकी, श्वास कास और पार्श्वशूल शामकों में सर्वोत्तम है।

प्रभाव तथा प्रयोग—कुष्ठ के समान ही समझें। यह न्यूमोनियां, पार्श्वशूल, प्लूरिसी, वात कफ ज्वरों में लेप करने के और खाने के दोनों ही काम आता है। ज्वर को भी कम करता है। शोथ को शांत करता है और कफ को भी निकालता है। कुष्ठ के समान ही इसकी क्रिया समझें।

आयुर्वेद की अनुपम ज्वर नाशक महौषधि

स्वर्ण बसन्त मालती

(नं० १)

आयुर्वेद शास्त्र में स्वर्ण वसन्त मालती के अनुपम गुणों का वर्णन मिलता है। इसमें स्वर्ण का भी योग है। इस कारण यह जीर्ण ज्वर एवं क्षयज ज्वर को भी नष्ट करती है। आज के वैज्ञानिक भी आयुर्वेद की इस महत्ता को स्वीकार करने लगे हैं कि अत्यल्प मात्रा में दिया गया स्वर्ण ज्वर को निश्चित रूप से नष्ट करके बल प्रदान करता है। मालती की एक मात्रा में स्वर्ण इतनी सूक्ष्मा मात्रा में आता है कि इसके गुणों की प्राप्ति में कोई असंदिग्धता ही नहीं रह जाती है।

हम अपनी मालती के निर्माण में श्वेत मिर्च, हिंगुल के स्थान पर रससिंदूर एवं खर्पर के स्थान पर शायद भस्म का प्रयोग करते हैं। स्वर्ण के स्थान पर बर्क का प्रयोग न करके स्वर्ण भस्म डालते हैं।

इन सभी कारणों से यह रसायन परम लाभप्रद है। हमने सैकड़ों बार इससे अद्भुत लाभ उठाये हैं।

शरद ऋतु में ज्वर एवं क्षय रोगियों को रोग युक्त करने में यह रसायन अनुपम है। निराश रोगियों के लिये अमृत तुल्य है। एक बार परीक्षा करें।

प्राणाचार्य भवन प्रायवेट लिमिटेड, बिजयगढ़ (अलीगढ़)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिद्ध मरहम--

लगभग पन्द्रह वर्ष हुये होंगे मेरी बहिन के गले में शोथ हुआ और बढ़ता ही गया। यहां तक कि सारा गला कान तक सूज गया। गर्दन हिलाने में भी कष्ट होता था। वाह्योपचार से शोथ तो कुछ कम हुआ। लेकिन आगे चलकर कण्ठ माला का रूप धारण कर लिया। दिनों दिन अधिक होता गया। काफी दवाई की किन्तु कोई लाभ नहीं हुआ शरीर कृश होगया। जीवन संकट मय होगया। इसी रोग में उनके दो बच्चे पहिले मर चुके थे। अब एक गोद की बच्ची को यह रोग और होगया। अब तो सारी मुसीबत एक साथ जीजाजी के सिर पर आगई। वे घबरा गये। भाग्य से एक दिन एक महात्मा भिक्षा लेने आये। उनसे जब यह मुसीबत कही तो उन्होंने कृपा करके यह प्रयोग बतलाया। इसके प्रयोग करने से वे गांठें फूट गई और खुरण्ड उपड़ कर सब व्रण स्वस्थ होगये और इस प्रकार एक बार के प्रयोग सदा के लिये इस दुष्ट रोग से छुटकारा मिल गया।

इसके बाद उनके कई बच्चों को यह कष्ट हुआ और इसके लेप करने से सदा के लिये यह दुखद रोग चला गया। अब तो उनके घरका यह सिद्ध प्रयोग हो चुका है।

एक स्त्री के कान के सामने से लेकर हनु (ठोड़ी) के नीचे होकर सारा गला वेल गम्भीर व्रण से भर गया। चार पांच जगह फूट कर चूने (स्रवित होने) लगा। उसमें कभी चीस कभी जलन और कभी असह्य वेदना होती। इस पर भी इसी सिद्ध मरहम का लेप किया तो एक सप्ताह में आराम आगया अब उसे भी लगभग १० वष होते आये कभी कोई शिकायत नहीं हुई है।

इस प्रकार इस सिद्ध मरहम ने अनेक दुखियों का दुख दूर किया है मैंने भी इसे बनाकर प्रयोग किया है फल पूर्ण सन्तोष जनक रहा है। इसके साथ यदि प्रोकेन पेनिसिलीन (Procain Penicillin) ४ लाख यूनिट का इन्जेक्शन भी लगाया जावे तो विशेष जल्दी स्वस्थ होता है और पूय नहीं पड़ती।

अब वह सिद्ध प्रयोग विद्वान वैद्यों के समक्ष प्रस्तुत करता हूं। आशा है पाठकगण से बनाकर अपने रोगियों पर व्यवहार कर मान सम्मान प्राप्त करेंगे और फलाफल आयुर्वेदीय पत्रिकाओं द्वारा सूचित करेंगे।

प्रयोग निम्न प्रकार है।

से (सेव) नाम का एक जानवर होता है उसके सूले जलाकर निर्धूम कर लें राख न होने दें उनको पीसकर भस्म बना लें। इस भस्म से तीन गुना गौघृत लेकर कांसी के पात्र में १-१ वार जल से धोलें। फिर दोनों को मिलाकर मरहम तैयार करलें। बस यही सिद्ध मरहम है।

इसे लेप करने से सब प्रकार के घाव-नाड़ी व्रण, बेल गम्भीर व्रण कण्ठमाला, अपची,विद्रधी, कक्षा (कांखोलाई) ग्रन्थिव्रण सब ठीक होजाते हैं। यदि इसे प्रारम्भ में ही लगा दिया जाये तो शोथ बैठ जाता है। इसके एक के ही प्रयोग से व्रण पक कर फूट जाता है और स्वयमेव रोपण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होकर आराम हो जाता है। महिनों और वर्षों के पुराने व्रणों को कुछ ही दिनों में स्वस्थ कर देता है।

नोटः—यदि इसके विषय में कुछ समझ में न आये तो जवाबी पत्र देकर स्पष्टीकरण करा सकते हैं।

—राजवैद्य ईश्वरीदत्त शर्मा

कुकर खांसी की शर्तिया दवा—

कंजा	बड़ी पीपर	छोटी पीपर
	प्रत्येक एक एक तोला	
काला नमक		½ माशा
पत्ता वांसे का		२½

विधि—सबको एकत्र जव कूटकर आधा पाव पानी में मिट्टी के वर्तन में औटावें आधी छटांक रहने पर मिट्टी के वर्तन में रखलें।

मात्रा—३-३ माशा दिन में ४ वार चटावें।

गुण—इससे कुकर खांसी शर्तिया दूर होगी। यह बच्चों की एक मात्रा है बड़ों को भी लाभ होगा इसी को मैं अपने रोगियों पर वर्तता हूं।

कुकर खांसी पर—

छोटी इलायची के दाने		तेजपत्र
दालचीनी		प्रत्येक ६-६ माशा
मिश्री	मुलहठी	मुनक्का
खजुरिया		प्रत्येक १-१ छटांक
छोटी पीपल		२½ तोला

विधि—इन सब को कूट छान कर गोली बनालें।

मात्रा—१ गोली मुंह में डालकर चूसा करें इससे भी शीघ्र लाभ होगा।

स्त्रियों के समस्त रोगों पर रामवाण—

गूलर का दूध	वट का दूध
प्रत्येक १-१ तोला	

विधि—एक में मिलाकर १ छटांक चीनी में खूब मिलाकर स्त्री को पूर्व दिशा में बैठाकर सब दवा खिलादें ऊपर से गाय का दूध पिलादें यह दवा एक ही दिन खिलाई जाती है और पथ्य दो सप्ताह तक सेवन कराना चाहिये।

गुण—इस दवा के सेवन करने से कैसा ही स्त्री का गुप्त रोग–श्वेत प्रदर, रक्तप्रदर, नष्टार्तव, वेदनार्तव इत्यादि रोग भली भांति दूर होकर अच्छे प्रकार से स्त्री शुद्ध हो जाती है सन्तान पैदा करने की शक्ति पैदा हो जाती है। इसमें कोई शक नहीं। इसी प्रयोग से घर में सुन्दर बालक का जन्म होकर भाग्यवान एवं वही घर सुशोभित हो जाता है। वही स्त्री भाग्य वान समझी जाती है जिस घर में बालकों की तोतली बोली की आवाज सुनाई देती है। पाठक वन्धु परीक्षा कर लाभ उठायें।

अण्ड वृद्धि पर—

जिस रोग में अण्ड वृद्धि (अण्ड कोष) पर चमड़ा बड़ा एवं मोटा होजाने से अण्ड वृद्धि में यह विकार शीघ्र ही बढ़कर उग्ररूप धारणकर लेता है। इसके निवारणार्थ सरल प्रयोग यह है कि जल में नमक मिलाकर आग पर गरम करें तथा इसी सुखोष्णजल से दिन में ५-७ वार धोना चाहिये पश्चात् छोटी इन्द्रायण की जड़ को पीस कर रेंड़ी के तेल में मिलाकर दिन में २-३ वार लेप करें साथ ही साथ इन्द्रायण की जड़ का चूर्ण २ माशा की मात्रा प्रातः सायं गौ दूध के साथ सेवन कराना चाहिये। शीघ्र लाभ होगा।

डाढ़ के दर्द पर—

२ रत्ती हींग को खूब पीस कर आक के पत्ते को गरम कर निचोड़ के और उसी अर्क में हींग मिला कर जिस तरफ दर्द होता हो उसी ओर के कान में डाल दें। डालते ही शीघ्र दर्द दूर हो जाता है। परन्तु यह दवा कीड़ा वाले डाढ की दवा है।

अतिसार पर—

३½ माशा गूलर के पत्ते (कोमल) खूब महीन पीस १ छटांक पानी में घोलकर एक शीशी में भर ले और एक शीशा आग में गरम कर उसी जल में बुझा दे, बस दवा तैयार होगई। यदि दस्त जोर के साथ आते हों तो २

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घण्टा के अन्तर से दें। यह मात्रा एक दिन की है। यह प्रयोग डाक्टरों को चिनौती देने वाला है। मेरा कई बार का परीक्षित है।

—श्री लक्ष्मीनारायण शुक्ल वैद्य

गर्मी उपदंश—

तिल शुद्ध भिलावा —४-४ तोले

खुरासानी अजवायन बीजबन्द

बिलाईकन्द इलायची लौंग

अजवान देशी —प्रत्येक १-१ तोला

शुद्ध पारा शुद्ध रस कपूर अकरकरा

तीनों ६-६ माशा

पुराना गुड़ १० तोले

—गाय का दही या घी में लपेटकर खावे।

मात्रा—छोटे बेर के समान। ७ दिन खावे।

पथ्य—उरद की दाल गेहूं की रोटी, घी खूब खावें और कोई चीज न खावें।

दाद उकौता की दवा—

गन्धक जमालगोटा नीलाथोथा

—समान भाग लेकर भैंस की लौनी या घी में ताम्र पात्र में तांबे के पैसे से १ दिन घोटे। फिर आंख मुंह बचाकर शरीर में लगावे और आग से सेके। उस दिन कुछ न खाय। शाम को गोबर से उबटन कर नहावे। प्रातः उठकर नहा कर दही भात खावे।

—पं० दयाराम दुबे भिषग्भूषण, छिकहरा

प्रसूत रोग पर शतप्रतिशत लाभदायक—

प्रतापलंकेश्वर रस २ रत्ती से ४ रत्ती तक

लोह भस्म १ रत्ती से १½ रत्ती तक

—यह एक मात्रा है। सुबह शाम शहद के साथ प्रयोग करें।

सहयोगी औषधि—इसके १ घण्टे बाद दोनों समय लवंगादि चूर्ण आधा तोला। अनुपान—गाय का दूध शाम को शतावरी तैल की मालिश, भोजन के बाद दशमूलारिष्ट १ तोला बराबर जल में मिलाकर।

पथ्य—गेहूं का फुलका, दूध।

अपथ्य—शीत वायु कारक पदार्थों का सेवन वर्जित है।

दो हफ्ते में रोग विदा हो जाता है, प्रसूत ज्वर के तीव्र ताप में उन्माद, कास, शिर दर्द, वमन, कफ दोष, दांत लगना, अफरा, शूल, अतिसार इत्यादि पर अति शीघ्र काम करता है।

मलेरिया पर अद्भुत प्रयोग—

सत्त कुचला शुद्ध फिटकिरी ३-३ रत्ती

शुद्ध नवसार २ रत्ती

—नागरमोथा १ माशा का १ औंस जल में कल्क बनाकर उपरोक्त दवा इसमें घोल दें। बस दवा तैयार हुई। जवानों को एक खुराक वृद्धों को१ खुराक एक औंस की है। ज्वर आने से पहले दो खुराक देनी चाहिये। इससे पहले अभयादि वटी १ या २ गोली गरम पानी से सुबह प्रयोग करनी चाहिये। पेट साफ होने पर उक्त दवा का सेवन करना चाहिये। उक्त मिक्श-चर का अनुपान गाय का दूध एक पाव लेना चाहिये।

अपथ्य—चावल, दही, उरद इत्यादि

पथ्य—मूंग का यूष अथवा दलिया। भूख न हो तो लंघन अच्छा है।

२-३ दिन ज्वर का बहिर वेग होता है अतः घबड़ाना नहीं चाहिये बाद ज्वर बिल्कुल नहीं रहता। सात दिन में कैसा ही मलेरिया हो शान्त हो जाता है। बच्चें व गर्भिणी को नहीं देना चाहिये।

—श्री वैद्य कृष्णानन्द जोशी

मलेरिया ज्वर पर—

मकड़ी का जाला नग १ लेकर गुड़ में लपेट कर मले-रिया, एकतरा, तिजारी बुखार वाले को ज्वर चढ़ने से पूर्व ३ घण्टे पहले उसे बिना बताये निगलवा देने से ज्वर शर्तिया उसी दिन नहीं चढ़ेगा। अगर चढ़ भी जावे तो फिर दूसरे रोज देने से किसी भी हालत में नहीं चढ़ेगा। सैकड़ों बार का परीक्षित है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हर प्रकार के प्रमेह पर--

बट का दूध १५ बूंद १ बताशे में डालकर सुबह शाम सेवन करे। हर प्रकार के प्रमेह को केवल २१ दिन में जड़ से नष्ट करता है।

हिचकी, वमन व प्यास बंद करने के लिये-

पीपल की छाल जलाकर उसका कोयला बना लो। इस कोयले को पानी में बुझाकर रोगी को पिलाते रहो।

हर प्रकार के अतिसार में-

बबूल की १ तोला ताजा पत्तियां लाकर जल में घोटकर पिलाने से रक्तातिसार में तो अत्यन्त ही लाभ होता है। व हर प्रकार के अतिसार में भी बहुत ही गुणकारी है।

पेशाव रुक जाने पर-

भैंस के कान का मैल पानी में मिलाकर पेड़ू पर लेप करने से रुका हुआ पेशाब तत्काल खुल जाता है।

नेत्र पीड़ा पर--

१—ग्वारपाठे के पत्ते को एक ओर से छीलकर उसको गरम करले और रोगी की जिस आंख में कष्ट हो उस ओर के पांव के अंगूठे में या पांव के तलुवे पर बांध दो अवश्य ही आराम होगा।

२—सत्यानाशी (स्वर्णक्षीरी) का दूध (लेप) एक सलाई दिन में तीन बार दुखती आंखों में डाले। शीघ्र ही आराम होगा।

जाड़े बुखार पर--

बिना खिला आक का फूल लेकर गुड़ में लपेटकर बुखार चढ़ने से ३ घण्टा पहिले से १—१ घण्टे के बाद तीन बार खिलाने से ज्वर उसी दिन नहीं चढ़ेगा। कम से कम तीन दिन दे।

वद या गांठ पर--

चूना और शहद मिलाकर घोलकर कपड़े पर मरहम की तरह से लगाकर ऊपर से बांध दे। इससे गांठ बैठ जायेगी।

विष का असर न हो-

जो आदमी रोटी खाने से पहले २-३ रत्ती रीठा का सेवन करता रहता है उसको किसी प्रकार का विष असर नहीं करता है।

नासूर पर--

जिस रोगी को नासूर हो उसका प्रातः काल का पेशाव मिट्टी की हांडी में उबाल कर २-३ माशा रहने पर रुई का फाया तर करके नासूर पर बांध दे या नासूर के अन्दर दबा दे। इसी तरह लगातार बांधते रहें अवश्य ही लाभ होगा।

इसी तरह अरण्ड के पत्तों को कूटकर रस निकालकर उबाले। २-३ माशा रहने पर रुई का फाया तर करके नासूर पर बांध दे या नासूर के अन्दर दबा दे।

प्लीहा पर--

नागफनी के पत्तों को चाकू से अच्छी तरह छीलकर छोटे-छोटे टुकड़े करलो। १—१ टुकड़ा सुबह शाम नमक के साथ खावे।

प्रदर रोग में--

चूहे की मेंगनी ८ माशे में बरावर की मिश्री मिलाकर दूध के साथ तीन दिन खाने से लाल, सफेद सब तरह के प्रदर रोग नष्ट होते है।

कर्ण रोग पर--

आक के पीले पत्तों पर थोड़ा घी लगाकर और आग पर गरम करके उसका रस कान में डालने से कान का दर्द फौरन मिटता है।

मृगी रोग पर--

भैंस का सुम जला लो। उसकी राख ४ माशे सवेरे ही खिलाने से मृगी जाती है।

बालकों के दांत आसानी से निकालने के लिये

कायफल बालक के गले में बांधने से बालक के दांत आसानी से निकल आते हैं।

—डा० अर्जुनसिंह वर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीमान वैद्यराजों से विनीत प्रार्थना है कि आयुर्वेद और वैद्यों की शान बढ़ाने वाले, शत प्रतिशत शर्तिय फायदा करने वाले अनुभूत अचूक चमत्कारी योग भेजे या प्रकाशित करें। जिस वैद्यराज का अचूक गुणकारी सिद्ध योग होगा, उन्हें गुरू सम्मान में कम से कम ५१) अवश्य भेंट किया जायेगा।

प्रश्न नं० १--

बच्चों के सूखा रोग को ३ दिन में फायदा करने वाले सिद्ध योग का पूरा विवरण लिखें।

प्रश्न नं० २--

बच्चों के हरे, पीले, बदबूदार, पतले दस्तों को २४ घण्टे में फायदा करने वाले अचूक योग।

प्रश्न नं० ३--

बच्चों की वमन (उल्टी) में २ मात्रा देते ही तुरन्त फायदा करने वाले अचूक योग।

प्रश्न नं० ४--

बच्चों के भयंकर मुंह में गले तक होने वाले छाले (मुख पाक) को १ दिन में मिटाने वाले योग।

प्रश्न नं० ५--

स्त्रियों के बिलकुल औलाद बन्द करने वाली (बर्थ कन्ट्रोल) की शर्तिया दवा जिसकी ५ मात्रा खिलाने के बाद कभी बच्चा पैदा न हो और स्वास्थ्य में कोई खराबी न करे। अचूक योग।

प्रश्न नं० ६--

स्त्रियों का रुका हुआ मासिक धर्म तुरन्त नियमित रूप से जारी करने वाले शर्तिया योग।

प्रश्न नं० ७--

स्वप्नदोष को समूल जड़ से मिटाने वाले अचूक योग।

प्रश्न नं० ८--

वीर्य का पतलापन, शीघ्रपतन, मन्दाग्नि, खून की कमी कमजोरी, कब्जियत को समूल नष्ट करके नई जवानी पैदा करने वाले सिद्ध योग।

प्रश्न नं० ९--

दांतों को साफ, सुन्दर, मजबूत और चमकदार बनाकर मुंह को खुशबूदार बनाने वाला सर्वोत्तम मंजन का योग।

प्रश्न नं० १०--

दांतों के पायरिय को समूल नष्ट करने वाले सिद्ध योग।

प्रश्न नं० ११--

दांत दर्द को जादू की तरह तुरन्त मिटाने वाले योग।

प्रश्न नं० १२--

नव-जवानों के मुंह पर होने वाली फुंसियां (मुंहासे) को मिटा कर चेहरे को साफ करने वाले शर्तिया योग।

प्रश्न नं० १३--

खूनी और बादी बवासीर को जड़ से मिटाने वाले सिद्ध योग।

—लक्ष्मीनारायण गुप्ता
श्री रामबाण आयुर्वेद भवन, श्रीगंगानगर (राजस्थान)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

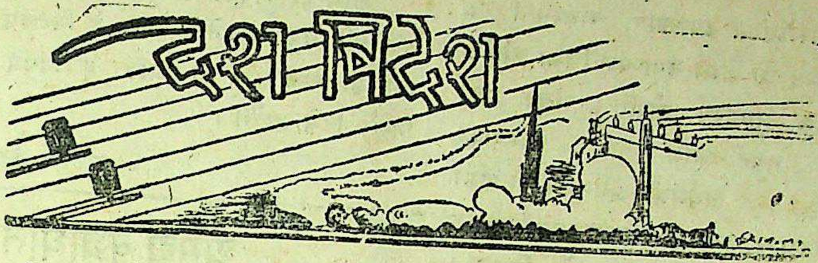

आयुर्वेद विश्वभारती ग्राम ज्योति केन्द्र सरदारशहर

शहीद शताब्दी समारोह पर निःशुल्क शिक्षा और छात्रवृत्तियां

स्थानीय आयुर्वेद विश्वभारती ने १८५७ की शहीद शताब्दी समारोह पर निर्णय किया है कि एक वर्षीय राजस्थान सरकार से मान्यता प्राप्त विशेष योग्यता पाठ्यक्रमः रिफ्रेशरकोर्सः और त्रिवर्षीय भिषग्वर कोर्स में जिसकी परीक्षायें राजकीय हैं, इस वर्ष आने वाले छात्रों को बीस बीस रुपये मासिक की कुल ४० छात्रवृत्तियां दोनों कोर्सों में इस सत्र के लिये दी जावेगी और इनसे अन्य किसी प्रकार का अध्ययन शुल्क नहीं लिया जावेगा। रिफ्रेशर कोर्स के लिये अनुभवी रजिस्टर्ड वैद्य या विशारद, भिषक् आदि मान्य संस्थाओं से परीक्षोत्तीर्ण वैद्य प्रविष्ट किये जावेंगे। आधुनिक शल्य शालाक्य और यंत्र शस्त्र आदि के प्रायोगिक प्रशिक्षण पर विशेष बल देकर इस न्यूनता की पूर्ति की जाती है।

भिषग्वर कोर्स में मैट्रिक या प्रथमा परीक्षोत्तीर्ण छात्रों का प्रवेश किया जारहा है। आतुरालय, रसायनशाला, प्रयोगशाला, वनस्पतिवाटिका, छात्रावास, भोजनालय आदि की समुचित व्यवस्था है। कालेज खुल गया है और प्रवेश प्रारम्भ होगये हैं इच्छुक छात्रों को शीघ्र ही प्रवेश ले लेना चाहिये।

प्रिंसिपल
आयुर्वेद विश्वभारती

आयुर्वेद विश्वभारती का नया सत्र

आयुर्वेद विश्वभारती सरदार शहर में एक वर्षीय वैद्य विशेष योग्यता पाठ्यक्रमः रिफ्रेशर कोर्सः चालू है जिसमें रजिष्टर्ड वैद्य या आयुर्वेद विशारद परीक्षोत्तीर्ण वैद्य प्रवेश पा सकेंगे। यह कोर्स भारतवर्ष में अपने ढंग का निराला एवं राजस्थान सरकार से मान्यता प्राप्त है। आधुनिक शल्य शालाक्य आदि प्रयोगिक विषयों की न्यूनता जो वैद्य समुदाय में पाई जाती है उसे दूरकरने का यह प्रयास है। इसमें प्रविष्ट होने वाले छात्रों को १५ रुपये प्रतिमास की सीमित छात्रवृत्तियां भी दी जावेगी। इसके अतिरिक्त भिषग्वर परीक्षा का त्रिवर्षीय कोर्स भी सत्र से चालू किया जारहा है जिसमें संस्कृत के साथ मैट्रिक उत्तीर्ण अथवा तत्सम संस्कृत परीक्षोत्तीर्ण छात्र प्रविष्ट किये जायेंगे। २० रुपये प्रतिमास की सीमिति छात्रवृत्तियां दी जावेगी तथा शिक्षा का प्रबन्ध निःशुल्क होगा। आतुरालय, प्रयोगशाला, रसायनशाला, छात्रावास आदि का समुचित प्रबन्ध है। इन्फ्ल्यूएन्जा के कारण नया सत्र २२ अगस्त ५७ से प्रारम्भ होरहा है। प्रवेशार्थी शीघ्रता करें स्थान कम है।

प्रिंसिपल
आयुर्वेद विश्वभारती

श्री शास्त्री पुनः मंत्री निर्वाचित

उदयपुर डाक से—

उदयपुर कमिश्नरी वैद्य सभाके अध्यक्ष वैद्य भवानी शंकर शर्मा ने सभाकी कार्य कारिणी की घोषणा आज एक बैठक में करदी। सभा के महा मंत्री पद पर वैद्य मिश्री प्रसाद शास्त्री, प्रचार मंत्री राजस्थान प्रदेश वैद्य सम्मेलन घोषित किये गये। शेष पदों पर निम्न व्यक्ति घोषित किये गये हैं:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपाध्यक्ष—श्री गौरीशंकर उपाध्याय, राजस्थान सेवा संघ, डूगरपुर। रामचन्द्र जी शर्मा उपाध्यक्ष जिला कांग्रेस कमेटी, भीलवाड़ा। वैद्य भागीरथ जोशी,। संयुक्त मंत्री उदयलाल महात्मा, नवनीतलाल व्यास, लाभशंकर जोशी, घनश्याम भट्ट, । अर्थमंत्री–जगन्नाथ जी शर्मा इन्सपेक्टर, आयुर्वेद विभाग, उदयपुर। आय व्यय निरीक्षक श्री श्यामसुन्दर शर्मा, उप संचालक आयुर्वेद विभाग। सदस्य—सर्व श्री प्रेमशंकर शर्मा, संचालक—आयुर्वेद विभाग यमुनालाल शर्मा, डा० आत्मप्रकाश, दामोदर त्रिवेदी, माधवलाल, छीतरमल त्रिपाठी, सिद्धशंकर शर्मा, गंगाराम शर्मा, इन्सपेक्टर आयुर्वेद विभाग, डूंगरपुर। गिरधर शर्मा, हकीम आत्माराम, रूपलाल महात्मा, काशीनाथ शर्मा, कल्याणदास, दीपशंकर शर्मा, मधुकान्त भट्ट, हनुमान प्रसाद छीछी, श्यामसुन्दर, गंगरार, नर्वदा शंकर, चन्द्रशेखर आकोला, सम्पादक—मिश्रीप्रसाद शास्त्री।

इसके साथ ६० सदस्यों की एक स्थाई समिति की भी घोषणा की गई है जिसमें भारत सरकार के आयुर्वेद सलाहकार कविराज प्रतापसिंह भी सम्मिलित है।

श्री मारवाड़ आयुर्वेद प्रचारणी सभा जोधपुर के पदाधिकारियों की घोषणा

श्री मारवाड़ आयुर्वेद प्रचारणी के नव निर्वाचित सभापति श्री परमानन्द जी शर्मा साहित्यायुर्वेदाचार्य ने निम्नलिखित पदाधिकारियों की घोषणा आज दिनांक २६-८-४७ को की—

१–प्रधान मन्त्री—राजवैद्य श्री सत्यदेव शर्मा अर्श, भगन्दर विशेषज्ञ आनरेरी चिकित्सक राजकीय केन्द्रीय चिकित्सालय, जोधपुर।

२–उप सभापति—वैद्यराज श्री गणेशीलाल जी रंगा आयुर्वेदरत्न, रंगा आयुर्वेद औषधालय जोधपुर।

३–उप मन्त्री—वैद्यराज श्री परशराम जी वैद्याचार्य, आयुर्वेदरत्न, सत्य कबीर आरोग्यशाला जोधपुर।

शीघ्र ही कार्यकारणी की बैठक होने जा रही है, जिसमें धन्वन्तरि भवन बनाने के विषय में निश्चय किया जायगा। साथ ही अन्य सभा की प्रगति के विषय में महत्व पूर्ण निर्णय किये जायेंगे।

—रा० वै० सत्यदेव शर्मा

असह्य वज्राघात

पूज्य प्राणाचार्य श्री गोवर्धन जी शर्मा छांगाणी का स्वर्गवास ता० ३–६–४७ मंगलवार भाद्रपद शुक्ल पञ्चमी १० मी को सायंकाल ५॥ बजे हो गया।

इस दुखद अवसान से आयुर्वेद जगत की बहुत बड़ी हानि हुई है जिसकी पूर्ती होना असम्भव है।

हम संतप्त परिवार के प्रति हार्दिक सहानुभूति प्रकट करते हैं और परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं कि श्री छांगाणी जी की आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

—श्रीगोपाल गुप्त

वज्रदण्ड तिला

विशेष रीति से निर्मित यह तिला परम लाभप्रद है। इसके प्रयोग से इन्द्री शैथिल्य, नसों की खराबी आदि दूर होते हैं।

इसके साथ ही यदि क्लीवत्व हर यन्त्र का भी उपयोग किया जाय तो और भी ज्यादा अच्छा और स्थायी असर होता है।

क्लीवत्व हर यन्त्र	१७) प्रत्येक
वज्रदण्ड तिला	२॥) प्रति शीशी

पोस्ट व्यय प्रथक्

प्राणाचार्य भवन प्राइवेट लिमिटेड
बिजयगढ़ (अलीगढ़)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कासान्तक

खांसी के लिये भारत में प्राप्त सभी औषधियों के मुकाबिले सस्ती व निरापद आयुर्वेदिक औषधि हैं। इसमें—

बांसा स्वरस ४०%	मुलहठी सत्व २०%
टंकण क्षार १०%	काली मिर्च ५०%
सिता (मिश्री) २०%	त्रिफला ५%

मिश्रित हैं। इसके घटकों के गुण निम्न प्रकार हैं—

बांसा—तृषा, श्वास, हृदय को हितकर, खांसी एवं रक्तपित्त नाशक है।

मुलहठी सत्व—स्वर शोधक, वात पित्त शामक एवं श्वास यंत्र के शोथ को नाश करती है।

टंकण—यह कफ को पतला करके बाहर निकालता है।

काली मिर्च—श्वास, कास, पीनस नाशक एवं अग्नि दीपक है।

मिश्री—वातपित्त नाशक, रुचिकारक, रक्तविकार व दाह शामक है।

त्रिफला—कफ पित्त नाशक, रेचक, अग्निदीपक एवं रुचिकारक है।

इनका शरीर में फुफ्फुस, स्वर यन्त्र व श्वास प्रणाली एवं उदर पर सीधा असर होता है। अतः यह अत्यन्त शीघ्र प्रभाव दिखाती है।

स्वाद में मीठी होने से सभी इसका सेवन आसानी से कर लेते हैं।

मूल्य—१ औंस ।=)

४ औंस १।)

थोक खरीददारों को विशेष रियायत दी जाती है।

प्राणाचार्य भवन प्रायवेट लिमिटेड

विजयगढ़ (अलीगढ़)

श्रीगोपाल गुप्त के प्रबन्ध से प्राणाचार्य प्रेस विजयगढ़ में मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अरे ! रामू तू ऐसे क्यों पड़ा है ।

रामू—चाची मुझे जाड़ा लगता है ।

चाची—(शरीर छूकर) अरे तुझे तो बुखार भी है और तेरी हालत क्या हो रही है ।

रामू—चाची मुझे बहुत दिनों से जाड़ा लगकर बुखार आजाता है । खाना अच्छा नहीं लगता, मुंह का स्वाद बिगड़ा हुआ है । दस्त साफ नहीं होता ।

चाची—तो तू किसी वैद्य की दवा क्यों नहीं खाता है ।

रामू—चाची मैंने वैद्यों को नाड़ी दिखाई वह कड़ुआ काढ़ा और कड़ची कुनैन देते हैं जो मुझसे खाई नहीं जाती है और नुकसान भी लाती है ।

चाची—ठीक है तो अब **प्राणाचार्य भवन प्रा० लि० बिजयगढ़ (अलीगढ़)** की बनी हुई **मीठी ज्वर निग्रह** क्यों नहीं पीता ? तेरे चाचा और तेरे भाई तो इसे ही पीते हैं और कभी तेरी तरह नहीं पड़ते हैं एक दो दिन पीने से ही बुखार आना बन्द होजाता है और कोई नुकसान नहीं करती । ले ! इसे पीकर देख

रामू—(पीकर) अरे यह तो बिलकुल ही मीठी और स्वादिष्ट है ।

निराशों की आशा

आप भी अपने गृहस्थ का आनन्द लीजिये

- अगर आपकी स्तम्भन-शक्ति नष्ट हो चुकी है ।
- अगर आप में बल—वीर्य की कमी है और स्त्री-सम्भोग नहीं कर सकते हैं ।
- अगर आपकी पाचन—शक्ति प्रमेह आदि रोग के कारण नष्ट हो चुकी है ।
- अगर हस्त मैथुन, बहु मैथुन, अप्राकृतिक मैथुन के कारण आपकी गुप्तेन्द्रिय की स्नायु निर्बल हो चुकी है ।

तो आप

क्लीवत्व हर मंजूषा

की चारों दवाओं का सेवन कीजिये ।

मूल्य—२० दिन के सेवन योग्य चारों औषधियां-६)

पता—प्राणाचार्य भवन प्राइवेट लि०, विजयगढ़ (अलीगढ़)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

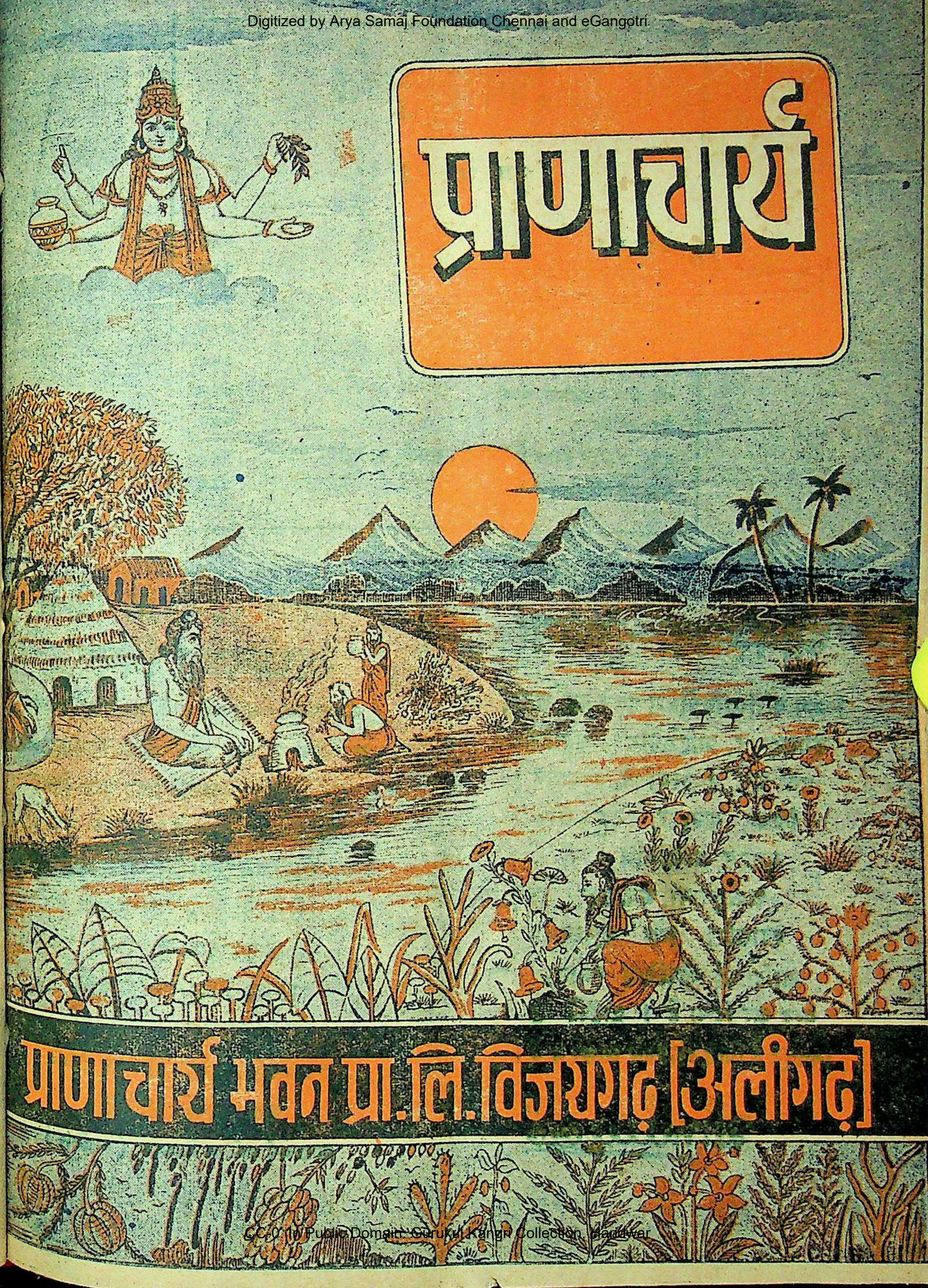

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

भाग ७ अङ्क १०

झण्डा गान	४३५
सम्पादकीय	४३६
रोग परीक्षा	४३७
प्रयोग मणिमाला अङ्क के अन्तर्गत	४४०
फुफ्फुसों की रचना और परीक्षा	४४५
स्त्री और गर्भधारण काल	४४८
सिद्ध प्रयोग	४५२
उत्तर प्रदेशीय भारतीय चिकित्सा सम्मति का परीक्षा फल	४५६
समाचार एवं सूचना	४६६

आवश्यक-सूचना

विशेष परिस्थितियोंवश हमनें कर्पूरासव, मृगमदासव, अहिफेनासव, मृतसंजीवनी अर्क, वृ० द्राक्षासव, द्राक्षासव खिचा, कण्डूहर, दद्रुकुठार मलहम, प्राणाचार्य बाम, अर्क पुदीना, अर्क कपूर श्वासरिपु और शूलहर आदि कई औषधियां बनाना बन्द कर दिया है। ग्राहकों से निवेदन है कि इनके लिये आर्डर न दें।

प्राणाचार्य का आगामी विशेषांक

भावप्रकाश निघण्टु

टीकाकार—पं० रामचन्द्र शर्मा साहित्यायुर्वेदशास्त्री

इस बार यह अङ्क भावप्रकाश निघण्टु की एक विशेष प्रकार की टीका युक्त होगा और वैद्यों के लिये अत्यन्त उपयोगी प्रमाणित होगा। यह अङ्क वैद्यों के लिये भी उतना ही उपयोगी है उससे अधिक विद्यार्थियों के लिये होगा। आज ही अपनी प्रति ५) वार्षिक मूल्य भेजकर रिजर्व करा लेनी चाहिये।

प्राणाचार्य मासिक, विजयगढ़ (अलीगढ़)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्थापक—स्वर्गीय वैद्यभास्कर बांकेलाल गुप्त "प्राणाचार्य"
भाग ७ अङ्क १० } प्राणाचार्य भवन प्रायवेट लिमिटेड, बिजयगढ़ का मुखपत्र { अक्टूबर १९५७

झण्डा गान

॥ झण्डा फहराये जग सारा ॥

इस झण्डे के नीचे आयें, आपस का मत भेद मिटायें।
प्रेम-पूर्ण संगठन बनायें, तब होगा उत्थान हमारा ॥ झण्डा ॥

हम विशुद्ध भावना बनायें, स्वार्थ साधना दूर भगावें।
अन्वेषण उद्देश्य बनावें, सेवा व्रत ही ध्येय हमारा ॥ झण्डा ॥

आयुर्वेद सुधा से क्षण में, सत्वर रोग दूर हों तन में।
मानव पुलकित होकर मन में, कहते व्योम शशि नभ तारा ॥ झण्डा ॥

सम्भ्रम मान न जाने पाये, चाहे विघ्न अनेकों आये।
कर्मवीर बन बढ़ते जायें, सफल मनोरथ होय हमारा ॥

॥ झण्डा फहराये जग सारा ॥

रचयिता—श्री कपिल (देव) त्रिवेदी वैद्यशास्त्री।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ श्री धन्वन्तरयेनमः ॥

प्राणाचार्य

स्वास्थ्योपदेशकुशलः सौख्यायुष्यप्रवर्धक ।
आयुर्वेद प्रबोधार्थं प्राणाचार्यं प्रकाशितः ॥

आसवारिष्टों के निर्माण पर प्रतिबन्ध

भारत सरकार ने मैडीशन एण्ड टायलेट प्रीपरेशन एक्ट निर्माण कर सभी आसवों को मद्य की श्रेणी में ले लिया है। इस एक्ट के अन्तर्गत केवल उन आसवों पर छूट रहेगी जिनमें मद्यसार केवल २ प्रतिशत होगा । इस ऐक्ट के अनुसार भबके द्वारा खींचे जाने वाले आसवों पर तो ३) प्रति गैलन ड्यूटी भी देनी होगी। कर्पूरासव, अहिफेनासव, मृगमदासव आदि पर १७।।) प्रति गैलन मद्य कर लगेगा व इनको बांडेड गोदाम में रखना होगा।

आसवों की निर्माण प्रक्रिया ऐसी है कि इनको निर्माण होने के उपरान्त कोई व्यक्ति यदि मद्य के रूप में सेवन करना चाहे तो नहीं कर सकता है । क्योंकि इनकी ½ औंस की मात्रा तक तो हानि रहित है परन्तु यदि ज्यादा मात्रा में सेवन किया जाय तो अरुचि, दाह आदि उत्पन्न करता है। इसके अतिरिक्त इसमें मद्यसार स्वतः उत्पन्न होता है अलग से मिलाया नहीं जाता है। साधारणतया आसवों में १५ से २० प्रतिशत तक मद्यसार पाया जाता है। यह मात्रा हानि रहित है, एवं इसके सेवन से नशा भी नहीं होता है। ब्रिटिश सरकार के समय में भी आसवों के विषय में बम्बई जैसे कई प्रान्तों में विवाद उठ चुका है, परन्तु उस समय सरकार ने २० प्रतिशत मद्यसार की छूट दे दी थी। पर आज अपनी कहाने वाली एवं आयुर्वेद का हित चाहने वाली सरकार आसवों में २ प्रतिशत मद्यसार की छूट दे रही है। क्या ही विडम्बना है हमारी सरकार के कामों में, और कितना आयुर्वेद प्रेम पूर्ण है यह एक्ट ?

आसवों में जब तक ५ से १० प्रतिशत मद्यसार न हो तब तक तो उनके स्थायी रहने का ही प्रश्न उत्पन्न होता है। इससे कम में तो उनका स्थायी रहना ही कठिन है । २ प्रतिशत मद्यसार का तो कोई तर्क ही नहीं है, इससे ज्यादा मद्यसार तो सिरका एवं आचारों में पाता जाता है। सरकार को न जाने किन दिमागों ने इस कार्य के लिये परामर्श दिया और उसे इस आयुर्वेद विनाशक कार्य में प्रवृत्त किया है।

इस एक्ट के झंझटों को बरदाश्त कर कोई वैद्य अपमान आदि सहकर आसव अरिष्ट बनाना पसन्द नहीं करेगा और इस प्रकार देश के लाखों चिकित्सकों के व्यवसाय पर असर पड़ेगा।

इसे रोकने को सभी को एक मत होकर चेष्टा करनी चाहिये एवं महामण्डल को इस तरफ विशेष ध्यान देना चाहिये ।

प्राणाचार्य का आगामी विशेषांक

प्राणाचार्य का आगामी विशेषांक 'भावप्रकाश निघण्टु' नाम से प्रकाशित होगा। इसके टीकाकार एवं सम्पादक होंगे प्राणाचार्य के सम्पादक श्री पं० रामचन्द्र शर्मा साहित्यायुर्वेदशास्त्री अलीगढ़। इस अङ्क की लगभग आधी सामिग्री तैयार है और शेष भी शीघ्र तैयार हो रही है। इस अङ्क की उपादेयता इसे पढ़कर ही जानी जा सकेगी।

इस अङ्क की प्रस्तावना आगामी अङ्क ११ में दी जा रही है। इसे आप सम्भाल कर रखें और अङ्क १२ में भी इसी के विषय में मैटर दिया जायगा आप इन अङ्कों को सम्भाल कर रखें यह आपके बहुत काम आवेंगे।

वर्तमान में कागज का मूल्य पहिले साल से ठीक दुगुना हो गया है और ऐसे में यह विशेषांक निकालना हमारे लिये बहुत ही कठिन पड़ रहा है, पर हमने अपने ग्राहकों के भरोसे हिम्मत कर यह साहसिक पग उठाया है और आशा है कि आपका पूरा-पूरा सहयोग इसमें अवश्य मिलेगा।

प्राणाचार्य का वार्षिक मूल्य ५) करने का निर्णय कर लिया है, जो कि पोस्ट व्यय एवं कागज की मूल्य वृद्धि को को देखते हुये ज्यादा नहीं है। आशा है कि इसके लिये हमें क्षमा करेंगे।

हमें पूरा विश्वास है कि हमारे माननीय ग्राहक अपना सदैव की भांति सहयोग प्रदान करेंगे और १-२ ग्राहक बनाकर आभारी करेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोग परीक्षा

लेखक—श्री पं० रामचन्द्र शर्मा आयुर्वेद साहित्य शास्त्री, सम्पादक–प्राणाचार्य, अलीगढ़ ।

मनुष्य ने जब जन्म धारण किया तब साथ ही या कहना चाहिये उस से पूर्व ही रोग ने जन्म लिया । तदनुकूल तत्काल ही रोग ज्ञान तथा रोग शामक विचारों ने जन्म लिया होगा । क्योंकि आयुर्वेद की उत्पत्ति तो हम ब्रह्माजी से ही स्वीकार करते हैं ।

निश्चय ही प्रथम रोग का ज्ञान तदनन्तर चिकित्सा, रोगमादौ परीक्षेत तदनन्तरमौषधम्, ततःकर्म भिषक् पश्चात ज्ञान पूर्वं समाचरेत् । स्पष्ट है रोग ज्ञान के बाद भी औषधि प्रयोग करने की आज्ञा देते हुए महर्षि ज्ञान पूर्व शब्द से चेतावनी देते हैं कि रोग का ज्ञान समुचित तथा अंशांश कल्पनायुक्त भली प्रकार ध्यान रखना चाहिए ।

रोग परीक्षा के सम्बन्ध में कई शास्त्रीय आज्ञायें हैं यथा—निदानं पूर्वरूपाणि रूपाणि उपशयस्तथा, सम्प्राप्ति श्चेति विज्ञानं रोगाणां पंचधामत् । एवं नाडी मूत्रं मलं जिह्वां शब्द स्पर्शदृगाकृतिम् । तथा सदिग्धे व्याधौ उपशयानुपशयाभ्यांपरीक्षेत ।

त्रिविधं खलु रोगविज्ञानं भवति तद्यथा आप्तोपदेशःप्रत्यक्षं अनुमानम् चेति —चरक

प्रत्यक्षतस्तु खलु रोगतत्वं बुभुत्सुः सर्वैरिन्द्रियैः सर्वा निन्द्रियार्थान् आतुरगतान् परीक्षेत अन्यत्र रस ज्ञानात् —चरक

दर्शन स्पर्शनप्रश्नैः परीक्षेताथ रोगीणम् —अ० हृदय

निष्कर्ष यह है कि निदान, पूर्वरूप, रूप, उपशय, सम्प्राप्ति नाडी, मूत्र, मल, जिह्वा, शब्द, स्पर्श, दृष्टि आकृति, आप्तोपदेश, प्रत्यक्ष, अनुमान, सम्पूर्ण इन्द्रिय यथा इन्द्रियार्थ, दर्शनस्पर्श के अतिरिक्त देश काल वय तथा मनुष्य के रहन-सहन आचार विचार सभी से रोग परीक्षा करनी चाहिये ।

बिचार कीजिये हम कितने प्रकार से रोग परीक्षा करते हैं । प्रमुखतः नाडी से या कुछ प्रश्नों द्वारा इसके अतिरिक्त एक कठिनाई और है कि प्रत्येक रोगी वैद्य से यह आशा करता है कि उसका रोग निदान वैद्य उसकी नाड़ी का स्पर्श करते ही त्रिकालज्ञ की तरह करामलकवत् जानले और उसे बता भी दे कि उसका रोग किस खान पान से उत्पन्न हुआ है साथ अनेक वैद्य भी अपने को वैसा ही नाड़ी विशेषज्ञ त्रिकालदर्शी प्रकट करने की रुचि तथा अभिलाषा एवं प्रदर्शन करते हैं ।

तनिक सोचिये कितने रोगियों की आप मल मूत्र जिह्वा तथा शब्द परीक्षा करते हैं, कितने रोगियों की सम्प्राति तथा इन्द्रिय एवं इन्द्रियार्थों पर विचार करते हैं आप यह भी विचारिये कि आज जिन डाक्टरों को आप अपना विरोधी एवं प्रतिद्वन्दी मानते है उनके पास रोग परीक्षा के विषय में कितने सूक्ष्म उपकरण उपस्थित हैं । जो बाल की खाल भी खींचने में समर्थ हो रहे हैं मेरा विचार यह नहीं है कि आप के साधन उनसे कुछ हीन हैं । ये वैज्ञानिक साधन भी अनेक बार असफल हुए हैं और होते हैं लेकिन आप अपनी प्रक्रिया पर पूर्ण अनुरक्त रहिये और उसका सम्पूर्ण रूप में यथोचित व्यवहार कीजिये ।

ऊपर लिखित विचार का सारांश यह है कि हम पूर्ण रूपेण समीक्षा पूर्वक रोग ज्ञान के सभी प्रकारों को हृदयंगम करें और उन पर विचार करें ।

निदान—

निमित्त, हेतु, आयतन, प्रत्यय, उत्थान कारण ये निदान के पर्यायवाची शब्द हैं । कोई शब्द सम्पूर्ण रूप में किसी दूसरे शब्द के अर्थ को प्रकट नहीं कर सकता वह उसका प्रतिनिधि होसकता है तद्भिन्नत्वे सति तद्गुणभूयोधर्मवत्वम्, अर्थात् उसके भिन्न है लेकिन उसके मूल धर्म उसमें हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसी प्रकार निदान शब्द के पर्याय भिन्नार्थक हैं। साथ ही वे निदान के अर्थ को प्रदर्शित करके स्वार्थं का भास कराते हैं। यथा निदान आदिकारण है लेकिन निमित्त निमित्त कारण का भी बोध कराता है। अतः यहां निदान शब्द से हमें इतने अर्थों का ज्ञान होता है।

सन्निकृष्ट निदान—वातादिक दोषों से।

विप्रकृष्ट निदान—हेमन्त में कफ का संचय शिशिर में प्रकोप

व्यभिचारी निदान—केवल निर्बल को रोग कारक।

प्रधानिक निदान—विषादि का विकार।

असात्म्य इन्द्रियार्थ संयोग निदान—इन्द्रियों का हीन तथा मिथ्या योगायोग।

प्रज्ञापराध—गो-बध इत्यादि जघन्य कार्य।

परिणाम—शीतोष्णादि मिथ्या योगायोग।

दोष हेतु—बसन्तादि ऋतु भेद के कारण।

व्याधि हेतु—मत्तिका भक्षण, मिट्टी इत्यादि।

दोष व्याधि हेतु—बसन्तादि ऋतु तथा घोड़े इत्यादि की सवारी।

उत्पादक व्यंजक हेतु—बसन्त में कफ की उत्पादक व्यंजक संज्ञा।

वाह्याभ्यन्तर हेतु—आचार विचार एवं दोष।

वात पित्त कफ प्रकोपक हेतु—अनेकों उदाहरण हैं।

अनुत्पत्यानुबन्ध निदान—संसर्गज व्याधि और मूल व्याधि।

सामनिराम लक्षण—स्पष्ट हैं।

निदान का अर्थ—

येनाहार विहारेण रोगाणांमुद्भवोभवेत्।
क्षयो वृद्धिश्च दोषाणां निदानं हितदुच्यते॥

—वंगसेन

पूर्वरूप—

निदान के अनन्तर रोग परीक्षा में दूसरा उपाय पूर्व-रूप है। जो रोग उत्पन्न होने वाला है उसके सामान्य साधारण लक्षणों का प्रकट होना है। यथा ज्वर में श्रम, बेचैनी, वैवर्ण्य, वैरस्य इत्यादि। पूर्वरूप से एक तो यह प्रतीति होती है कि रोग साध्य असाध्य या कष्टसाध्य होगा। तथा दूसरा संदिग्ध व्याधियों का रोग विनिश्चय—यथा चरके—

पूर्वरूपाणि सर्वाणि ज्वरोक्तान्यति मात्रया।
यं विशन्ति विशन्त्येनं मृत्युर्ज्वरपुरस्सरम्॥

अर्थात् जिस रोगी को ज्वरोक्त पूर्वरूप सम्पूर्ण रूप में सामुहिक रूप से उपस्थित होते हैं, ज्वर असाध्य समझना चाहिये। द्वितीय यथा रोगी को हारिद्र वर्ण मूत्र आरहा है अतः द्विविध विचार उठता है रोगी रक्तपित्ती है अथवा प्रमेही। चरक कहते हैं—

हारिद्र वर्णं रुधिरं च मूत्रं बिना प्रमेहस्य च पूर्वरूपैः।
यो मूत्रयेत् तं न वदेत् प्रमेहं रक्तस्यपित्तस्य च स प्रकोपः॥

अर्थात् प्रमेह के पूर्वरूप मलयुक्त दन्तमुखादि हस्तपाद की उष्णता दाह इत्यादि यदि प्रमेह के पूर्वरूप नहीं हैं तो रोगी रक्तपित्ती है प्रमेही नहीं।

यह पूर्वरूप सामान्य तथा विशिष्ट दो प्रकार का है। सामान्य ज्वर में श्रम अरति इत्यादि तथा विशिष्ट लक्षण वात ज्वर में अधिक जम्भाई आना, पित्त ज्वर में नयन दाह कफ ज्वर में अन्न में अरुचि।

इस पूर्वरूप को अरुणदत्त जी शारीरिक मानसिक तथा उभय तीन विभागों में विभक्त करते हैं। यथा—

आलस्य आस्यवैरस्य गौरवादि शारीरिक अरति हितो-पदेशेपु अक्षान्ति मानस अम्ल उषणे प्रीतिः स्वादुरसेषु द्वेषः शारीर मानस उभय लक्षण।

मधुकोषकार—भाविव्याधि बोधकं लिङ्गं पूर्वरूपम् से इस का अन्य व्यावर्तक लक्षण करते हैं।

रूप—

तदेव व्यक्ततां पातं रूपमित्यभि धीयते।

पूर्वरूप के ही अव्यक्त तथा अनुद्भूत लक्षण स्पष्ट हो जाते हैं वही रूप कहलाते हैं यथा पित्त ज्वर में उष्णता, नेत्रदाह, प्रस्वेद, निद्रा नाश, वमन, पिपासा, रेचन इत्यादि हो जाते हैं। अरुणदत्त जी का मत है कि मानस तथा शारीर मानस लक्षण अस्थाई होने से नष्ट हो जाते हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तथा नहीं भी नष्ट होते हैं। संस्थान, व्यंजन, लिंग, लक्षण, चिह्न आकृति इसके पर्याय हैं। उत्पन्न व्याधि बोधकं लिंगं रूपम्।

उपशय–

औषधि एवं आहार-विहार जो रोगी के अनुकूल तथा रोग शमन सहायक हैं वे उपशय कहलाते हैं इसी की सात्म्य संज्ञा है। औषधादि जनितः सुखानुबन्ध उपशयः। औषध आहार विहारादि उपशय के छैः छैः भेद हैं। यथा–

हेतु विपरीत	औषध	आहार	विहार
व्याधि विपरीत	,,	,,	,,
हेतु व्याधि विपरीत	,,	,,	,,
हेतु विपस्तार्थकारी	,,	,,	,,
व्याधि विषयस्तार्थकारी	,,	,,	,,
हेतु व्याधि विपर्यास्तार्थकारी	,,	,,	,,

क्रमशः संक्षेप में हम इन्हें इस प्रकार समझ सकते हैं–

१—शीत ज्वर में शीत शमन के लिए शुण्ठ्यादि कषाय

२—कफज ताप में घृत पान, अतिसार में पाठादि

३—वातज शोथ में दशमूल क्वाथ

४—पित्तप्राधान्य व्रण में उष्ण उपनाह

५—दूषित भोजन्य वमन पित्तातिसार में विरेचन वमन कारक मदनफलादि।

६—जंगम विष में–स्थावर विष तथा स्थावर विष में जंगम विष।

इसी प्रकार आहार एवं विहार की कल्पना करनी चाहिये। शास्त्रानुमोहित इस उपशय अर्थात् सात्म्य के विपरीत औषधि आहार विहार अनुपशय या असात्म्य कहलाते हैं।

सम्प्राप्ति–

जिस कारण से कुपित वातादि दोष दुष्ट होकर शरीर में फैलकर तत्तदाश्रय ग्रहण कर जो रोग की निष्पत्ति उपस्थित होती है उसे सम्प्राप्ति कहते हैं। दोषेतिकर्तव्यतोपलक्षितं व्याधिजन्य सम्प्राप्तिरित्येवलक्षणम्।

वास्तव में सम्प्राप्ति को प्राप्त होने पर रोग के सभी लक्ष्य, लक्षण, स्पष्ट प्रतीत होते हैं। यहां आकर निदान पूर्वरूप रूप उपशय जन्य सभी ज्ञान का पर्यवसान हो कर रोग का स्पष्ट दर्शन होता है। इसके जाति, आगति पर्याय हैं।

यह सम्प्राप्ति संख्या, विकल्प, प्राधान्य, बल, काल पांच भेदों में विभक्त की गई है।

संख्या–

यथा वातादि कारण से ८ प्रकार के ज्वर ५कास ५ श्वास ७ कुष्ठ इत्यादि। चरक में एक विधि सम्प्राप्ति का अलग निर्देश है पुनः विधि सम्प्राप्ति को निजागन्तज दो भेद तथा साध्यासाध्य मृदु दारुण भेद से भी दो भेद किये गये हैं।

विकल्प–

कार्य पर से संम्मिलित वातादि दोषों के अंशांश का अनुमान करना विकल्प सम्प्रप्ति है। सुश्रुत यथा—

सर्वैर्भावैस्त्रिभिर्वापि द्वाभ्यामेकेनवापुनः संसर्गे कुपितः क्रुद्ध दोषं दोषोनुधावति। इस प्रकार का निदान वैचित्र्य दोषकोप से होता है। उदाहरण पर दृष्टि पात कीजिये–रूक्ष शीत लघु विशद इत्यादि गुणयुक्त कषाय रस एवं कलाप से वात सम्पूर्ण रूप में कुपित होता है। तथाच रूक्ष शीत लघु तण्डुलीयक (चौलाई) रूक्ष शीत कन्देक्षु, एकांश में वात प्रकोपक होते हैं। मद्य तथाच कटुक रस सर्वांश में एवं हिंगुयवानी तिल एकांश में पित्त प्रकोपक हैं इसी प्रकार भैंस का दुग्ध मधुरस सर्वांश में और खिरनी कशेरू क्षीरी फल एकांश में कफ प्रकोपक होते हैं। इसप्रकार रोग गरिमा अथवा लघिमा का विचार विकल्प सम्प्राप्ति है।

प्राधान्य सम्प्राप्ति–

रोग की स्वतंत्रता तथा परतंत्रता से उसके प्राधान्य तथा अप्रधान्य का विचार करना चाहिये। यथा ज्वर में ज्वर के उपद्रव की गौण तथा प्रधानता अनुमान करनी चाहिए क्षय में धातुक्षय प्रधान तथा ज्वर कासादि अप्रधान हैं।

बल सम्प्राप्ति–

हेतु पूर्व रूप के सम्पूर्ण रूप में युगपद् प्राप्ति से तथा एकांशानुभूति रोग के बलाबल का परीक्षण करना।

—शेष पृष्ठ ४४४ पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रयोग मणिमाला अंक के अन्तर्गत

लेखक—श्री वैद्य खेमराज शर्मा छांगाणी, आर्वी (म० प्र०)

मेरी समझ में नहीं आता कि वैद्य गण अपने अनुभूत एवं सिद्ध योगों को गुप्त प्रयोग क्यों कहते हैं ? आप हमारे प्राचीन ऋषि मुनियों के विशाल हृदय को देखिये, जिन्होंने अपनी हजारों वर्ष की कठिन तपस्या एवं अनुभव का फल हमारे लिये छोड़कर सदा के लिये चले गये, उन्होंने उस विद्या को गुप्त क्यों नहीं रखा, यदि उनका साहित्य हमें उपलब्ध नहीं होता तो क्या हम आज इस स्थिति में रहते ? फिर भी उनका वह साहित्य एवं सामिग्री इतनी विस्तृत है कि कोई भी बड़े से बड़ा विद्वान उसके पूर्णत्व को प्राप्त नहीं कर सका क्योंकि "नास्ति आयुर्वेदस्य पारम्" इस उक्ति के अनुसार इसका कोई अन्त नहीं है, इसमें से जिनको जो चाहिये वे खोजकर प्राप्त करते रहेंगे। अस्तु

हमें अपने गुप्त योगों को जो गुणों में शीघ्र प्रभावशाली एवं पूर्ण लाभकारी सिद्ध हुए हों, उन्हें सर्व साधारण के समक्ष हृदय खोलकर रखने चाहिये ताकि उससे सभी लाभ उठा सकें। जब हम लोग रोग निवारण के लिये अपना व्यवसाय करते हैं तब साथ ही यह हमारा कर्तव्य होजाता है, एवं "सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया" की उक्ति के अनुसार अपने उच्चतम प्रयोगों को आपस में आदान प्रदान करके सब को स्वास्थ्य लाभ दे सकें। इस कार्य में हमारा सहयोग ये ही आयुर्वेदीय मासिक पत्र उचित रूप से देते हैं, अतः वे धन्यवाद के पात्र हैं। मैंने अपने शतशः अनुभूत योग इन १० वर्षों में प्रकाशित कराये हैं एवं 'रसायन' मासिक में पिछले कुछ वर्षों पूर्व 'अनुभूत योग रत्नावली' स्तम्भ में नियमित रूप से मैं अपने पास की संचिका के प्रयोग जो रामबाण की तरह हैं, प्रकाशित हुए हैं। मेरी प्रार्थना है वैद्य अपने गुप्त प्रयोगों को प्रकट करने में तनिक भी संकोच न करें। संसार की सभी वस्तुएं यहां तक कि मिट्टी भी औषधि है। यथा चरकाचार्य के मतानुसार 'जगत्यैवभ औषधम्'। तब हम जो भी नुसखा बनाते हैं, उसमें औषधियां तो होती ही हैं फिर वे गुप्त कैसी ? केवल तर्क एवं द्रव्य, प्रयोग निर्माण विधि में ही भिन्नता हो सकती है। आप अपने सच्चे प्रयोगों को सर्व साधारण के समक्ष रखेंगे, लोग उसका उपयोग करके लाभान्वित होंगे उसी में अपने शास्त्र आयुर्वेद का हित साधन होगा। आज कैंसर, राजयक्ष्मा, मधुमेह, कुष्ठ सदृश्य दुष्ट व्याधियों की भारतवर्ष में भरमार है और ऐसे समय में हमें इन रोगों से छुटकारा दिलाने की औषधियों की खोज करनी है। वैसे मामूली ज्वर, कास, फोड़े फुंसियों का इलाज करने में यश प्राप्त नहीं होता भीषण रोगों को जीतने में वैद्य का वैद्यत्व दृष्टीगोचर होता है।

पाश्चात्य पद्धति के विद्वानों को देखिये, उनके वैज्ञानिक लाखों रुपया खर्च करके एवं पूर्ण मेहनत से जो प्रयोग या फार्मुला (formula) निश्चित करते हैं, उसका सम्पूर्ण विवरण वे सब के सामने रखकर उस औषधि का प्रचलन सर्वत्र करा देते हैं। उदाहरणार्थ 'पेनिसिलिन' स्ट्रेप्टोमाइसिन, सल्फाड्रग' की सैकड़ों औषधियों को हर एक बड़ी बड़ी कम्पनियां तैयार करके देश विदेशों को भेजते हैं। अस्तु —

'प्राणाचार्य' के संचालक वयोवृद्ध श्री बांकेलाल जी गुप्त के उत्साह का हम हृदय से स्वागत करते हैं जो समय समय पर उत्तम एवं सस्ता साहित्य जिसका सर्व साधारण लाभ उठा सकते हैं प्रकाशित करके आयुर्वेद साहित्य की अनुपम सेवा करते हैं। मुझे ज्यों ही 'प्रयोगमणिमलांक' प्राप्त हुआ, मैं अपने सारे काम छोड़कर उसे पढ़ने लगा, पश्चात् एक बारगी उसे आद्योपान्त अवलोकन कर गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुनः प्रारम्भ से ज्यों-ज्यों विद्वान लेखक गण के प्रयोगों को मनन करने लगा, त्यों ही यथा समय अपने वर्षों के अनुभव भी समक्ष आने लगे एवं इसी लेख के अन्तर्गत में उन्हें लिखता चला गया। मेरा यह लेख अपने अनुकूल प्रयोगों से परिपूर्ण एवं लेखकों के प्रयोगों पर अपनी राय प्रदर्शित करेगा। राय उसी अवस्था में लिखी गई है जिन औषधियों का व्यवहार में कई बार कर चुका हूं, एवं उन्हें कोई विशेष लाभप्रद नहीं पाया, आशा है इस धृष्ठता के लिये लेखक क्षमा करेंगे एवं पुनः उसकी शंका समाधान एवं उदाहरणार्थ रोगियों पर किस अवस्था में वे फलीभूत हुई हैं उसका स्पष्टीकरण करेंगे। मेरे दिये गये प्रयोगों की परीक्षण करके कृपा कर उसके फलाफल से भी सूचित करें।

'प्राणाचार्य' का यह जून जुलाई १९५६ का विशेषांक 'प्रयोग मणिमालाअंक' अति सुन्दर एवं विद्वान वैद्यों के अनुभव का निचोड़ स्वरूप है। कुछ उच्च कोटि के माने हुए चिकित्सकों के प्रयोगों पर दृष्टिपात करते ही उसकी सत्यता पर सहज ही विश्वास हो जाता है, यथा सर्व प्रथम श्री बांकेलाल जी के होनहार सुपुत्र एवं हमारे मित्र श्रीयुत कृष्णगोपाल जी गुप्त के 'शास्त्रीय अनुभूत प्रयोग' ही देखिये। इन औषधियों का व्यवहार कष्ट-साध्य एवं असाध्य रोगों को जीतने के लिये आयुर्वेद संसार के बहुत से चिकित्सक बहुतायत से व्यवहृत करके यश के भागी होते हैं। अल्प मूल्य एवं काष्ठादिक औषधियों के सेवन से रोगी को लाभ अवश्य होता है, किन्तु न्यून। यदि होता भी है तो काफी लम्बी अवधि तक औषधि सेवन के बाद। कोई-कोई रोग ही ऐसा होता है जिनमें मात्राओं के बिना काम नहीं चलता। उदाहरणतः राजयक्ष्मा को ही लीजिये। मेरा जहां तक अनुभव है अल्प मूल्य वाली औषधियों से लाभ न्यून होता है, ऐसे रोगियों को स्वर्ण, मुक्ता का प्रयोग शीघ्र लाभ पहुंचा सकता है, साथ ही कुछ बहु मूल्य रस कूपीपक्व रस, बहुमूल्य रत्नों की पिष्टियां अथवा भस्में स्वतन्त्र एवं मिश्रित योगों के साथ मिलाकर देना उचित होगा। अनुपान के लिये उच्चतम भोजन जिनमें विशेष रूप से द्राक्षारिष्ट, बब्बूलारिष्ट, वासावलेह, सितोपलादि चूर्ण, मृगशृंग भस्म, अभ्रक भस्म आदि की व्यवस्था अच्छी रहेगी। ऐसी औषधि योजना एवं पथ्यापथ्य का निर्धारण करने पर रोगी का रोग शमन अवश्य हो सकता है। क्योंकि उपरोक्त मौलिक औषधियां अपना प्रभाव शरीर के घटकों पर शीघ्र करके रोग के कीटाणुओं को नष्ट करती हैं। यथा—केवल गिलोय सत्व एवं प्रवाल पिष्टी का सेवन एक मास पर्यन्त करने पर जिन रोगियों की उष्णता, तृष्णा, मूत्र दाह, बेचैनी आदि विकार शमन होते हैं, वहां 'मुक्ता पिष्टी' की केवल ७ मात्राएं योग्य शीतल अनुपान से देने पर शमन हो जाते हैं।

कई रोगियों की शारीरिक प्रकृति इतनी कठिन हो जाती है, जिन्हें किसी भी सौम्य औषधि से उनकी देह पर कोई विशेष परिणाम नहीं होता, यह दोष उनकी देह में स्थित विजातीय उष्मा का है, ऐसी अवस्था में उन्हें 'संशमनी वटी' (गुडुची घन सत्व से निर्मित) का सेवन कुछ काल तक कराना चाहिये, इस साधारण औषधि से बढ़े हुए दोषों का शनैः शनैः शमन होकर उदरस्थ सभी यन्त्र नियमित कार्य करने लगते हैं, तब कोई भी औषधि से उनकी देह पर उसका प्रभाव होने लगता है, चुनाचे जो भी औषधि प्रदान की जावे वह शुद्ध एवं प्रमाणिक हो।

मलावरोध के रोगियों पर भी सौम्य एवं शीतल औषधियों की मात्रा से कभी-कभी कोई प्रभाव नहीं होता, ऐसी अवस्था में उनका कब्ज निवारण करना अनिवार्य हो जाता है। 'कब्ज' दूर करने के हेतु मैं देह बल प्रकृति के अनुसार निम्नलिखित प्रयोगों में से हेर-फेर करके सेवन कराता हूं। कुछ शास्त्रीय चूर्ण जिनमें स्वादिष्ट विरेचन पंचसम, पंचसकार, त्रिफला तथा केवल निसोत, जौ हरड़ केस्टर आइल (एरंड तैल) में भुनी हुई, कालादाना (भुना हुआ) आदि अपने संग्रह में सदैव रखता हूं। कुछ विशेष सारक एवं रेचक रस यथा अश्वकंचुकी, नाराच, इच्छाभेदी का व्यवहार बहुत कम आवश्यक होने पर ही सेवन कराये जाते हैं। परन्तु निम्नलिखित औषधियां जिनमें उसारेरेवन्द फेनाफ्थालिन् (Phenolphthaline) पाश्चात्य औषधि सनायफल्ली (Senna Pods) विशेषकर हैं। देह बल, प्रकृति के अनुसार एवं अपनी तुच्छ बुद्धि से उपरिलिखित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चूर्णों में फेर फार करके मिश्रित औषधि देता हूं, यदि रोगी का उदर अधिक सख्त हो तो उपरोक्त किसी एक चूर्ण में 'फेनाफ्थालिन' को ५ ग्रेन की मात्रा में मिलकर देने से दस्त साफ होकर तबियत प्रसन्न हो जाती है ! यहां तक कि कई बार आंतों में संचित हुआ मल एवं जमा हुआ विष, जिसके द्वारा कीटाणुओं Bactarias की उत्पत्ति होती है तथा दो चार हफ्तों पूर्व खाये हुए मूली, प्याज आदि सब्जियों के टुकड़े भी मल विसर्जन के समय पाये गये। ऐसी सारक या रेचक औषधि से रोगी के रोग शमन होने में काफी सहायता मिलती है।

'सनाय फल्ली' जिसे पाश्चत्य वैद्यक में Senna Pods कहते हैं, वस्तुतः यह औषधि साधारण है किन्तु इसमें सनाय की तरह गन्ध, जी मचलाहट, पेट की मरोड़ अधिक मल त्याग आदि दुर्गुण नहीं हैं, परन्तु फिर भी वैद्यों में इसका प्रचलन बहुत कम पाया जाता है। वैसे 'सनाय' को वैद्य लोग वर्षों से व्यवहृत करते हैं। ये सनाय की फल्लीयां एक विशेष सनाय की जाति की हैं, जो समुद्री इलाके में बहुतायत से होती हैं। इसे त्रिवेन्द्रम्, तेनावल्ली, कोझीकोड़े (कालीकट) आदि स्थानों के व्यापारी संग्रह करके देश विदेशों को भेजते हैं। हमारी वस्तु होते हुए भी इसका प्रचलन पाश्चात्य वालों ने बड़ी विधि पूर्वक किया है। वैसे श्री पूज्य स्व० यादव जी महाराज इसे वर्षों से प्रयोग में लेते थे, इस सम्बन्ध में 'द्रव्य गुण विज्ञान' (वैद्यनाथ प्रकाशन) में इसका जिक्र आया है। इसकी १५ से २० फल्ली को दो चार घण्टे पूर्व कांच या चीनी के बर्तन में १ छटांक पानी में भिगो देवें, एवं रात्रि में सोते समय छानकर पी जावें, प्रातः एक या दो दस्त खुलकर हो जावेंगे, मरोड़, पेट की ऐंठन, मचलाहट आदि न होकर शरीर हलका प्रतीत होता है पुराने कब्ज के रोगियों के लिये मैंने इसे श्रेष्ठ पाया है कल्प करने वालों एवं मेद कम करने वालों को इसे नित्य-प्रति सेवन करा सकते हैं। कमजोर प्रकृति वालों के लिये भी अच्छा है इसी प्रकार यदि कफ युक्त रोगी को हमें सारक या रेचक औषधि देनी पड़े तो पंचसकार, पंचसम चूर्ण को ३ से ६ माशे लेकर उसमें २ से ४ रत्ती उसारेरेवन्द पीसकर मिला देते हैं एवं रात्रि को उष्ण जल के साथ सेवन कराते हैं इससे दूसरे दिन प्रातः कफ युक्त दस्त होजाता है साथ ही श्लेष्माधिक्य हो तो वमन होकर छाती हल्की होजाती है। बच्चों की कई व्याधियों में जिनमें विशेषकर पसली चलन डब्बा (Broncho Pnemonia) मलावरोध, कफयुक्त ज्वर, कास श्वासादि लक्षण हों तो उसारेरेवन्द को सोडा बाई कार्ब (स्वर्जिकाक्षार) दुगने प्रमाण में मिलाकर २ से ४ रत्ती की मात्रा में माता के दूध के अथवा जल के साथ दिलाता हूं जिससे बहुत अंशों में कफ निकलकर कोष्ठ शुष्क होजाता एवं वमन होकर छाती का विकार ठीक हो जाता है।

मैं अपने विषय को भूल ही रहा था जैसा कि मैं पहले बना चुका हूं कि मेरा यह लेख "प्रयोगमणिमालाङ्क" के विज्ञ लेखकों पर ही निर्भर है आपके प्रयोगों पर दृष्टिपात करके ज्यों ही मुझे अपने अनुभूतप्रयोग स्मरण आये अपनी लेखनी चलाता गया जैसे कुछ अल्प अनुभव एवं बुद्धि से लिखा है किन्तु प्रार्थना है कि इन्हें अवश्य अजमाइये एवं गुणावगुण सहर्ष "प्राणाचार्य" में प्रकाशित कराइये मैं संम्पादक महोदय से प्रार्थना करूंगा कि वे गुणावगुणों सम्बन्धी लोगों की राय के लिये प्राणाचार्य में अवश्य ही स्थान देगें।

हां तो प्रयोगमणिमालाङ्क के पृष्ठ २० पर जब श्री डाक्टर महावीर प्रसाद जी रंजन एल०एम०पी० महोदय के दो प्रयोग कान के बहने पर एवं यकृत वृद्धि पर पढ़े तो मुझे भी अपना अनुभव स्मरण हो आया जो इस प्रकार है वत्सनाभमूल को आखिरी सिरे पर से एक डेढ़ इंच काट कर कान साफ करके कान में उसका डाट लगा दिया करें कुछ दिनों के प्रयोग से वर्षों का कान का बहना बन्द हो जायगा। मेरे पास कुछ रोगियों का विवरण है जिनको २ से १५ वर्ष से कान की शिकायत थी वे अच्छे होगये हैं। लेख विस्तार भय से उदाहरण देना उचित नहीं समझना इसी प्रकार यकृत वृद्धि पर एक हास्पीटल का योग है जो अत्युत्तम साबित हुआ है प्रयोग—

Acid Hydrochloric dill (लवणाम्ल)	१५ बूंद
Ferriet Ammon citras	५ ग्रेन
Ext Kalmegh	१ ड्राम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Ext Punarnawa — १ ड्राम
शुद्ध जल — २ औंस

—सबको मिलाकर दिन में ३ वार दिलावें। इसके कुछ दिन के प्रयोग से यकृतप्लीहावृद्धि,मंदज्वर,बद्धकोष्ठ,कामला शोथ आदि नष्ट होते हैं। रसतन्त्रसार(प्रथम भाग) में वर्णित प्लीहान्तक वटी लोह युक्त का सेवन भी उपरोक्त व्याधि में पूर्ण लाभकारी पाया गया है।

पृष्ठ २७ पर श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज कालेडा कृष्णगोपाल वालों के मधुरान्तक वटी (रसतन्त्रसार या सिद्ध प्रयोग संग्रह) को पढ़ा यह भी अति उत्तम योग है परन्तु महंगा एवंसर्व जगह पर उपलब्ध न होने के कारण वहां अमृत संजीवनी वटी को प्रातः सायं: १से२ वटी तक ४से६ लौंग के क्वाथ से लेने पर मंथरज्वर में कोई उपद्रव न होकर ज्वर यथा समय शमन होजाता है। पश्चात् पृष्ठ २६ पर स्व० श्री गुर्णे जी के प्रयोग भी मुझे अति पसन्द आये उनके सभी प्रयोग शास्त्रीय होते हुये भी उसको रोगी पर किस प्रकार व्यवहार किया गया है यह पढ़कर उनकी विद्वता स्पष्ट होजाती है। उनके प्रयोग रोगियों पर पूर्णरूप से लाभ करेंगे ऐसा पूर्ण विश्वास है। पृष्ठ ३१ पर श्रीमान् पं० सद्‌गोपाल जी सीनियर रिसर्च आफीसर के घनसत्व के निर्माण की नई क्रिया से वैद्यों का अति कल्याण एवं आयुर्वेद की वनौषधियों से निर्माण होने वाले श्याम घनसत्व को उज्वल रूप मिलेगा इसके लिये वे धन्यवाद के पात्र हैं। मैंने त्रिवेन्द्रम् वैद्य सम्मेलन के समय वहां के आसपास के कुछ फार्मेसी वालों की ओर से लाये गये घनसत्व के नमूने (Tablets) के रूप में प्रदर्शन में देखे थे, किन्तु वे सब रूप एवं स्वाद में उचित नहीं थे, अतः उपरोक्त महोदय की क्रिया से उन्हें भी नई क्रांति मिलेगी। पृष्ठ ३३ पर श्री कविराज हरदयाल जी वैद्यवाचस्पति के प्रयोगों की तुलना करना सूर्य को दीपक दिखाना है, आपके प्रयोग अत्युत्तम हैं "अमृत" का प्रयोग तो अपने नाम से ही सार्थक है क्योंकि इनमें से बहुतेक द्रव्यों को मिलाकर हम नियमित व्यवहार करते ही हैं।

इसके पश्चात् पेज ५२ तक के सभी योग विद्वानों की लेखनी द्वारा लिखे गये एक से एक उत्तम साबित हुए। पृष्ठ ५३ पर श्री डा० रतीलाल जी भट्ट का क्षय (टी० बी०) के ऊपर एक प्रयोग है; क्या वैद्य जी सोदाहरण उसका ब्यौरा लिखने का कष्ट करेंगे ? क्योंकि उस प्रयोग के द्रव्यों को देखते हुए 'क्षय' जैसी महान भयंकर व्याधि के कीटाणुओं के नष्ट होने में आश्चर्य होता है; हां, पथ्यापथ्य ब्रह्मचर्यव्रत आदि का आदेश दिया है जो अति उत्तम एवं रोगवृद्धि को रोकने में सहायक हो सकता है। पुनः पृष्ठ ६२ तक प्रयोग अच्छे जंचे। पृष्ठ ६३ पर वैद्य श्री मोहनलाल जी कामलिया के श्वेत प्रदर एवं पेट के केंचुए पर प्रयोग पढ़े। तीन दिन के प्रयोग से श्वेत प्रदर, पेट के केंचुए निकल जाते हैं। इनका प्रयोग किया, निष्फल सिद्ध हुआ। केंचुए (कृमि) उत्सर्ग के हेतु साधारण बड़ी अवस्था वाले बच्चों को 'खोण्टा' लिखे अनुसार जबरन खिलाया, छोटे बच्चों को कैसे सेवन कराया जावे ? परन्तु जिन्हें दिया व्यर्थ गया, ऊपर से खांसी का उपद्रव तीव्रतर हुआ। ऐसे प्रयोग से समय एवं व्यर्थ की परेशानी के अलावा कुछ नहीं निकला। प्रयोग दाता ने किस प्रकार उपयोग एवं गुण प्राप्त किया है, कृपया सोदाहरण प्रकाशित करावें।

मैं अपना एक साधारण प्रयोग कृमि नाश हेतु सर्व साधारण को देकर अच्छा फल देखता हूं, आप भी आजमाइये।

बढ़िया भीकामाली पीसकर शीशी में सुरक्षित रखें। मात्रा - २ रत्ती से ८ रत्ती तक जल अथवा दूध के साथ। यह औषधि उचित लाभदायक सिद्ध हुई है, कृमिजन्य उपद्रव यथा शूल, ज्वर, वमन, विरेचन, कास आदि में भी शीघ्र प्रभावकारी है। नाहरू (बाला) रोग में १ माशा औषधि, शंखभस्म ४ रत्ती के साथ प्रातः सायं दो सप्ताह सेवन कराने से उसका कृमि भीतर ही गलकर साफ हो जाता है। इसके साथ कपूर मिलाकर भी देते हैं।

पेज ८१ तक प्रयोग अच्छे जचे। उनका उपयोग क्रमशः करके लिखूंगा भी। पुनः श्री रामनारायण जी दुबे बामोरा (सागर) के प्रयोग 'नेत्ररोग (परवाल) एवं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वादिष्ट चूर्ण' पढ़े। ये दोनों प्रयोग क्रमशः पृष्ठ १२३ एवं १६५ पर श्री गोपीनाथ जी भिषगृत्न एवं स्व० श्री महावीर प्रसाद जी मालवीय के नाम से भी है, क्या दुबे जी स्पष्ट करेंगे कि वास्तव में ये दोनों प्रयोग आपके हैं अथवा आपने स्वयं इनको निश्चित किया हैं, अन्यथा इनके अपहृत होने में कोई संदेह नहीं है। जो दुबे जी सदृश विद्वान के लिये अशोभनीय है। मैं अपना एक प्रयोग स्वादिष्ट चूर्ण का देता हूं पाठक बनाकर उपयोग में लें एवं उसके गुणों को 'प्राणाचार्य' में छपवा कर अपना मत अवश्य प्रगट करें।

स्वादिष्ट पाचक चूर्ण--

मिश्री		४० तोला
अनारदाना	जीरा सफेद	पीपल छोटी
बड़ी इलायची के दाने		कालीमिर्च

प्रत्येक ५-५ तोला

सैंधव नमक	६ तोला
नीबू सत्व (Acid Tataric)	३ तोला
पिपरमेंट (Menthol)	६ माशा

—सबको यथा विधि अलग-अलग कूट पीसकर चूर्ण बनावें एवं भली भांति एक साथ मिला शीशी में सुरक्षित रखें।

मात्रा—३ माशा से ६ माशा तक। हर समय आवश्यकतानुसार। यह पेट का दर्द, मन्दाग्नि, अजीर्ण, जी मचलाहट, वमन, पतले दस्त, कब्ज, वायु विकार में लाभ करता है, खाने में निहायत स्वादिष्ट है।

पश्चात् पृष्ठ १०० तक के प्रयोग भी भले प्रतीत हुए। पुनः महन्त हरनारायणदास जी के प्रयोग देखे, जिन्हें कई बार व्यवहृत किया, जो अति साधारण हैं, हां पथ्य जो तक्र सम्बन्धी है, वह तो सर्व विदित ही है, मन्त्रों का भी उल्लेख किया है, परन्तु वर्तमान समय को देखते वे नहीं के बराबर हैं, फिर भी वैद्यों को जानकारी कराई है, इसके लिये वे धन्यवाद के पात्र हैं।

(क्रमशः)

पृष्ठ ४३६ का शेषांश

कालकाल सम्प्राप्ति—

रात दिन ऋतु भोजन के अंशों से रोग का विचार करना काल सम्प्राप्ति है। यथा रात्रि के आदि में कफ मध्य में पित्त शेष में वायु इसी प्रकार दिन में विभाजन करना वसन्त में कफ, शरद में पित्त, वर्षा में वायु तथाच भोजन में भुक्तादौ भुक्त मात्रे कफम् मध्य तथा पच्यमानावस्था में पित्त अन्त तथा सम्पर्क परिणाम में वायु।

वाग्भटे यथा ते व्यापिनोऽपि हृन्नभ्योरधोमध्योर्ध्व संश्रया वयोऽहो रात्रि भुक्तानां तेऽन्त्य मध्यादिगा क्रमात्।

इस प्रकार संक्षेप में यह सम्पूर्ण निदानार्थ है सम्पूर्ण रोगों में दोष ही मूल कारण है और वे दोष विविध हिताहित के सेवन से होते हैं। सुश्रुते यथा—

नास्तिरोगो विनादोषै र्यस्मात्तस्माद्विचक्षणः।
अनुक्तमपि दोषाणां लिङ्गैर्व्याधि मुपाचरेत्॥

अनेक रोग भी दूसरे रोग का निदान होते हैं यथा ज्वरेष्मा से रक्तपित्त, रक्तपित्त से ज्वर उससे शोष अर्श से उदर रोग इत्यादि। —अपूर्ण

यह लेख यदि पाठकों को रुचिकर प्रतीत हुआ तब अग्रिम लेख में नाड़ी मूत्र मल इत्यादि परीक्षा का विवरण प्रकाशित करेंगे।

प्राणाचार्य घुटी

(बालकों को मीठी व स्वादिष्ट घुटी)

इसके सेवन से बालकों के अनेक रोग जैसे—हरे पीले दस्त, खांसी, अफरा, उल्टी, दांत निकलने के समय के सभी रोगों में लाभदायक हैं। बालक चाव से पीता है।

पता—प्राणाचार्य भवन प्रा० लिमिटेड
विजयगढ़ (अलीगढ़)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फुफ्फुसों की रचना और परीक्षा

लेखक—वैद्य कृष्णगोपाल गुप्त अयुर्वेदाचार्य B. I. M. S.

(गतांक से आगे)

विकृति जन्य शब्द—

श्वास शब्दों से भिन्न फुफ्फुस के भागों में विकृत होने से उत्पन्न हुये शब्द को विकृति जन्य (औपाधिक) शब्द कहते हैं।

इन शब्दों के मुख्य स्वरूपों का नीचे वर्णन किया जाता है।

१—करकरापन—

वायु कोष्ठ अथवा सूक्ष्म वायु प्रणालियों में तरल की उपस्थित होने से जब वायु तरल में से गुजरती है यह शब्द उत्पन्न होता है। यह स्थूलादि भेद से चार प्रकार का प्रतीत होता है।

२—मृदु करकरापन—

दो चिपकी हुई अगुंलियों को कर्ण के समीप लाकर पृथक करने से जैसा शब्द श्रवण होता है लगभग उसी के समान इसे समझना चाहिये। फुफ्फुस कोष्ठो में स्राव युक्त शोथ होने से कोष्ठ भित्तियां परस्पर मिल जाती हैं। श्वास लेने पर वायु के प्रवेश करने से जब यह भित्तियां प्रथक होती हैं उस समय मृदु करकरायन शब्द आता है। खण्डीय फुफ्फुस प्रदाह तथा तथा कभी २ राजयक्ष्मा की प्रथमावस्था में यह शब्द प्रतीत होता है यदि इस शब्द की सम्भावना हो तब रोगी से दीर्घ श्वास लेने को कहने पर सुने तो स्पष्ट प्रतीत होजाता है।

३—कठोर करकरापन—

दीर्घ (बड़ी) वायु प्रणाली या बड़े कोटर में तरल के संचय होने पर जब उनके द्वारा निकलती है उस समय यह शब्द होता है। राजयक्ष्मा की गम्भीरावस्था तथा श्वसनक ज्वर के शांति काल में यह शब्द श्रवण होता है।

४—मध्य करकरापन--

यह उक्त दोनों से मध्य की होती है छोटी वायु प्रणाली या छोटे कोटर में तरल हो उस समय वायु के निकलने पर आती है।

१—मिश्रित करकरापन--

उक्त तीनों के मिश्रित स्वरुप वाले शब्द को कहते हैं।

२—शीत्कार शब्द--

राजयक्ष्मा की अन्तिम अवस्था में जब कास आकर तरल तथा वायु बाहर जाती है उस समय रिक्त कोटर से वायु आने पर यह शब्द होता है। इसमें ऐसा शब्द प्रतीत होता है जैसे किसी वायु हीन स्थान में छिद्र करने पर वायु प्रवेश के समय होता है।

३—कूजन--

तीव्रकास, तमकश्वास तथा प्रणालीय फुफ्फुस प्रदाह आदि में जब शोथ से वायु प्रणालियों के मार्ग संकुचित हो जाते हैं तब उनमें से वायु गुजरते समय यह शब्द होता है। इसके दो स्वरूप हैं—

मृदु कूजन--

इससे पतला और बारीक शब्द होता है यह शब्द निःश्वास के अन्त में श्रवण होता है।

कठोर कूजन—

कपोत कूजन वत होता है। यह शब्द पूर्ण निश्वास के समय श्रवण होता है इन दोनों में भेद केवल इतना है कि यह मृदु कूजन छोटी प्रणालियों में और कठोर बड़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रणाली में होता है।

छलकन शब्द--

किसी जल युक्त बन्द पात्र को हिलाने पर होने वाले शब्द के समान होता है। जब फुफ्फुसावरण के बीच में तरल और वायु दोनों हों तब रोगी को हिलाने से यह शब्द श्रवण होता है।

घर्षण शब्द-

स्पर्शन परीक्षा में इसका कुछ वर्णन किया है यहां से विस्तार से देते हैं।

घर्षण शब्द को श्रवण करने में कभी २ भ्रम हो जाता है जिससे भयंकर हानि तक होगई है अतः इस शब्द के मिलने पर चिकित्सक को कुशलता से कार्य लेना चाहिए। क्योंकि घर्षण शब्द तीन अवस्थाओं में मिलता है।

प्रथम-

फुफ्फुसावरण शोथ में जब तरल का अभाव होजाता है उस समय श्वास प्रश्वास लेने पर फुफ्फुसावरणों की परस्पर रगड़ से यह घर्षण शब्द होता है।

द्वितीय-

प्रथम की भांति हृदयावरण शोथ में उनकी परस्पर रगड से यह शब्द होता है।

तृतीय-

हृदयावरण और फुफ्फुसावरण की रगड से भी यह शब्द मिलता है।

इन तीनों में भेद करने का सरल उपाय है कि रोगी कुछ क्षण के लिये श्वास रोकले जिससे फुफ्फुस गति रुक जाने से शब्द न हो यदि फिर भी प्रतीत हो तब निश्चय हृदयावरण से होने वाला समझें।

फुफ्फुसावरणों से होने वाला शब्द दो प्रकार का होता है।
कर्कश और मृदु।

मृदु शब्द ऐसे फुफ्फुसावरण प्रदाह में होता है जिसमें तरल तो होता नहीं किन्तु स्निग्धता रहती है।

कर्कश शुष्क फुफ्फुसावरण प्रदाह में होता है।

३-उच्चारित शब्द-

रोगी के बोलने से वक्ष पर उसी शब्द का श्रवण होना उच्चारित शब्द श्रवण कहलाता है। यह शब्द श्रवण फुफ्फुस प्रदेश प्रत्येक भाग पर समान सुनाई नहीं देता कहीं हलका कहीं तीव्र प्रतीत होता है किन्तु दोनों पार्श्वों के समान स्थान पर सम रहता है। इस शब्द श्रवण में कुछ व्याधियों के कारण असमानता आजाती है उसी का यहां वर्णन किया जाता है।

जब शब्द दूर से आता प्रतीत हो तो शब्द श्रवण कम समझना चाहिए जब पास आता प्रतीत हो तब वृद्धि हुआ तथा जब ऐसा प्रतीत हो कि कान के पास ही बोल रहा है तब अति वृद्धि हुआ जानना चाहिए।

शब्द श्रवण में असमानता लाने वाले कारण—

जीर्ण फुफ्फुसावरण शोथ, तरल न्यूनता, वायु प्रणालियों में बाधा होना, फुफ्फुसावरणों में वायु होना वायु कोष्ठ विस्तृत होने से शब्द श्रवण कम होजाता है फुफ्फुस में कोटर होजाने से फुफ्फुसावरण में अत्यधिक तरल संचय से शब्द श्रवण वृद्धि करता है।

ष्ठीवन परीक्षा

फुफ्फुस रोगों में ष्ठीवन अर्थात् थूक में गये पाया जाता है। जो प्रथक २ रोगों में होता है इससे कभी २ निदान में उत्तम सहयोग प्राप्त होता है। यहां हम ष्ठीवन परीक्षा भेद संक्षिप्त में देते हैं।

इसमें दो बातें देखनी होती है—

प्रथम—वर्ण और रूप एवं द्वितीय मात्रा

वर्ण भेद-

कफ युक्त—कफ अथवा श्लेष्मा युक्त स्वच्छ, श्वेत, घन एवं चिपचिपा होता है। ऐसा थूक प्रातः साधारण कास होने पर आता है।

दुर्गन्ध युक्त—थूक दुर्गन्ध युक्त अधिक और कभी २ रक्ताभ भी आता है ऐसा थूक वायु प्रणाली विस्तृति फुफ्फुस कोथ तथा विग्रटि आदि में आता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूय युक्त—पूय युक्त थूक में कुछ पूय और श्लेष्मा दोनों का वर्ण मिलता है यह कुछ श्वेत व कुछ पीताभ तथा कुछ तरल व कुछ घन होता है। ऐसा थूक अनेक रोगों में देखने को मिलता है यथा-जीर्ण, काल, कास युक्त श्वास न्यूमोनियां (श्वसनक), राजयक्ष्मा।

राजयक्ष्मा का थूक गोली के समान बंधा हुआ तथा जल में डूब जाने वाला होता है।

रक्त युक्त—फुफ्फुस से आने वाला रक्तमय थूक श्लेष्मा युक्त रक्त वर्ण का होता है। इसमें कभी रक्त वर्ण कम और कभी अधिक होता रहता है यह राजयक्ष्मा में तथा उरःक्षत में आता है। उरःक्षत रक्त की मात्रा अधिक रहता है।

सीरम युक्त—कफ के साथ २ रक्ताभ पतला होकर तरल आता है। यह फुफ्फुस शोथ में आता है।

२–मात्रा और समय—इसमें यह देखना होता है कि एक वार में कितना थूक आता है तथा रातदिन में कितनी वार और कितना आता है। किस समय अधिक आता है।

जैसे—राजयक्ष्मा तथा वायु प्रणाली विस्तृति में प्रातः काल अधिक थूक आता है। जीर्ण कास में थूक थोड़ा २ कई वार आता है पीनस में वार २ अधिक कफ आता है।

फुफ्फुसों में विकृति आने के मुख्य कारण

उपसर्ग—

जब जीवाणु ज्याद मनुष्यों या प्राणियों के शरीरों पर आक्रमण कर के विकार उत्पन्न करते हैं तब उस प्रक्रिया को उपसर्ग कहते हैं। यहां शंका उत्पन्न होती है कि मनुष्यों के शरीरों में अनेक स्वरूप के जीवाणु सदैव उपस्थित रहते हैं किन्तु उनकी उपस्थित में भी मनुष्य स्वस्थ रहते हैं? यह ठीक है, किन्तु केवल शरीर में जीवाणु की उपस्थित उपसर्ग होने के लिये पर्याप्त नहीं हो सकती। इसके लिये (उपसर्ग को) यह आवश्यक है कि जीवाणुओं को ऐसी स्थिति प्राप्त हो जिससे वह संख्या वृद्धि और विषोत्पत्ति कर अपना प्रभाव शरीर पर डालने में समर्थ हो सकें। वह स्थिति निम्न है—

१–मनुष्य शरीर की प्रतिकारक शक्ति(रोग क्षमता)न्यून हो–यह शक्ति श्लेष्मल त्वचा, स्वेद, आमाशयिक रस तथा अन्य स्राव, रक्तगत मक्षक सैल, पचिकर, पुंजकारक और द्रावक सामान्य प्रतियोगी पदार्थ इन साधनों के ऊपर निर्भर होती है। इनमें से एक भी साधन निर्बल होने पर उपसर्ग होजाता है। इनकी निर्बलता निम्न कारणों से होता है—

१–आयु—बाल और वृद्ध इन दोनों में प्रतिकारक शक्ति स्वभाव है ही निर्बल होती है, इसलिये श्वसन ज्वर जैसे रोग इन अवस्था में अधिक होते हैं।

२–परिस्थिति—शरीर और कपड़ों की अस्वच्छता, गन्दे मकान, और घने मुहल्लों में रहना आदि से भी स्वास्थ्य नष्ट होने से शक्ति न्यून हो जाती है।

३–आघात—इसमें अति सर्दी आदि का समावेश भी होता है। आघात से त्वचा की निर्बलता होती है या उसमें व्रण हो जाते हैं, जिससे जीवाणु प्रवेश कर सकते हैं। वाह्य त्वचा पर प्रहार का जो परिणाम होता है वही श्लेष्मल त्वचा पर सर्दी आदि से होता है।

४–अन्नाभाव—आहार में प्रोटीनों, खनिज और जीवतिक्त की कमी स्वास्थ्य नाशक होती है।

४–प्राकृतिक रोग—मधुमेह, वातरक्त, चिरकालीन वृक्कशोथ आदि रोग शरीर को निर्बल बना देते हैं, जिससे इन रोगियों में राजयक्ष्मा, न्युमोनियां आदि औपसर्गिक रोग हो जाया करते हैं।

६–कुछ उपसर्ग—कुछ उपसर्ग ऐसे होते हैं कि स्वयं घातक न होने पर भी शरीर को निर्बल बना देते हैं और उसी के कारण उनसे रोगी बचने पर अन्य जीवाणुओं के चंगुल में फंस जाते हैं। इसके प्रधान उदाहरण हैं–रोमान्तिका, कुकर कास, एन्फ्लुएन्जा आदि।

उपसर्ग कैसे होता है—उपसर्ग एक प्रकार का द्वन्द है जिसमें उपसर्गकारी जीवाणु और मनुष्य की प्रतिकारक शक्ति से भारी संग्राम होता है। जब मनुष्य के बल से जीवाणुओं का बल अधिक होता है उस अवस्था में उपसर्ग होजाता है।

उपसर्ग का फल—उक्त कारणों से जीवाणु को अनुकूलता मिलने से वह तुरन्त वृद्धि करने लगते हैं और साथ २ विष में उत्पत्ति करते हैं। यह जीवाणु या तो एक स्थान पर ही सीमित रहते हैं या कभी रक्तवाहिनियों आदि द्वारा सम्पूर्ण शरीर में फैलकर रोग उत्पन्न करते हैं। —क्रमशः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्त्री और गर्भ धारण काल

लेखक—श्री धीरेन्द्रमोहन भट्ट आयुर्वेदाचार्य जी० ए०एम०एस० बतौली, सरगुजा (म०प्र०)

"ऋतुः स्त्रीणां रजोदर्शनात् षोडश निशाः यत्र भवमार्त्तवम्"

अर्थात् रजोदर्शन से १६ रात्रि पर्यन्त ऋतुकाल कहा गया है और इन्हीं रात्रियों में गर्भ धारण शक्ति रहती है क्यों कि स्त्री बीज बीज कोष से परिपक्व हो कर महीना में एक बार आता है। इस बीज के निकलने का काल आर्तव स्राव के दिन से १६ दिन तक रहता है। इसी को गर्भाधान काल कहते हैं। इस काल में स्त्री को ऋतुमती कहते हैं।

ऋतुस्तु द्वादशरात्रं दृष्टार्त्तवो भवति षोडशरात्र मित्यन्ये शुद्ध योनि गर्भाशयार्त्त वयामासमीयनित केचिद तद्वत् अदृष्यार्त्त वोप्यस्तित्यपरे।

(अ. सं)

ऋतुस्तु द्वादशरात्रं भवति दृष्टार्त्त वाप्यस्तृतीयके यासन्ते।

(सु० शा० अ० ३)

आर्तव स्राव दिवसादृतु षोडश रात्रयः गर्भ ग्रहण योगस्तु सएव समस्मृतः।

(भाव प्रकाश)

ऋतुस्तु द्वादश निशां पूर्वास्ति स्तोऽत्र निंदिता।

(अ० हृ० शा०)

अर्थात् ऋतुकाल में बीज कोष से स्त्री बीज उत्सर्गित होते हैं जिससे उन दिनों गर्भ धारण होता है क्यों कि गर्भोत्पत्ति की तुलना अंकुरोत्पत्ति से की गयी है। जैसे अंकुरोत्पत्ति के लिये काल की आवश्यकता होती है वैसे गर्भ धारण के लिये ऋतुकाल (स्त्री गर्भ धारण काल) का सान्निध्य आवश्यक है।

स्मृति ग्रंथों के देखने से पता चलता है कि ऋतुकाल के सम्बन्ध में आचार्यों का मत भिन्न भिन्न है।

मनुस्मृति अ० ३ श्लोक १६ में मनु ने "ऋतु स्वभाविकः स्त्रीणां रात्रयःषोडश स्मृतु" लिखा है। किंतु याज्ञवलक्य स्मृति में "षोडशर्त्तु निशा स्त्रियां स च(ऋतु)रजोदर्शन दिवसा दारम्भ षोडसाहोरात्रः" ऐसा लिखा मिलता है। किन्तु सेक्सुअल फिजीऔलौजी में भी मार्शल ने साधारणतः चौथे से तेरहवे दिन के अन्दर गर्भधारण होने का समर्थन किया है। इसके अतिरिक्त ऋतुकाल में बीज बाहर आता है और उसके आस पास दो-तीन दिनों तक पुरुष समागम करने से गर्भ धारण करने की अधिक संभावना रहती है। जैसा कि चरक शरीर अध्याय ३ के निम्न पंक्ति से स्पष्ट होता है—

पुरुषस्यानुपहतरेतसः स्त्रियाश्चप्रदुष्ट योनि शोणित गर्भाशयाया यदा भवति संसर्ग ऋतु काले... ....
तदागर्भोऽभिनिर्वर्तते।

अर्थात् बीजोत्सर्ग अधिकतर रजोदर्शन के बारह से सत्तरह दिनों के अन्दर होता है। जिस दिन स्त्री बीज निकलता है उस दिन स्त्री के शरीर का ताप बढ़ जाता है तथा पेडू के पार्श्व में कुछ पीडा सी मालूम होती है। यूं तो ऋतु काल में ही स्त्री पुरुष के समागम से गर्भ धारण की संभावना अधिक रहती है किन्तु इसके अतिरिक्त स्त्री बीजों का अधिक देर से निकलना तथा बीजों का कई दिनों तक गर्भजनन अवस्था में उपस्थित रहना बताया गया है। इस सन्बन्ध में "मास मीयति" लिखकर अष्टांग संग्रह ने स्पष्ट कर दिया है कि स्त्री बीज और पुंबीज के स्त्री जननेन्द्रिय में अधिक देर तक जीवित रहने के कारण और बीजोत्सर्ग में बिलम्ब होने के कारण ऋतुमती काल के बाद भी गर्भ धारण होता है.

ऊपर ऋतुकाल के सम्बन्ध में बताया गया है नीचे की पंक्तियों में गर्भ धारण काल के उपयुक्त वय का विचार किया जाता है।

CC-0: In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब लडकियां बाल्यावस्था के पश्चात द्वितीयावस्था में पदार्पण करती है तो उसके शरीर में एक विचित्र परिवर्तन होते दिखाई पडता है जिसे प्रचलित शब्दों में यौवनावस्था कहते हैं और इस अवस्था की मुख्य पहचान आर्त्तव स्राव का होना बताया गया है अर्थात बारह साल की उम्र से प्रारम्भ होकर पचास साल की उम्र तक स्त्रियों की योनि से स्वभावतः प्रतिमास आर्त्तव का स्राव होता है। और इसी उम्र तक स्त्रियों में गर्भधारण की क्षमता रहती है। यथा-

मासि मासि रजः स्त्रीणां रसजं स्रवति त्र्यहम्।
वत्सराद्द्वादशादूर्ध्वं याति पंचाशतः क्षयम्॥
(अ०हृ० शा०अ०१)

तत् वर्षात् द्वादशात् काले वर्त्तमान मसृगपुनः जरा पक्वं परीशराणाम् याति पंचाशतम् क्षतम्। (सु०शा०अ०२२)

द्वादशाद्वत्सराद्ध्र्वं पंचात्संमाः स्त्रियः।
मासि मासि भगद्वारात्यकृत्यैर्वान्तवस्रवेत्॥

द्वादशात् इति प्रायिक मेतत एकादशवार्षिकानामपि स्त्रीणां रजः प्रवृति दर्शनम् पंचाशत क्षय मित्यपि रक्तमेव विचिन्त्यम्॥

यद्यपि प्रथम रजोदर्शन का समय १२ साल से प्रारम्भ और ५० साल की उम्र में (गर्भावस्था और प्रसूति काल को छोडकर) बताया गया है किन्तु यह देश, काल, आहार विहार आदि पर निर्भर करता है और यह देखा जाता है कि शीत देश की अपेक्षा गर्म देश की लड़कियों में शीघ्र होता है। ग्रामीण लड़कियों की अपेक्षा शहरी लड़कियों में रजोदर्शन प्रथम होता है। जिसका एकमात्र कारण विलास प्रियता पूर्ण जीवन एवं तीक्ष्ण पदार्थों का सेवन आदि है।

भारत वर्ष में अधिकतर १२ से १३ वर्ष तक की उम्र में ही रजोदर्शन होते पाया गया है। रजः क्षय का अन्तिम कारण भी देश, काल, आहार, विहार, जलवायु आदि पर निर्भर करता है। क्योंकि ५० साल के बाद भी रजोदर्शन होते हुये यदा-कदा देखा जाता है।

रजोदर्शन के साथ-साथ शारीरिक एवं मानसिक परिवर्तन होते हुये भी देखा जाता है। जैसे भगपीठ तथा कक्षादि स्थानों में बालों का उगना, जननेन्द्रिय तथा स्तनों की वृद्धि के साथ-साथ लज्जा आदि मानसिक भावों का प्रादुर्भाव।

विशेष स्पष्टीकरण के लिये आर्त्तवस्राव काल का भी संक्षेप में वर्णन किया जाता है।

मासान्निष्पिच्छदाहार्ति पंचरात्रानुबंधि च।
—च० चि० अ० ३०

अर्थात् महर्षि चरक ने आर्त्तवस्राव का काल ५ दिनों तक माना है। किन्तु हारीत संहिता ने सात रात्रि पर्यन्त माना है—

"रजः सप्तदिनं यावत् ऋतुश्च भिषजां वरः।
सप्त रात्रास्योनि शुद्धि तस्मात् ऋतुमती भवेत्॥
—हा० सं० शा० अ० १

"दिनत्रय प्रवृतिश्च कुरुते पुनितं स्त्रियाम् पंचरात्रानुबंधि च।"

यों तो स्राव काल प्रायः ५ दिनों तक ही बताया गया है, और इस समय स्त्रियों की प्रकृति स्वास्थ्य एवं आयु के अनुसार भिन्नता देखी जाती है। साधारणतः स्राव होकर भी बीच में एकाध रोज के लिये रुककर पुनः २-३ दिनों तक होते देखा जाता है। मधुकोषकार ने अपनी मधुकोष टीका में "पंचरात्रानुबन्धीमिति पंचरात्राप्रभूत प्रवृत्यानुबन्धति इत्यर्थ। अल्प प्रवृत्या पंचरात्रात् परतोऽपि अनुबंधनीति" लिखा है। आधुनिक विद्वान के मतानुसार भी आर्त्तवस्राव काल ५ दिन तक ही माना गया है। किसी किसी के कथनुसार २ से ८ दिन भी माना जाता है।

आर्त्तवस्राव की चार अवस्थायें होती हैं जिसमें आर्त्तव स्राव आने के ४५ दिन पूर्व को प्रथमावस्था कहा जाता है। इस अवस्था में गर्भाशय की अन्तरावरण की कला रक्त के अधिक एकत्रित होने के कारण द्विगुण स्थूल और नरम हो जाती है।

दूसरी अवस्था—यह ४-५ दिनों तक रहती है। इसके शुरू में केशिकायें रक्त से भर जाती है और केशिकाओं के टूटने से कला के नीचे रक्त जम जाता है। रक्त के अधिक जम जाने के कारण कला भी फट जाती है जिससे रक्त फिर से गर्भाशय में चला जाता है।

तीसरी अवस्था—सात दिनों तक को माना गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसमें टूटी हुई कला, केशिकायें तथा ग्रंथियां अपनी पूर्वावस्था में आजाती हैं ।

चतुर्थावस्था—तृतीयावस्था के अन्तिम समय से लेकर चतुर्थावस्था के प्रारम्भिक समय तक को माना गया है। यह अवस्था गर्भाशय के विश्राम की मानी गई है। उपरोक्त परिवर्त्तन गर्भाशय शरीर में होने के अतिरिक्त समीपस्थ अंगों में सिर्फ रक्ताधिक्य होता है एवं गर्भाशय ग्रीवा योनि और भग से अधिक रक्तस्राव भी होता है। कई स्त्रियों में ग्रैवेयक ग्रंथि व स्तनों में परिवर्तन होते हुये भी देखा जाता है।

आर्त्तव स्वरूप–

"आर्त्तव माग्नेयंमिति येषामप्यत्र भूतानां सान्निध्यम् स्यणु ना विशेषेण । —सु० शा० अ० ३

"मासेनोपचितं रक्तं धमनीभ्यामृतौ पुनः ।
ईषत्कृष्णं विगंधं च वायुर्योनि मुखान्नुदेत ॥"
—अ० हृ० शा० अ० १

आर्त्तव में अग्नि तत्व की प्रधानता होती है, और कृष्ण वाताधिक्य के कारण तथा विगन्ध योनि में आर्त्तव के अधिक काल तक रहने से होता है। आर्त्तव स्राव का काम अपान वायु का होता है । इसमें श्लेष्मा मिश्रित होने के कारण उन उन स्थानों का स्राव भी मिला रहता है। साधारणतः यह माना गया है कि रक्त स्पन्दन की कमी के कारण रक्त में खटीक की राशि अधिक होने के कारण भी रक्त जमता नहीं है और रक्त कुछ काला, लाल तथा चमकीला होता है, जिसकी प्रतिक्रिया क्षारीय होती है। यह रक्त योनि मार्ग द्वारा प्रति मास ४ औंस से ८ औंस की मात्रा में बाहर आता है। आयुर्वेद में इसकी मात्रा दो अंजली प्रमाण बताया गया है।

शुद्धार्तव का लक्षण–

शशासृक प्रतिभं यच्च यद्वा लाक्षा रसोपमम् ।
तदार्त्तवं प्रशंसति यद्वासो न विरञ्जयेत ॥ इत्यादि

आर्त्तव काल का भेद बतलाते हुये महर्षि चरक ने बताया है कि—"यदा चानयोस्तथैव युक्ते च संसर्गे शुक्र शोणित संसर्गमन्तर्गर्भाशयगतं जीवोऽवक्रामति इतिः।"

तद् संश्रित व्यामुखेदाति गर्भाशयंप्रति तत्र शुक्रवत आयस्तें नार्त्तवेन युत् भवेत् । —भावप्रकाश

द्वादशाब्दे व्यतीतेषु यति पुरुषं वहिर्नहि अन्तः पुष्पं भवत्येव पनसोदुपरादिवत् । —वा० का० सूत्र

घृत पिण्डो यथैवाग्नि मासुत प्रविलीयते वीसर्पत्यार्त्तवां नार्यास्तथा पुंसा समागमे । —सु० शा० अ० ३

आर्त्तवस्राव कालिक शारीरिक एवं मानसिक लक्षण

आर्त्तव स्राव से पहले शरीर में भारीपन, कटि प्रदेश में शूल, स्वभाव में चिड़चिड़ापन आदि लक्षण होते हैं। ताप में कुछ न्यूनता भी देखी जाती है । आयुर्वेद में यद्यपि अवस्था भेद से कोई विचार नहीं किया गया जैसा कि—"मासेन रसं शुक्रमस्त्रीणां चार्त्तवं भवतीति ।" (सु० शा० अ०१४) में आया है। इस सम्बन्ध में विश्वामित्र का कथन है कि "सूक्ष्मकेश प्रतिकाशाः बीजं रक्तवहा शिराः गर्भशये पूरयन्ति मासाद बीजाद जायते" के अतिरिक्त डल्हण ने "मासेन् आर्तवस्या भवनम् उपचयीऽभिप्रेतः प्रकाशस्व । यस्मात् आर्तवस्य रक्तवतं सप्ताहे नैव उत्पत्ति रीति ते एव रक्तामभिवहतो विसृजश्च नारीणां आर्त्तवः ।" लिखा है।

ऊपर बताया गया है कि प्रथम रजोदर्शन का समय १२ वर्ष की उम्र से महीने महीने प्रारम्भ होता है और आर्त्तव गिरने से १६ रात्रि पर्यंत औरतें ऋतुमती कहलाती है और इसी समय में पुरुष समागम करने से गर्भाधान होता है।

ऋतुमती का लक्षण–

गते पुराणे रजीस नवे चावस्थिति शुद्धस्नातां स्त्रियमव्यापन्नयोनिशोणित गर्भाशयामृतुमतीमाचक्षमहे । तया सह तथा भूतया यदा पुमान व्यापन्न बीजो मिश्री भावं गच्छति, तदा तस्य हर्षादुदीरितः परः शरीर धात्वात्मा शुक्रभूतोऽङ्गादङ्गात् सम्भवति ॥ (च०शा०अ०४)

लेकिन शास्त्र १६ वर्ष से कम उम्र की लड़कियों और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२५ साल से कम आयु के पुरुषों के समागम से उत्पन्न गर्भाधान को उचित नहीं बताया है। ऋषि का कथन है कि १६ वर्ष से कम आयु की स्त्री में २५ वर्ष से कम आयु के पुरुष समागम से जो गर्भ रहता है वह गर्भ असमय में ही विपत्ति को प्राप्त करता है। इसके अतिरिक्त इस समय के गर्भाधान में गर्भपात तथा गर्भस्राव का भय रहता है यदि इन संकटों के बावजूद बालक उत्पन्न भी हुआ तो निर्बल होजाता है। अस्तुः

आचार्यों ने गर्भाधान के लिये वय का उल्लेख निम्न रूप में किया है जिसपर ध्यान देना अनिवार्य है। यथा–

ऊन षोडश वर्षायाम् प्राप्तः पंचविंशतिम्।
यद्याधत्ते पुमान गर्भं कुक्षिस्थः स विपद्यते॥
जातो वा न चिरञ्जीवेद् जीवेद्वा दुर्बलेन्द्रिया।
तस्मादत्यन्त बालायां गर्भाधानं न कारयेत्॥
(सु॰शा॰अ॰ १०)

आचार्य वागभट्ट का भी मत लगभग इसी से मिलता है जो निम्न है—

पूर्ण षोडश वर्षा स्त्री पूर्ण विंशेन संगता।
शुद्धे गर्भाशये मार्गे रक्ते शुक्रेऽनिले हृदि॥
वीर्यवतं सुतं सूते……… (अ॰हृ॰शा॰अ॰ १)

इसलिये आचार्य भट्ट का पुनः कथन है कि यदि १६ वर्ष से कम में गर्भ रह भी जाय तो–ततोन्यूनाब्दयोपुनः रोगाल्यायुरधन्यो वा गर्भो भवति नैव वा॥ फिर सुश्रुत का यह कथन भी कम महत्त्व पूर्ण नहीं है—

पंच विंशेततो वर्षे पुमान नारी तु षोडशे।
समत्वागत वीर्यौ तौ जानीयात् कुशलोभिषक्॥

ऊपर बताया गया है कि रजोदर्शन से १६ रात्रि तक ही स्त्री ऋतुमती कहाती है और इन्हीं रात्रियों में गर्भ धारण शक्ति भी रहती है इसके बाद जिस तरह दिन के समाप्त होने से कमल स्वयं बंद होजाता है उसी तरह ऋतु समाप्त होने पर गर्भाशय मुख भी बन्द होजाता है। यथा—

नियतं दिवसेऽतीते संकुचत्यंम्बुजो यथा।
ऋतु व्यतीते नार्यस्तु योनिः संवृयते तथा॥

इसके अतिरिक्त गर्भवती स्त्रियों में आर्त्तव को बहाने वाली शिरा के रास्ते को गर्भ रोक देता है जिस कारण गर्भ धारण के पश्चात आर्त्तव नहीं निकलता है। यथा—

ग्रहीत गर्भाणां स्त्रीणामार्त्तव वहाना स्रोतसा गर्भेण अवरोधादार्त्तव न स्रवति। इस सम्बन्ध में श्रीधर का कथन यह है कि—

शेषं चोर्ध्वतरमागतं पयोधरौयाति तस्माद् गर्भिण्यः पीवर पयोधरा भवन्ति।

अर्थात शेष रहा आर्त्तव ऊपर दोनों स्तनों में जाकर गर्भिणी के कुचों को पुष्ट करता है।

५० वर्ष के बाद रजोक्षय या रजोनिवृति होजाने के कारण बीजकोष से बीजोत्सर्ग होना बंद होजाता है और गर्भाशय, योनि एवं डिंबकोष सिकुडने लगता है साथ ही यदा कदा वात संस्थान, रजवह संस्थान, पाचन संस्थान आदि में कुछ परिवर्त्तनों के साथ शरीर स्थूल और पुंचिह्न युक्त देखा जाता है।

Thyroid gland तथा अधिवृक्क ग्रंथियों के अन्तस्राव अधिक मात्रा में आने से कोमल स्वभाववाली स्त्रियां भी उग्र होजाती हैं और इस कारण गर्भधारण शक्ति नष्ट होजाने के कारण ही ५० वर्ष के बाद औरतें गर्भाधान नहीं करती हैं।

किन्हीं स्त्रियों में गर्भाधान न होते हुये भी देखा जाता है जिसके लिये चरक–सुश्रुत में वर्णित गर्भस्थापन योग्य औषधियों का प्रयोग करना चाहिये। विषयान्तर और लेख वृद्धि के कारण यहीं इसका उल्लेख करना युक्ति संगत नहीं होगा!

शुद्ध सिरका

ईख का उत्तम विधि से सभी के उपयोग योग्य सिरका हमने निर्माण कराया है। जिनको आवश्यकता हो लिखें। मूल्य १ बोतल १॥)

थोक भाव के लिये पत्र व्यवहार करें।

पता–प्राणाचार्य भवन प्रा॰ लि॰,
विजयगढ़ (अलीगढ़)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्वरांकुश नं० १–

गौदन्ती	१ सेर
स्फुटिका	१ सेर
नवसार	२ सेर

—सबको यवकुट कर मिट्टी के बड़े बर्तन में सम्पुट कर गजपुट में रखें। शीतल होने पर पीसकर रखें। मात्रा सम भाग सिता चूर्ण मिलाकर २ रत्ती से २ माशे तक बलाबल देखकर दिन में ३–४ बार। अनुपान—अर्क शतपुष्पा अथवा गरम जल।

बालक युवा वृद्ध को आमाशय दोष, ज्वर, आमयुक्त प्रवाहिकायें लाभकारी है। हम अपने आतुरालय में सहस्त्रों रोगियों को चुके हैं।

ज्वरांकुश नं० २–

सिता चूर्ण	१२ छटांक
तवाक्षीर	१० छटांक
खूबकला	२ छटांक

—सबको वस्त्रपूत चूर्ण कर रख लें। सधारण ज्वर में पित्त ज्वर में तथा आमाशय विकार के ज्वरादि में दें। यह चूर्ण किसी भी अवस्था में हानिकर नहीं। मात्रा ४ रत्ती से २ माशे तक।

इन्दुकला वटी–

शुद्ध शिलाजतु	१ तोला
लोह भस्म (शतपुटी)	१ तोला
स्वर्ण भस्म	३ माशे
स्वर्णमाक्षिक भस्म	६ माशे
तुलसी घन सत्व	१ तोला
मुक्ता पिष्टी	३ माशे

—सब द्रव्यों को मिला कर साधारण जल अथवा अर्क गाजवां से १–१ रत्ती की बटी बना छाया में सुखालें। इसके सेवन से मसूरिका, विस्फोटक, लोहित ज्वर तथा सम्पूर्ण व्रण रोग हरते हैं। "भैषज्यरत्नावली" के योग को हमने अपने अनुभव से कुछ भिन्न कर लिया है। जिससे कुछ सस्ता भी हो गया है और अधिक हृद्य तथा लाभकारी भी है। इस योग को हमने टाइफाईड ज्वर में 'ज्वरांकुश' नं० २ के साथ द्राक्षा के साथ सैंकड़ों रोगियों को देकर यश प्राप्त किया है। Chloromycetin Capsules जो आधुनिक समय की अचूक टाइफाईड के स्थान पर यह योग कहीं अधिक गुणकारक है। हमने बीसियों उन रोगियों पर प्रयोग किया है जो यह क्लोरोमिसटीन से पित्ताधिक्य में बिगड़ गये थे। यह हृद्य और पुष्टकारक भी है।

—कवि० धर्मदत्त चौधरी आयुर्वेदाचार्य

खूनी दस्त पर–

लोध पठानी नागरमोथा गज पीपर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धवई के फूल मोच रस

विधि—इन सब को समान भाग लेकर आधा सेर पानी में क्वाथ बनावे। आधा रहने पर उतार लें।

सेवन विधि—दो तोला पानी और आधा तोला शहद के साथ दिन में तीन बार आवश्यकतानुसार चार बार।

कब्ज पर—

वायविडङ्ग मरोड़फली छोटी हरड़
नमक काला अकौड़ा के फूल की फिरकी

विधि—फूल की फिरकी को आग पर अकोर लें। सबको पीसकर मधु के साथ बड़े मटर के समान गोली बनालें।

मात्रा—१ से २ गोली तक जल के साथ दिन में ३ बार।

वीर्य विकार पर—

ताल मखाना दरयाई ताल माखाना
बीजबन्द कामराज हंसराज
सालिम मिश्री रतनज्योति समुद्रसोख
सतावर चौमुखी गोखरू वंशलोचन
जावित्री सफेद मूसली

—यह सब ६–६ माशे लेकर तथा १० तोला मिश्री में मिलाकर चूर्ण बनाकर शीशी में कपड़ छान कर रख ले।

मात्रा—६ माशे सुबह व ६ माशे शाम जल के साथ।

नोट—सेवन काल ब्रह्मचर्य पालन करे गर्म दूषित खाना मना है। उपरोक्त प्रयोग श्रीमान् गुरू जी से प्राप्त हैं।

—श्री रामचरन कटियार वैद्य, ढिकची।

बिच्छू के काटे का योग

गोभाबूटी—(खरतूवा की शक्ल की बूटी होती है उसमें कांटे होते हैं।) उसके हरे पत्तों को लाकर अपने हाथों से मल २ कर वार २ दिखलाये इस प्रकार १०–१५ दफा दिखाने से बिच्छू के काटे हुए मनुष्य का विष उतर जायगा अनुभूत है।

मिथ्या गर्भ पर

मिथ्या गर्भ (खलड़ी पड़ जाना) जिस औरत के खलडी पड़ जाय उसको गर्भ मालूम देता है कुछ महीने बाद निचुड जाती है गर्भ नहीं मालूम देता बाद में खलडी भर जाती है फिर गर्भ मालूम देता है इस प्रकार स्त्री कष्ट पाती रहती है योग इस प्रकार है—

कुम्हारी (वरघुली) जानवर जो गर्मियों में अपने मुख से अपना घर दीवार पर बना लेती है उसको ६ तोला, ढाक का गोंद ६ तोला मिश्री ६ तोला पीस छानकर रखलें प्रातः काल जल से दिन में लेवें खलडी निकल जायगी गर्भाशय शुद्ध होगा।

सर्प के काटे पर

काकजंघाबूटी (नसी) जोकि वर्षा के समय में होती है उसे लाकर रखलें मनुष्य चौपाये अर्थात् किसी जीवधारी को भी सर्प काट खाये तो ६ माशा बूटी, कालीमिर्चे १० जल में पीस कर पिलावें दो तीन बार के पिलाने से सर्प का विष नष्ट होजाता है। यह योग सन्यासियों से प्राप्त हुवे हैं।

उपदंश पर

मदारके मूल की छाल, जीराकी जड़की छाल, सिंगरफ तीनों को कूट पीस कर महीन कर टिकिया ७ बनावे जड़ों की छाल हरी होनी चाहिये टिकियाओं को डिबिया में बन्द कर रखें एक टिकिया प्रातः एक टिकिया शाम हुक्के में रख पीवें कोयले की आग रखें हुक्के में पानी नहीं पीना चाहिए और अन्दर ओढ़कर बैठे वहां हुक्का पीना चाहिए इससे मुंह आयगा अगर कुछ कमी रह जावे या मुंह नहीं आवे तो ७ टिकिया फिर बनाव निश्चय जन्म भर को आराम होगा मुंह आजावे लार को टपकादेवे निगले नहीं खाने को गोचनी का दलिया व दूध खावे जबतक मुंह अच्छा हो तब तक कुछ नहीं खावे तेल खटाई गुड इत्यादि का पथ्य दो तीन महीना रखना चाहिए।

मगज विसारी पर

काग की कांच जो अकसर कार्तिक में ग्वार के खेतों या करीलों पर पाई जाती है छिली कचरी के समान हलकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूई के समान होती है उसको २ रोज जलाकर असली घी के मोतीचूर के लड्डू में मिलाकर खिलावे ७ दिन में कृमी निकल पड़ेगें आराम होगा। मगजविसारी में दिमाग में कृमि पड़ जाते हैं नाक के रास्ते निकलते हैं। मूंग की दाल रोटी खावे दूध पीवे।

रक्तप्रदर

मोठा बूटी जिसमें जारीवे के समान पत्ते आते हैं बिच्छू के डंक के समान फली या मोठ के समान फली आती है उसे ६ माशा इलायची छोटी नग ७ कालीमिर्च नग ७ मिश्री देशी २॥ तोले घोटकर सुबह शाम पिलावे ७ दिन में निश्चत प्रदर नष्ट होगा।

—कविराज वृजलाल अग्रवाल बिछौर

तान्त्रिक-प्रयोग

एक वर्ष तक कोई भी रोग नहीं हो—

१—काली मिर्च   हरी नीम की पत्ती
मिश्री   —सब समान भाग

विधि—एकत्र कर बांट लें, और ३ से ६ माशा प्रमाण की गोलियां बना लें।

समय—चैत्र सुदी प्रतिपदा को, सिर्फ प्रातः काल १ गोली स्नानादिक से निवृत्त हो, निहार मुंह खालें।

गुण—बस। एक वर्ष तक आपको कोई रोग नहीं होगा।

२—पारिभद्र (नीम) के कोमल पत्ते और फूल
कालीमिर्च   लौंग   अजवायन
सफेद जीरा   —प्रत्येक समान भाग
हींग (घी में भुजी) शुद्ध किञ्चित

विधि—एकत्र कर पीस लें। और ३ से ६ माशे तक की गोलियां बना लें। चैत्र सुदी प्रतिपदा को प्रातः काल सिर्फ १ या २ गोली स्नानादिक कर निहार मुंह खालें। फिर एक वर्ष तक कोई रोग नहीं होगा।

पशुओं पर तान्त्रिक प्रयोग—

घोड़े के पैर (सुम) का नख। पीस लें और रोटी नमक या अनाज में मिलाकर कार्तिक वदी अमावास्या (दिवाली की रात्रि) को खिला दें।

फोड़ा पकाने को—

तवाखीर किसी वर्तन में रख पानी में घोल लें और आग पर रख दें। जब लेहवत हो जावे तब फोड़े पर लगादें। फोड़ा पक जावेगा।

फोड़ा या घाव भरने को—

फोड़ा या घावको फटकरी, नीम या परमेगनेट आफ पुटास के पानी से धो कर तवाखीर को बारीक पीस छान कर घाव या फोड़ा पर भुरक दें फोड़ा या घाव जल्दी भर जावेगा। उसमें से मवाद निकलना भी बन्द होजावेगा।

चढ़े हुए बुखार उतारने को—

१—तुलसी पत्र	४ नग
काली मिर्च	२ नग
बड़ी दाख, बीज रहित	२ नग

—एकत्र कर बांट लें। और गोलियां बनालें यह जवान आदमी को १ मात्रा है। चढ़े हुए बुखार में यह मात्रा खिला दें। १५ मिनट के भीतर बुखर उतरने लगेगा। कभी कभी यह क्रिया २०-२० मिनट के अन्तर से तीन वार भी करनी पड़ती है।

गर्मी के बुखार उतारने को—

एक कांसे के पात्र में ठण्डा जल भर लें। रोगी की नाभि पर वह पात्र रखें बुखार क्रमशः उतरने लगेगा यदि सिर दर्द करता हो तो यही क्रिया करें।

बुखार में हाथ पांव ठण्डे हो जाने पर—

लहसुन को बांट कर बीसों नखों पर लेप कर दें सूखने पर यही क्रिया पुनः करें। हाथ पांव पूर्ववत् गर्म हो जावेगा।

चढ़े हुए बुखार उतारने को—

(२)—सफेद आक की जड़ का चूर्ण	२ रत्ती
गुड़	३ माशा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इकत्र कर गोली बना लें ।

मात्रा—यह १ गोली है ।

गुण—पसीना देकर ज्वर उतर जावेगा ।

ब्राम्ही वटी—

जायफल	जावित्री	लौंग
दाल चीनी	उत्तम केशर	नाग केशर
अकर करा	पीपरामूल	छोटी पीपल
चित्रक	बड़ी इलायची के दाने	काली मिर्च
खैर सार	कुलींजन	शतावर
पोहकर मूल	तेजबल	तमाल पत्र
शंखा हूली	अजमोद	अजवायन
अभ्रक-भस्म	लोह-भस्म	कस्तूरी
चांदी के वर्क		

प्रत्येक १-१ तोला

विधि—बांट छानकर दाखों के रस में मूंग प्रमाण गोलियां बना लें ।

मात्रा—बालक को १ वटी । जवान मनुष्य को ४ वटी तक

अनुपान—गर्म जल के साथ ।

समय—दोनों काल ।

गुण—मोती भरा, शीतला, प्रसूत-ज्वर, कफज्वर, शीघ्र दूर हो ।

रोग होने में अशुभ काल—

(१) स्वाती, अश्वनी, पुनरवसु, पुष्प, श्लेखा, आर्द्रा, तीनों पूर्वा और ज्येष्ठा नक्षत्र और —

(२) मंगल, रवि, और शनिवार, तथा—

(३) परिवा, छट, एकादशी, चौथ, और चतुरदशी ।

यदि ये तीनों महूर्त एक ही दिन में (पड़े) हों तो रोगी की अवश्य मृत्यु होगी ।

वैद्य के पास जाने में अशुभ काल—

(१) मध्यान (दो पहर) काल, अर्द्ध-रात्रि, प्रभात काल (पौ फटने का समय), और सायं काल की सन्धि, तथा—

(२) कृतका, आर्द्रा, श्लेखा, मघा, मूल, पूर्वा-फाल्गुनी, पूर्वा षाढ़ा, पूर्वा-भाद्र प्रद, और भरणी नक्षत्र, तथा—

(३) चौथ, छट, नवमी, पूर्णमासी, असन्धि के दिन, दूत इस बताये हुए समक में वैद्य के पास जावें तो रोगी की अवश्य मृत्यु होगी ।

रोग मुक्त होने अवधि—

(१) रेवती और अनुराधा में रोग उत्पन्न हो तो उसका निवारण अति कष्ट से होता है ।

(२) उत्तरा व मृगशिर नक्षत्र में रोग उत्पन्न होने से १ माह पीछे ।

(३) मघा नक्षत्र में होने से २० दिन बाद ।

(४) हस्त नक्षत्र में होने से १५ दिन बाद ।

(५) घनिष्टा और मूल नक्षत्र में रोग होने से ६ दिन बाद ।

(६) भरणी, चित्रा, श्रवण व शतभिषा नक्षत्र में रोग होने से ११ दिन बाद ।

(७) उत्तरा भाद्रप्रद, पुष्प, पूर्वी फाल्गुनी, अभिजित और पुनरवस्तु नक्षत्र में रोग उत्पन्न होने से ७ दिन के बाद रोग का निवारण होता है ।

सर्प काटने का महूर्त—

(१) कृतका, मूल, मघा, विशाषा, श्लेखा, और आर्द्रा नक्षत्र तथा—

(२) दोनों सन्ध्याओं के मध्य, श्मसान भूमि, बांबी के पास यदि सर्प काटे तो रोगी की निश्चय मृत्यु हो ।

रोगी का दूत आने पर वैद्य को अशुभ सूचकता—

(१) दूत या रोगी, लोहे की बस्तु, कालीवस्तु, बीडी आदि पीता हुआ, विधवा औरत को साथ लिये, अंग-भंग मनुष्य, हिंसक प्राणी वैद्य या रोगी के पास उस समय ये मौजूद हों तो कुशल वैद्य को चाहिए कि ऐसे रोगी का इलाज करना छोड़दे । वह अवश्य ही यमपुर की यात्रा को जायेगा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

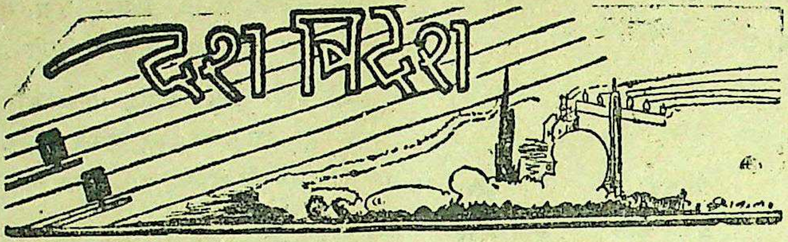

उत्तर प्रदेशीय भारतीय चिकित्सा समिति का परीक्षाफल

A. B. M. S. (प्रथम वर्ष)

राजकुमारसिंह आयु० कालेज इन्दौर

रौल नम्बर	नाम विद्यार्थी	श्रेणी
५	प्रेमनारायण दाधीच	पास
६	अनन्तप्रसाद गौतम	,,
११	रामकुमार मिश्रा	,,
१२	बद्रीलाल यादव	द्वितीय
१३	बाबूलाल मुकुन्द पाटीदार	,,
१५	युगलकिशोर जोशी	,,
१७	कस्तूरचन्द जैन	,,
१६	किरमल हुमाड़	,,
३२	सुरेन्द्रकुमार तिवारी	पास
३३	रामचन्द्र तुलसीराम जी शाकल्य	पास
३५	हृदयनाथ लक्ष्मणराव	,,

बुन्देलखण्ड आयु० कालेज झांसी

रौल नम्बर	नाम विद्यार्थी	श्रेणी
३६	भगवत दयाल सिलोइया	पास
३७	सुदर्शन कुमार	,,
३६	बालगोबिन्दसिंह वर्मा	,,
४०	रमेशचन्द्र दीक्षित	,,
४१	रामप्रकाश त्रिपाठी	,,
४७	हरगोबिन्द वर्मा	,,
४६	ब्रह्मानन्द शर्मा	द्वितीय
५०	जगदीशचन्द्र अग्रवाल	,,
५३	नारायणदास निरंजन	,,
५६	केवलकृष्ण मरवाह	,,
५८	सौदानसिंह यादव	,,
६३	हरीराम सुदर्शनी	,,
६५	रुद्रप्रकाश आर्य	,,
६६	त्रिभुवननाथ शर्मा	,,
६६	तुलसीराम लोहारिया	,,
७२	भूपसिंह सचन	,,
७३	सुरेशकुमार त्रिपाठी	,,
७५	महेन्द्रकुमार श्रीवास्तव	,,
७६	गोविन्दसिंह निरंजन	,,
७८	गोविन्ददत्त दुबे	,,
८०	सीतारामसिंह	,,
८३	रामनाथ शर्मा	,,
८६	लक्ष्मीनारायण गुप्ता	पास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रौल नम्बर	नाम विद्यार्थी	श्रेणी
८७	भृगुनाथसिंह	पास
८८	सोहनसिंह	,,
८९	विनोदचन्द्र उपाध्याय	,,
९०	देवेन्द्रसिंह वर्मा	,,
९१	विष्णुकान्त गुप्ता	,,
९२	विद्याराम गुप्ता	,,
९३	भैरवप्रकाश शर्मा	,,
२७३	श्रीमती संतोष गौर	,,

आयुर्वेदिक कालेज अतर्रा (बांदा)

९६	वंशरूप त्रिपाठी	पास

मध्य भारत गवर्नमेंट आयु० कालेज ग्वालियर

१०९	चन्द्रमोहन अष्ठाना	द्वितीय
११३	महावीर कुमार जैन	,,
११४	जगदीश प्रसाद जैन	,,
११५	सुखलाल गुप्ता	,,
११६	महेशनारायण श्रीवास्तव	,,
११८	देशवन्धु गुप्ता	,,
११९	आनन्द स्वरूप	पास
१२०	रामकुमार शर्मा	द्वितीय
१२१	रामप्रकाश श्रीवास्तव	,,
१२२	नरसिंह नारायण शुक्ला	पास
१२४	मदनमोहन शर्मा	,,

ऋषिकुल आयु० कालेज हरिद्वार

१२७	रामपालसिंह	पास
१२८	कृपालसिंह	,,
१२९	नन्दलाल शर्मा	,,
१३१	वेदव्रत	,,
१३२	सुखदेव चौधरी	द्वितीय
१३३	ओंमप्रकाश गहलौत	,,
१३४	महावीरप्रसाद अग्रवाल	पास
१३५	कृष्णगोपाल मोहता माहेश्वरी	,,

रौल नम्बर	नाम विद्यार्थी	श्रेणी
१३७	रतनप्रकाश अग्रवाल	पास
१४०	नरेन्द्रदेव	द्वितीय
१४१	सत्यवीरसिंह	पास
१४३	सुरेशचन्द्र शर्मा	द्वितीय
१४४	अजयकुमार सचन	,,
१४५	महकसिंह	,,
१४८	देवसिंह वर्मा	,,
१४९	राजकिशोर गोयल	पास
१५३	वेदप्रकाश शर्मा	द्वितीय
१५४	जगदीश प्रसाद	,,
१५६	ोद काश शर्मा	पास
१५७	जयकुमार विश्नोई	द्वितीय
१६०	रविकृपाल शर्मा	पास
१६१	मलखानसिंह	द्वितीय
१६२	बलराजसिंह गहलौत	,,
१६४	विजयसिंह वर्मा	,,
१६७	रामप्रकाश अग्रवाल	पास
१७०	त्रिलोकचन्द संगल	द्वितीय
१७३	इन्दराज दावदा	पास
१७४	शशिकान्त शर्मा	,,
१७६	जगदीश सहाय	द्वितीय
१८१	शतीशकुमार सिंघल	,,
१८२	श्यामस्वरूप दुबे	पास
१८३	बीरबल शर्मा	,,
१८५	पीतम्बरदास एन० बगाचन्दानी	द्वितीय
१८७	धर्मदेव	पास
१८८	गुरुबक्सलाल सचदेव	द्वितीय
१८९	विक्रमसिंह चौहान	पास
१९०	चन्दमोहन कंवर	द्वितीय
१९१	प्रभात मोहन दरगर	,,
१९३	धर्मपालसिंह वर्मा	,,
१९४	रोवतराम शर्मा	पास
१९५	वीरेन्द्रसिंह सिंवास	पास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रौल नम्बर	नाम विद्यार्थी	श्रेणी
१६८	ओउमप्रकाश शर्मा	पास
२०२	दमयन्ती देवी	,,
२०४	किशोरीलाल	,,
२०५	रामकुमार अग्रवाल	,,
२०६	प्रेमप्रकाश शर्मा	द्वितीय
२०९	शंकरदत्त मिश्रा	पास

गुरुकुल आयु० कालेज कांगड़ी

रौल नम्बर	नाम विद्यार्थी	श्रेणी
२११	वेदमित्र आर्य	द्वितीय
२१२	विजयकुमार	,,
२१३	सुरेन्द्र मोहन भंडारी	पास
२१५	सियाराम चतुर्वेदी	द्वितीय
२१८	कृष्णकुमार संगल	,,
२२०	प्रेमकृष्ण सेठ	,,
२२१	धनप्रकाश गर्ग	पास
२२२	शिवराज	,,
२२६	महेन्द्रकुमार	द्वितीय
२२८	रामजीदास गोगिया	,,
२२९	बुद्धीप्रकाश	,,
२३०	हरिशचन्द्र	,,
२३५	शमशेर बहादुर	पास
२३६	सत्यप्रकाश अग्रवाल	द्वितीय
२३७	राजेन्द्रकुमार	पास
२३९	रामकुमार गुप्ता	द्वितीय
२४०	प्रभूदयाल सिंघल	,,
२४१	दौलतराम वर्मा	,,
२४२	भगतराम	,,
२४४	बुद्धीप्रकाश मिश्र	पास
२४५	चन्द्रप्रकाश शर्मा	द्वितीय
२४७	कौशलचन्द्र बहादुरश्रीवास्तव	,,

मेरठ आयु० कालेज मेरठ

रौल नम्बर	नाम विद्यार्थी	श्रेणी
२५८	जीयालाल अग्रवाल	द्वितीय
२५९	ओउम् प्रकाश वर्मा	,,

रौल नम्बर	नाम विद्यार्थी	श्रेणी
२६२	हरवीर सिंह बलयान	प्रथम
२६५	सत्य नम अरोरा	पास
२७५	महेन्द्र चन्द्र गुप्ता	,,
२७७	देवदत्त अग्रवाल	द्वितीय
२८७	लवकुमार सिंह	पास
२८८	विजयदत्त शर्मा	,,
२८९	किशनदत्त शर्मा	,,
२९०	पीतम्बरदत्त शर्मा	,,
२९१	निरंजन लाल शर्मा	,,
२९२	सलोक चन्द्र वर्मा	,,
२९३	लाजपतराय अग्रवाल	,,

ललितहरि आयु० कालेज पीलीभीत

रौल नम्बर	नाम विद्यार्थी	श्रेणी
२९५	कुमारी सरोज उप्रेति	द्वितीय
२९९	वेदप्रकाश अग्रवाल	,,
३०५	सुशीलकुमार त्रिवेदी	पास
३०९	रामनरेश मिश्रा	द्वितीय
३१५	मुन्नूलाल सक्सैना	,,
३१६	महेन्द्र कुमार गुप्ता	,,
३२०	कृष्णस्वरूप अग्रवाल	,,
३२१	कृष्णमुरारी लाल वार्ष्णेय	प्रथम
३३०	जगदीशप्रसाद गुप्ता	द्वितीय
३३२	जगदीशचन्द्र असावा	पास
३३३	हरीशशरण दास सक्सैना	द्वितीय
३४१	वृजनन्दन माथुर	द्वितीय
३४३	विष्णु स्वरूप शर्मा	,,
३४४	बुद्धिपाल सिंह चौहान	,,
३४६	कृष्णानन्द गुप्ता	पास
३४९	नरेन्द्रपाल सिंह	,,
३५१	मथुरा प्रसाद त्रिवेदी	,,

श्री अर्जुन दर्शानन्द आयु० कालेज वाराणसी

रौल नम्बर	नाम विद्यार्थी	श्रेणी
३५६	आत्माराम द्विवेदी	द्वितीय
३५७	गदाधर प्रसाद त्रिपाठी	,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रौल नम्बर	नाम विद्यार्थी	श्रेणी
३५८	अमरनाथ मिश्रा	पास
३५९	शिवचरण राम	द्वितीय
३६०	रामछबीला पाण्डेय	,,
३६१	सन्तकुमार त्रिवेदी	,,
३६२	मंगला प्रसाद उपाध्याय	,,
३६५	लक्ष्मीकान्त ओली	,,
३६९	अनन्त कुमार आत्रेय	पास
३७७	महातिम त्रिपाठी	,,
३८०	रामचन्द्र झा	,,
३८१	सालिगराम त्रिपाठी	,,
३८२	राममूर्ति सिंह	,,

अर्जुन आयु० विद्यालय वाराणसी

रौल नम्बर	नाम विद्यार्थी	श्रेणी
३८४	कैलाशनाथ उपाध्याय	द्वितीय
३८७	रामशकल मिश्रा	द्वितीय

श्री बल्देव आयु० कालेज बडागांव, वाराणसी

रौल नम्बर	नाम विद्यार्थी	श्रेणी
४०२	रामनाथ गुप्ता	द्वितीय
४०३	वासदेव सिंह	पास
४०५	नन्दकिशोर यादव	द्वितीय
४१०	सभाजीत पाठक	,,
४१५	वैजनाथ मिश्रा	पास
४१८	पंचानन्द राय	,,
४१९	त्रियुगी नाथ चौहान	,,

A. B. M. S. (द्वितीय वर्ष)

राजकुमारसिंह आयु० कालेज इन्दौर

रौल नम्बर	नाम विद्यार्थी	श्रेणी
४	प्रकाशचन्द्र जैन	प्रथम
५	रामेश्वर सर्राफ	द्वितीय
११	आनन्द दत्तात्रेय नवाथे	,,
२५	हरिनारायण गुप्ता	,,
३८	जयन्तकुमार पारिख	पास
३९	श्यामसुन्दर गर्ग	,,
४०	नैमीचन्द्र जैन केला	,,

बुन्देल खण्ड आयुर्वेद कालेज झांसी

रौल नम्बर	नाम विद्यार्थी	श्रेणी
४६	देवीसहाय सचन	प्रथम
४७	राजेन्द्रसिंह गौर	द्वितीय
४८	गोपालकृष्ण सैनी	,,
५०	प्रसन्नकुमार जैन	,,
५३	ज्ञानदेवसिंह जादों	,,
५४	द्वारिकाप्रसाद चतुर्वेदी	,,
५५	जगन्नाथसिंह वर्मा	,,
५७	कमलादेवी सकरगायन	,,
५८	गोविन्द कुलकर्णी	,,
६०	पुरुषोत्तमसिंह	,,
६१	आनन्दकुमार भाती	,,
६२	गिरधरगोपाल अग्रवाल	,,
६३	दीप्तीसिंह यादव	,,
६४	लल्लूलाल चौबे	,,
६५	द्वारिकाप्रसाद नायक	,,
६८	सुखपाल मनचन्दा	,,
७०	संजयसेन	,,
७१	दुर्गाप्रसाद राजपूत	,,
७४	विष्णुदत्त गुप्ता	,,
७६	जगदीश नारायण गुप्ता	,,
८०	दीनदयाल मिश्रा	,,
८४	निरेन्द्र बहादुर खरे	,,
८७	सूरजप्रसाद जैन	,,
९१	सतीशचन्द्र सचन	,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रौल नम्बर	नाम विद्यार्थी	श्रेणी
९३	कमलेशनारायण द्विवेदी	,,
९५	दयाचन्द जैन	,,
९६	रमेशचन्द गर्ग	,,
९७	हाकिमसिंह शर्मा	,,
९८	ज्ञानशंकर मिश्रा	,,
१०५	दयालशंकर शर्मा	,,
१०७	रमनलाल गुप्ता	,,
११३	सुरेशचन्द्र गुप्ता	,,
११६	बालकृष्ण सिलाकारी	,,
११८	लक्ष्मीनारायण यादव	,,
११९	सुरेन्द्रनाथ शर्मा	,,
१२८	जगन्नाथ प्रसाद सचन	पास
१२९	ब्रजनन्द त्रिपाठी	,,
१३१	श्रीचन्द जैन	,,
१३२	बाबूलाल स्वर्णकार	,,
१३३	लक्ष्मीचन्द्र जैन	,,
१३४	सियाशरण गुप्ता	,,
१३५	सूबेदार कटियार	,,
१३६	शिवकुमार दुबे	,,
१४०	जमुनाप्रसाद गुप्ता	,,

आयुर्वेदिक कालेज अतर्रा (बांदा)

१४४	यशोदानन्द	द्वितीय
१४५	जागेश्वर प्रसाद त्रिपाठी	,,

मध्यभारत राजकीय आयु० कालेज ग्वालियर

१६०	सुरेशचन्द्र सिंघल	द्वितीय
१६१	शांतीस्वरूप गोयल	,,
१६३	राधेश्याम व्यासनागर	पास

गुरुकुल आयु० कालेज कांगड़ी

२६८	महाव्रत पटेल	द्वितीय
२७०	सुरेन्द्रकुमार भारद्वाज	,,
२७२	राजेन्द्रकुमार	,,

रौल नम्बर	नाम विद्यार्थी	श्रेणी
२७४	जगदीशप्रसाद अग्रवाल	,,
२७५	ब्रजमोहन गुम्बर	,,
२७८	विक्रमसिंह	,,
२८०	रामदेव	,,
२८३	श्रीराम	,,
२९८	रणवीरसिंह बहादुर	,,
२९९	मनमोहनलाल कक्कड़	पास
३००	हरीराजसिंह वर्मा	,,

मेरठ आयु० कालेज मेरठ

३०३	विष्णुदास चक्रवर्ती	द्वितीय
३०७	महेशचन्द्र शर्मा	,,
३०९	जयप्रकाश	,,
३१८	सत्यवीरसिंह त्यागी	पास
३१९	ब्रह्मानन्द शर्मा	,,

ललितहर आयु० कालेज पीलीभीत

३२०	शिवकर्म वैश्यवार	द्वितीय
३२१	कुमारी उर्मिला गर्ग	,,
३२२	कुमारी राधारानी	प्रथम
३३५	महेशचन्द द्विवेदी	द्वितीय
३३७	राजेन्द्रप्रकाश अग्रवाल	,,
३३८	पन्नालाल वार्ष्णेय	,,
३४२	रामगुलाम मिश्रा	,,
३४३	गिरराजकिशोर महरोत्रा	,,
३४४	बाबूलाल पाण्डेय	,,
३४७	भानुप्रकाश सक्सैना	,,
३४८	रामचन्द अग्रवाल (द्वितीय)	,,
३५१	वीरेन्द्रकुमार शर्मा	,,
३५२	देवनरायनसिंह चौहान	प्रथम
३५८	दिनेशचन्द गर्ग	द्वितीय
३६४	माताप्रसाद ध्यानी	,,
३६८	व्योमशंकर शर्मा	,,
३७४	त्रिवेणीदत्त शर्मा	,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रौल नम्बर	नाम विद्यार्थी	श्रेणी
३७८	देवकीनन्दन दीक्षित	,,
३६१	कैलाशनाथ कानुज्य	पास
३६२	सुशीलकुमार गुप्ता	,,

श्री अर्जुन दर्शानन्द आयु० कालेज वाराणसी

रौल नम्बर	नाम विद्यार्थी	श्रेणी
३६३	सोमनाथ सिंह	द्वितीय
३६४	हरनारायन जैसवाल	,,
४०४	देवेन्द्रनाथ सिंह	,,
४०७	सुरेशसिंह	,,

रौल नम्बर	नाम विद्यार्थी	श्रेणी
४१३	सुदामा प्रसाद पाण्डेय	पास
४१५	रामकैलाश पाण्डेय	,,
४१६	हृदयनारायण द्विवेदी	,,
४१८	रामलाल त्रिपाठी	,,

श्री बल्देव आयु० कालेज बड़ागांव, वाराणसी

रौल नम्बर	नाम विद्यार्थी	श्रेणी
४२२	त्रियुगीनाथ चौहान	द्वितीय
४२५	राजेश्वर प्रसाद सिंह	,,
४२७	श्याम चरन सिंह	पास

A. B. M. S. (तृतीय वर्ष)

राजकुमारसिंह आयु० कालेज इन्दौर

रौल नम्बर	नाम विद्यार्थी	श्रेणी	
१	रामनिक लाल एम० पटेल	द्वितीय	
२	शान्तीकुमार वरजतिया	प्रथम	
३	कुमारी वारसा पटेल	द्वितीय	
४	प्रेमचन्द जैन	,,	
५	भूषण चन्द जैन	,,	
६	सूरजमल पोमछा	,,	स्वास्थवृत
७	बाबूलाल मारवाड़ी	,,	
८	माधव गोविन्द कुलकर्णी	,,	
१५	रामेश्वरदयाल विहानी	,,	
१७	बाबूलाल भण्डारी	,,	
२०	चिम्मनलाल अरोरा	,,	
२१	श्रीकिशन बालाजीवाला	,,	
२२	रामचन्द्र विश्वनाथ कुलकर्णी	पास	
२३	सुखराम बंगाली	,,	
२६	रामचन्द्र गोबरधन लाल मुकुट	पास	

बुन्देल खण्ड आयुर्वेद कालेज झांसी

रौल नम्बर	नाम विद्यार्थी	श्रेणी
३०	बासुदेव प्रसाद रावत	द्वितीय

रौल नम्बर	नाम विद्यार्थी	श्रेणी	
३१	कुमारी सुदर्शन सेठी	द्वितीय	
३४	रामस्वरूप स्वर्णकार	,,	
३६	किशोरीलाल पुरवार	,,	
३८	शिवनाथ धनुर्जय	,,	
३९	दिगम्बर जर्नादन दानेद	,,	
४०	धर्मपाल गुप्ता	,,	
४१	आनन्द चन्द दुबे	,,	
४५	वैद्यनाथ झा	,,	
४६	रामकृष्ण चतुर्वेदी	द्वितीय	
४७	शिबदत्त जोशी	प्रथम	
४८	प्रभाकान्त रामजी टैंक	,,	
४६	शतीश चन्द्र जैन	द्वितीय	
५१	मंगला प्रसाद सिंह	,,	
५२	त्रिलोक चन्द्र अभिलाषी	,,	
५३	राधेश्याम मिश्र	,,	
५६	गोविन्द बल्लभ उपाध्याय	प्रथम	रस भैषज्य
५८	रामप्रसाद आर्य	द्वितीय	
६२	राजकुमार गर्ग	,,	
६३	शशीकुमार शर्मा	,,	
६४	कुमारी नरेश देवी	,,	
६५	सत्येन्द्र कुमार खरे	,,	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रौल नम्बर	नाम विद्यार्थी	श्रेणी
६६	जगन्नाथ प्रसाद सचन	द्वितीय
६७	बृजानन्द त्रिपाठी	,,
६८	श्रीचन्द जैन	,,
६९	बाबूलाल स्वर्णकार	,,
७०	लक्ष्मी चन्द जैन	,,
७३	शिवकुमार दुबे	,,
७५	रामप्रकाश	पास
७७	बद्रीप्रसाद शर्मा	,,
७८	सीताराम अग्रवाल	,,
७९	प्रवीन चन्द हर जीवन हैरानी	पास
८०	सत्यकान्त सिंह "कान्त,,	,,

मध्य भारत गवर्नमेंट आयु० कालेज ग्वालियर

रौल नम्बर	नाम विद्यार्थी	श्रेणी
८३	महेश चन्द नागरिया	द्वितीय
८४	बालकृष्ण चतुर्वेदी	,,
८५	सोबरन सिंह चौहान	,,
८७	कोमल चन्द जैन	,,
८९	सुरेशचन्द सक्सैना	,,
९०	गोपीचन्द अग्रवाल	,,
९१	रामदास सिंघल	प्रथम
९२	रामजीलाल गुप्ता	द्वितीय
९३	दिनेश चन्द झाला	,,
९५	श्री निवास शर्मा	,,
९६	विनय चन्द जैन	प्रथम
९७	बालकृष्ण शर्मा	द्वितीय
९८	घनश्याम दास दुबे	प्रथम
९९	द्वारकाप्रसाद चतुर्वेदी	द्वितीय
१००	गौरीशंकर गुप्ता	प्रथम
१०१	गनपतराम शर्मा	द्वितीय
१०२	हीरालाल चौरासिया	,,
१०३	गौकरन दास जैसवाल	पास

ऋषिकुल आयु० कालेज हरिद्वार

रौल नम्बर	नाम विद्यार्थी	श्रेणी
१०७	नरेन्द्रबहादुर थापा	द्वितीय

रौल नम्बर	नाम विद्यार्थी	श्रेणी
१०८	बाबूलाल शर्मा	द्वितीय
११३	शिवचरनदास	,,
११४	सतीशचन्द गुप्ता	,,
११६	कृष्णमुरारी कुशल	,,
११८	हुकमचन्द	,,
१२०	दामोदर पाण्डेय	,,
१२२	बुद्धसिंह चौहान	,,
१२३	सुखबीरसिंह	,,
१२४	भूपेन्द्र कुमार गुप्ता	,,
१२५	रामरतनलाल कटियार	,,
१२७	शक्तिकुमार शर्मा	,,
१२८	कृष्णकुमार शर्मा	,,
१३०	दर्शनलाल गुप्ता	,,
१३३	महावीरप्रसाद गर्ग	,,
१३४	वेदप्रकाश शर्मा	,,
१३६	बृजेशचन्द शर्मा	,,
१३७	दाऊदयाल गर्ग	,,
१३८	सरदारसिंह चौहान	,,
१३९	सुराजशाही शर्मा	,,
१४०	रामकुमार कटियार	,,
१४४	रामकुमार गुप्ता	,,
१५०	कृष्णावतार अग्रवाल	,,
१५२	ओउमप्रकाश बिंदल	,,
१५७	रामानन्द शर्मा	,,
१५८	केदारनाथ शर्मा	,,
१५९	भोलादत्त पंत	,,
१६२	पूरनचन्द गुप्ता	,,
१६५	महेन्द्रसिंह गुप्ता	,,
१६७	सियाराम त्यागी	पास
१६८	सरबन सिंह	,,
१६९	ब्रह्मदेव त्रिवेदी	,,
१७०	चन्द्रदत्त कौशिक	,,
१७१	जगन्नाथ दुआ	,,
१७२	बद्रीदत्त जोशी	,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रौल नम्बर	नाम विद्यार्थी	श्रेणी	
१७३	शम्भूसिंह सूरियान	पास	
१७४	राजेन्द्रमोहन	,,	
१७५	रामेश्वरदयाल शर्मा	,,	
१८०	शिवमूर्ति वर्मा	,,	
१८१	सत्यपाल गुप्ता	,,	

गुरुकुल आयु० कालेज कांगड़ी

रौल नम्बर	नाम विद्यार्थी	श्रेणी	
१८२	मनमोहनलाल कक्कड़	द्वितीय	
१८३	रवीन्द्रकुमार विद्यार्थी	,,	
१८४	शिवप्रकाश आर्य	,,	
१८५	गोपालकृष्ण	,,	
१८६	हरीप्रकाश गर्ग	,,	
१८७	मदनगोपाल गुप्ता	प्रथम	निदान
१८८	अशोक कुमार	,,	स्वस्थ्यवृत
१६०	राजवाल शर्मा	द्वितीय	
१६२	शशीकान्त गर्ग	,,	
१६३	कृष्णकान्त शर्मा	,,	
१६६	विनयकुमार	,,	
१६७	सुभाषचन्द	,,	
२०३	बालानन्द गुप्ता	,,	
२०४	सोमदत्त	,,	
२०५	रनवीरसिंह	पास	

आयुर्वेद कालेज देहरादून

रौल नम्बर	नाम विद्यार्थी	श्रेणी
२०७	बाबूराम बर्मा	पास

मेरठ आयु० कालेज मेरठ

रौल नम्बर	नाम विद्यार्थी	श्रेणी
२०८	सत्यवीरसिंह त्यागी	द्वितीय
२१०	हरीचन्द्र वर्मा	,,
२११	लाजपतराय भ्रांब	,,
२१३	रामप्रकाश शर्मा	पास

ललितहरि आयु० कालेज़ पीलीभीत

रौल नम्बर	नाम विद्यार्थी	श्रेणी	
२१४	नत्थूलाल शर्मा	द्वितीय	
२१५	सुरेन्द्रलाल चावला	,,	
२१६	ब्रजमोहन मीतल	द्वितीय	
२१७	वीरेन्द्रसिंह गंगवर	,,	
२१८	विश्वम्भरनाथ सचन	,,	
२१६	देवकीनन्दन शर्मा	प्रथम	स्वास्थ्यवृत
२२०	ललितप्रसाद शर्मा	द्वितीय	
२२१	रुद्रदेव त्रिवेदी	,,	
२२२	गंगासहाय	,,	
२२३	चन्द्रिकाप्रसाद दीक्षित	,,	
२२४	विनोदबिहारी चतुर्वेदी	,,	
२२५	हरनारायण त्रिवेदी शास्त्री	,,	
२२६	धर्मवीरसिंह	,,	
२२८	रामपाल	,,	
२२६	सुरेशचन्द्र सक्सैना	,,	
२३०	बाबूराम वर्मा	,,	
२३१	रोशनलाल गुप्ता	,,	
२३३	विद्याधर मिश्र	,,	
२३४	गिरीशचन्द्र चौबे	,,	
२३५	मोक्षानन्द कौशिक	प्रथम	द्रव्यगुण
२३७	विश्वमोहन अग्रवाल	द्वितीय	
२४०	देवप्रिय मुखर्जी	,,	
२४१	सत्यपाल	,,	
२४२	शान्तीप्रसाद गौड़	,,	
२४३	परशुराम	,,	
२४७	चन्द्रप्रकाश गुप्ता	पास	
२४६	डोरीलाल दीक्षित	,,	
२५०	कैलाशनाथ कानुज्य	द्वितीय	
२५३	शिवबालकसिंह वर्मा	पास	
२५४	रतनचन्द वर्मा	,,	
२५५	रामलाल गुप्ता	,,	
११०	केवलचन्द जैन	प्रथम	

अर्जुन दर्शनानन्द आयु० कालेज वाराणसी

रौल नम्बर	नाम विद्यार्थी	श्रेणी
२५७	कमलाशंकर दुबे	द्वितीय
२६०	हवलदार पाठक	,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रौल नम्बर	नाम विद्यार्थी	श्रेणी
२६१	शेषनरायण मिश्रा	,,
२६२	कालिकादत्त पाण्डेय	पास

अर्जुन आयु० विद्यालय वाराणसी

२६३	रामकुमार पाठक	द्वितीय
२६४	मुनीशकुमारी श्रीवास्तव	,,

रौल नम्बर	नाम विद्यार्थी	श्रेणी
२६६	गनेशदत्त पाण्डेय	,,
२६८	कुमारी लीलावती देवी	पास

बल्देव आयु० कालेज बडागांव, वाराणसी

२७१	राजनाथसिंह	पास

फायनल परीक्षा फल

राजकुमारसिंह आयु० कालेज इन्दौर

रौल नम्बर	नाम विद्यार्थी	श्रेणी
४	हीरालाल पोरवद	पास
७	राधेश्याम भारद्वाज	पास

बुन्देलखण्ड आयु० कालेज झांसी

६	ओउमप्रकाश त्रिपाठी	द्वितीय
११	पुरुषोत्तम शर्मा	तृतीय
१४	कपूरचन्द जैन "कपूर"	,,
१६	चन्द्रशेखर भागवत	प्रथम
१७	गंगाप्रसाद दीक्षित	द्वितीय
१८	लक्ष्मीकान्त शुक्ल	पास
१६	ऋषीदेव शर्मा	,,
२०	शिवदयाल पतैरैया	,,
२१	सूर्यदेव वर्मा	,,
२३	चौधरी घनश्यामदास	,,

मध्य भारत गवर्नमेंट आयु० कालेज ग्वालियर

२४	नाथूराम गोस्वामी शास्त्री	द्वितीय

ऋषिकुल आयु० कालेज हरिद्वार

२८	चन्दपालसिंह	पास
२६	नरेन्दकुमार शर्मा	तृतीय
३०	वेदपाल अग्रवाल	,,
३२	हरीनन्द सिंह	द्वितीय
३३	मुर्लीधर शर्मा	,,
३४	सत्यवीर सिंह शर्मा	,,
३५	शंकरमणि शर्मा खानकयाल	,,

रौल नम्बर	नाम विद्यार्थी	श्रेणी
३७	बृजवासी शर्मा	तृतीय
५१R	कुमारी संतोष सहगल	द्वितीय

ललितहरि आयु० कालेज पीलीभीत

३८	मंगलाप्रसाद त्रिपाठी	द्वितीय
३६	इन्द्रदेव	,,
४१	सुन्दरलाल शुक्ल	,,
४२	सुरेशचन्द्र कौशिक	तृतीय
४४	भगवतसरन अवस्थी	द्वितीय
४७	चन्द्रदीप मिश्र	,,
५३	सोवरनसिंह	,,
५६	बहादुरलाल गंगवार	पास
५७	बालकृष्ण दीक्षित	,,

अर्जुन दर्शनानन्द आयु० कालेज वाराणसी

५६	चन्द्रदेव शर्मा	द्वितीय
६०	शिवशंकर चतुर्वेदी	पास
६०R	रामबिहारी मिश्र	द्वितीय
६३R	सुरेन्दनारायण मिश्र	,,

अर्जुन आयु० विद्यालय वाराणसी

६५	गंगाप्रसाद पाण्डेय	द्वितीय
६६	बृजमोहन मिश्र	पास

बल्देव आयु० कालेज बड़ागांव, वाराणसी

६८	राजपति शुक्ल	द्वितीय
६६	देवराज मिश्र	पास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजकुमारसिंह आयु० कालेज इन्दौर

रौल नम्बर	नाम विद्यार्थी	श्रेणी
७	प्रभाकर गंगवाल अकोले	द्वितीय
८	भेरूसिंह बघेला	,,
१२	प्रभाकर सिद्धनाथ जी चौरे	,,

बुन्देलखण्ड आयु० कालेज झांसी

१८	विशुद्धानन्द चतुर्वेदी	द्वितीय
२०	कुमारी प्रेमवती तिवारी	प्रथम
२१	मुन्नीलाल त्रिपाठी	,,
२३	कोमलचन्द जैन 'परिकर'	द्वितीय
२५	कृष्णस्वरूप जैसवाल	,,

मध्यभारत गवर्नमेंट आयु० कालेज ग्वालियर

२७	देवेन्द्रकुमार जैन	प्रथम	प्रसूति
२८	ओउमप्रकाश अरोरा	द्वितीय	
३०	ज्ञानचन्द जैन	,,	
३१	विनोदबिहारी गुप्ता	,,	
३२	हरीमोहन गुप्ता	,,	
३३	सुन्दरलाल वैद्य	,,	
३४	श्यामबिहारी तिवारी	,,	

ऋषिकुल आयु० कालेज हरिद्वार

३७	सुरेन्द्रपाल जुनेजा	द्वितीय	
४१	रामकिशन वर्मा	,,	
४२	ओउमप्रकाश त्यागी	,,	
४४	केवलकृष्ण भारद्वाज	,,	
४६	बनारसीलाल हंसला	,,	
४७	धर्मपाल मीतल	प्रथम	प्रसूति
४८	सीताराम शर्मा भारद्वाज	द्वितीय	
४६	बद्रीप्रसाद शर्मा	,,	
५३	जगदीशलाल मटनेजा	,,	
६०	मलखानसिंह सचन	प्रथम	
६३	जगदीशचन्द्र भारद्वाज	द्वितीय	
६५	नर्मदाप्रसाद शर्मा	,,	

गुरुकुल आयु० कालेज कांगड़ी

रौल नम्बर	नाम विद्यार्थी	श्रेणी
६६	आर्यकुमार अग्रवाल	द्वितीय
६७	जयप्रकाश भारतीय	प्रथम
६८	महेशचन्द्र गुप्ता	द्वितीय
६६	हरीशंकर	,,
७०	सुखदेव	,,

ललितहरि आयु० कालेज पीलीभीत

७३	विंदादीन पाण्डेय	प्रथम
७४	रामनिवास तिवारी	द्वितीय
७७	राममूर्तिलाल गुप्ता	,,
७८	कौशलकिशोर	,,
८१	विश्वम्भरदयाल	,,
८२	रामचन्द्र	प्रथम
८६	रामचन्द्र वर्मा	द्वितीय

अर्जुन आयु० महाविद्यालय वाराणसी

६५	चन्द्रमणिप्रसाद मिश्र	द्वितीय

बल्देव आयु० कालेज बड़ागांव, वाराणसी

६८	हरीप्रसाद शुक्ल	द्वितीय
१००	भोलानाथ गुप्ता	,,

(भूल के लिये सम्पादक उत्तरदायी नहीं हैं।)

मुफ्त में प्राप्त कीजिये

प्राणाचार्य मासिकपत्र के केवल पांच ग्राहक बनाने पर एक साल के अङ्क और विशेषाङ्क मुफ्त में प्राप्त कीजिये।

--व्यवस्थापक।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाचार एवं सूचना

आयुर्वेद जगत गलत रास्ते पर न जाय–

अर्जुन आयुर्वेद विद्यालय का ३७ वां वार्षिक अधिवेशन श्री प्रहलाद दास सर्राफ की अध्यक्षता में बड़े उल्लास मय वातावरण में सम्पन्न हुआ। श्री यशवंतकुमार ने वंदेमातरम गान के पश्चात सभापति जी ने आसन ग्रहण किया श्रीयुत बरनवाल जी ने स्वागत भाषण किया हिन्दू विश्वविद्यालय के आयुर्वेदाध्यापक श्री पं० दामोदरशर्मा गौड़ ने भाषण करते हुए आयुर्वेद शिक्षा जगत के वर्तमान ऊथल-पुथल का चित्र उपस्थित किया। आपने कहा जब तक शिक्षा संस्थायें सुव्यवस्थित और उच्च स्तर पर नहीं की जाती तब तक उपाधियों एवं प्रवेश योग्यता के स्तर में परिवर्त्तन करना विषम परिस्थिती उत्पन्न करेगा। इसलिये इन्डियन मेडीसन बोर्ड और अन्य संस्थायें गलत रास्ते पर न जांय।

वर्तमान प्रधानाचार्य श्री ताराशंकर वैद्य ने विषम परिस्थितियों में भी छात्रों और अध्यापकों के अध्यव्यवसाय की प्रशंसा की आपने बतलाया कि अभी आज ही जो परीक्षा फल प्रकाशित हुआ है उसमें भी बोर्ड के समस्त कालेज में सर्वप्रथम होने की परम्परा यहां पूर्ववत रही।

श्री पं० कैलाशनाथ जैतली ने बतलाया कि अर्जुन विद्यालय वह सिद्धपीठ है जहां की धूल जिसे भी लगेगी वह कैसी भी परिस्थिती में विचलित नहीं होसकता।

श्री पं० शिवनायक मिश्र ने कहा कि आयुर्वेदोन्नति के लिये सभी लोग नीची स्पर्धा रहित प्रयत्न करें। हम तो विद्यालय के लिये झोली लेकर तैयार हैं।

अन्त में सभापति जी ने भाषण देते हुए कहा कि विद्यालय की अर्थ संग्रह के लिए हम तैयार हैं।

प्रधानाचार्य ने धन्यवाद दिया।

अन्त में श्री नारायण ने जन-मन-गण-गान किया। श्री शिवविनायक मिश्र द्वारा मिष्ठान वितरण हुआ।

—श्री ताराशंकर वैद्य

शुभ सूचना–

सर्व साधारण को सूचित करते हुए अत्यन्त प्रसन्नता होती है कि आयुर्वेदानुरागी आप महानुभावों द्वारा जिस आरोग्यशाला (इण्डोर पेसेण्ट वार्ड) के खोलने की चिरकाल से मांग की जा रही थी, उसका विधिवत् उद्घाटन श्री सनातनधर्म आयुर्वेद महाविद्यालय के तेरहवें वर्षारम्भ के दिवस भाद्रपद शुक्ला गणेश चतुर्थी सं० २०१४ को हो चुका है। विद्यालय एवं राजकीय औषधालय के विद्वान वैद्यों की देख-रेख में इस आरोग्यशाला में आयुर्वेदिक चिकित्सा द्वारा रोगियों की निःशुल्क चिकित्सा की जायेगी।

अर्थाभाव के कारण जटिल रोगों की चिकित्सा कराने में असमर्थ रोगियों को चिकित्सा सुविधा के साथ साथ पथ्य भोजन भी संस्था की ओर से दिया जायगा।

आशा है आयुर्वेदानुरागी जनता संस्था के इस सेवा कार्य से लाभ उठायेगी।

—दीनानाथ वैद्य

संस्थापक–श्री सनातनधर्म आयु० महा० बीकानेर

कृतज्ञता–

भारतीय चिकित्सा परिषद उत्तर प्रदेश के अध्यापक सीट से निर्वाचित होने के पश्चात् अनेक बन्धुओं ने बधाई संदेश भेजे हैं। अपने सभी बन्धुओं एवम् आयुर्वेद के सभी प्रेमी महानुभावों से इस अपार स्नेह पर कृतज्ञता प्रकट करता हूं। सभी के सहयोग एवं स्नेहवश मुझे आयुर्वेद जगत की सेवा करने का अवसर प्राप्त हुआ है। सभी बन्धुओं से आशा है कि वे अपने बहुमूल्य सुझावों से मुझे सूचित करते रहेंगे जिससे मैं उनके विचारों को दृढ़ता के साथ भारतीय चिकित्सा परिषद में रख सकूं।

—श्री कृष्णदत्त जोशी

सदस्य–भारतीय चिकित्सा परिषद, उत्तर प्रदेश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैद्योपयोगी कुछ अमूल्य साहित्य

प्रयोगमणिमाला—

इसमें २५१ वैद्यों के चित्र तथा हर एक वैद्य के २-२ गुप्त प्रयोग दिये हैं। जो कि स्व० वैद्यभास्कर बांकेलाल गुप्त 'प्राणाचार्य' द्वारा परीक्षित हैं। थोड़ी प्रति शेष रह गई हैं शीघ्र ही मंगा लें अन्यथा द्वितीय संस्करण की प्रतीक्षा करनी होगी। मूल्य केवल लागत मात्र ८) पो. व्य. प्रथक्

शिशु रोगांक—

यह प्राणाचार्य का अमूल्य विशेषांक बालकों के हर एक रोग पर दृष्टिपात करके लिखा गया है। इसमें देश-विदेश के उत्तम लेखकों द्वारा बाल-रोगों का निदान तथा चिकित्सा का अनुकरण किया गया है। आवश्यक चित्रों से सुसज्जित इस विशेषांक का मूल्य केवल ४) है। शीघ्र ही मंगाकर लाभ उठावें।

ऊर्ध्वजत्रुज रोगांक—

इस विशेषांक में शिरो भाग के अंग प्रत्यंग जैसे नाक, कान, आंख, दांत, मुख, मस्तिष्क आदि का विशद विवेचन किया गया है। ५३ आयुर्वेद के धुरीण पंडितों द्वारा इसको पूर्ण किया गया है। इसमें शिरो भागों में होने वाले रोगों का निदान और चिकित्सा तथा सामयिक चित्र दिये गये हैं। मूल्य ४) पोस्ट व्यय प्रथक्।

स्त्री रोगांक—

यह विशेषांक स्त्री जाति के लिये अमूल्य उपहार है। इसमें स्त्री रोगों पर उत्तम-उत्तम लेख दिये गये हैं, तथा रोगों का निदान, लक्षण और परीक्षित प्रयोग दिये गये है। इसके प्रयोगों को बनाकर कितने ही वैद्यों ने यश प्राप्त किया है और हमें बधाई दी है। मूल्य ४) पोस्ट व्यय प्रथक्।

कामविज्ञानांक—

काम शास्त्र कितना विशद ग्रन्थ है, इसे आप सब जानते हैं। इस विशेषांक में लेखकों द्वारा इसका शास्त्रीय विवेचन किया गया है। इसका अध्ययन युवक-युवतियों को विशेषरूप से करना अनिवार्य है। मूल्य ४) पोस्ट व्यय प्र.

प्रयोगमणिमालांक—

इस विशेषांक में भारत के प्रसिद्ध वैद्यों के प्रयोग व परिचय एवं चित्र दिये गये हैं। ५०० के लगभग अमूल्य प्रयोगों का भण्डार है। थोड़ी प्रति शेष रह गई हैं। मूल्य ४) पोस्ट व्यय प्रथक्

स्वप्नदोष और वीर्य सञ्जीवन—

स्वप्न दोष से बचने के उपाय, स्वप्नदोष के कारण एवं चिकित्सा आदि का विस्तृत वर्णन है। मूल्य २)

परीक्षित प्रयोग प्रथम भाग—

बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी के परीक्षित प्रयोगों का विशाल संग्रह। मूल्य ।।।)

परीक्षित प्रयोग द्वितीय भाग—

धर्मार्थ औषधालय के अल्प मूल्य से बनने वाले हजारों सफल परीक्षित प्रयोग हैं। मूल्य १।)

वैज्ञानिक प्राणायाम रहस्य—

प्राणायाम से लाभ, स्वास्थ्य लाभ के उपाय, रक्त बहाव का वर्णन, हृदय कार्य प्रणाली आदि का विस्तृत वर्णन है। मूल्य २।)

आहार—

भोजन के नियम, भोजन कौन सा उत्तम है और स्वस्थ्य रहने के अनेकों तरीके दिये हैं। मूल्य १।)

थर्मामीटर बिज्ञान—

थर्मामीटर की प्रयोग विधि। मूल्य ।)

नोट—सभी पुस्तकें एक साथ मंगाने पर २५% कमीशन दिया जावेगा, पोस्ट व्यय प्रथक् लिया जावेगा।

प्राणाचार्य भवन प्रायवेट लि० विजयगढ़ (अलीगढ़)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कासान्तक

खांसी के लिये भारत में प्राप्त सभी औषधियों के मुकाबिले सस्ती व निरापद आयुर्वेदिक औषधि हैं। इसमें--

बांसा स्वरस ४०%	मुलहठी सत्व २०%
टंकण क्षार १०%	काली मिर्च ५%
सिता (मिश्री) २०%	त्रिफला ५%

मिश्रित हैं। इसके घटकों के गुण निम्न प्रकार हैं—

बांसा—तृषा, श्वास, हृदय को हितकर, खांसी एवं रक्तपित्त नाशक है।

मुलहठी सत्व—स्वर शोधक, वात पित्त शामक एवं श्वास यंत्र के शोथ को नाश करती है।

टंकण—यह कफ को पतला करके बाहर निकालता है।

काली मिर्च—श्वास, कास, पीनस नाशक एवं अग्नि दीपक है।

मिश्री—वातपित्त नाशक, रुचिकारक, रक्तविकार व दाह शामक है।

त्रिफला—कफ पित्त नाशक, रेचक, अग्निदीपक एवं रुचिकारक है।

इसका शरीर में फुफ्फुस, स्वर यन्त्र व श्वास प्रणाली एवं उदर पर सीधा असर होता है। अतः यह अत्यन्त शीघ्र प्रभाव दिखाती है।

स्वाद में मीठी होने से सभी इसका सेवन आसानी से कर लेते हैं।

मूल्य—१ औंस ।≈)

४ औंस १।)

थोक खरीददारों को विशेष रियायत दी जाती है।

प्राणाचार्य भवन प्रायवेट लिमिटेड

विजयगढ़ (अलीगढ़)

श्रीगोपाल गुप्त के प्रबन्ध से प्राणाचार्य प्रेस विजयगढ़ में मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

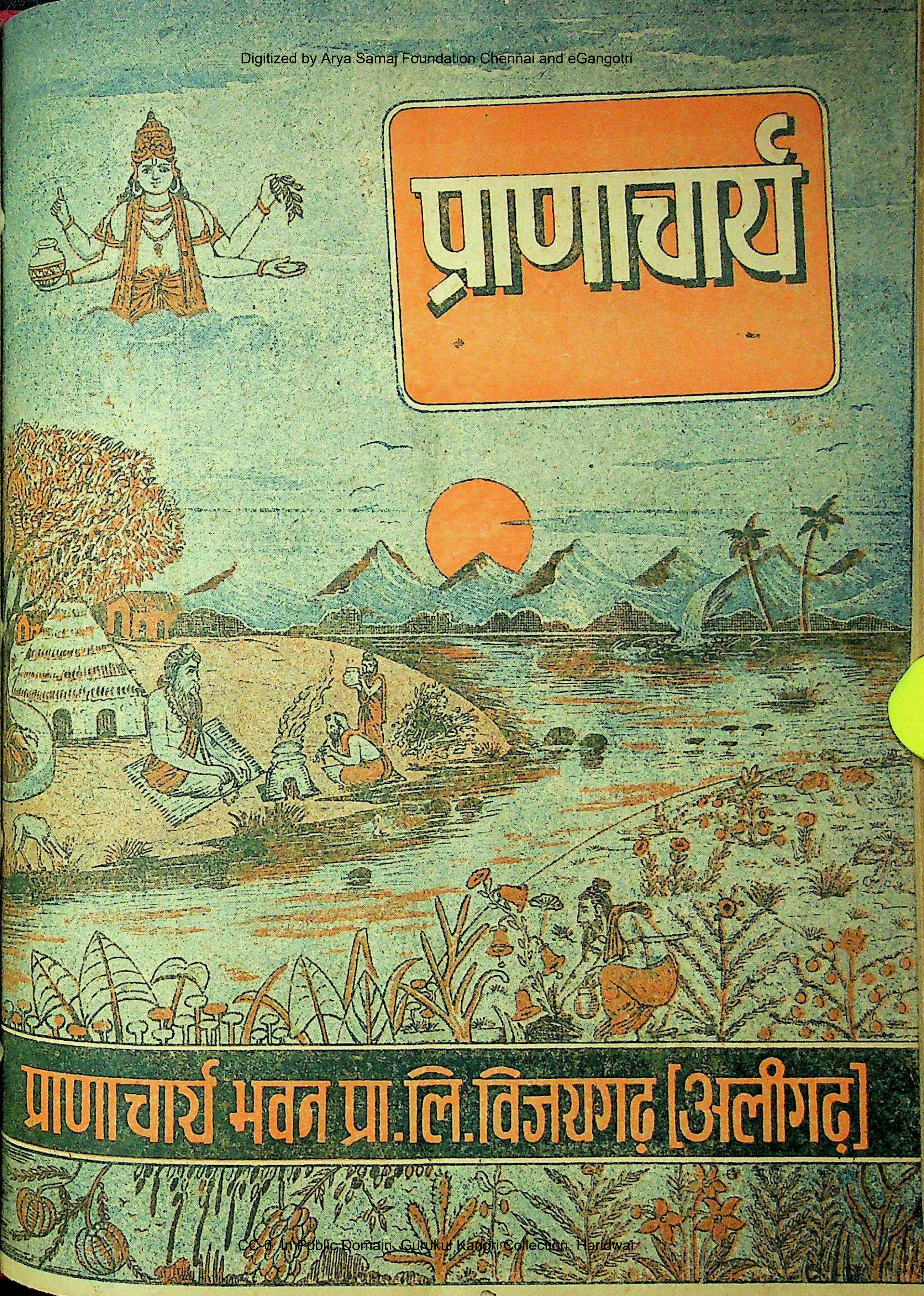

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ प्रचलित औषधियों के थोक भाव

शुद्ध शिलाजीत सूर्यतापी		४०) प्रति सेर
,, ,, अग्नितापी		३०) प्रति सेर
यवक्षार		८) प्रति सेर
गिलोय सत्व (निजी देख रेख में निर्मित)		१२) प्रति सेर
		५ सेर ५०)
शहद	१० सेर ३०),	१ सेर ३॥)
प्राणाचार्य चूर्ण	१ सेर ७)	२॥ सेर १६)
लवणभास्कर-चूर्ण	१ सेर ५)	२॥ सेर ११)
सुदर्शन चूर्ण	१ सेर ४॥)	२॥ सेर १०)
हिंग्वष्टक चूर्ण	१ सेर ७)	२॥ सेर १६)
गुलकन्द	५ सेर १८)	२० सेर ६०)
च्यवनप्राश्य	५ सेर २०)	२० सेर ७०)

नोट — १—उपरोक्त भावों पर कोई कमीशन नहीं दिया जायगा। पैकिङ्ग, बारदाना, पोस्टेज आदि सभी व्यय ग्राहक को देना होगा।

२—यह भाव इसी तोल में लेने पर होंगे कम तादाद में लेने पर साधारण भाव लगाया जायगा।

विषय-सूची

१ —आयुर्वेद की शान ४६७
२ चार शब्द ४६८
३ —धन्वन्तरि जी कौन थे ? ४७६
४—साहित्य परिचय ४७६
५—देश विदेश ४७७

१—गर्भपात और उसका कारण एवं चिकित्सा १
२—स्वप्नदोष एवं वीर्यस्राव २
३—अरुचि व मलावरोध पर "पाचक" ३
४—नपुंसकता व उसके कारण व उसकी चिकित्सा ५
५—मूल्य तालिका ८

आवश्यक-सूचना

विशेष परिस्थितियोंवश हमने कर्पूरासव, मृगमदासव, अहिफेनासव, मृतसंजीवनी अर्क, वृ० द्राक्षासव, द्राक्षासव खिचा, कण्डूहर, दद्रुकुठार मलहम, प्राणाचार्य बाम, अर्क पुदीना, अर्क कपूर श्वासरिपु और शूलहर आदि कई औषधियां बनाना बन्द कर दिया है। ग्राहकों से निवेदन कि इनके लिये आर्डर न दें।

[signature]

आवश्यक-सूचना

(१ जनवरी १९५८ से चालू)

कुछ खनिज द्रव्यों एवं हिंगुल के मूल्य वर्तमान में बेहद बढ़ गये हैं और कई गुने तक जा पहुँचे हैं। इस कारण कुछ चीजों के भावों में हमें आकस्मिक रूप से वृद्धि करनी पड़ रही है। आशा है कि ग्राहक हमारी परिस्थितियों को जानकर क्षमा करेंगे।

नाम औषधि	१ तोला	३ माशा	१ माशा
पूर्णचन्द्रोदय	७०)	१७॥)	५॥।=)
सिद्धमकरध्वज नं० १	५०)	१२॥)	४।)
,, नं० २	३५)	८॥।)	२॥।≡)
,, नं० ३	१६)	४)	१।=)
रससिंदूर नं० १	८)	२।)	॥।–)
,, नं० २	६)	१॥)	॥–)
मल्लचन्द्रोदय	३५)	८॥।)	२॥।≡)
मल्ल सिंदूर, तालसिंदूर, ताम्रसिंदूर, शिलासिंदूर—	७॥)	१॥।=)	॥≡)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वाधीनता दिवस का विराट उपहार

उपहार में दी जाने वाली वस्तुओं का विवरण

१—प्रवास पेटिका ६४ शीशी युक्त—यह सब से बड़े और सुन्दर साइज की अत्यधिक मजबूत पेटिका है। शीशी लगाने को अधिकतर कपड़े की पट्टी लगाई जाती है किन्तु इसमें कमानीदार लोह पत्ती लगाकर सुरक्षा व मजबूती कर दी गई है, इसी प्रकार बाह्य वाटर प्रूफ कपड़े के नीचे लोह पत्ती देकर पेटिका को इतना मजबूत कर दिया गया है कि दो मन वजन रखने पर भी टूट नहीं सकती। यन्त्र आदि रखने को स्थान भी है। मूल्य २४)

२—प्रवास पेटिका ५१ शीशी युक्त—सुन्दरता व मजबूती आदि में उक्त के समान साइज में कुछ छोटी। मूल्य २०)

३—प्रवास पेटिका १८ शीशी युक्त—यह भी काफी मजबूत व सुन्दर है, जेबी साइज। मूल्य ६)

४—स्टैथिस्कोप—उच्च कोटि का आकर्षक नवीन डिजायन। मूल्य १२)

५—थर्मामीटर—जील कम्पनी का सब से उत्तम टिकाऊ। मूल्य ४॥)

६—डूस—एनीमा देने का यन्त्र, सफेद तामचीनी से युक्त, सम्पूर्ण सामान सहित। मूल्य ५)

७—रिकार्ड सीरिंज जर्मनी व इटली—नवीन डिजायन उत्तम व टिकाऊ। मूल्य २ शीशी ४॥) ५ शीशी ८)

८—ग्लैसरीन सीरिंज—२ औंस माप की प्लाष्टिक की मजबूत। मूल्य ५)

९—चार्ट दीवाल पर टांगने योग्य—शरीर के हर भाग का सुंदर चित्रों में वर्णन। अङ्गों के नाम हिन्दी व अंग्रेजी में प्रथक् दिये हैं। इसके ५ चार्ट मिलते हैं। सैट का मूल्य २०) एक प्रति ४॥)

१०—थर्मामीटर—जापानी जील के समान ही। मूल्य १॥)

११—जिव्ही—कंठगत रोग देखने का यन्त्र। मूल्य १॥।)

१२—मोतीझला का शीशा—बड़ा निकल फ्रेम युक्त जिससे छोटी सी वस्तु भी रस्सी के समान मोटी दिखाई देती है। मूल्य ३॥)

१३—मोतीझला का शीशा छोटा मूल्य १)

१४—कैथीटर रबड़ का—मूत्र कराने का यन्त्र मूल्य ॥।)

१५—कासान्तक—सभी प्रकार की खांसी नाशक। १ औंस ४॥) दर्जन, ४ औंस १५) दर्जन

१६—प्राणाचार्य घुटी—बच्चों के सभी रोग नाशक ½ औंस ३॥।) दर्जन, १ औंस ६॥।) दर्जन

१७—च्यवनप्राश्य अवलेह (अष्टवर्ग युक्त)—अति उत्तम विधि से निर्मित बल वीर्य वर्धक रसायन
१ सेर ६) आध सेर ३) पाव सेर १।।≈) आध पाव ।।।≈)

१८—चन्द्रोदय गुटिका—बल वर्य बर्धक एवं क्लीवत्व में उपकारी ४२ गोली की शीशी २॥)

यह सब वस्तुऐं आप विमूल्य प्राप्त कर सकते हैं कैसे-वह आगे देखिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपहारी वस्तुएँ दिमूल्य प्राप्त करने के नियम

१	सूचीपत्र	मूल्य से	१०००)	की औषधियां	मंगाकर	१००)	के मूल्य की	उपहारी वस्तुएँ	प्राप्त कीजिए ।
२	,,	,,	५००)	,,	,,	४५)	,,	,,	,,
३	,,	,,	३५०)	,,	,,	३२)	,,	,,	,,
४	,,	,,	२५०)	,,	,,	२२)	,,	,,	,,
५	,,	,,	१५०)	,,	,,	१३।)	,,	,,	,,
६	,,	,,	१००)	,,	,,	८)	,,	,,	,,
७	,,	,,	५०)	,,	,,	३।)	,,	,,	,,

कमीशन व एडवांस

१ - स्थाई एजेण्टों एवं पुराने ग्राहकों को एजेन्सी नियमानुसार कमीशन व उपहारी वस्तु प्राप्त होंगी ।

२—२५% कमीशन नवीन ग्राहकों को उपहार के अतिरिक्त प्राप्त होगा ।

३ —२५) एडवांस आर्डर के साथ आना अनिवार्य है । अन्यथा आर्डर उपहारी न माना जायगा ।

४ - हर आर्डर में अपना पता, स्टेशन, पोस्ट, ज़िला साफ शब्दों में लिखना चाहिए ।

व्यय

१—मालगाड़ी से आपके स्टेशन पहुंचता दिया जायगा । सवारी गाड़ी से मंगाने पर आधा भाड़ा आपको देना होगा ।

२—पोस्ट व्यय व धर्मार्थ एवं बिक्रीकर अथवा केन्द्रीय बिक्रीकर आपको देना होगा ।

नोट—रेल गाड़ी से माल मंगाने में कभी-कभी देर से पहुंचता है और पेटा में भी कभी-कभी टूट-फूट हो जाती है । हम यथा शक्ति उत्तम पैकिंग कराते हैं । अतः इसका उत्तरदायित्व हमारे ऊपर नहीं होगा ।

औषधियों का पैकिंग

१—रस भस्म आदि औषधियों के २ तोला तक के पैक कार्डबक्स युक्त शीशियों में होंगे इससे बड़े पैक वैकोलाइट के ढक्कनयुक्त सुन्दर शीशियों में रहेंगे ।

२—चूर्ण के १० तोला तक के पैक व अवलेह के ༼।। सेर तक के पैक वैकोलाइट व टिन कैप युक्त गोल सुन्दर शीशियों में होंगे ।

३—तैल आदि के पैक कार्क युक्त सुन्दर शीशियों में होंगे। आसवों के पैक क्राउन कार्क की शीशियों में होंगे ।

४—पैकिंग की सुन्दरता व मजबूती आपको हर वस्तु में प्राप्त होगी ।

५—आर्डरों के माल की सप्लाई क्रमशः होगी । यत्न यही होगा कि माल जल्दी से जल्दी आपको भेज दिया जावे ।

प्रचार सामान

अनुपान मंजरी, पोस्टर, ब्लाटिंग पेपर, लैटर पैड, कैशमीमो, कलैण्डर, डायरी आदि सामान आर्डर के मूल्यानुहर पार्सल में भेजा जायगा ।

आर्डर देने की तारीख २६ जनवरी १९५८ से २८ फरवरी १९५८ तक है । इसलिये आर्डर देने में शीघ्रता करें ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्थापक—स्वर्गीय वैद्यभास्कर बांकेलाल गुप्त "प्राणाचार्य"
भाग ७ अङ्क ११ | प्राणाचार्य भवन प्रायवेट लिमिटेड, बिजयगढ़ का मुखपत्र | नवम्बर १९५७

आयुर्वेद की शान !

श्री गुरु चरन सरोज मन, सारद सीस नवाय ।
संकर सुत रक्षा करहिं, देवहिं भक्ति बढ़ाय ॥
एक विनय मेरी सुनिय, मां भारत के दास ।
हो उपजे इस देश में, सेइय या की घास ॥
मदिरा पच्छिम की तजिय, चरवी औ गौ मांस ।
चखिय भस्म हंसते रहिय, मिटै रोग की फांस ॥
अर्जुन या को चख गये, नकुल युधिष्ठिर भीम ।
तेज, सिवा, गोविन्द से, उपजे रतन असीम ॥
तिलक गांधी ने किया, गीतामृत का पान ।
राजेन्द्र पुरुषोत्तम को, है गंगा पर ध्यान ॥
अमरत पीती कौर भी, करि भारत गुण गान ।
आयुर्वेद की सान में, रखती अपना मान ॥

● ● ● ●

विश्व परिवारी !
वैद्यराज पं० महेन्द्रनाथ अग्निहोत्री ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चार शब्द

यह ग्रंथ आदरणीय वैद्य भास्कर श्री बांकेलाल जी गुप्त प्राणाचार्य के जीवन में लिखा गया था और विचार था कि उनकी स्वर्ण जयन्ती के उपलक्ष में प्रकाशित किया जाय लेकिन खेद है कि क्रूर विधाता ने असमय में उन्हें हमारे बीच से उठा लिया और हमारी आशा आकाश कुसुम बन गई। सम्पूर्ण परिस्थिति पर विचार करके इसे प्राणाचार्य पत्र के विशेषांक के रूप में श्री वैद्य भास्कर जी की स्मृति में यह अपने पाठकों को समर्पित कर रहे हैं।

क्योंकि ग्रन्थ का आकार बड़ा है तथा उस से सम्बंधित विषय भी हैं अतएव विशेषांक लगभग ७०० पृष्ठ का होगा। अतः स्पष्ट ही है कि एक विशेषांक में पूर्ण प्रकाशन सम्भव नहीं है इस लिये इस वर्ष के दो अंकों में इस की प्रस्तावना दे रहे हैं अवशिष्ट विषय विशेषांक में रहेगा यदि इस में भी पूरा न हो सका जैसी कि आशा है तब बाकी का अंश विशेषांक से बाद के अंकों में क्रमशः प्रकाशित कर दिया जायगा।

पाठकों से नम्र निवेदन है कि वे अपने अंकों को सुरक्षित रखें ताकि उन्हें अपने अपने ग्रन्थ को क्रमबद्ध करने में कठिनाई न हो।

किञ्चित्

अनामविन्मोहमुपैति वैद्यो, न वेत्तिपश्यन्नपिभेषजानि।
क्रियाक्रमो भेषजमूलमेव, तद्भेषजंचापि निघण्टुमूलम्॥
—धन्वन्तरि निघण्टु

आर्यों का आयुर्वेद उनके अन्य वेद मूलक साहित्य के समान ही सबसे प्राचीन है। यही नहीं आयुर्वेद संसार का अति प्राचीन विज्ञान है और निघण्टु तथा रसशास्त्र उसका अविभाज्य अंग और आधार शिला है।

निघण्टु शब्द की व्याख्या

आयुर्वेद में निघण्टु शब्द से उस शास्त्र का बोध होता है जिस में वनस्पतियों के गुणों का वर्णन होता है। किन्तु यह संज्ञा न केवल उक्त अर्थ में ही प्रयुक्त होती है अपितु वैदिक वाङ्मय में अन्य विशिष्ट अर्थ में भी प्रयुक्त होती है। वह विशिष्ट अर्थ जानना आवश्यक है क्योंकि वह अर्थ धातुमूलक है अतः मौलिक है।

'निघण्टु' शब्द का प्रथम प्रयोग आचार्य यास्क (निरुक्त-कार) ने किया है। उन्होंने वेदों का निघण्टु बनाया तथा उसका भाष्य (निरुक्त) भी स्वयं ही लिखा। यह आचार्य महर्षिपाणिनि से भी पूर्ववर्त्ती हैं। संसार के महान तम वैय्याकरण पाणिनि गान्धार प्रान्त के शलातुर नामक स्थान में ईसा से लगभग ६००, ७०० वर्ष पूर्व हुये थे। उन्हें हुए आज लगभग पौने तीन हजार वर्ष व्यतीत होगये हैं। मुनिवर यास्क तो उनसे भी पूर्ववर्ती हैं उन्हें हुए सवा तीन सहस्र वर्ष के लगभग हो चुके हैं। वेदों के निघण्टु बनाने वाले यह यास्क 'निघण्टु' शब्द की व्याख्या इस प्रकार करते हैं—

समाम्नायः समाम्नातः स व्याख्यातव्य तमिमं समाम्नायं निघण्टव, इत्याचक्षते। निघण्टवः कस्मात् निगमा इमे भवन्ति। छन्दोभ्यः समाहृत्यसमाम्नातास्ते निगन्तव एवसन्तो निगमना "निघन्टव" उच्यन्ते इत्यौपमन्यवोऽपि वाहनना-देवस्युः समाहताः भवन्ति यद्वा समाहृताः भवन्ति"—यास्क

इस पर आचार्य दुर्ग की टीका है—निगमा इति निगटार्था अप्येते परिज्ञाताः सन्तो मन्त्रार्थान्निश्चयेन निःशेषवा गम-यन्ति बोधयन्तीति निगमाः।....निगन्तु शब्दा निघण्टु शब्दो निष्पन्न इति भावः। उणादीनामानन्त्यात पृषोदरादि गणानि विष्टतया वा सिद्धं न वर्णागम इति स्वसिद्धान्तितन्यायेन गकार तकारयोः स्थाने घणटवर्यौ कल्प्यौ इति उपरतो मन्यु-येस्य स आचष्टे इति शेषः।

"अर्थात् छन्द-वेदों से शब्दों को एकत्र संग्रह करके यहां (निघण्टु) रखा गया है। अब इसकी व्याख्या की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जानी चाहिए। 'निघन्टु' शब्द निगन्तु शब्द से बना है ग-न्तु के स्थान पर घ-टु बदल ने से निघण्टु शब्द बनजाता है। यह आचार्य उपमन्यु का मत है। निगन्तु शब्द का अर्थ है निश्चय से वस्तु के अर्थ को जतलाने वाला अर्थात् इनके जानने से वेद मन्त्रों का अर्थ जानना आसान रहता है।"

इस प्रकार उक्त उद्धरण से निघण्टु शब्द का मूलभूत अभिप्राय यह होता है कि शब्दों का समाहरण (एकत्रकरना) और उनका ज्ञान प्रदान करना जिससे तीसरी वस्तु वेद मन्त्रों का ज्ञान हो जावे।

आयुर्वेद में भी निघण्टु शब्द प्रायः इसी प्रकार के अभिप्राय में प्रयुक्त हुआ है हां शब्दों के स्थान पर वनस्पतियों और वेद मन्त्रों के स्थान पर चिकित्सा में प्रयोग ज्ञान रहता है। अर्थात् जिसमें चिकित्सा शास्त्र में प्रयुक्त होने वाली बनस्पतियों के गुणादि का वर्णन रहता है और जिनका निश्चित ज्ञान प्राप्त कर उसे रोग निवारण में प्रयुक्त किया जाता है ऐसे ज्ञान के दाता शास्त्र को निघण्टु कहते हैं।

निघण्टु साहित्य

प्राचीन आयुर्वेदीय संहिता ग्रन्थों में निघन्टु भी संहिता का ही भाग रहा है पृथक् "निघन्टु" साहित्य रहा हो ऐसा ज्ञात नहीं होता। हमारे विचार में संहिता काल के पश्चात् संग्रह काल में आयुर्वेदीय निघन्टु पृथक पुस्तक के रूप में लिखने का श्री गणेश १२ वीं शती में आचार्य चक्रपाणिदत्त ने किया है। उसका द्रव्यगुण संग्रह सर्व प्रथम निघन्टु है। चक्रपाणिदत्त १०६० ई. सन् में रहा था इसी ने चरक पर अपनी प्रसिद्ध टीका तथा चक्रदत्त नामक सुन्दर चिकित्सा ग्रन्थ की रचना की है। इस निघन्टु में प्रधानतः आहार द्रव्यों का वर्णन है। कुछ आचार्य धन्वन्तरि निघन्टु को आद्य निघन्टु मानते हैं। इस में वर्गों के अनुसार-गुडूच्यादि शतपुष्पादि वर्ग औषध द्रव्यों का वर्णन किया गया है। किन्तु धन्वन्तरि नाम होने पर भी यह एक बहुत प्राचीन रचना नहीं हो सकती।

निघन्टु साहित्य के अनुशीलन से ऐसा ज्ञात होता है कि प्रारम्भ में अधिक उपयोग या जीवन में अधिक प्रयोग में आने वाली वस्तुओं का साधारण जिज्ञासुओं की जानकारी के लिए पृथक संग्रह किया गया। धीरे-धीरे इस प्रकार के संग्रहों की उपयोगिता देख कर अन्य द्रव्यों का समावेश भी इस शास्त्र में किया जाने लगा। यहां तक कि भावमिश्र के समय में रसशास्त्र भी निघन्टु में ही समाविष्ट कर दिया गया जैसा भाव प्रकाश निघन्टु से स्पष्ट है। यद्यपि रसशास्त्र की अपनी पृथक सत्ता है और उसका भी प्रादुर्भाव और परिवर्धन बारहवीं शती के बादही हुआ है।

आचार्य चक्रपाणिदत्त के द्रव्यगुण संग्रह के पश्चात् कैय्यदेव कृत "पथ्यापथ्य विबोधक" ग्रन्थ आता है। आज उपलब्ध समस्त निघन्टुओं में यह चरकादि संहिता ग्रन्थों के अधिक समीप है। धन्वन्तरि निघन्टु इससे पीछे का है क्योंकि उसमें अनेक संहितोक्त द्रव्यों का 'तुवरक' आदि का वर्णन नहीं है। तथा अहिफेन (अफीम) का वर्णन है। अतः यह अर्वाचीन है। विशेष विवरण आयुर्वेद का संक्षिप्त इतिहास नामक ग्रन्थ में देखें। यहां पर निघन्टु सम्बन्धी ग्रन्थों का नामोल्लेख मात्र किया जाता है।

ग्रन्थ नाम	लेखक नाम	लेखक काल
द्रव्यगुण संग्रह	श्री चक्रपाणिदत्त	११ वीं शती
कैय्यदेव निघन्टु	,, कैय्यदेव	१२ वीं शती
सोढल निघन्टु	,, सोढल	,, ,,
सिद्ध मंत्र	,, केशवदेव	१३ वीं शती
मदन विनोद निघन्टु	,, राजा मदनपाल	१४ वीं शती
धन्वन्तरि निघन्टु	,, धन्वन्तरि	१३ वीं शती
राज निघन्टु	,, नरहरी	१५ वीं शती
क्षेमकौतूहलम्	,, क्षेमशर्मा	१६ वीं शती
भाव प्रकाश निघन्टु	,, भावमिश्र	१६ वीं शती (१५६० ई के लगभग)
द्रव्यगुण संग्रह	,, राजवल्लभ	१८ वीं शती
द्रव्यावली	,, माधव	,,
पथ्यापथ्य निघन्टु	,, विश्वनाथ	....
रत्नमाला	....	....
द्रव्यगुण शत श्लोकी	,, त्रिमल्लभट्ट	....
हृदय प्रदीप	,, बोपदेव	१३ वीं शती
हलायुध	,, हलायुध	११ वीं शती
गजनिघन्टु	,, चन्द्रनन्दन	....

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजमार्तन्ड	,, भोजराज	११ वीं शती
रस वैशेषिक सूत्र भाष्य	,, नागार्जुन	......

वनस्पति द्रव्यों के गुणों के वर्णन करने वाले निघन्टुओं के अतिरिक्त खनिज पदार्थों का भी वर्णन कई निघन्टुओं में किया गया है किंतु इनका विशेष वर्णन रस शास्त्रीय ग्रन्थों में किया गया है।

नवीन निघण्टु की आवश्यकता

प्राचीन अनेकों निघन्टु ग्रन्थों के रहते हुए तथा कितने ही नये निघन्टु ग्रन्थों के प्रकाशित होजाने पर भी अपना लक्ष्य कई एक विशिष्ट दृष्टिकोणों को लेकर चला है जिसमें आधुनिक रोगों का प्राबल्य भी एक है जो नवीन गुणों से युक्त पदार्थों की आवश्यकता का अनुभव कराता है। प्राचीन ढंग से लिखे गये विवेचन को विस्तृत करना दूसरा दृष्टिकोण है।

कुछ आधुनिक आचार्यों ने एक दूसरे की परम्परा का विशेषतः अवैद्य लेखकों की परम्परा का पालन करते हुए निघन्टु सम्बन्धी ग्रन्थ लिखे हैं जिनमें औषधियों का क्रम वनस्पति शास्त्र के अनुसार रक्खा गया है। चिकित्सा शास्त्र के अनुसार नहीं। बनस्पनि शास्त्र (Botany) में इस प्रकार का वर्णन करना उचित ही है। किन्तु हमारे नम्र मत में तो चिकित्सा शास्त्र में गुण कर्मानुसार ही द्रव्यों का बर्णन होना चाहिये। उदाहरणतः त्रिफला के तीनों द्रव्यों का वर्णन एक ही स्थान पर होने से वैद्यों तथा छात्रों को सुविधा रहती है। वनस्पति शास्त्रानुसार वर्णन का परिणाम यह हुआ कि हरड़ बहेड़ा का वर्णन कहीं पर है तो आमला उनसे कोसों दूर है इस प्रकार चिकित्सक तथा छात्र दोनों को ही कठिनाई होती है। गुण कर्म की दृष्टि से तो आचार्य भाव मिश्र का वर्गीकरण कहीं अधिक वैज्ञानिक है। इस प्रतिसंस्कृत भावप्रकाश निघन्टु में हमने वही क्रम रहने दिया है तथा प्राचीनता को रखते हुये आज तक का जो नवीन विज्ञान है उस सब का समावेश सर्वथा नवीन ढंग से किया गया है जिससे वैद्यों तथा छात्रों को अत्यन्त सुविधा होगी किंतु आदर्श क्रम तो वही है जिसका वर्णन हमने प्रथम परिशिष्ट में किया है। इस वर्णन में हमने आधुनिक कालके अन्य चिकित्सा विधियों के निघन्टुओं के अनुसार प्रत्येक पदार्थ का विस्तृत वर्णन किया है और अन्त में दो परिशिष्ट दिए गये हैं। प्रथम परिशिष्ट में गुणकर्म तथा प्रभावानुसार द्रव्यों का वर्गीकरण किया गया है। द्वितीय परिशिष्ट में रोगानुसार द्रव्यों का वर्गीकरण किया है। इससे वैद्यों को तथा छात्रों को भी पर्याप्त सुविधा होगी।

आधुनिक समय में निघन्टु शास्त्र में निम्न विषय समाविष्ट किए गये हैं।

(१) वनस्पति परिचय या द्रव्य परिचय तथा उनका संग्रह, वानस्पतिक तथा खनिज-धातु आदि सभी औषधि द्रव्य इसमें सम्मिलित हैं।

(२) औषधि निर्माण (रस शास्त्र या फार्मेसी) औषधियों का शोधन मारण तथा योग निर्माण।

(३-४) औषध प्रभाव शास्त्र तथा चिकित्सा शास्त्र—इसके द्वारा विविध औषधियों का प्रभाव स्वस्थ प्राणियों पर देखा जाता है पुनः उस प्रभाव के अनुसार रोगियों पर परीक्षार्थ प्रयोग किया जाता है औषधि प्रभाव उचित रीत से प्रमाणित होने पर पुनः उसे चिकित्सा में प्रयोग किया जाता है। प्राचीन निघन्टु में भी यद्यपि ये सब बातें हैं तथापि इतने विस्तार से नहीं।

इस ग्रन्थ की वर्णन प्रणाली

१-इस आधुनिक पद्धति का अनुसरण करना ही अपना प्रयत्न है। वर्तमान काल में औषधि निर्माताओं का एक पृथक् ही वर्ग बन गया है और चिकित्सकों का पृथक्। आयुर्वेद जगत् में भी यह प्रवृत्ति घर करती जारही है। यह उचित ही है यदि आयुर्वेदीय औषधि निर्माता मूलद्रव्यों के चयन में तथा औषधिनिर्माण में कुछ सावधानी तथा सचाई बरतें। सर्वोत्तम मार्ग तो यह है कि ऐलोपैथिक औषधियों के समान आयुर्वेदीय औषधियों का भी मापदण्ड (Standard) निर्धारित कर दिया जाए। औषधियों की पहिचान संग्रह तथा निर्माण इस वर्ग का कार्य है। अतः वह एक अलग-ही शास्त्र बनाया गया है जिसका सम्बन्ध वनस्पति शास्त्र के साथ अधिक है और चिकित्सा शास्त्र के साथ उतना नहीं है अतः हमने इस ग्रन्थ में अधिक इसका वर्णन नहीं दिया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२-प्रारम्भ में विविधि भाषाओं में नाम उत्पत्तिस्थल द्रव्य का स्वरूप तथा रस वीर्य विपाक विशेष गुण एवं मुख्यतया जिन रोगों में प्रयुक्त होता है वह सब संक्षेप में लिखा गया है ताकि दृष्टिपात मात्र से द्रव्य विषयक साधारण ज्ञान होजाए।

३-पुनः मूल संस्कृत पद्य देकर उसका अर्थ किया गया है। तदनन्तर विशेष व्याख्या की गई है। इस व्याख्या में द्रव्य का शरीर के विभिन्न अंगों पर होने वाला प्रभाव चिकित्सा में उपयोग, किस प्रकार से प्रयोग किया जाए इत्यादि बातें लिखकर अन्त में तत्तद् द्रव्यों के विशिष्ट योग दिये गये हैं। प्राचीन के साथ आजतक का समस्त उपलब्ध ज्ञान का संचय इसमें करने का प्रयत्न किया गया है।

४-अनेक नवीन-औषधियां यूनानी तथा एलोपैथिक-पेनिसिलीन ग्रन्थिस्रावादि इसमें दिये गये हैं। संक्षेप में चिकित्सा में व्यवहार आने वाली प्रायः सभी औषधियों का समावेश इसमें कर दिया गया है जिससे एक ग्रन्थ के अनुशीलन से ही निघन्टु और रस शास्त्र विषयक समस्त ज्ञातव्य बातों का ज्ञान होजाए।

एतदर्थ हमने एलोपैथी यूनानी वाङ्मय की पूर्ण सहायता ली है। "बालादपि ग्राह्यम्" न्याय में हमारा विश्वास है किसी एक तन्त्र की पूर्णता में नहीं।

इस ग्रंथ को चार खन्डों में बांटा गया है।

प्रथम खन्ड

परिभाषा—मान परिभाषा में हमने अंग्रेजी अन्तराष्ट्रिय मान औंस ड्राम मिलीमीटर आदि का भी समावेश किया है और उसके समकक्ष आयुर्वेदीय व देशी मानों के साथ तुलना की है जिससे पाठकों को इन मानों के समझने में सुविधा हो किन्तु इन मानों का प्रमाण सदा अंग्रेजी वाटों से ही करना चाहिए यन्त्रादि का सचित्र वर्णन भी यहां ही किया गया है।

द्रव्य गुण रस वीर्य विपाक भी इसी खन्ड में वर्णित है। इनके वर्णन में न केवल आयुर्वेदीय ग्रन्थों का अनुवाद मात्र ही है अपितु आधुनिक विज्ञान की सहायता से इनका विस्तृत वर्णन किया गया है जो अभी तक अन्यत्र किसी भी निघन्टु ग्रन्थ में उपलब्ध नहीं है। साथ ही अंगों पर प्रभाव के अनुसार द्रव्यों के कर्मों का रेचन, पाचन, दीपन आदि का वर्णन भी आधुनिक ढंग से किया गया है जिससे यह ग्रन्थ इस विषय में किसी भी ग्रन्थ से टक्कर ले सकता है।

द्वितीय खण्ड में वानस्पतिक औषध द्रव्यों का वर्णन है।

तृतीय खण्ड में—रस शास्त्र का पूर्ण रूपेण वर्णन किया गया है।

चतुर्थ खण्ड में—आहार द्रव्यों का वर्णन है।

एक नया नव्यवर्ग भी लगाया गया है जिसमें यूनानी तथा एलो पैथी द्रव्यों का संक्षिप्त किन्तु पूर्ण वर्णन किया गया है।

उक्त प्रकार से वर्णन करने में हमें पर्याप्त कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है विशेष कर मुद्रित निघन्टुओं और उनकी टीकाओं में अनेकों भ्रष्टता तथा त्रुटियां होने के कारण।

आयुर्वेदिक निघन्टुओं की भ्रष्टता

स्वर्गीय कविराज गणनाथसेन जी ने "शारीरे सुश्रुतो श्रेष्ठ" के स्थान पर "शारीरे सुश्रुतो नष्ट" का नारा लगाया तो बहुत सारे वैद्यबन्धु रुष्ट होगये थे किन्तु उनके बचन में सचाई थी। आयुर्वेदीय निघन्टुओं में भी पर्याप्त भ्रष्टता है। न केवल पाठ सम्बन्धी अशुद्धियां ही हैं अपितु परस्पर विरोधी बातें भी हैं जिन्हें कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति स्वीकार नहीं कर सकता। नीचे कुछ उदाहरण दिये जाते हैं।

शिग्रुःसरः कटुःपाके तीक्ष्णोष्णो मधुरो लघुः।
—भावप्रकाश

शिग्रुःकटुः कटुः पाके तीक्ष्णोष्णो मधुरो लघुः।
—कैय्यदेव

संग्राही शुक्लो हृद्यः पित्त रक्त प्रकोपणः।
—भावप्रकाश

संग्राह्य शुक्लो हृद्यः पित्त पित्तास्त्र कोपनः।
—कैय्यदेव

उक्त पाठों में कितनी विभिन्नता है। पाठक स्वयं देखलें। आश्चर्य तो टीकाकारों पर आता है जिन्होंने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मक्षिका स्थान मक्षिका न्याय चरितार्थ किया है। शिग्रु को संग्राही और वीर्यवर्धक लिख मारा है जब कि भावप्रकाश में ही शिग्रु बीज के लिये अवृष्य कहा गया है।

पाठोष्णा कटुका तीक्ष्णा वातश्लेष्महरी लघुः।
—भावप्रकाश

कुचैलिका तिक्तरसा स्वादुपाकाहिमा लघुः।
—कैय्यदेव

पूगं रूक्षं सरं किञ्चित् कषायं मधुरं गुरु।
—कैय्यदेव

सुपारी संग्राही सर्व विदित है किन्तु कैय्यदेव ने उसे 'सर' मृदुरेचक बताया है।

"श्वेता त्रिवृद्रेचनी स्यात् स्वादुष्णा समीरहृत्।
—भावप्रकाश

कफपित्त प्रशमनी रौक्ष्याच्चानिल कारिणी।
(चरक अध्याय ७)

भावमिश्र ने त्रिवृत् को वातहर बताया है जब कि चरक में वातकारक कहा गया है।

वस्तुतः यह विरोधाभास लेखकों तथा प्रेस के प्रमादवश होगया दीखता है।

उक्त उद्धरणों से स्पष्ट है कि आयुर्वेदीय निघण्टुओं में पर्याप्त भ्रष्टता है उस पर टीकाकारों की और मुद्रकों की असावधानी के कारण "करेला और नीमचढ़ा" वाली कहावत चरितार्थ होरही है।

प्रेस और टीकाकारों की असावधानियों से जहां एक ही पदार्थ के विभिन्न गुण लिखे गये हैं वहां यह भी मानने में मुझे कुछ आपत्ति नहीं है कि एक ही द्रव्य की गवेषणा में आधुनिक विज्ञजनों के समान भारतीय विद्वान् विभिन्नतायुक्त मत व्यक्त करने में सिद्ध हुए हों। चरक और भावप्रकाश तथा अन्य निघन्टुओं में एक ही द्रव्य के गुण पार्थक्य का यह कारण होना असम्भव नहीं परन्तु कई एक स्थान पर ऐसा मत पार्थक्य प्रगट करना प्रेस व टीकाकारों का प्रभाव भी लगता है।

कतिपय आचार्यों तथा टीकाकारों ने अपने ग्रन्थों में 'नव्यमत' या 'पाश्चात्यमतों' का उल्लेख किया है इन शब्दों से यह अभिप्राय निकलता है कि इन द्रव्यों का उपयोग एलोपैथी में भी किया जाता है। वस्तुतः बात ऐसी नहीं है। ये तो कुछ व्यक्तियों के अपने प्रयोग हैं और उनका व्यक्तिगत मत है अतः इसे पाश्चत्यमत या नव्यमत कहना उचित नहीं है।

प्रथा आजकल आयुर्वेदिक लेखकों में एक नई चली है वह यह है कि वे द्रव्यों के रासायनिक संगठन पर भी अधिक आग्रह करने लगे हैं। हमारी समझ में नहीं आता कि यह प्रणाली आयुर्वेद में किस प्रकार हितकर होसकती है। यदि एक द्रव्य में अवस्थित सोडियम या पोटेशियम साल्ट का पता लग भी गया तो उससे आयुर्वेद का क्या लाभ? आयुर्वेदिक सिद्धान्तों के अनुसार उनका प्रयोग हो सकता है! यदि कुटज त्वक में 'कुर्चीन' सत्व का पता लग भी गया तो उससे आयुर्वेद को क्या लाभ ? वहां रस वीर्य विपाकादि के अनुसार प्रयोग होता है। हां! एलोपैथी चिकित्सा प्रणाली में इससे अवश्य लाभ होता है। और इसीलिये उन लोगों ने अपने लाभ के लिये इस प्रकार का संशोधन किया है आयुर्वेद के लाभ के लिये नहीं।

हो सकता है जब आयुर्वेदीय औषधियों का कोटिनिर्धारण किया जावे अथवा संशोधन हो तब उसमें उसके घटकों का आधुनिक विज्ञान द्वारा प्राप्त किया गया ज्ञान कुछ लाभ दे पर वह आधुनिक निघन्टुकारों व विद्यार्थियों के लिये बहुत ही आवश्यक और अनिवार्य है यह नहीं कहा जासकता। दूसरे जो घटक आधुनिक टीकाओं में लिखे मिलते हैं उनकी प्रामाणिकता सन्देह रहित नहीं हैं।

इसके लिए सर्वप्रथम आवश्यकता इस बात की है कि प्राचीन निघन्टुओं के शुद्ध संस्करण निकाले जांय दूसरी आवश्यकता वनस्पतियों के निर्णय की है।

निघण्टु शास्त्र का प्रति संस्कार

आयुर्वेदीय निघन्टुओं के कुछ दोष तो ऊपर बताये जा चुके हैं। अनेकों वनस्पतियों का संदिग्ध होना और विभिन्न प्रदेशों में एक ही नाम से विविध औषधियों का व्यवहार होना भी बड़ी भारी त्रुटि है। सर्वप्रथम कार्य जो होना चाहिए वह यह है 'समग्र प्राप्य वनस्पतियों के स्वरूपादि का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्णय'। यह कार्य किसी एक व्यक्ति का नहीं है। संस्था का कार्य है। जिसमें वैद्यों के अतिरिक्त सच्चे वनस्पति शास्त्रियों का सहयोग आवश्यक है।

वनस्पतियों के पूर्ण निर्णय के लिये यह आवश्यक है कि सारे भारत में से वैद्यों द्वारा प्रयुक्त होने वाली सारी वनस्पतियों के नमूने स्थानीय भाषा के नाम तथा स्थानीय वैद्यों के द्वारा प्रयुक्त संस्कृत नामों का संग्रह होना चाहिये। इससे ज्ञात होगा कि एक ही संस्कृत नाम से व्यवहृत पदार्थ किस प्रदेश में कौन सा है। उदाहरणार्थ 'पर्पट' नाम से दक्षिण में कुछ और द्रव्य प्रयुक्त होता है और उत्तर में कुछ और इस प्रकार इन विभिन्न द्रव्यों का परिचय प्राप्त कर यथा सम्भव उन्हें एक विशाल वनस्पति उद्यान में उगाकर पत्र पुष्पादि की परीक्षा करनी चाहिए तथा उनका वर्गीकरण सुज्ञ वनस्पति शास्त्रियों से कराना चाहिए। साथ ही रसादि का भी अनुभव कर द्रव्यों का निर्णय करना चाहिए। अन्यथा "मुण्डे मुण्डे मतिर्भिन्ना" की लोकोक्ति ही वैद्य समाज में प्रचलित रहेगी।

इस ग्रन्थ के विषय में हमारा यह दावा नहीं है कि यह सर्वथा सम्पूर्ण है। इसमें अनेक अशुद्धियां हो सकती हैं जिन्हें यदि वैद्य बन्धु जता देंगे तो हम उनके कृतज्ञ होंगे और अगले संस्करणों में उन्हें निकालने का प्रयत्न करेंगे। हमारा तो कहना इतना ही है कि यह सही रास्ते पर प्रथम पग है। महाकवि भवभूति के

"उत्पस्यते ममकोऽपिसमानधर्मा
कालोह्ययं निरवधिर्विपुला च पृथिवी"

कथन के अनुसार हमें आशा है कोई विद्वान इस मार्ग पर चलकर सर्वाङ्ग सम्पूर्ण निघण्टु भी तैयार करेंगे।

अनुक्रमणिका

अब तक के निघण्टु ग्रन्थों के विद्यार्थी तथा साधारण पाठक को जो सब से बड़ी कठिनाई आती है वह है औषधियों की अनुक्रमणिका का अभाव—

कठिनाई जो विद्यार्थी के सामने आती है वह बड़ी दुरुह होती है पाठक के सामने बरा, उषण पर्जनी, पर्जन्या, अवल्गुजा, तिरीट, गालव जैसे अप्रचिलित शब्द जब आते हैं तब वह विमूढ होजाता है क्योंकि जब तक उसे वरा(त्रिफला) पर्जन्या (दारू हरिद्रा) अवल्गुजा (वाकुची) तिरीट, गालव, (लोध्र) इत्यादि का पता ही न हो तब निघण्टु में उन द्रव्यों के गुण-धर्म किस प्रकार ज्ञात करें। इस कठिनाई को दूर करने के लिये सम्पूर्ण औषधि नामों की अनुक्रमणिका इसमें लगाई गई है जिससे अनभिज्ञ व्यक्ति भी किसी भी शब्द को बिना कठिनाई के सरलता से ज्ञातकर सकें। इस प्रकार इस निघन्टु ग्रन्थ को सर्वाङ्ग पूर्ण बनाने का प्रयत्न किया गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री धन्वन्तरि जी कौन थे ?

अलीगढ़ नगर वैद्य सभा द्वारा सभापतित्व रूप में वाणी भूषण पं० रामचन्द्र वैद्यशास्त्री का दिया हुआ भाषण

समुपस्थित प्राणाचार्य सज्जनों ! आज केवल वैद्यों की ही नहीं किन्तु भारत प्रसूत समस्त हिन्दू जाति की प्यारी उत्सव तिथि धन्वन्तरि त्रयोदशी है जिसे वे लाखों वर्षो से मनाते चले आ रहे हैं, परन्तु वे आज तक इसका निःसन्दिग्ध निर्णय घोषित नहीं कर पाये हैं कि धन्वन्तरि कौन थे ? वह किस जाति के थे ? उन्होंने किस नाम के पिता के घर अवतार धारण कर आयुर्वेद को समृद्ध बनाया था, उनके पुत्र और पौत्र भी थे या नहीं और थे तो, उनके क्या-क्या नाम थे इत्यादि। उपरोक्त आश्चर्य-जनक बात का एक मात्र प्रधान कारण यह है कि विद्वान् वैद्यों ने उनकी वंश परम्परा और अवतार कथा के ज्ञान के लिए परिश्रम के साथ पुराणों में अन्वेषण नहीं किया। दूसरा कारण यह है कि वैद्यक शास्त्र के माननीय आर्ष ग्रन्थों में इस विषय का विश्वसनीय वर्णन उन्हें मिला नहीं।

आज से लग-भग चार सौ वर्ष पहले यवन राज्य काल के श्री भावमिश्र जी वैद्यराज ने स्वनिर्मित "भावप्रकाश" नाम के वैद्यक ग्रंथ में श्री धन्वन्तरि जी के प्रादुर्भाव की कथा वृद्धों से सुनकर अथवा स्वयं गढ़कर लिख दी है परन्तु वह सर्वथा अमान्य और अपूर्ण हैं, इसे हम पीछे समझावेंगे।

पहले आप मन लगाकर यह सुनें ! भगवान विष्णु के अंशावतार श्री धन्वन्तरि जी भू-मंडल पर दो वार दो रूपों में दो प्रथक् प्रथक् कामों के करने के लिए आये थे।

पहली बार देव और असुरों द्वारा समुद्र मंथन के समय ये पीताम्बरधारी मणि माला विभूषित मेघश्याम शरीर से हाथ में अमृत घट लिए हुए जलनिधि से प्रकट हुए थे। यह कार्य उन्होंने देवताओं को अमृत देकर उन्हें अजर अमर बनाने के लिए किया था। इनकी यह पहली अवतार कथा ही अधिक प्रचलित है। इनका यह देवरूप था यह अपना काम कर तत्काल देवलोक को चले गये क्योंकि आगे इनकी कुछ भी कथा वर्णित नहीं हुई। उपरोक्त कथा श्री मद्भागवत आदि कई मान्य ग्रंथों में वर्णित की हुई है।

ब्रह्मवैवर्त पुराण के ५१ वें अध्याय में उपरोक्त कथा के साथ एक और विशेष बात कही गई है कि श्री धन्वन्तरि जी वैनतेय जी के शिष्य और भगवान् शंकर के उपशिष्य थे।

भगवान् वेदव्यास ने महाभारत में बताया है कि वैनतेय गरुड़ जी छैः भाई थे वे सभी अपनी विनता नाम वाली माता से उत्पन्न होने के कारण वैनतेय कहे जाते थे। यथा—

तार्क्ष्यश्चारिष्टनेमिश्च तथैव गरुडारुणौ ।
आरुणि वीरुणिश्चैव वैनतेया प्रकीर्तिताः ॥

—महाभारत १—६५—४०

इन छः में ये कौन से वैनतेय के शिष्य थे। यह ज्ञातव्य अपूर्ण रह जाता है किन्तु बुद्धि कहती है कि ये अरिष्टनेमि के शिष्य रहे होंगे। अरिष्टनेमि÷ नाम सद्-वैद्य होने की सूचना देता है। अरिष्टनेमि शंकर के शिष्य रहे होंगे। यह तो हुई देव वैद्य धन्वन्तरि की कथा।

दूसरी बार मनुष्य शरीर में आयुर्वेद को अष्टांगपूर्ण करने के लिए अवतार धारण करने वाले धन्वन्तरि के सम्बन्ध में श्री भागवत के नवम स्कन्ध के १६ वें अध्याय में कहा गया है कि क्षत्रिय वंश भूषण सुप्रसिद्ध महाराज पुरुरवा के वंश में 'क्षत्रवृद्ध राजा' का पुत्र सुहोत्र हुआ,

÷ नियत मरण सूचक लिंग मरिष्ट' तस्य नेमिः।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसके काश्य, कुश और गृत्समद यह तीन पुत्र थे। इनमें काश्य का पुत्र काशि (काशीराज) काशि का पुत्र राष्ट्र, राष्ट्र का पुत्र दीर्घतमा, दीर्घतमा के पुत्र आयुर्वेद के प्रवर्तक श्री धन्वन्तरि भगवान् हुए। वे विष्णु के अंशावतार थे और यज्ञों में से यज्ञ भाग लेने के अधिकारी थे जो स्मरण मात्र से रोगों का नाश कर देते थे। धन्वन्तरि के पुत्र केतुमान और केतुमान के पुत्र भीमरथ और भीमरथ के पुत्र दिवोदास और दिवोदास के पुत्र द्युमान हुए। यथा—

काश्यस्य काशिस्तत्पुत्रो राष्ट्रो दीर्घतमः पिता।
धन्वन्तरि दैर्घ्यतम आयुर्वेद प्रवर्तकः ॥४॥
यज्ञभुक्वासु देवांशःस्मृतमात्रार्ति नाशनः।
तत्पुत्रः केतुमानस्य जज्ञे भीरथस्ततः ॥५॥
दिवोदासो द्युमांस्तस्मात् इत्यादि।

श्री विष्णु पुराण ४-८ में धन्वन्तरि जी की वंश परम्परा तो उपरोक्त ही कही गई है किन्तु यह बात विशेष कही गई है कि भगवान् नारायण ने प्रथम रूप धन्वन्तरि को बर देकर कहा कि तुम पृथ्वी पर काशिराज के गोत्र में अवतार धारण कर आयुर्वेद को अष्टधा करके सम्पूर्ण करोगे और यज्ञ भाक् भी होओगे।

विष्णु पुराण का पठनीय पाठ यह है—

भगवता नारायणेन अतीत सम्भूतौ (समुद्र मन्थनान्ते) तस्मै (धन्वन्तरये) वरोदत्तः काशिराज गोत्रेऽवतीर्यस्त्वमष्टधा सम्यागायुर्वेदं करिष्यसियज्ञ भागपित्वं भविष्यसीति।

भगवान् वेदव्यास लिखित प्रमाणों से यह तो निःसन्देह सिद्ध हो जाता है कि हमारे भगवान् धन्वन्तरि जी काशिराज के गोत्र में दीर्घतमा नामक राजा के घर अवतरित हुए थे। काशिराज धन्वन्तरि जी के परबाबा थे और सुप्रसिद्ध दिवोदास धन्वन्तरि जी के परनाती थे। आयुर्वेदिक ग्रन्थों में दिवोदास का नाम पाया जाता है। अतः यह भी निश्चित ही है कि धन्वन्तरि से प्रारम्भ होकर दिवोदास तक इस वंश में आयुर्वेद का प्रचलन खूब रहा। श्री मद्भागवत और विष्णुपुराण दोनों में इस स्थान पर काशि और काशिराज शब्द नाम के लिए ही प्रयुक्त हुआ है, काशी नगरी के राजा होने के लिये नहीं हुआ। किन्तु दिवोदास के नाम के साथ कहीं-कहीं काशिराज शब्द का प्रयोग हुआ है वह विशेषण रूप का ही माना जा सकता है और इससे यह सिद्ध होता है कि काशी इस बंश की राजधानी रही और पवित्र काशीपुरी में ही महाराज दीर्घतमा के घर श्री धन्वन्तरि जी का कार्तिक कृष्णा त्रयोदशी को अवतार हुआ।

अब विद्वान् लोग स्वयं विचार करें क्या काशिराज, धन्वन्तरि और दिवोदास भावमिश्र के कथनानुसार एक थे? अथवा पीढ़ियों का अन्तर रखने वाले प्रथक्-प्रथक् तीन थे।

धन्वन्तरि के विषय में भावमिश्र जी केवल इतना जानते थे कि वाहुज (क्षत्रिय) वर्ण के थे। शेष सब उनकी मनमानी प्रमाण शून्य गढ़न्त है। भगवान् वेदव्यास जी के वाक्यों के सामने मान्य नहीं। श्री विक्रमादित्य राजा की सभा के नवरत्न रूप नौ विद्वानों में जो धन्वन्तरि जी थे वे धन्वन्तरि नामधारी और कोई विद्वान होंगे चाहे वे काशिराज हों या वैद्यराज। वे अवतार रूपी धन्वन्तरि नहीं माने जा सकते, उनका समय बहुत दूर का असंख्य है और इनका समय २०१४ है।

प्यारे वैद्यो! मैं चिरकाल से छिपा हुआ धन्वन्तरि परिचय यथा ज्ञान आपके सामने वर्णन कर चुका।

अब आपसे यह निवेदन करना आवश्यक है कि वैद्य सभाओं और वैद्य समाज को चाहिए कि धन्वन्तरि त्रयोदशी के दिन जनता में विज्ञापन बांटकर पोस्टर चिपका कर लिफाफे बांटकर, बड़ी-बड़ी सभायें किया करें और जनता को सम्बोधन कर आहार, ब्रह्मचर्य, दिनचर्या, निशाचर्या और ऋतुचर्या पर मनोहरता के साथ व्याख्यान दिया करें। ऐसा करने से जनता का और वैद्य समाज दोनों का कल्याण होगा।

अभी तक आधी हिन्दू जनता तो यह भी नहीं जानती कि धन्वन्तरि त्रयोदशी को भगवान विष्णु के धन्वन्तरि रूप का पूजन करना और उनके लिखित उपदेशों को सुनना चाहिए। वह इसे धनतेरस कह सुनकर धन की ही उपासना में लगी हुई है।

बोलो श्री दीर्घतमापुत्र भगवान् धन्वन्तरि जी की जय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वक्षपरीक्षा और स्टेथिस्कोप--

लेखक एवं प्रकाशक-वैद्य शास्त्री रामरतन जी गंगेले 'रत्न' R. M. P. पृष्ठ संख्या-१२ बिमूल्य यह पुस्तक वक्ष परीक्षा एवं स्टेथिस्कोप के प्रयोग के लिये एक सहायक नोट के स्व रूप है। जिनमें थोड़े से शब्दों में ही सब कुछ पूर्ण करने की चेष्टा की है। लेखक का प्रयत्न सराहनीय है।

जटिल रोगों की सफल चिकित्सा--

लेखक-वैद्य एस० बासुदेव, प्रकाशक बासुदेव आरोग्य वाटिका जम्मू, पृष्ठ संख्या ११७ मूल्य २) इस पुस्तक में लेखक ने अपने दैनिक चिकित्सा काल में जिन जिन रोगियों पर सफलता प्राप्त की है उनकी पूरी स्थिति रोग का विवरण एवं चिकित्सा क्रम दिया है। इस क्रम से वैद्यों को तो लाभ होगा ही साधारण व्यक्ति भी लाभ उठा सकते हैं।

इन रोगियों में बहु मत ऐसे रोगियों का है जो योग्य एलोपैथिक चिकित्सकों से अपनी चिकित्सा कराकर निराश होचुके थे एवं अपने जीवन की आशा ही छोड़ चुके थे।

एक ओर यह पुस्तक जहां आयुर्वेद प्रचार का काम देती है वहां पर चिकित्सकों को चिकित्सा में सहयोगी भी बन सकती है। लेखक का प्रयास स्तुत्य है एवं सफल है मूल्य भी स्वल्प है। पक्की जिल्द युक्त पुस्तक ग्लेज कागज पर मुद्रित है। छपाई एवं गैटअप कुछ अच्छा नहीं बन पाया है।

रसायन का मधुमेह अङ्क--

दिल्ली (रसायन फार्मेसी ३ दरियागंज पोस्ट बक्स नं० १२५) से रसायन नामका एक मासिक पत्र निकाला है। उसी का यह मई मास का मधुमेह विषयक विशेषांक है। मधुमेह के सम्बन्ध में इसमें साधारण जानकारी दी गयी है। आयुर्वेदिक दृष्टि से चिकित्सा पर पर्याप्त प्रकाश नहीं डाला गया। ५७ पृष्ठ की पुस्तक का दाम ॥) है। इसके सम्पादक श्री गौरीलाल चानना बी० ए०, वैद्य-वाचस्पति हैं।

एक उपयोगी अभिनन्दन ग्रन्थ--

अभिनन्दन ग्रन्थ कई उच्च व्यक्तियों के प्रकाशित हुये हैं। प्रायः देखा जाता है कि उन ग्रंथों में उन्हीं सज्जनों के गुणगान के लेख अधिक रहते हैं। अमृतधारा के यशस्वी आविष्कारक श्रीमान् पंडित ठाकुरदत्त शर्मा वैद्य जी की हीरक जयन्ती पर १० जनवरी १९५८ ई० को एक ऐसा अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किया गया है जो पुस्तकालयों की शोभा की चीज है, और न केवल चिकित्सकों प्रत्युत सर्व साधारण जनता के लिये भी अति लाभदायक है। इसमें श्रीमान् पंडित जी (आविष्कारक 'अमृतधारा') का शिक्षाप्रद जीवन चरित्र भी है और सज्जनों के प्रशंसात्मक उद्‌गार भी हैं। इसके अतिरिक्त योग्य वैद्यों तथा डाक्टरों के बहुत उपयोगी निबन्ध हैं। स्वास्थ्य और दीर्घ जीवन के रहस्य तथा उत्तमोत्तम अनुभूत योग श्रीमान् पंडित जी ने स्वयं भी लिखे हैं और अन्य अनुभवी वैद्यों ने भी। साथ ही ६० वर्ष से ऊपर की आयु के स्वस्थ जवान वृद्धों के इस प्रकार के अपने अपने प्रेरणात्मक अनुभवों का समावेश है कि जिस जिस प्रकार के रहन सहन से वे ६०, ७० और ८० वर्ष तक भी स्वस्थ बने रहे। ये इस ग्रंथ की विशेषताएं हैं।

इसका लागत मूल्य २॥) रखा गया है। जिनको आवश्यकता हो वे अमृतधारा फार्मेसी प्राइवेट लिमिटेड देहरादून से मंगवा सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

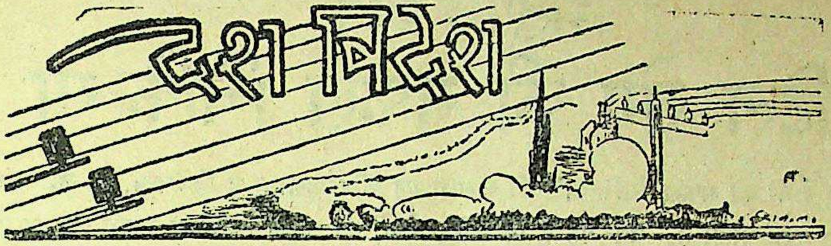

वैद्य सभा वैरा फिरोजपुर—

वैराफीरोज पुर में ता० ६-७-८ दिसम्बर सन् ५७ ई० को सर्वोदय सम्मेलन सम्पन्न हुआ जिसमें श्री सिद्धराजढ्ढा मंत्री विनोबासंघ, डा० सुशीला नायर, श्री मती मदालसा देवी, श्री मलकानी जी M.P., श्री कपिल भाई, श्री रामसरन जी M. P., श्री बनारसी दास चतुर्वेदी आदि महान नेतागण पधारे तथा लगभग २० हजार जनता दैनिक सम्मिलित थी। उसके साथ ही आयुर्वेद वाचस्पति श्री पं० त्रिलोकी नाथ शास्त्री M. Sc. A. के नेतृत्व में वैद्य गणों का विशाल समूह एकत्रित हुआ तथा जनता को भारतीय चिकित्सा पद्धति राष्ट्रीय चिकित्सा पद्धति बनने योग्य क्यों है इसका युक्ति युक्त सम्पादन कर जनता को इतना मुग्ध बनादिया कि जनता वहां से उठकर जलूस बनाकर घूमी और "जयआयुर्वेद" "आयुर्वेद ज़िन्दाबाद" "कृषकों की मांग है आज-रोटी-कपड़ा-देशी इलाज" के गगन भेदी नारों से सम्मेलन गूंज उठा। इसके बाद श्री त्रिलोकी नाथ शास्त्री ने वैद्य समाज तथा जनता पर किये गये आघात मद्यकर कानून इत्यादि की बावत पूर्णतया समझाया तथा पर्लियामेंट सदस्यों से निवेदन किया कि वे जनता की आवाज सुनें तथा ऐसे कानून का विरोध करें और हटवायें। तथा आयुर्वेद को राष्ट्रीय चिकित्सा पद्धति को घोषित कराने के पक्ष का प्रबल समर्थन करें।

सोनपुर मेले में औषधालय—

विहार-प्रान्तीय वैद्य सेवा संघ द्वारा सञ्चालित धर्मार्थ औषधालय सोनपुर के महान् मेले में गया था। यात्रियों को निःशुल्क औषधियां दी गयीं। इस कार्य की सफलता के लिये धनिकों को संघ की सहायता करनी चाहिये। पता—पं० द्वारका मिश्र ओडो (गया)।

शुद्ध आयुर्वेद परीक्षा—

सन् १९५४ से बम्बई राज्य में शुद्ध आयुर्वेद का पाठ्यक्रम सरकार द्वारा मान्य होकर प्रचलित हुआ था पहली पदवी की पहली परीक्षा इस वर्ष हुई। उसमें ७१ विद्यार्थी बैठे थे उनमें से ४२ उत्तीर्ण हुए हैं। नासिक के ७ विद्यार्थी बैठे थे, उन में से ६ उत्तीर्ण हुएहैं प्रथम विद्यार्थी कामता सदानन्द को (शीव विद्यालय) कुंवर जी ठाकुर का स्वर्णपदक मिला है। रोग निदान और चिकित्सा में कुमारी कुमुदनी लोखण्डे को श्री वेणीमाधव शास्त्री की ओर से २५) पारितोषिक और प्रसूति तन्त्र में सौ० सुशीलाबाई विट्ठलराय हाडे (शीव) को श्रीमती मथुराबाई वामनराव पारितोषिक मिला है

दुःखद मृत्यु—

झालू जिला विजनौर के वैद्यराज काशीराम धन्वन्तरि के भ्राता पं० राधेश्याम का स्वर्ग वास कुरुक्षेत्र में अकस्मात् हृदयकी गति बन्द होने से होगया इससे वैद्यराज जी के आयुर्वेदिक कार्यो में बहुत बाधा पड़ी है। ईश्वर मृतात्मा को सद्गति दे। वैद्य जी के साथ हमारी हार्दिक समवेदना है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयुर्वेद के गौरव को उजागर करने वाली

अनुपम कृति

जटिल रोग की सफल चिकित्सा

"जटिल रोगों की सफल चिकित्सा" की असाधारण और असामान्य विशेषता, कि जो आयुर्वेद के गौरव को उजागर करने वाली है, वह यह है कि जटिल रोगों की सफल चिकित्सा भारत सरकार के स्वास्थ्य बिभाग के उस पक्षपात का भी अमली और अकाट्य उत्तर है कि जिस पक्षपात का प्रदर्शन ऐलोपैथी की अनन्य उपासना और आयुर्वेद विज्ञान की असाधारण दुश्मनी के रूप में दिनांक १२-४-५४ को लोक सभा में स्वनाम धन्य माननीया राजकुमारी अमृतकौर जी के निम्नांकित आमिक वचनों द्वारा हो चुका है ।

"ग्रामीणों का भी ख्याल है कि देशी इलाज साधारण रोगों के लिये ही है, बड़ी-बड़ी बीमारियों का इलाज ऐलोपैथिक डाक्टर ही कर सकते हैं ।"

कारण कि लेखक ने उपर्युक्त पक्षपात का परदा चाक करने के उद्देश्य से उपर्युक्त कृति में अधिकतर उन्हीं असाध्य व्याधियों से अभिपीड़ित रोगियों की सफल चिकित्सा पर ही प्रकाश डालने का प्रयास किया है कि जिन रोगियों को ऐलोपैथी के महाप्रभुओं अर्थात् उच्च कोटि के ऐलोपैथिक डाक्टरों के चिकित्सा चातुर्य से हताश होने के अनन्तर ही प्राण रक्षार्थ देशी इलाज के द्वार पर नतमस्तक होना पड़ा है ।

इसके अतिरिक्त सफल चिकित्सा विषयक तुलनात्मक घटनाओं के अन्त में सत्य समनार्थ उन महानुभावों के पूरे पते भी प्रकाशित कर दिये गये हैं कि जिन महानुभावों का तुलनात्मक घटनाओं में रोगी अथवा रोगी के आत्मीय के रूप में उल्लेख आया है । ताकि देशी इलाज के दुश्मनों को यह कहने का अवसर ही न मिले कि तुलनात्मक घटनाएं कपोल कल्पित कहानियां हैं । अस्तु उपर्युक्त उद्देश्य की अभिपूर्ति के लिये "जटिल रोगों की सफल चिकित्सा" में जिन जीर्ण,जटिल, हठीली और असाध्य व्याधियों की सफल चिकित्सा पर प्रकाश डाला गया है, उनमें से कुछ व्याधियों के नाम अधोलिखित हैं ।

● अविच्छिन्न अपस्मार(Status Epilepticus) ● महामयान्वित अपस्मार(Epilepsy with catalepsy) ● अस्थि क्षय (T. B. of Bone) सोरक्षत आन्त्र क्षय ● आक्षेप मूर्च्छा (Eclampia) ●सोन्माद आक्षेपक मूर्च्छा ● सापतन्त्रिक हृत्कम्प ● वृक्कविकार जन्य पूयमेह ● सर्वाङ्ग शोथ ● वृक्काश्मरी ● जननावयवों की अविकसित (Undevelped sexual organs) ● रोगाणु नाशक औषधियों की शिरोमणि श्रीमती स्ट्रैप्टोमायसीन जन्य मूर्च्छा इत्यादि इत्यादि ।

अत्यावश्यक सूचना—जिन महानुभावों को सफल चिकित्सा सम्बन्धी सिद्ध योगों आदि से अवगत होना अभीष्ट हो उन्हें पुस्तक का आर्डर भेजने में विलम्ब नहीं करना चाहिये ताकि पुस्तक समाप्त होने पर यह न कहना पड़े कि हमें समय पर सूचना न मिली । कारण कि पुस्तक सीमित संख्या में ही प्रकाशित हो रही है और शीघ्र ही समाप्त होजाने की सम्भावना है । मूल्य २॥) ।

आर्डर भेजने के पते—

(१) वैद्य वासुदेव जी रघुनाथपुरा, जम्मू (काश्मीर)

(२) प्राणाचार्य भवन प्रायवेट लिमटेड, विजयगढ़ (अलीगढ़)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गर्भपात और उसका कारण एवं चिकित्सा

लेखक- श्री वैद्य कृष्णगोपाल गुप्त B. I. M. S., विजयगढ़ (अलीगढ़)

शिशु जन्म के पश्चात प्रसूता के स्वस्थ रहने पर उसे भाग्यवान कहा जाता है क्योंकि इस समय की वेदना एवं रक्त स्राव उसे मृत्यु सम कष्ट देता है। अनेक बार ऐसे समय पर मृत्यु तक होते देखी गई है। इसी से वह प्रसूता भाग्यवान है जो प्रसवोपरान्त स्वस्थ रहे।

किन्तु गर्भपात इससे भी भयङ्कर है। इसमें गर्भावस्था पूर्ण नहीं हो पाती। ३ माह से ६ माह तक ही गर्भस्थ शिशु बाहर आजाता है। इस समय कटि वेदना, गर्भाशय शूल एवं लोथडों के रूप में होने वाला रक्त स्राव गर्भिणी को मृत्युप्रद होता है। १०० में ५-६ गर्भिणी ही इससे होने वाले रक्त स्राव के पश्चात् जीवित रह पाती होंगी अतः जहां तक हो इससे बचना चाहिए।

कारण

गर्भाशय की निर्बलता, ऊंचे नीचे चलना, अत्यधिक सम्भोग, गर्म पदार्थ का अत्यधिक सेवन, चोट लगना एवं कुछ बीमारियां आदि अनेक कारण हैं। इनमें से कोई भी कारण हो, इनसे गर्भस्थ शिशु एवं गर्भाशय विकृत होजाता है। पोषण ठीक नहीं हो पाता, रक्त की उष्णता गर्भस्थ तरल को भी उष्ण कर देती है और अचानक गर्भपात हो ही जाता है

पूर्व लक्षण

पेड़ू व कटि में शूल, शरीर में निर्बलता एवं भारापन सा प्रतीत होना, मल त्याग ठीक न होना, चक्कर आना तथा किसी काम में मन न लगना।

वर्तमान लक्षण

पेड़ू व कटि में भयङ्कर शूल एवं योनि मार्ग से रक्त स्राव।

बचने के उपाय

पूर्व लक्षण प्रकट होते ही गर्भिणी को अधिक से अधिक आराम देना चाहिए। सुपाच्य व सात्विक भोजन एवं गर्भाशय को बल देने वाली औषधि "गर्भ पोषक" का प्रयोग करें। विरेचन भी उत्तम है।

चिकित्सा

वर्तमान लक्षण प्रकट होते ही गर्भ पोषक की १ मात्रा ताजा जल से तुरन्त देदी जाय फिर प्रति ३ घन्टे पर २४ घन्टे तक १—१ मात्रा देते रहना चाहिए। साथ ही पेडू पर शीतल पानी की पट्टी भी रखना चाहिए। ग्लूकोज युक्त शीतल दूध का सेवन अच्छा रहता है।

गर्भपोषक

यह एक नवीन आयुर्वेदीय आविष्कार है। जो शत-प्रतिशत इस रोग को ठीक कर देता है। यदि गर्भपात का डर हो तब तुरन्त इसकी एक मात्रा रोज ८ दिन तक देनी चाहिए। फिर तीन माह तक माह में ४ मात्रा देते रहने से इसके भय से सर्वदा मुक्त रहा जा सकता है।

इसका पैकिङ्ग

१ शीशी में १० कैपशूल होते हैं। सुन्दर शीशी मय कार्ड बक्स के पैक मिलती है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वप्नदोष एवं वीर्यश्राव

लेखक-श्री वैद्य श्रीगोपाल गुप्त प्राणाचार्य भवन लि० विजयगढ़ (अलीगढ़)

आधुनिक समय में नवयुवक समूह में आपको बिरला ही नवयुवक ऐसा मिलेगा जो उक्त दोषों से रहित हो। आप दूर से ही ऐसे नवयुवक को पहचान सकते हैं। गाल पिचके हुए, चेहरा कांति हीन, शरीर दुर्बल एवं आलस्य से परिपूर्ण और चिन्ता शील हो तो आप समझलें इसे ऊपर कहा गया दोष अवश्य होगया है।

इसका मुख्य कारण है खाद्यान्न का बनावटी होना एवं मन संयम का अभाव। वनस्पति घी, तैलों में मिलावट एवं तीक्ष्ण मसालों युक्त भोजन अधिकतर इस रोग का शिकार बनाकर ही छोड़ता है। आपकी समझ में आसके ऐसा यत्न हम नीचे की पङ्क्तियों में करने का हम यत्न करते हैं।

उदर के मुख्य अङ्ग और उन पर दूषित भोजन का प्रभाव

मुख-

सर्व प्रथम जो वस्तु हम खाते हैं उसे मुख द्वारा ही उदरस्थ किया जाता है। मुंह में दांत, जीभ और लाला-स्राव उस भोजन को सुपाच्य और दोष रहित कर देते हैं। अब यदि हम दूषित भोजन करते हैं तो उसे तीक्ष्ण मसाले दार होने से जल्दी से जल्दी बिना चबाए उदरस्थ करने का यत्न करते हैं। परिणाम स्वरूप भोजन कठिन, लाला-स्राव से रहित एवं दोष सहित उदर में चला जाता है। जहां प्रथम वह आमाशय में पहुंचता है। आमाशय अपने स्राव से उसे तरल रूप में परिवर्तित करता है। किन्तु मुख से ही कठोर रूप में आने पर उसकी क्रिया पूर्ण नहीं हो पाती है और वह तरल होने से रह जाता है। इस प्रकार प्राकृतिक रूप से अधिक महनत करने से आमाशय शनैः शनैः निर्बल होता चला जाता है और फिर वायु कुपित रहने लगती है। इसप्रकार कठोर और वायु युक्त भोजन पक्वाशय, अग्न्याशय आदि से अपना सम्पर्क करता हुआ छोटी आंतों में पहुंचता है। छोटी आंत्र अपक्व भोजन की कठोरता एवं तीक्ष्णता से निर्बल अथवा उष्ण होने लगती है। फलस्वरूप मन्दाग्नि अरुचि मलावरोध अथवा उदर में भारापन प्रगट होता है।

अब कुछ समय उपरान्त यकृत भी अपने कार्य को पूर्ण रूपेण सम्पन्न करने में असमर्थ होता जाता है ! परिणाम स्वरूप रक्त उष्णता एवं रुक्षता से युक्त होने लगता है यही स्वप्न दोष और धातु श्राव का मुख्य कारण होता है।

रक्त की उष्णता और रुक्षता का वीर्य पर प्रभाव-

जिस प्रकार दही को मथ कर घृत निकाला जाता है उसी भांति सम्भोग के समय रक्त मथा जाकर वीर्य प्रगट होगा और वायु अपने चञ्चल गुण से उसे बाहर निकाल देगी। यही क्रिया रक्त में उदर विकृति से उष्णता उत्पन्न होने से होती है। जो कार्य सम्भोग से होता है वही स्वयं होने लगेगा। फलस्वरूप रात्रि में सोते समय या मूत्र विसर्जन के साथ वीर्य च्युत होगा ही।

अब आप सोचकर देखें तो इसका मुख्य कारण खाद्यान्न का दूषित होना और उसके द्वारा उदर का विकृत होना ही इस रोग का मुख्य कारण माना जायगा अतः इसी अनुसार इसकी चिकित्सा का क्रम बनाना चाहिए। औषधि वही उपयुक्त रहेगी जो उदर के अङ्गों को बल देकर उनकी क्रियाओं को समुचित करने में सहायक हो तथा रक्त की उष्णता को कम करके स्तम्भन उत्पन्न करें।

औषधि और उनका प्रभाव--

स्वर्गीय पिता जी श्री वैद्य बांकेलाल जी गुप्त ने अपने ५० वर्षीय अनुभव यत्न के आधार पर इसके लिए स्वप्नदोषान्तक चूर्ण व स्वप्नप्रमेह हर वटी का निर्माण किया जो अब तक अनेकों को लाभ पहुंचा चुकी और पहुंचाती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहेगी ।

स्वप्न दोषान्तक चूर्ण—

इसमें असगंध, ताल मखाना, बबूल छाल, बंशलोचन तालीस पत्र, चन्दन, कालीमिर्च, बिदारीकन्द, मिश्री आदि वस्तुओं का योग है । कुछ रक्त की गर्मी का शमन करती है तो ताल मखाना यकृत को ठीक करके उदर को ठीक करता है साथ ही मिश्री लाला-स्राव आदि को उन्नत करके पाचन क्रिया को बल देती है । काली मिर्च आदि भी उदर विकृति का शोधन करती है एवं वायु का शमन इस प्रकार यह जड़ पर प्रभाव करके स्वप्न दोष को रोक देता है ।

स्वप्न प्रमेह हर वटी—

इसे अनेकों औषधियों के साथ कज्जली का मिश्रण रहता है कज्जली रस पर्पटी का प्रमुख अङ्ग है और रसपर्पटी उदर रोग की महान दिव्यौषधि है । इस प्रकार यह उदर रोगों का नाश करने के साथ-साथ स्वप्न दोष को ठीक करती है ।

इस समुचित उत्तमचिकित्सा क्रम जो हजारों को जीवन दे चुका और देगा यदि आप भी रोगी पर प्रयोग करें तो शीघ्र लाभ हो ।

क्लीवत्व रोग में अति उपयोगी उपकरण

चिकित्सकों के पास सभी प्रकार के रोगी आते हैं पर आज कल क्लीवत्व रोग के रोगियों की भरमार है । इस रोग में यह यन्त्र अत्यन्त सहायक है । इसकी सहायता से आप इन्द्री की शिथिलता शीघ्र नष्ट कर सकते हैं क्योंकि इससे त्वचा में रक्त का दबाव बढ़ जाता है । इसका १०-२० मिनट प्रति दिन तिला के साथ प्रयोग कराने से अच्छा असर उत्पन्न होता है । प्रयोग विधि साथ में भेजी जायगी । मूल्य—१७) मात्र

बज्रदण्ड तिला

साथ में इसका प्रयोग करने से अतीव लाभ होता है । यन्त्र के साथ १ शीशी फ्री ।

टिकिया मशीन

वैद्यों एवं छोटे औषधि निर्माताओं के लिये अत्यन्त सरल एवं सुगम मशीन है । इस से आदमी १ घण्टे में १००-२०० टिकियां तक बना सकता है । चलने में उत्तम एवं सरल है । एक बार प्रयोग करके देखें । मूल्य—३ डाई सहित १०)

बादाम रोगन मशीन

बादाम रोगन व बनौषधियों का रस आदि निकालने के लिये यह छोटी सी मशीन बहुत उपयोगी है । इसको पीतल से बनाया गया है । दस सेर वजन की सर्वोत्तम कलईदार मशीन का मूल्य—४०) मात्र ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अरुचि व मलावरोध पर 'पाचक'

लेखक–श्री पं० रमाशंकर जी शर्मा वैद्यराज

अनियमित भोजन कुछ समय तक लगातार गरिष्ठ पदार्थों का सेवन करते रहना, देशाटन करते समय विभिन्न स्थानों पर अनेक भांति के पदार्थों का सेवन, मानसिक एवं शारीरिक परिश्रम, शोक तथा क्रोध आदि से वायु कुपित होकर उदर में रोग उत्पन्न कर देती है। जिससे कुछ समय पश्चात् शरीर में आलस्य उदर में गड़गड़ाहट, मुंह का स्वाद ठीक न होना आदि उपद्रव पैदा होकर भूक नष्ट होजाती जिससे शरीर दिन प्रतिदिन निर्बल होता जाता है।

चिकित्सा

इसमें वह औषधि उत्तम है जो उदर के अङ्गों को बल देने के साथ साथ वायु को शमन करे। अतः इसके लिए स्वादिष्ट "पाचक" टिकियायें तैयार हैं। इनमें भुना ज़ीरा तीन प्रकार के नमक भुनी हींग अम्लवेत, अनारदाना, काली मिर्च एवं नीबू के सत्व का प्रयोग किया गया है। यह सब वस्तुयें प्रतिदिन उदर रोग पर औषधियों में प्रयुक्त होने वाली हैं किन्तु सबका एक ऐसा मिश्रण हमने तयार किया है जो ऊपर कहे गये समस्त उपद्रवों को नष्ट कर मन को प्रसन्नता देता है।

५० टिकिया व १ पौंड के सुन्दर पैक में प्राप्त

❀ शारीरिक चार्ट सैट ❀

किसी भी चिकित्सक के लिए अपने रोगियों पर चिकित्सा के अतिरिक्त वाह्य उपकरणों का प्रभाव भी डालना आवश्यक है। इसी दृष्टि को लेकर हमने पांच प्रकार के आकर्षक बहुरंगे चित्र तैयार कराए हैं। यह चित्र चिकित्सालय की एक प्रमुख शोभा है।

इसके टांगने से वाह्य आकर्षण ही नहीं पैदा होता वरन् रोगी स्वयं कुछ जानकारी प्राप्त कर सकता है।

१–मानव शरीर की अन्तर्वाह्य रचना—इसमें शरीर का पूरा अस्थिपिंजर दिया है। मूल्य ४॥)

२–ज्ञानेन्द्रिय दर्शक चित्र—इसमें सभी ज्ञानेन्द्रियों का प्रदर्शन विस्तृत रूप से किया है। मूल्य ४॥)

३–शरीर के अवयव और रक्त वाहक नाड़ियां और ज्ञान तन्तु—इसमें रक्त वाहक नाड़ियां और ज्ञान तन्तु के साथ मुख्य भागों का प्रदर्शन है। मूल्य ३॥)

४–शरीर की धमनियां और मांस पेशियां—इसमें धमनी एवं मांस पेशियों का प्रदर्शन है। मूल्य ३॥)

५–प्राथमिक उपचार (फर्स्टएड)—विभिन्न भागों में कैसे पट्टी बांधी जानी चाहिए आदि तात्कालिक सहायता का रूप दिखाया है। मूल्य ४)

प्राणाचार्य भवन प्रायवेट लिमिटेड, विजयगढ़ (अलीगढ़)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नपुंसकता और उसके कारण व इसकी सफल चिकित्सा

लेखक—कविराज पं० हरिवल्लभ मन्नूलाल सिलाकारी आयुर्वेदाचार्य।

सदाचार और ब्रह्मचर्य की महिमा तथा इसके पालन करने वाले वीरों के चरित्रों का वर्णन भारतीय इतिहास में विस्तृत रीति से मिलता है जो विश्व विख्यात है।

"राजः कालस्य कारणम्" की युक्ति के अनुसार पाश्चात्य संस्कृत का प्रभाव भोले भारतीय युवकों के कोमल हृदयों पर शीघ्र पड़ गया। प्राचीन गुरुकुलों द्वारा शिक्षा प्रणाली का आदर्श क्रम नष्ट होगया और आधुनिक शिक्षा प्रणाली बालकों तथा युवकों को व्यभिचारी बनाने में सहायक जैसी हो गई है। शहरों में बने स्कूलों-कालेजों का विरला ही विद्यार्थी होगा जो तैल, मिर्च, खटाई युक्त चटपटी चाट, प्याज की भजिया, दही बड़े न खाता हो, चाय, काफी, सिगार, सिगरेट, बीड़ी न पीता हो, सिनेमा में विलास पूर्ण गन्दे चित्र और निर्लज्ज वेश्याओं के नग्न नृत्य एवं अश्लील गायन न देखे सुने हों। शृङ्गार रस की कवितायें, कहानियां और उपन्यासों को न पढ़ता हो। यह सम्पूर्ण साधन ही युवकों के वीर्य को दूषित करने और व्यभिचारी बनाने वाले हैं। इस दूषित वातावरण में वह ब्रह्मचर्य का पालन कैसे कर सकते हैं जब कि अल्पायु से ही वीर्य में उत्तेजना और उष्णता पहुंचाई जाती है। ऐसे वह अज्ञानी युवक, काम पीड़ित, मानसिक प्रेरणा के कारण वीर्य को बाहर निकालने के साधन सोचने लगते हैं। परिणाम स्वरूप कुटेब के वशीभूत होकर हस्तमैथुन गुदमैथुन आदि अप्राकृतिक रीति से जवानी के जौहर को मट्टी में मिलाने वाली शरीरस्थ शक्ति को नाश कर सांसारिक सुख भोगने के सर्वथा अयोग्य ही नहीं अपितु यमराज के अतिथि तक बन जाने हैं।

भगवान् शंकर का अमिट और अनुकरणीय अभिमत है—

"मरणं बिन्दु पातेन जीवनं बिन्दु धारणात्।"

इस निन्दनीय कुटेब को संस्कृत में हस्तमैथुन, मुष्टि-मैथुन, हस्तक्रिया, आत्ममैथुन, हिन्दी में हतलस, फारसी में जलक या मुश्तजनी, अंग्रेजी में मास्चरबेशन, सेल्फ-एब्यूज, सेल्फ पोल्यूशन, हैल्थडिस्ट्राइङ्ग और डैथडीलिंग प्रेक्टिस कहते हैं।

हस्तमैथुन करने से लिंगेन्द्रिय की सम्पूर्ण नसें ढीली पड़ जाती हैं। फलतः स्नायुओं के दुर्बल होने से इन्द्री टेढ़ी, लघु तथा पतली पड़ जाती है। मुख (सुपारी) की ओर मोटी और जड़ की ओर पतली हो जाती है। इन्द्री पर एक नस होती है वह उभर आती है और इन्द्री के मुख के पास दांई ओर कटिया की तरह तिरछी हो जाती है, अण्डकोष लटकने लगते हैं। इन्द्री में सुरसुराहट प्रतीत होती है, उत्तेजना कम, यदि कुछ उठाव होता भी है तो प्रवृत्त होते ही शीघ्र शिथिल हो जाती है। यह नितान्त नपुंसकता का लक्षण है। ऐसे अनेकों युवकों की चिकित्सा करने का अवसर लेखक को स्वयं प्राप्त हुआ है। स्नायु-दुर्बलता के कारण बारम्बार स्वप्नदोष होने लगता है। सामान्य काम संकल्प से अथवा शृंगारिक वर्णन, सिनेमा के दृश्य मात्र से ही ऐसे पतित-पुरुषों का विनाश होने लगता है। वीर्य पानी की तरह हतला पड़ जाता है। जिससे स्वप्न दोष के बाद वस्त्र पर वीर्य का चिन्ह तक नहीं दिखाई देता। इन्द्री में वीर्य धारण करने की शक्ति नहीं रह जाती। ऐसे पुरुष स्त्री-समागम के सर्वथा अयोग्य बनकर नपुंसक हो जाते हैं। शरीर के भीतर मनोवहा नामक एक नाड़ी है। इस नाड़ी के साथ शरीर की समस्त नाड़ियों का सम्बन्ध है? काम-वासना जागृत होते ही ये सम्पूर्ण नाड़ियां कांप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उठती हैं और शरीर के शिर से पैर तक सर्व यन्त्र हिल जाते हैं, पुनः रक्त एवं सम्पूर्ण शरीर का मन्थन होकर उससे वीर्य पृथक् हो नष्ट होने लगता है जिससे-धातुदौर्बल्य, प्रमेह स्वप्नदोष (नाइटफाल), नपुंसकता, मधुमेह (डायबिटीज) जैसे कठिन रोग शरीर में अपना साम्राज्य स्थापित कर लेते हैं। शरीरस्थ रक्त में श्वेताणु तथा रक्ताणु होते हैं। श्वेताणुओं में रोगाणुओं से युद्ध करने की शक्ति होती है। वीर्य जितना पुष्ट और अधिक होता है उतने ही ये श्वेताणु महान् बलवान होते हैं तथा विष को विनाश करने की क्षमता रखते हैं। किन्तु जिस प्रकार वीर्य क्षीण होता है उसी प्रकार ये कीटाणु भी निर्बल होकर हैजा, प्लेग, मलेरिया, टाइफाइड के रोगाणुओं द्वारा दब जाते हैं और इससे मनुष्य मृत्यु की गोद में सदा के लिए सो जाता है।

हस्तमैथुन द्वारा जो वीर्य विनाश किया जाता है उससे शरीर तथा मस्तिष्क के सम्पूर्ण स्नायु पर अधिक आघात पहुंचता है। जिससे पक्षाघात, ग्रन्थिवात, सन्धिवात, अपस्मार और उन्माद आदि भीषण रोगों की उत्पत्ति होती है।

हस्तमैथुन में मस्तिष्क पर तो बिजली जैसा धक्का लगता है। शिर शीघ्र हलका और खाली पड़ जाता है, स्मृति, सुबुद्धि, प्रतिभा सभी चौपट होजाते हैं और अन्त में ऐसा नष्ट वीर्य वाला पुरुष पागल के समान हो जाता है।

पागलखनों में पञ्चानवे प्रतिशत पुरुष हस्तमैथुन,लौंडेबाजी जैसे अप्राकृतिक व्यभिचार के कारण पागल बने पाये जाते हैं। पाश्चात्य विद्वान डाक्टर वर्कमान का मत है— सैकड़ों पागलखानों की जांच करने पर मुझे यही ज्ञात हुआ कि जिनको हम नीति भ्रष्ट अशिक्षित व मूर्ख समझते हैं उनमें नहीं; किन्तु धर्म से व स्वच्छता से रहने वाले शिक्षित लोगों में ही यह हस्तमैथुन का रोग विशेष रूप से फैला हुआ है। देहात के खेतों में शारीरिक परिश्रम करने वाले किसानों व मजदूर जैसे अशिक्षितों में नहीं, अपितु शहरों के पुस्तक कीट बने हुए नव-युवकों और १४ से १७ वर्ष की अवस्था वाले बालकों में ही यह घृणित व्याधि रूप व्यसन विशेषतः फैला हुआ है माता पिता इस अन्तरंग कारण को न जानकर वे समझते हैं कि अध्ययन जन्य श्रम की अधिकता से बच्चों की ऐसी दुर्दशा हुई है? मस्तिष्क के कमजोर होते ही नेत्रों की ज्योति, कान तथा दांतों की शक्ति क्षीण हो जाती है। बाल असमय में ही झड़ने और सफेद होने लगते हैं। हस्तमैथुन करने से पांचों कर्मेन्द्रियां, पांचों ज्ञानेन्द्रियां अपना यथोचित कार्य करने में असमर्थ हो जाती है। सम्पूर्ण शरीर पीला, ढीला, दुर्बल तथा रोगी बन जाता है। मुख कान्तिहीन, पीला व फीका पड़ जाता है। इन्द्रिय निर्बलता एवं नपुंसकता के कारण वे गार्हस्थ सुख नहीं भोग सकते, उनकी सन्तानोत्पादक शक्ति का नाश हो जाता है अतएव पत्नियां वन्ध्या बनी रहती हैं। यदि सन्तान हुई तो कन्या ही कन्या होती हैं। ऐसे दुर्व्यसनी व्यक्ति सन्तति सुख से सदा को हाथ धो बैठते हैं। उनकी स्त्रियों को कभी सन्तोष नहीं होता, फलस्वरूप वे व्यभिचारिणी हो जाती हैं अथवा आत्मघात कर लेती है।

हस्तमैथुन के दुर्व्यसन पर पाश्चात्य डाक्टरों ने पर्याप्त प्रकाश डाला है जिनका अधोलिखित अभिमत अवलोकनीय है।

डाक्टर फुलर—

युवक की तमाम शक्तियों को चूस कर जीवित ही मृत बनाने वाला यदि कोई दुर्व्यसन है तो वह हस्तमैथुन है और यह व्यसन सम्पूर्ण संसार में फैला हुआ हैं।

डाक्टर एक्टन -

हस्तमैथुन करने वाले युवक का रंग पीला और शरीर दुबला हो जाता है, आंखें अन्दर धंस जाती हैं, पुतलियां फैल जाती हैं, अत्यन्त कायरता आजाती है। ऐसा पुरुष एकान्त प्रिय और लज्जावान हो जाता है; कभी किसी के साथ आंखें नहीं मिला सकता। यदि किसी बालक की स्मरण शक्ति अधिक अच्छी हो और उसे विस्मृति दोष हो जाय तो जान लो कि अब वह हस्तमैथुन की बुरी आदत में फंस गया है।

डाक्टर हाफमैन--

हस्तमैथुन करने वाले का दिमाग बहुत ही कमजोर हो जाता है, उसे चक्कर आने लगते हैं। स्मरण शक्ति नष्ट हो जाती है, शिर और कमर में पीड़ा होती है, बड़े बुरे स्वप्न आते हैं, आत्मिक, शारीरिक और मानसिक निर्बलता आकर दबा लेती है। बहुतों को हृदय और आमाशय की पीड़ा, बहुतों को गठिया, सुजाक तथा अर्श भी हो जाता है। वीर्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिना इच्छा के बहने लगता है, इन्द्रिय निष्क्रिय हो जाती है। शीघ्रपतन एवं स्वप्नदोष होकर अन्त में पूर्णतया नपुंसक बन जाता है।

डाक्टर हिल—

हस्तमैथुन वह जबरदस्त कुल्हाड़ा है जिसे अज्ञानी युवक अपने ही हाथों अपने पैरों पर मारता है और सचेत तब होता है जब कि हृदय, मस्तिष्क, आमाशय और मूत्राशय निर्बल होकर स्वप्नदोष, शीघ्रपतन, प्रमेह इत्यादि दुष्ट रोग आ घेरते हैं और जननेन्द्रिय छोटी, टेढ़ी तथा निर्बल होकर गृहस्थ धर्म के पालन करने में सर्वथा (स्त्री सहवास में) अयोग्य हो जाती है।

सफल चिकित्सा

इस रोग पर स्वर्गीय वैद्य बांकेलाल जी गुप्त द्वारा आविष्कृत औषधियों का हमने पूर्णतया अनुभव किया है। एक नहीं अनेक रोगी इससे ठीक हुए हैं अतः हम उन्हीं दिव्यौषधियों का यहां वर्णन करते हैं।

प्राणाचार्य भवन से प्राप्त वैद्य जी द्वारा आविष्कृत क्लीवत्व हर मंजूषा

इसमें चार औषधियां हैं—

१—चन्द्रोदय गुटिका

यह स्वर्ण, माणिक्य, पुखराज, चन्दोदय आदि के संयोग से बनाया गया है जो वीर्य विकारों के लिये अति प्रभावशाली एवं लाभप्रद है। प्रमेह, स्वप्नप्रमेह, मधुमेह, बहुमूत्र नपुंसकता आदि रोगों में रामबाण है। निर्बल स्नायुओं को सबल बनाती है, भोजन अच्छी प्रकार पचा कर रक्त और वीर्य को बढ़ाती है।

२-फलासव

पाचक विकारों को नष्ट कर बल वीर्य को बढ़ाकर स्फूर्ति प्रदान करता है।

३—क्लीवत्व हर तिला

गुप्तेन्द्रियों की निर्बल स्नायु सबल हो जाती हैं। हस्तमैथुन, बहुमैथुन, अप्राकृतिक मैथुन से उत्पन्न सब विकार नष्ट हो जाते हैं।

४—क्लीवत्व हर पोटली

गुप्तेन्द्रियों के विकारों के लिए उत्तम है।

यह औषधि निश्चय ही क्लीवत्व रोग से पीड़ित युवकों के लिए अमृत सम हैं।

इसके अतिरिक्त हमने प्राणाचार्य मासिक के दिये गये दो प्रयोगों का भी निर्माण करके कई बार प्रयोग किया जो ६०% सफल रहा। उसे भी आप लोगों के ज्ञानार्थ देरहे हैं।

बज्रदण्ड तिला—

कुचला, मालकांगनी, दालचीनी, जावित्री, सफेद घुंघची, केंचुये सूखे, सांढे का मांस या चर्बी, कस्तूरी, असगन्ध, चौत, लोंग, जायफल, तेलिया बिष, बीरबहूटी सूखी, शेर की चर्बी, केशर असली, कान का मैल सब २॥-२॥ तोला लेकर रखलें। इसमें सूखी दवाओं को कूट पीस कर कपड़छन करलें फिर बीरबहूटी आदि सूखे जीवों को मिलाकर भेड़ का दूध डेढ़ पाव डालकर धीरे-धीरे २४ घण्टे घुटाई करके पताल यन्त्र से तैल निकाल कर रखलें। यह कैसा ही नपुंसक हो उसे ठीक कर देती है। इसे बनाने में बड़ी परेशानी रही अब तो प्राणाचार्य भवन से प्राप्त होजाती है वह भी लागत मूल्य पर।

फौलाद सिंगरफ भस्म—

इसका बनाना हरएक के लिए असम्भव है अतः हमने भी नहीं बनाया और प्राणाचार्य भवन से मंगाकर परीक्षा की तो आश्चर्यप्रद पाया।

पाठकों को हमारे लेख से तनिक भी फायदा हुआ तो यह मेरा प्रयास सफल होगा।

नारी शारीरिक चित्रावली

इस चित्रावली में पांच चित्र हैं। प्रत्येक चित्र कई भागों में विभक्त है। इन चित्रों में शरीर की सम्पूर्ण रचना बड़ी स्पष्ट करके बताई है। प्रथम चित्र में कङ्काल एवं उदर और वक्ष गुहा के आन्तरिक अवयवों की रचना स्पष्ट की है। प्रत्येक अवयव प्राकृतिक रङ्गों में एवं नाप में बनाकर इस प्रकार चिपकाए हैं कि उनको उठाकर देखने से पता चलता है कि शरीर हमारे सामने खुला है और प्रत्येक अवयव को उठाकर देखा जारहा है। शेष में रक्त परिभ्रमण, स्नायु रचना, मांस पेशियां आदि की रचना बनाई है। सभी अवयवों का नाम हिन्दी अंग्रेजी में है। मूल्य १२)

प्राणाचार्य भवन प्रायवेट लिमिटेड, विजयगढ़ (अलीगढ़)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

उत्तमोत्तम कूपीपक्क रसायन

पूर्ण चन्द्रोदय (प्राणाचार्य)—अष्ट संस्कारित पारद एवं स्वर्ण युक्त षोडश (१६) गुण बलि जारित अन्र्तधूम विपाचित, बल, वीर्य, ओज एवं आयु वर्धक सर्वोत्तम रसायन। १तोला ६०) ३ माशा १५) १ माशा ५)

सिद्ध मकरध्वज नं० १ (भैषज्य)—संस्कारित पारद एवं स्वर्ण घटित षटगुण-बलि जारित अन्र्तधूम विपाचित। १ तोला ४०) १ माशा ३।=)

सिद्ध मकरध्वज नं० २ (भैषज्य) संस्कारित पारद एवं स्वर्णघटित, षटगुण बलि जारित बहिर्धूम विपाचित १ तोला २५) ३ माशा ६।) १ माश २≡)

सिद्ध मकरध्वज नं० ३ (भैषज्य) हिंगुलोत्थ पारद एवं स्वर्ण घटित द्विगुण बलि जारित अन्तर्धूम विपाचित १ तोला १०) ३ माशा २।।-) १ माशा ।।।≡)

रस सिन्दूर नं० १ (र० सा०)—हिंगुलोत्थ पारद द्वारा निर्मित षटगुण बलि जारित अन्र्तधूम विपाचित १ तोला ६) ३ माशा १।।-) १ माशा ।।-)

रस सिंदूर नं० २ (रसेन्द्र)—द्विगुण बल जारित १ तोला ४) ३माशा १-)

मल्ल चन्द्रोदय (रसायन)—संस्कारित पारद एवं स्वर्णयुक्त षटगुण बलि जारित १ तोला २०) ३ माशा ५) १ माशा १।।)

मल्ल सिंदूर (रसायन) १ तोला ५) ३ माशा १।-) १ माशा ।।)

ताल सिंदूर (रसायन) १ तोला ५) ३ माशा १।-) १ माशा ।।)

ताम्र सिंदूर (रसायन) १ तोला ५) ३ माशा १।-) १ माशा ।।)

शिला सिंदूर (रसायन) १ तोला ५) ३ माशा १।-) १ माशा ।।)

स्वर्ण वंग (रस सागर) संस्कारित द्रव्यों से निर्मित मूल्य – १ तोला ४), ३ माशा १-)

रस कर्पूर (कर्पूर रस भांडेश्वर) उपदंश रोगे– १ तोला ८) ३ माशा २), १ माशा ।।।)

पञ्चसूत रस (रस तन्त्रसार) १ तोला ६) ३ माशा १।।-) १ माशा ।।-)

रस माणिक्य कूपीपक्क (भैषज्य) १ तोला ५।।) ३ माशा १।≡) १ माशा ।।)

रस माणिक्य (अभ्रक पक्व) १ तोला २।।) ३ माशा ।।≡)

समीर पन्नग रस कूपीपक्क स्वर्ण घटित (रसतन्त्रसार) १ तोला २४) ३ माशा ६) १ माशा २-)

समीर पन्नग रस कूपीपक्क (रसतन्त्रसार) १ तोला ८) ३ माशा २-) १ माशा ।।।)

सर्वोत्तम भस्में

(धातु उपधातुओं को उत्तमोत्तम विधियों से शोधन कर शास्त्रोक्त-विधि से निर्मित)

माणिक्य भस्म नं० १ (समुच्चय) १ तोला ४०) ३ माशा १०) १ माशा ३।=)

माणिक्य भस्म नं० २ (उत्तम खड़ से निर्मित) ५ तोला ७०) १ तोला १५) ३ माशा ३।।।-) १ माशा १।-)

	५ तोला	१ तोला	३ माशा	१ माशा
गोमेद भस्म नं० १ (समुच्चय)		३१)	७।।।-)	२।=)
गोमेद भस्म नं० २ (उत्तम खड़ से)	७०)	१५)	३।।।-)	१।-)
पन्ना भस्म नं० १ (समुच्चय)		४०)	१०)	३।=)
पन्ना भस्म नं० २ (उत्तम खड़ से)	८५)	१८)	४।।)	१।।-)
वैडूर्य मणि भस्म (प्रकाश)		४५)	११।)	३।।।)
नीलम भस्म नं० १ (समुच्चय)		३५)	८।।।)	२।।।≡)
नीलम भस्म नं० २ (खड़ से)	४५)	१०)	२।।)	।।।=)
पुष्पराग भस्म नं० १ (समुच्चय)		३५)	८।।।)	२।।।≡)
पुष्पराग भस्म नं० २		२०)	५)	१।।≡)
जहरमोहराखताई भस्म (रस तंत्र)		६।।)	२)	।।-)
जहरमोहरा भस्म (प्राणाचार्य)	७।)	१।।)	।≡)	
सङ्गेयसब भस्म (रस तंत्र)	२८)	६)	१।।-)	
सङ्गजराहत भस्म (रस तंत्र)	४।।।)	१)	।-)	
सङ्ग यहूद (हजरूलयहूद) भस्म	४।।।)	१)	।-)	
कुक्कुटाण्डत्वक् भस्म (रस तंत्र)	७।)	१।।)	।≡)	

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रस माणिक्य कूपीपक्व (भैषज्य) १ तोला ५।।) ३ माशा १।≡) १ माशा ।।) कुक्कुटाण्डत्वक् भस्म (रस तंत्र) ७।) १।।) ।≡)

	५ तोला	१ तोला	३ माशा	१ माशा
स्फटिक मणि भस्म (प्रकाश)		७)	१।।।–)	
वैक्रान्त भस्म नं० १ (समुच्चय)		२०)	५)	१।।≡)
वैक्रान्त भस्म नं० २		७)	१।।।–)	
मुक्ताभस्म नं०१(बसरा मुक्ता) (सुन्दर)		८०)	२०)	६।।≡)
मुक्ता भस्म नं० २ (बेडौल मुक्ता)		२०)	५)	१।।≡)
प्रवाल भस्म (मूंगा कज्जली द्वारा)		५)	१।–)	
त्रिवंग भस्म नं० १ (रसायन) (पारद, गन्धक, हरताल द्वारा जारित)	१६।।।)	४)	१–)	
राजावर्त भस्म (समुच्चय)		८)	२)	
अभ्रक भस्म सहस्र पुटी (प्रकाश)		३६)	६)	३)
अभ्रक भस्म तीन सौ पुटी (निघंटु)	३४)	७)	१।।।–)	
अभ्रक भस्म शतपुटी	१८)	४)	१–)	
अभ्रक भस्म पच्चीस पुटी (सुन्दर)	६)	१।)	।=)	
तबकी हरताल भस्म (प्रकाश एवं प्राणाचार्य)		८)	२)	
ताम्र भस्म नं० १ (प्राणाचार्य)	१४)	३)	।।।–)	
ताम्र भस्म नं० २ (प्राणाचार्य)	६।।)	२)	।।–)	
नाग भस्म नं० १ साठ पुटी (प्रकाश)	१२)	२।।)	।।≡)	
नाग भस्म नं० २ पच्चीस पुटी	६।।)	२)	।।–)	
वंग भस्म नं० १ (प्रकाश)	६।।)	२)	।।–)	
मल्ल भस्म (रस तंत्र)	२६)	६)	१।।–)	
यशद भस्म नं० १ (प्रकाश)	६।।)	२)	।।–)	
यशद भस्म नं० २	७।)	१।।)	।≡)	
रौप्य भस्म नं० १ (प्रकाश)		८)	२)	
रौप्य भस्म नं० २	२८)	६)	१।।–)	
लौह भस्म नं० १ तीन सौ पुटी	२८)	६)	१।।–)	
लौह भस्म नं० २ हिंगुल योग	१६।।)	४)	१–)	
लौह भस्म नं० ३ साधारण	६)	१।)	।=)	
स्वर्ण भस्म (प्रकाश) कज्जली द्वारा जारित			३७)नैट	१२।।)नैट

	५ तोला	१ तोला	३ माशा	१ माशा
स्वर्ण माक्षिक भस्म (रसेन्द्र)	६)	१।)	।=)	
शङ्करलोह भस्म (भावप्रकाश)	१४।।)	३)	।।।–)	
कान्त लोह भस्म	६)	१।)	।=)	
खर्पर भस्म (स्पेशल)	१४।।।)	३)	।।–)	
शुभ्रा भस्म (रस तंत्र)	२।)	।।)	=)।।	

	१० तोला	५ तोला	१ तोला	३ माशा
त्रिवङ्ग भस्म नं० २ (बनौषधिद्वारा जारित)		१२।)	२।।)	।।≡)
अकीक भस्म (रस तंत्र)	१४)	७।)	१।।)	।≡)
प्रवाल भस्म (मूंगा की अग्निपुटी)	१४)	७।)	१।।)	।≡)
प्रवाल भस्म (मूंगा की चन्द्रपुटी)	१४)	७।)	१।।)	।≡)
कपर्दिका भस्म (प्रकाश)	३।)	१।।।)	।=)	=)।।
गौदंती हरताल भस्म (सुन्दर)	३।)	१।।।)	।=)	=)।।
वंग भस्म नं० २	६)	४।।।)	१)	।–)
मृग श्रंग भस्म (निघन्टु)	५।।।)	३)	।।=)	≡)
मांडूर भस्म नं० १ (शार्ङ्ग०)	४।)	२।)	।।)	=)।।
मांडूर भस्म नं० २	३।)	१।।।)	।=)	=)
शंख भस्म (भैषज्य)	४।)	२।)	।।)	=)।।
मुक्ताशुक्ति भस्म (प्रकाश)	५।।।)	३)	।।=)	≡)
खर्पर भस्म	६)	४।।।)	१)	।–)

उत्तमोत्तम पिष्टी

(श्रेष्ठ गुलाब जल में मर्दित)

	५ तोला	१ तोला	३ माशा	१ माशा
अकीक पिष्टी	६।।)	२)	।।–)	
जहर मोहरा पिष्टी	११)	२।)	।।=)	
तृणकांतमणि (कहरवा) पिष्टी		७)	१।।।–)	
मुक्ता पिष्टी		८०)	२०)	६।।≡)
मुक्ताशुक्ति पिष्टी	४=)	।।।≡)	।)	
प्रवाल पिष्टी (मूंगा)	७।)	१।।)	।≡)	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

सर्वोत्तम पर्पटी–(संस्कारित पारद, शोधित धातुओं से निर्मित)

	५ तोला	१ तोला	३ माशा	१ माशा
विजय पर्पटी नं. १ (स्वर्ण, मुक्ता व हीरक युक्त)		७५)	१८॥।)	६।)
विजय पर्पटी नं. २ (भैषज्य) (स्वर्ण, मुक्ता, वैक्रांत युक्त)		२५)	६)	२)
स्वर्ण पर्पटी नं. १ (निघन्टु) (स्वर्ण भस्म एवं संस्कारित पारद युक्त)		३०)	७॥)	२॥)
स्वर्ण पर्पटी नं. २ (स्वर्ण वर्क ऐवं हिंगुलोत्थ पारद युक्त)		२०)	५)	१॥≡)
ताम्र पर्पटी नं. १ (योग०)	३४)	७)	१।।।–)	॥=)
ताम्र पर्पटी नं. २ (योग०) (हिंगुलोत्थ पारद निर्मित)	१४॥)	३)	।।।–)	।–)
पञ्चामृत पर्पटी नं. १ (रसेन्द्र)	३४)	७)	१।।।–)	॥=)
पञ्चामृत पर्पटी नं. २ (रसेन्द्र)	१७)	३॥)	॥≡)	।=)
रस पर्पटी नं. १ (चक्र०)	२६॥)	६)	१।–)	॥–)
रस पर्पटी नं. २ (चक्र०)	६॥)	२)	॥–)	।)
बोल पर्पटी नं. १ (सुन्दर)	२४॥)	५)	१।–)	॥)
बोल पर्पटी नं. २ (सुन्दर)	६)	१।)	।=)	
लौह पर्पटी नं. १ (रत्न) (तीन सौ पुटी लौह भस्म से निर्मित)	२४॥)	५)	१।–)	॥)
लौह पर्पटी नं. २ (रत्न)	११)	२।)	॥=)	
श्वेत (शीतल) पर्पटी (रसतन्त्र)	१।।।)	।=)		

(श्रेष्ठ रस–रसायन–गुटिका)

स्वर्ण, मुक्ता, कस्तूरी आदि बहु मूल्य द्रव्यों द्वारा स्वयं की देख-रेख व हाथों द्वारा निर्मित

	१ तोला	३ माशा	१ माशा
बृहत् कस्तूरी भैरव रस (रसेन्द्र)	१८)	४॥)	१।–)
कस्तूरी भैरव रस (भैषज्य)	१६)	४)	१।=)
कस्तूरी भूषण रस (भैषज्य)	१८)	४॥)	१।–)
बृ. कामचूड़ामणि रस (भैषज्य)	१५)	३।।।–)	१।–)
कुमारकल्याण रस (भैषज्य)	४०)	१०)	३।=)
कृष्णचतुर्मुख रस (संग्रह)	१५)	३।।–)	१।–)
चतुर्मुखचिंतामणि रस (भैषज्य)	२५)	६।)	२=)
जयमंगल रस (स्वर्ण) (भैषज्य)	३०)	७।)	२॥–)
जयमंगल रस (भैषज्य)	२०)	५)	१।।।)
प्रवालपञ्चामृत रस (योग)	१४)	३॥–)	१।)
वृ० पूर्णचन्द रस (भैषज्य)	१०)	२॥–)	।।।=)
बसंतकुसुमाकर रस (रत्न)	२७)	६।।।)	२।–)
वृ० बातचिंतामणि रस (भैषज्य)	३०)	७।।)	२॥–)
विशूचिकाविध्वंस रस (भाव)	१५)	३।।।–)	१।–)
पुटपक्व विषमज्वरांतक लोह (रसेन्द्र)	१६)	४)	१।=)
ब्राह्मी वटी (स्वर्ण युक्त) (प्राणाचार्य)	२०)	५)	१।।।)
मकरध्वजवटी पञ्चरत्नयुक्त (प्राणाचार्य)	६१ गोली २५)		६१ गोली १५)
मकरध्वज वटी (प्राणाचार्य)	४२ गोली २॥)		२१ गोली १।=)
मन्मथाभ्र रस (भैषज्य)	१०)	२॥–)	।।।=)
महाराज वंग भस्म (प्राणाचार्य)	६)	१॥–)	॥=)
महाराज नृपति बल्लभ रस (भैषज्य)	१०)	२॥–)	।।।=)
बृ. योगेन्द्र रस स्वर्ण युक्त (भैषज्य)	४०)	१०)	३।=)
रस राज रस स्वर्ण युक्त (भैषज्य)	२५)	६।)	२=)
राज मृगांक रस स्वर्ण युक्त (भैषज्य)	२५)	६।)	२=)
महा लक्ष्मी विलास रस (भैषज्य)	६)	२।–)	।।।–)
श्वास चिंतामणिरस स्वर्ण मिश्रित (भैषज्य)	१६)	४)	१।=)
स्वर्ण वसंन्त मालती नं० १–पूर्ण चन्द्रोदय व स्वर्ण भस्म युक्त सर्वोत्तम परीक्षित योग ।	३०)	७॥)	२॥–)
स्वर्ण वसन्त मालती नं० २ (शास्त्रीय योग)	१६)	४)	१।=)

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कस्तूरी भैरव रस (भैषज्य)	१६)	४)	१|=)
परीक्षित योग ।	३०)	७||)	२||–)
स्वर्ण वसन्त मालती नं० २ (शास्त्रीय योग)	१६)	४)	१|=)

	१ तोला	३ माशा	१ माशा
सर्वाङ्ग सुन्दर रस (रसेन्द्र)	१६)	४)	१|=)
संग्रहणी कपाट रस (स्वर्ण भस्म युक्त)	३५)	८|||)	३)
सूत शखेर रस स्वर्ण युक्त (योग)	१२)	३–)	१–)
सूतिका भरण रस स्वर्ण युक्त (भैषज्य)	२४)	६)	२–)
सिंदूर भूषण रस (चन्डान्शु)	८)	२)	|||)
हिरण्य गर्भ पोटली रस (सुन्दर)	२८)	७)	२|=)
हेम गर्भ रस (वृ०नि०)	२४)	६)	२–)
	३ माशा	१ माशा	४ रत्ती
मृगांक पोटली रस नं० १ (मणि)	३७||)	१२||)	६|–)
मृगांक पोटली रस नं० २ (मणि)	२२||)	७||)	३||–)
लोकेश्वर पोटली रस (चन्डांशु)	३०)	१०)	५–)
मधुमेहान्तक रस (प्राणाचार्य) (स्वर्ण मुक्ता युक्त)		५० गोली	११)
	२५ गोली ५|||)	१० गोली	२|=)

उत्तमोत्तम रस, रसायन, गुटिका, लोह

	५ तोला	१ तोला	६ माशा
अग्नि कुमार रस (योग)	३)	||=)	|–)||
अजीर्ण कन्टक रस (सुन्दर)	३)	||=)	|–)||
अम्लपित्तांतक लोह (भैषज्य)	६|||)	२)	१)
अर्शान्तक वटी (प्राणाचार्य)	३||=)	|||)	|=)||
अग्नितुण्डी वटी (भैषज्य)	३)	||=)	|–)||
आनन्दभैरव रस (काला) (मणि)	३||=)	|||)	|=)||
आनन्दभैरव रस लाल (रसेन्द्र)	३)	||=)	|–)||
आमवातेश्वर रस [भैषज्य]	१४|||)	३)	१||)
अर्धनारीश्वर रस [धेनु]	१२|)	२||)	१|)
आरोग्यवर्धिनी वटी [समुच्चय]	४|||)	१)	||)||
इच्छाभेदी रस [योग]	३||=)	|||)	|=)||

	५ तोला	१ तोला	६ माशा
इच्छाभेदी वटी [प्राणाचार्य]	४=)	|||=)	|≡)||
उपदंशकुठार रस [निघण्टु]	३||=)	|||)	|=)||
उष्णवाताघ्न वटी [प्राणाचार्य]	८||)	१|||)	|||=)||
उन्मत्त रस [कलिका]	७|)	१||)	|||)||
एलादि वटी [मणि]	१|||)	|=)	≡)||
एकांगवीर रस (रसतन्त्रसार)	१६|||)	४)	२)
काससंहारभैरव रस (रसेन्द)	६|||)	२)	१)
करंजादि वटी (प्राणाचार्य)	४|||)	१)	||)||
कपूर रस (सुन्दर)	१४|||)	३)	१||)
कनकसुन्दर रस (भैषज्य)	३)	||=)	|–)||
कफकुठार रस (रसेन्द)	६|||)	२)	१)
कफकेतु रस (भैषज्य)	३||=)	|||)	|=)||
कामिनीविद्रावणि रस (सुन्दर)	१४|||)	३)	१||)
कामाग्निसन्दीपन मोदक (रत्न)	२|=)	||)	|)||
कामधेनु रस (भैषज्य)	१४|||)	३)	१||)
कांकायन गुटिका (योग)	१|||)	|=)	≡)||
कीटमर्द रस (भैषज्य)	३)	||=)	|–)||
वृ० क्रव्यादि रस (समुच्चय)	८||)	१|||)	|||=)||
कृमिकुठार रस (सुन्दर)	४=)	|||=)	|≡)||
खैरसार वटी (महोदधि)	१|||)	|=)	≡)||
गङ्गाधर रस (प्राणाचार्य)	७|)	१||)	|||)||
गन्धक वटी (प्राणाचार्य)	१|||)	|=)	≡)||
गर्भविनोद रस (रसेन्द)	३||=)	|||)	|=)||
गर्भपाल रस (सार संग्रह)	७|||=)	१||=)	|||–)||
गर्भचिंतामणि रस (सुन्दर)	१२|)	२||)	१|)
गुल्मकुठार रस (योग)	६|||)	२)	१)
गुल्मकालानल रस (भैषज्य)	७|)	१||)	|||)||

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

	५ तोला	१ तोला	६ माशा
गुड़पिप्पली वटी (भैषज्य)	२।=)	।।)	।)।।
गुड़मार वटी (प्राणाचार्य)	२।=)	।।)	।)।।
ग्रहणीगजेन्द्र रस (प्राणाचार्य)	१२।)	२।।)	१।)
ग्रहणीकपाट रस लाल (प्राणाचार्य)	६।।।)	२)	१)
ग्रहणीकपाट रस काला (रत्न)	३)	।।=)	।–)।।
घोड़ाचोली रस (सुधाकर)	३)	।।=)	।–)।।
चन्द्रप्रभा वटी (शार्ङ्गधर)	४।।।)	१)	।।)।।
चन्द्रोदयवर्ती (वृन्द)	३।।=)	।।।)	।=)।।
चन्द्रांशु रस (भैषज्य)	१४।।।)	३)	१।।)
चन्द्रकला रस (कलिका)	७।)	१।।)	।।।)।।
चन्द्रामृत रस (रत्न)	४।।।)	१)	।।)।।
चित्रकादि वटी (चरक)	१।।।)	।=)	≡)।।
६४ पहरा पीपल (प्राणाचार्य)	१४।।।)	३)	१।।)
महा ज्वरांकुश रस (वृ० निघन्टु)	३)	।।=)	।–)।।
जय वटी (रसायन)	६।।।)	२)	१)
जलोदरारि वटी (भैषज्य)	४।।।)	१)	।।)।।
जातीफल रस (सुन्दर)	४।।।)	१)	।।)।।
तक्र वटी (भैषज्य)	४।।।)	१)	।।)।।
ताप्यादि लोह (रसतन्त्र)	१४।।।)	३)	१।।)
दुर्जलजेता रस (वृ० नि०)	३।।=)	।।।)	।=)।।
दुग्ध वटी नं० १ (भाव)	१६।।।)	४)	२)
दुग्ध वटी नं० २ (भाव)	३।।=)	।।।)	।=)।।
धात्री लोह (भैषज्य)	६)	१।)	।।=)।।
नवज्वरहर वटी (निघन्टु)	३।।–)	।।।)	।=)।।
नवायस लोह (तरङ्गिणी)	४।।।)	१)	।।)।।
वृ० नायकादि रस (रत्न)	२।=)	।।)	।)।।
नवज्वरेभसिंह रस (भैषज्य)	१२।।–)	२।।–)	१।–)

	५ तोला	१ तोला	६ माशा
नृपतिवल्लभ रस (भैषज्य)	७।)	१।।)	।।।)।।
नष्टपुष्पान्तक रस (सागर)	१४।।।)	३)	१।।)
नाराच रस (रसेन्द्र)	३।।=)	।।।)	।=)।।
प्रतापलंकेश्वर रस (शार्ङ्गधर)	४।।।)	१)	।।)।।
प्रदरारि रस (योग)	३।।=)	।।।)	।=)।।
प्रदरारि लोह (भैषज्य)	४।।।)	१)	।।)।।
प्रदरान्तक लोह (सुन्दर)	७।)	१।।)	।।।)।।
प्रदरान्तक रस (रसेन्द्र)	६।।।)	२)	१)
प्लीहारि रस (भैषज्य)	४।।।)	१)	।।)।।
प्राणेश्वर रस (सुन्दर)	१४।।।)	३)	१।।)
पञ्चामृत रस (नासा रोग) (रसेन्द्र)	४=)	।।।=)	।≡)।।
पञ्चामृत रस (शोथ रोग) (भैषज्य)	४=)	।।।=)	।≡)।।
पाशुपति रस (तरंगणी)	४।।।)	१)	।।)।।
पुनर्नवादि मांडूर (रत्न)	३)	।।=)	।–)।।
प्राणदा गुटिका (भैषज्य)	२।।।)	।।–)	।)।।
पञ्चवक्त्र रस (सागर)	४=)	।।।=)	।≡)।।
पांडु पञ्चानन रस (भैषज्य)	६।)	१।)	।।=)।।
बहुमूत्रान्तक रस (सुन्दर)	६।।।)	२)	१)
बहुशाल गुड़ (शार्ङ्गधर)	२।–)	।।)	।)।।
बालामृत वटी (प्राणाचार्य)	६।।।)	२)	१)
वृ० वातगजांकुश रस (रसेन्द्र)	७।)	१।।)	।।।)।।
महा वातविध्वंस रस (सुन्दर)	१४।।।)	३)	१।।)
वांतिहृदय रस (धेनु)	२६।।)	६)	३)
वैताल रस (भैषज्य)	१२।)	२।।)	१।)
विषम ज्वरान्तक लोह (भैषज्य)	६।।।)	२)	१)
व्योषादि वटी (शार्ङ्गधर)	१।।।)	।=)	≡)।।
बिषमुष्टिका वटी (बनौषधि)	३)	।।=)	।–)।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

	५ तोला	१ तोला	६ माशा
ब्राह्मी वटी (प्राणाचार्य)	७।)	१।।)	।।।)।।
भूतभैरव रस (योग)	१२।)	२।।)	१।)
महा मृत्युञ्जय रस (भाव)	४।।।)	१)	।।)।।
मदनानन्द मोदक (प्राणाचार्य)	२।=)	।।)	।)।।
महा गन्धक रस (भैषज्य)	४।।।)	१)	।।)।।
महा शूलहर रस (वृ० नि०)	७।)	१।।)	।।।)।।
मार्कण्डेय रस (भैषज्य)	३।।=)	।।।)	।=)।।
मूत्र कृच्छ्रान्तक रस (वृ०) (भैषज्य)	१४।।।)	३)	१।।)
मेहमुद्गर रस (सुन्दर)	४।।।)	१)	।।)।।
वृ० यकृतहर लोह (भैषज्य)	४।।।)	१)	।।)।।
रक्त पित्तान्तक रस (रसेन्द्र)	६)	१।)	।।=)।।
रामवाण रस (रसेन्द्र)	३।।=)	।।।)	।=)।।
वृ० रसेन्द्र गुटिका (रसेन्द्र)	१६।।।)	४)	२)
राजचन्डेश्वर रस (भैषज्य)	१४।।।)	३)	१।।)
लहसुनादि वटी (प्राणाचार्य)	१।।।)	।=)	≡)।।
लोकेश्वर रस (सुन्दर)	६।।।)	२)	१)
लाक्षादि वटी (धूप) (रसेन्द्र)	४।।।)	१)	।।)।।
लक्ष्मीनारायण रस (चण्डांशु)	१२।)	२।।)	।)
लक्ष्मीविलास रस (रसेन्द्र)	१४।।।)	३)	१।।)
लाई रस (भाव)	३)	।।=)	।—)।।
लीलाविलास रस (रत्न)	५।=)	१=)	।।—)।।
लीलावती गुटिका (वृ० नि०)	३)	।।=)	।—)।।
वृ० लोकनाथ रस (शार्ङ्गधर)	२२।)	४।)	२।)
लोकनाथ रस (भैषज्य)	६।।।)	२)	१)
लघु मालतीबसन्त (योग)	६।।।)	२)	१)
लवङ्गादि वटी	२।—)	।।)	।)।।
शृङ्गीगुड़घृत (भैषज्य)	१।=)	।—)	≡)
श्वासकुठार रस (भाव)	३)	।।=)	।—)।।

	५ तोला	१ तोला	६ माशा
वृ० शङ्खवटी (भाव)	३)	।।=)	।—)।।
शङ्खवटी (भैषज्य)	२।=)	।।)	।)।।
शिरोबज्र रस (भैषज्य)	४=)	।।।=)	।≡)।।
शिलाजीत वटी (प्राणाचार्य)	४=)	।।।=)	।≡)।।
शूलबज्रिणी वटी (भैषज्य)	३।।=)	।।।)	।=)।।
शूलगज केसरी (भैषज्य)	६।।।)	२)	१)
शोफोदरारि लोह [भैषज्य]	६।।।)	२)	१)
शृंगाराभ्रक रस (रसेन्द्र)	७।।।=)	१।।=)	।।।—)।।
संशमनी वटी (प्राणाचार्य)	४=)	।।।=)	।≡)।।
संजीवनी रस (भैषज्य)	२।=)	।।)	।)।।
मृत संजीवनी रस	१७।)	३।।)	१।।।)
समीरगज केशरी (सुन्दर)	११)	२।)	१=)
सर्वज्वरहर लोह (भैषज्य)	४।।।)	१)	।।)।।
समीरपन्नग रस (वातरोग) (योग)	८।।)	१।।।)	।।।=)।।
सिद्धप्राणेश्वर रस (सुन्दर)	४।।।)	१)	।।)।।
सूतशेखर रस (योग)	१३।।)	२।।।)	१।=)
स्मृतिसागर रस (योग)	१४।।।)	३)	१।।)
वृ० सूरण मोदक (भैषज्य)	१।।।)	।=)	≡)।।
सौभाग्य वटी (सुन्दर)	३।।=)	।।।)	।=)।।
हिंग्वादि वटी (वङ्ग)	१।।।)	।=)	≡)।।
क्षीरसागररस (गगनादि वटी) (सुन्दर)	१७।)	३।।)	१।।।)
त्रिपुर भैरव रस (भाव)	४।।।)	१)	।।)।।
त्रिभुवनकीर्ति रस (चन्डांशु)	३)	।।=)	।—)।।
त्रिविक्रम रस (शार्ङ्गधर)	१४।।।)	३)	१।।)

शास्त्रोक्त गुग्गुल

	५ तोला	१ तोला
अमृतादि गुग्गुल (भैषज्य)	१।।।)	।=)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

	५ तोला	१ तोला	
कांचनार गुग्गुल (निघन्टु)	१॥)	।—)	
किशोर गुग्गुल (भाव)	१॥)	।—)	
गोत्तुरादि गुग्गुल (मणि)	१॥।)	।=)	
वृ० योगराज गुग्गुल (शार्ङ्गधर) (अष्टधातु भस्म युक्त)			६ माशा
	७।)	१॥)	॥।)॥
रसाभ्र गुग्गुल (भैषज्य)	६)	१।)	॥=)॥
योगराज गुग्गुल	१॥)	।—)	
सिंहनादि गुग्गुल (मणि)	२—)	।≡)	

अरिष्ट आसव

	बोतल	पौंड	८ औंस
अमृतारिष्ट	२॥—)	२)	१=)
अशोकारिष्ट	३)	२।)	१।)
अर्जुनारिष्ट	२॥।=)	२=)	१≡)
अभयारिष्ट	२॥।=)	२=)	१≡)
अश्वगन्धारिष्ट	३=)	२।=)	१।—)
उसीरासव	२॥—)	२)	१=)
कनकासव	२॥—)	२)	१=)
कुटजारिष्ट	२॥।=)	२=)	१≡)
कुमारी आसव	३)	२।)	१।)
खदिरारिष्ट	२॥—)	२)	१=)
चन्दनासव	२॥—)	२)	१=)
दशमूलारिष्ट (कस्तूरी मिश्रित)		३)	१≡)
,, (साधारण)	२॥।=)	२=)	१=)
द्राक्षासव (विनाखिचा)	२॥।=)	२=)	१=)
द्राक्षारिष्ट	२॥।)	२)	१—)॥
देवदार्व्यादिरिष्ट	२॥।=)	२=)	१=)
पत्रांगासव	२॥।=)	२=)	१≡)
पिपल्यासव	२॥—)	२)	१=)

	बोतल	पौंड	८ औंस
पुनर्नवासव	२॥—)	२)	१=)
बांसारिष्ट	६)	४॥)	२।)
बबूलारिष्ट	२॥।=)	२=)	१≡)
रोहितकारिष्ट	२॥—)	२)	१=)
रक्तशोधिकारिष्ट	२॥।=)	२=)	१=)
लोहासव	२॥—)	२)	१=)
शिशुरोगान्तिकारिष्ट	३)	२।)	१।)
सारिवाद्यासव	२॥।=)	२=)	१≡)
सारस्वतारिष्ट (स्वर्ण रहित)	३)	२।)	१।)
अरविंदासव	४ औंस ।॥)	१६ औंस २।)	८ औंस १।)
सारस्वतारिष्ट (स्वर्ण युक्त)		२ औंस १॥—)	

अर्क

सुदर्शन अर्क, दशमूल अर्क, अर्क सौंफ, महारास्नादि अर्क प्रत्येक का मूल्य निम्न प्रकार है— ८ औंस १) १६ औंस १॥=) बोतल २॥)

अर्क गुलाब ४ औंस १)

चूर्ण

(वैकोलाइट के ढक्कन युक्त सुन्दर शीशियों में पैक)

	१० तोला	५ तोला	२॥ तोला
अजीर्णघ्नपानक चूर्ण (प्राणाचार्य)	१॥—)	॥—)	।≡)॥
अग्निमुख चूर्ण (भैषज्य)	१।≡)	॥।)	।≡)
अविपित्तकर चूर्ण (भाव)	१—)	॥—)	।—)॥
उदर भास्कर चूर्ण (प्राणाचार्य)	१।≡)	॥।)	।≡)
कामदेव चूर्ण (रस)	१—)	॥—)	।—)॥
कुंकुमादि चूर्ण (मणि)	३॥।≡)	२)	१—)
वृ० गङ्गाधर चूर्ण (गद)	१—)	॥—)	।—)॥
चन्दनादि चूर्ण निघन्टु)	१—)	॥—)	।—)॥
ज्वर भैरव चूर्ण (भैषज्य)	१—)	॥—)	।—)॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिपल्यासव	२॥-)	२)	१=)	ज्वर भैरव चूर्ण (भैषज्य)	१-)	॥-)	।-)॥

	१० तोला	५ तोला	२॥ तोला
जातीफलादि चूर्ण (शाङ्गंधर)	३।≡)	१।।।)	।।।≡)
तालीसादि चूर्ण (चरक)	२।≡)	१=)	।।=)
नारायण चूर्ण (जीवन)	१-)	।।-)	।-)।।
निम्बादि चूर्ण (भाव)	।।।≡)	।।)	।-)
पञ्चसकार चूर्ण (शाङ्गंधर)	।।।-)	।≡)	।)।।
पुष्यानुग चूर्ण (वृन्द)	१≡)	।।=)	।=)
वृ० लवङ्गादि चूर्ण (मणि)	१।।-)	।।।-)	।≡)।।
लवणभास्कर चूर्ण (चक्र)	१-)	।।-)	।-)।।
सारस्वत चूर्ण (भाव)	१-)	।।-)	।-)।।
सामुद्रादि चूर्ण (भैषज्य)	१।।।≡)	१)	।।-)
वृ० शृंग्यादि चूर्ण (प्राणाचार्य)	१।।।≡)	१)	।।-)
सितोफलादि चूर्ण (चक्र)	२≡)	१=)	।।=)
सुदर्शन चूर्ण (निघन्टु)	।।≡)	।।)	।-)
हिंग्वष्टक चूर्ण (शाङ्गंधर)	१≡)	।।।)	।≡)
त्रिफलादि चूर्ण (प्राणाचार्य)	।।≡)	।=)	।)

शास्त्रोक्त औषधि तैल

	४ औंस	२ औंस	१ औंस
इरमेदादि तैल	१।।।)	।।।≡)	।।)
कुमारी तैल	१।।)	।।।-)	।≡)
जात्यादि तैल	१।।)	।।।-)	।≡)
विजयभैरव तैल		५।=)	२।।)
वैरोजा तैल	३।।।)	१।।।≡)	१)
मोम का तैल	३।।।)	१।।।≡)	१)
राल का तैल	२।।।)	१।≡)	।।।)
षटविन्दु तैल	१।।।)	।।।≡)	।।)
क्षार तैल	१।।।)	।।।≡)	।।)
कन्दर्पसार तैल	३।।)	१।।।-)	।।।≡)
कासीसादि तैल	१।।)	।।।-)	
किरातादि तैल	१।।)	।।।-)	

	८ औंस	४ औंस	२ औंस
चन्दनादि तैल	४।।।=)	२।।)	१।-)
पिंड तैल	३=)	१।।=)	।।।=)
महा विषगर्भ तैल	३।=)	१।।।)	।।।≡)
विषगर्भ तैल	२।।।=)	१।।)	।।।-)
महा लाक्षादि तैल	३।=)	१।।।)	।।।≡)
वृ० शुष्कमूलादि तैल	३।-)	१।।।)	।।।≡)
पुनर्नवादि तैल	३=)	१।।=)	।।।=)
ब्राह्मी तैल	२।।।=)	१।।)	।।।-)
ग्रहणी मिहिर तैल	३।।-)	२)	१-)
महानारायण तैल	३।=)	१।।)	।।।≡)
नारायण तैल	२।।।=)	१।।)	।।।-)
महा मरिच्यादि तैल	२।।।-)	१।।)	।।।-)
महा माषादि तैल	२।।।=)	१।।)	।।।-)
हिमसागर तैल	३।-)	१।।।)	।।≡)
दशमूल तैल	३=)	१।।-)	।।।-)

घृत

	४ औंस		४ औंस
अशोक घृत	२।।)	धात्री घृत	२।।।)
फल घृत	२।)	महात्रिफलादि घृत	२।।-)
अर्जुन घृत	२।।।)	पञ्चतिक्त घृत	२।)
ब्राह्मी घृत	२)		

नोट—छोटे पैकों पर -) प्रति पैक अधिक चार्ज होगा।

क्वाथ

÷ दशमूल क्वाथ प्रति सेर १।) १० तोला ≡)

१ मन ३५) नैट २-२ तोले की १०० पुड़िया ६।)

÷ दशमूल के दसों (१०) द्रव्य प्रथक्-प्रथक् भी मिल सकते हैं। उनका मूल्य भी यही होगा, किन्तु बारदाने का मूल्य प्रथक् देना होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महामंजिष्ठादि क्वाथ	प्रति सेर २)	१० तोला ।–)
महारास्नादि क्वाथ	,, २)	,, ।–)
त्रिफलादि क्वाथ	,, १।)	,, ≡)
इन्द्रवारुणादि क्वाथ	,, ४)	,, ।।–)

क्षार, सत्व, द्राव

वज्रक्षार चूर्ण, अपामार्ग, बांसा क्षार, पलास क्षार, अर्क क्षार
प्रत्येक का मूल्य—१ तोला ।–), २।। तोला ।।≡) ५ तोला १।)

कटेरी क्षार, कदली क्षार, तिल क्षार, मूली क्षार
प्रत्येक का मूल्य— १ तोला ।≡) २।। तोला १) ५ तोला १।।।=)

कल्याण क्षार	,, ।।)	,, १=)	,, २।)
यवक्षार	,, ।)	,, ।।–)	,, १)
गिलोय सत्व	,, ।।)	,, १≡)	,, २।)
मुलहठी सत्व	,, ।।)	,, १≡)	,, २।)
शुद्ध शिलाजीत सूर्यतापी	,, १।)	,, २।=)	,, ४।।)
शुद्ध शिलाजीत अग्नितापी	,, ।।)	,, १≡)	,, २।)
भीमसैनी कपूर (शास्त्रोक्त)	,, ४)	,, ६।।।)	
उत्तम असली मधु (शहद)	१ पाव १।=)	½ सेर २।।)	१ सेर ५)
शङ्खद्राव	१ औंस २।)	½ औंस १।)	

शास्त्रोक्त उत्तम अवलेह

	१ सेर	½ सेर	१ पाव	½ पाव
च्यवनप्राश्य अवलेह (अष्टवर्ग एवं वंशलोचन युक्त)	६)	३)	१।।=)	।।।=)
प्राणाचार्य जीवन (पञ्च धातु एवं केशर युक्त)	१२)	६)	३=)	१।।=)
कुटजावलेह	७।।)	३।।।=)	२)	१=)
कुशावलेह	७।।)	३।।।=)	२)	१=)
बांसावलेह	७।।)	३।।।=)	२)	१=)
मधुकाद्यावलेह	—	८।।।=)	४।।)	२।=)

गुलकन्द १ सेर ५) ½ सेर २।।) १ पाव १।=) ½ पाव ।।।)

उत्तम प्रकार से शोधित द्रव्य एवं खनिज व वनौषधि

	१ तोला		१ तोला
कज्जली (समान गन्धक पारद)	१।।)	ताल शुद्ध (हरताल)	।।।–)
शुद्ध गन्धक आमलासार	।≡)	कल्वुलहद्र श्वेत	२।।)
शुद्ध मल्ल	।।)	पारद हिंगुलोत्थ	१।।।)
पारद हिंगुलोत्थ (संस्कारित)	२।।।)	विषबीज शुद्ध यवकुट	।–)।।
शिला शुद्ध (मनःसिल)	।।।–)।।	कस्तूरी नैपाल	७५)
कस्तूरी काश्मीरी	४८)	केशर काश्मीरी	१३)
मोती बसरा	८०)	अम्बर	२५)
	प्रति १० तोला		प्रति १० तोला
पारद हिंगुलोत्थ	१६)	वत्सनाभ शुद्ध	४)
भल्लातक शुद्ध	३)	हिंगुल हंसपदी शुद्ध	८)
कज्जली (सम)	१४)	शुद्ध गन्धक आमलासार	३।।)
जयपाल शुद्ध	२)	विषबीज शुद्ध	३)
	प्रति सेर		प्रति सेर
लोह चूर्ण अशुद्ध	२।।)	लोह चूर्ण शुद्ध	४।।)
मांडूर (कीट)	।।।)	मुक्ताशुक्ति	५)
पीली कौड़ी	२।)	प्रवाल शाख	३६)
शङ्ख टुकड़ा	१।)	धान्याभ्रक (शुद्ध वज्राभ्रक)	४)
अष्ट वर्ग	६)	सर्पगन्धा	१८)
नाग केशर	१०)	रोहतक छाल	१)
वज्राभ्रक	२।।)	हिंगुल रूमी	५८)
ब्राह्मी	२)	सोम कल्प	२)
अशोक छाल	१।।)	दशमूल कुटा	३५) प्रति मन

नोट—इन वस्तुओं पर किसी भी प्रकार का कोई भी कमीशन किसी को नहीं दिया जायगा। बाजार भाव पर सप्लाई की जायगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

ज्वरनिग्रह—मीठी और स्वादिष्ट जूड़ी नाशक १ पौंड ३।।) ८ मात्रा १)

मधुकाद्यावलेह · — ८॥।=) ४॥) २।=) दिया जायगा । बाजार भाव पर सप्लाई की जांयगी ।

पेटेन्ट औषधियां

क्लीवत्वहर—४ औषधियों का सैट २० दिन को		६)
प्रदर रोग हर—३ औषधियों का सैट २० दिन को		१०)
हिस्टेरिया हर—४ औषधियों का सैट २० दिन को		११)
रक्त विकार हर—४ औषधियों का सैट २० दिन को		८)
श्वेतकुष्ठ हर—४ औषधियों का सैट २० दिन को		६)
अर्शान्तक—४ औषधियों का सैट २० दिन को		११)
चन्द्रोदय गुटिका (मकरध्वज वटी)—	४१ गोली का पैक	२॥)
फलासव—पाचन विकार नाशक	१२ औंस	२)
क्लीनत्व हर तिला—वाह्य प्रयोगार्थ	प्रति शीशी	२॥)
क्लीवत्वहर पोटली—सेक के लिए	११ पोटली	२)
कामिनी रक्षक पाक—गर्भाशय विकार नाशक	१० तोला	५)
कामिनी सुधा—पाचक, कान्ति बर्धक एवं स्त्री रोग नाशक	१२ औंस	२)
कामिनी रोग रिपु—स्त्री रोग नाशक	१ शीशी	३)
हिस्टेरिया हर वटी—	४० गोली	२॥)
हिस्टेरिया हर आसव—	१ बोतल	४)
हिस्टेरिया हर रसायन—	२० मात्रा (१। तोला)	२॥)
हिस्टेरिया हर क्वाथ—	८० तोला	२)
प्राणाचार्य सालसा—	१ बोतल	३)
कण्डूहर तैल—	४ औंस	२)
श्वेतकुष्ठ हर क्वाथ—	८४ तोला	३)
श्वेतकुष्ठ हर वटी (मोदक)—	४१ गोली	२)
श्वेतकुष्ठ हर तैल—	½ औंस	१)
श्वेतकुष्ठ हर अवलेह—	१० तोला	३)
अर्शहर वटी	४० गोली	२)
अर्शहर मोदक	४० तोला	३)
अर्शहर मरहम—	१ औंस	५)
अर्शहर तैल—	२ औंस	१)

ज्वरनिग्रह—मीठी और स्वादिष्ट जूड़ी नाशक	१ पौंड ३॥)	८ मात्रा १)
ज्वरनिग्रह (कड़वी)—कब्ज के साथ मलेरिया पर	१ पौंड ३॥)	८ मात्रा १)
नेत्र संजीवनी—मोतियाबिन्द के लिए उत्तम		½ औंस १०)
नयनचन्द्रबिन्दु—आंखों के रोगों पर उत्तम		¼ औंस ॥)
नेत्रबिन्दु—दुखती आंखों के लिए उत्तम ¼ औंस =),		½ औंस मय ड्रापर ॥)
नयनामृत सुरमा—	६ माशा १)	३ माशा ॥–)
नेत्रपुष्पहर वर्ति—आंख की फुली को		११ वर्ती २)
परवालहर सुरमा—		३ माशा १)
नेत्रसुधा (रोहों के लिए अपूर्व)—		६ माशा २)
एएटीपौक्सीन—चेचक के लिए उत्तम		१ शीशी २)
कासान्तक—खांसी के लिए उत्तम	१ पौंड ४॥) ४ औंस १।)	१ औंस ।=)
स्फूर्तिदाता—धातुक्षय रोककर बल वृद्धि करती है		१ शीशी ५)
प्रतिश्याय हर सुरमा—रुके नजले में आंखों में लगावें		१ शीशी ।=)
रेचक वटी—(दस्त लाने को सरल रेचक)		१ शीशी १)
यकृत रोग रिपु—सूखा रोग को अपूर्व		४१ मात्रा ५)
यकृत रोग हर तैल—सूखा में मालिश करें		४ औंस २)
दन्त रोग हर मंजन—दांतों के लिए सर्वोत्तम		१ शीशी ॥–)
उपदंश नाशक कैपशूल—उपदंश के लिए लाभदायक		२)
प्राणाचार्य बालामृत—बच्चों के लिए श्रेष्ठ	२ औंस ॥=),	४ औंस १=)
शिशु अपस्मारहर वटी—बाल अपस्मार के लिए उत्तम		१ शीशी १।)
प्राणाचार्य घुटी—बच्चों की घुटी		१ शीशी।–)
ग्रहणी रोग रिपु—संग्रहणी के लिए उपयोगी		६० मात्रा ३)
स्वप्न प्रमेह रिपु—स्वप्नप्रमेह के लिए उपयोगी		१)
धातु श्रावान्तक चूर्ण—धातु श्राव नाशक		५ तोला २)
स्वप्न प्रमेहान्तक चूर्ण—स्वप्न प्रमेह नाशक		५ तोला २)
प्राणाचार्य मलहम—फोड़े फुंसी पर उपयोगी		१ डिब्बी।–)
आम निस्सारक चूर्ण—आंव के लिए उत्तम		५ तोला १)
प्राणाचार्य चूर्ण—स्वादिष्ट, पाचक चूर्ण		५ तोला ।॥)

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रक्तरोधक रसायन—किसी भी मार्ग से रक्त जाने पर ४ औंस ५) १ औंस १=)
वातारि गुटिका—वात रोगों को अचूक लाभप्रद ४१ गोली २)
स्तम्भन गुटिका—वीर्य स्तम्भक ३१ गोली ११)
स्तम्भन गुटिका (विशिष्ट)—वीर्य स्तम्भन को उत्तम ३१ गोली ५)
पाचक टिकिया—स्वादिष्ट और पाचक ५० टिकिया ।=) १ पौंड ५)
रजप्रवर्तक वटी—अनियमित रज विकार नाशक ३१ गोली १)
कर्ण श्रावान्तक—कान के रोग नाशक ½ औंस ।।), २ औंस २।।।)
अंडवृद्धिहर रसायन—अंड वृद्धि पर उत्तम ८२ मात्रा ७।) ४१ मात्रा ४)
अंडवृद्धिहर लेप—अंडवृद्धि पर उपयोगी २ औंस ३।।), ½ औंस ?)
श्वेत नारायण तैल—स्थानिक वातज शूल के लिए उत्तम १ शीशी १)
वृ० रजप्रवर्तक वटी—रज नियामक ३१ गोली १०)
गर्भ पोषक—गर्भश्राव रोकने को अचूक दवा १० मात्रा ४) नैट
जलोदरारि रसायन—जलोदर नाशक अपूर्व दवा १६ मात्रा ८)
श्वेत प्रदरारि रसायन—श्वेत प्रदर की अचूक दवा ४२ मात्रा १०)
सन्तति नियमन (बर्थ कंट्रोल)—सन्तान नियामक १ कोर्स ११)
केश रक्षक तैल—शरद ऋतु के लिए उपयोगी केश तैल ४ औंस २)
शान्तिवर्धक तैल (कर्पूरादि तैल)—ग्रीष्म ऋतु के लिए तरावट देने वाला परम शान्तिप्रद तैल ४ औंस २)

प्रवास पेटिकायें—

१—६० शीशी वाली—यह प्रवास पेटिका १२×५।।×८।। इञ्च साइज में अत्यन्त मजबूत बनी है इसमें ½ औंस की ४८, ? औंस की १२ शीशी व इन्जैक्शन सीरिंज आदि के लिए एक खाना भी है। पेटी इतनी मजबूत है कि ६० सेर वजन भी रख दिया जाय तो भी नहीं टूटेगी। आकर्षक आयल क्लाथ युक्त है। मूल्य—शीशी सहित २४)

२—५१ शीशी वाली—यह प्रवास पेटिका ६।×३।।×७ इञ्च साइज में है। इसमें ⅛ औंस की २४ ½ औंस की १८ एवं १ औंस की ६ शीशी हैं। काफी मजबूत व आकर्षक है। मूल्य—१८)

३—१८ शीशी वाली—यह जेबी साइज है, इसमें ½ औंस की १८ शीशी लगती हैं। मूल्य—६)

श्री विश्वनाथ द्विवेदी कृत अमूल्य साहित्य

१—अभिनव नेत्र चिकित्सा विज्ञान—नेत्र के रोगों पर अब तक की प्रकाशित हिंदी भाषा की पुस्तकों में सर्व श्रेष्ठ आयुर्वेद, यूनानी और एलोपैथी के विचार का तुलनात्मक विवरण देने वाली सर्व श्रेष्ठ पुस्तक है. इसमें १०० के करीब रंगीन हाफटोन चित्र हैं। लेखक ने इसमें सब चिकित्साओं से तुलना करके आयुर्वेद को सर्वोत्तम चिकित्सा होने का प्रमाण दिया है। इस पुस्तक को रखकर आयुर्वेद व आधुनिक चिकित्सा की विधियों का पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर व्यक्ति योग्य नेत्र विशेषज्ञ बन सकता है। मूल्य १०)

२—वैद्य सहचर—आयुर्वेद की औषधियों को प्रयोग कर जादू की तरह शर्तिया रोगों को दूर करने की विधि जानने के लिए इस पुस्तक को अवश्य अपने पास रखिये। इसके कई संस्करण हाथों-हाथ बिक चुके हैं। मूल्य ३)

३—तैल संग्रह—यदि आप तेलों को रङ्गना, पतला करना, सुगन्धित करना और गुणकारी बनाने की विधि का अध्ययन करना चाहते हैं तो इस पुस्तक को लेकर धन कमाइये। मूल्य ३)

४—प्रत्यक्ष औषधि निर्माण—आयुर्वेद चिकित्सा सर्व श्रेष्ठ शुद्ध और उत्तम औषधियों के निर्माण पर निर्भर करती है। इस पुस्तक में इनकी उन गुप्त गुत्थियों को सुलझाया गया है जो कि कोई नहीं बतलाता है। इसमें भस्मों के निर्माण की पूरी विधि है। मूल्य ३)

५—त्रिदोषालोक—त्रिदोष की वैज्ञानिक मीमांसा। त्रिदोष न मानने वालों मुहतोड़ उत्तर देने वाली, नागपुर सम्मेलन से स्वर्ण पदक प्राप्त। मू० २)

पता—प्राणाचार्य भवन प्रायवेट लि० विजयगढ़ (अलीगढ़)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैद्योपयोगी कुछ अमूल्य साहित्य

प्रयोगमणिमाला—

इसमें २५१ वैद्यों के चित्र तथा हर एक वैद्य के २-२ गुप्त प्रयोग दिये हैं। जो कि स्व० वैद्यभास्कर बांकेलाल गुप्त 'प्राणाचार्य' द्वारा परीक्षित हैं। थोड़ी प्रति शेष रह गई हैं शीघ्र ही मंगा लें अन्यथा द्वितीय संस्करण की प्रतीक्षा करनी होगी। मूल्य केवल लागत मात्र ८) पो. व्य. प्रथक्

शिशु रोगांक—

यह प्राणाचार्य का अमूल्य विशेषांक बालकों के हर एक रोग पर दृष्टिपात करके लिखा गया है। इसमें देश-विदेश के उत्तम लेखकों द्वारा बाल-रोगों का निदान तथा चिकित्सा का अनुकरण किया गया है। आवश्यक चित्रों से सुसज्जित इस विशेषांक का मूल्य केवल ४) है। शीघ्र ही मंगाकर लाभ उठावें।

ऊर्ध्वजत्रुज रोगांक—

इस विशेषांक में शिरो भाग के अंग प्रत्यंग जैसे नाक, कान, आंख, दांत, मुख, मस्तिष्क आदि का विशद विवेचन किया गया है। ५३ आयुर्वेद के धुरीण पंडितों द्वारा इसको पूर्ण किया गया है। इसमें शिरो भागों में होने वाले रोगों का निदान और चिकित्सा तथा सामयिक चित्र दिये गये हैं। मूल्य ४) पोस्ट व्यय प्रथक्।

स्त्री रोगांक—

यह विशेषांक स्त्री जाति के लिये अमूल्य उपहार है। इसमें स्त्री रोगों पर उत्तम-उत्तम लेख दिये गये हैं, तथा रोगों का निदान, लक्षण और परीक्षित प्रयोग दिये गये है। इसके प्रयोगों को बनाकर कितने ही वैद्यों ने यश प्राप्त किया है और हमें बधाई दी है। मूल्य ४) पोस्ट व्यय प्रथक्।

कामविज्ञानांक—

काम शास्त्र कितना विशद ग्रन्थ है इसे आप सब जानते हैं। इस विशेषांक में लेखकों द्वारा इसका शास्त्रीय विवेचन किया गया है। इसका अध्ययन युवक-युवतियों को विशेषरूप से करना अनिवार्य है। मूल्य ४) पोस्ट व्यय प्र.

प्रयोगमणिमालांक—

इस विशेषांक में भारत के प्रसिद्ध वैद्यों के प्रयोग व परिचय एवं चित्र दिये गये हैं। १०० के लगभग अमूल्य प्रयोगों का भण्डार है। थोड़ी प्रति शेष रह गई हैं। मूल्य ४) पोस्ट व्यय प्रथक्

स्वप्नदोष और वीर्य सञ्जीवन—

स्वप्न दोष से बचने के उपाय, स्वप्नदोष के कारण एवं चिकित्सा आदि का विस्तृत वर्णन है। मूल्य २)

परीक्षित प्रयोग प्रथम भाग—

बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी के परीक्षित प्रयोगों का विशाल संग्रह। मूल्य ।॥)

परीक्षित प्रयोग द्वितीय भाग—

धर्मार्थ औषधालय के अल्प मूल्य से बनने वाले हजारों सफल परीक्षित प्रयोग हैं। मूल्य १।)

वैज्ञानिक प्राणायाम रहस्य—

प्राणायाम से लाभ, स्वास्थ्य लाभ के उपाय, रक्त बहाव का वर्णन, हृदय कार्य प्रणाली आदि का विस्तृत वर्णन है। मूल्य २।)

आहार—

भोजन के नियम, भोजन कौन सा उत्तम है और स्वस्थ्य रहने के अनेकों तरीके दिये हैं। मूल्य १।)

थर्मामीटर विज्ञान—

थर्मामीटर की प्रयोग विधि। मूल्य ।)

नोट—सभी पुस्तकें एक साथ मंगाने पर २५% कमीशन दिया जावेगा, पोस्ट व्यय प्रथक् लिया जावेगा।

प्राणाचार्य भवन प्रायवेट लि० विजयगढ़ (अलीगढ़)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राणाचार्य का आगामी विशेषांक

भावप्रकाश

[विस्तृत सरल हिन्दी टीका युक्त]

टीकाकार—श्री० पं० रामचन्द्र शर्मा साहित्यायुर्वेद शास्त्री

प्राणाचार्य का यह विशेषांक अपने ढंग का एक ही अङ्क होगा यह टीका विद्यार्थियों के लिये अत्यन्त उपयोगी होगी। यह अङ्क प्राणाचार्य के ग्राहकों को वार्षिक मूल्य देने पर निमूल्य भेंट किया जायगा

इस विशेषांक की निम्न विशेषतायें होंगी—

१—इस ग्रन्थ में आधुनिक काल के अन्य चिकित्सा निघन्टुओं के समान प्रत्येक पदार्थ का विस्तृत वर्णन किया है।

२—प्रारम्भ में विविध भाषाओं के नाम, उत्पत्ति स्थल, द्रव्य का स्वरूप तथा रस वीर्य विपाक, विशेष गुण आदि को संक्षेप में लिखा है ताकि दृष्टिपात् मात्र से द्रव्य विषयक ज्ञान होजाय।

३—मूल संस्कृत श्लोक देकर उसका अर्थ किया गया है तदनन्तर विशेष व्याख्या की गई है। इस व्याख्या में द्रव्य का शरीर पर प्रभाव, चिकित्सा में उपयोग; उपयोग विधि इत्यादि बातें लिखकर अन्त में सम्बधित विशिष्ट योग भी दिये हैं।

४—अनेक नवीन औषधियां-यूनानी तथा एलोपैथिक-पैनिसिलीन व ग्रन्थि स्रावादि-इसमें दिये हैं। संक्षेप में चिकित्सा में काम आने वाली अधिकांश औषधियों का समावेश इसमें कर दिया है।

५—यह ग्रन्थ ४ खण्डों में है। पहिले खन्ड में परिभाषा-मान परिभाषा में अंग्रेजी एवं अन्तराष्ट्रीय माप का भी समावेश कर उसके साथ आयुर्वेदीय व देशी मानों की तुलना भी है। द्रव्य गुण, रस विपाकादि भी इसी खन्ड में हैं। इनका वर्णन आधुनिक व प्राचीन मतांनुसार किया है। द्वितीय खन्ड में वनस्पति औषधि द्रव्यों का सचित्र वर्णन है। तृतीयखन्ड में रसशास्त्र का पूर्णरूपेण वर्णन है एवं चतुर्थखन्ड में आहार द्रव्यों का वर्णन है। परिशिष्ट में विस्तृत अनुक्रमणिका भी है जिसमें वस्तु का प्रत्येक भाषा में नाम दिया है।

विशेष ज्ञातव्य केवल अङ्क को देखकर ही समझ सकेंगे।

आज ही अपना नाम प्राणाचार्य के स्थायी ग्राहकों में लिखाकर इस ग्रन्थ रत्न को विमूल्य प्राप्त करें।

वार्षिक मूल्य ५) मात्र

प्राणाचार्य भवन प्रायवेट लि० विजयगढ़ (अलीगढ़)

श्रीगोपाल गुप्त के प्रबन्ध से प्राणाचार्य प्रेस विजयगढ़ में मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

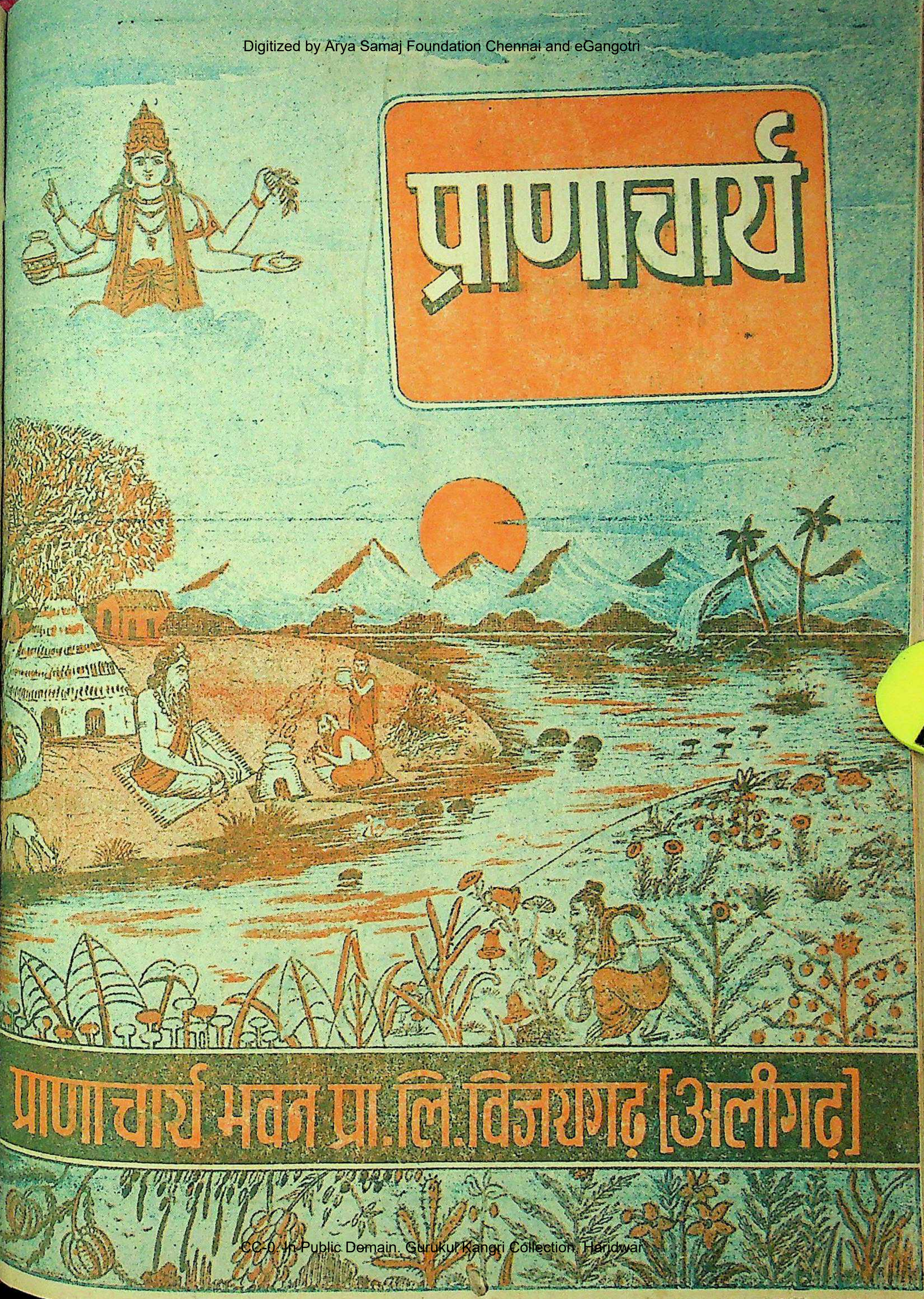

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

भाग ७ -- अंक १२

जय कार	३७६
सम्पादकीय	४८०
नाड़ी का ज्ञान	४८१
ज्वर विज्ञान पर मेरा विचार	४८३
काल	४८६
खजूर	४९०
निर्गुण्डी	४९२
अनार	४९६
कब्ज़ुलहज़ू क्या है ?	४९८
ब्रह्मचर्य-वीर्यरक्षा	५००
सिद्ध प्रयोग	५०१
साहित्य परिचय	५०४
देश विदेश	५०५

रजिस्ट्रेशन आफ न्यूजपेपर (सेन्ट्रल) नियम १९५६, के ८ वें नियम के अन्तर्गत प्राणाचार्य नामक पत्रिका के स्वामित्व तथा तथा अन्य विषयों के सम्बन्ध में प्रकाशित किया जाने वाला विवरण-

फार्म--४

१-प्रकाशन का स्थान—विजयगढ़ जिला अलीगढ़

२-प्रकाशन का अवधिक्रम—प्रति मास

३-मुद्रक का नाम—श्री श्रीगोपाल गुप्त
राष्ट्रीयता—भारतीय
पता—विजयगढ़ (अलीगढ़)

४-प्रकाशक का नाम—प्राणाचार्य भवन प्रा० लि०
राष्ट्रीयता—भारतीय
पता—विजयगढ़ (अलीगढ़)

५-सम्पादक का नाम—श्री पं० रामचन्द्र शर्मा वैद्य
राष्ट्रीयता—भारतीय
पता—कनवरीगंज रोड, अलीगढ़

६-उन शेयर होल्डरों के नाम और पते, जिनके पास कुल पूंजी के १ प्रतिशत से अधिक शेयर हैं।—प्राणाचार्य भवन प्रा० लि० विजयगढ़ (अलीगढ़)

मैं, श्रीगोपाल गुप्त, वास्ते प्राणाचार्य भवन प्रा० लिमिटेड, यह घोषित करता हूं, कि ऊपर दिये गये सब विवरण, जहां तक मैं जानता हूं तथा मेरा विश्वास है, सत्य है।

१ मार्च १९६८

प्रकाशक के हस्ताक्षर—
श्रीगोपाल गुप्त
वास्ते प्राणाचार्य भवन प्रा० लिमिटेड
विजयगढ़ (अलीगढ़)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

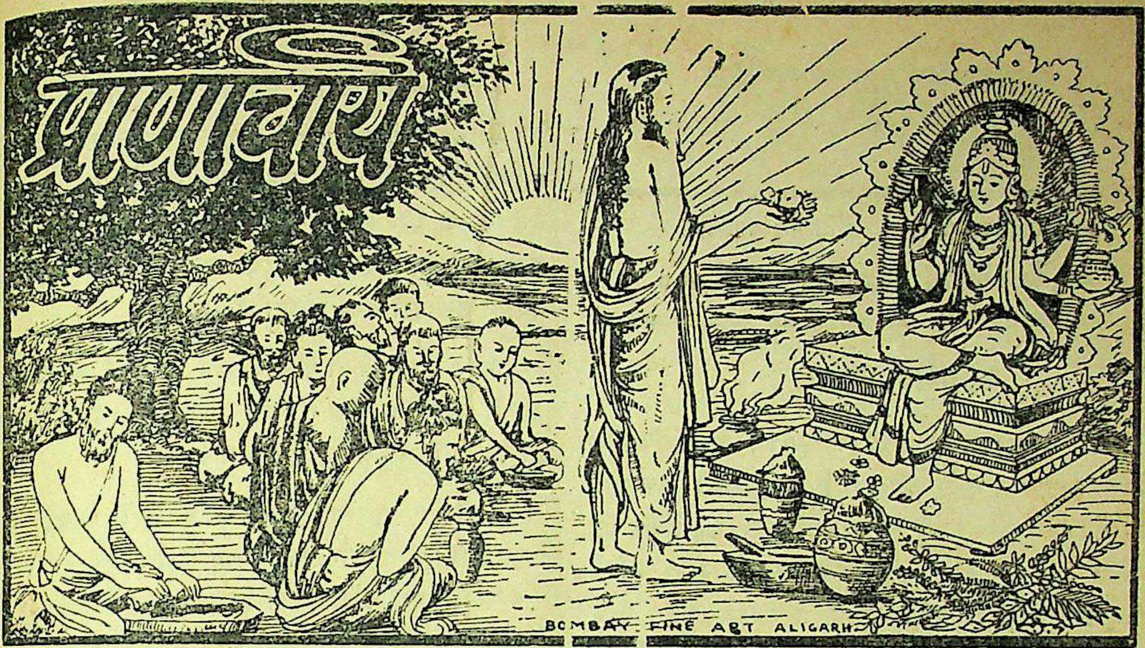

भाग ७ अङ्क १२ | संस्थापक—स्वर्गीय वैद्यभास्कर बांकेलाल गुप्त "प्राणाचार्य"
प्राणाचार्य भवन प्रायवेट लिमिटेड, बिजयगढ़ का मुखपत्र | मार्च १९५८

जयकार

जय जय-जय आयुर्विज्ञान !

परम पुनीत और पावन है,
तेरी वाणी में जीवन है,
तुझ में ही संहार, सृजन है,
तू है भारत का अभिमान !
जय जय जय आयुर्विज्ञान !!

सत्य सनातन और पुरातन,
तू तो है शाश्वत चिर नूतन,
जान तुझे 'आरोग्य निकेतन'
मांग रहा जग दान !
जय जय जय आयुर्विज्ञान !!

रोगी जन का भाग्य-विधाता,
दीन हीन भारत का त्राता,
तू तो 'नवजीवन का दाता,
है आदर्श, महान !
जय जय जय आयुर्विज्ञान !!

तेरी गौरवमयी कहानी,
सचमुच है जग में लासानी,
हम ने तेरी कद्र न जानी,
भूल गये पहचान !
जय जय जय आयुर्विज्ञान !!

राह नहीं कोई दीख रही है,
मानवता अब चीख रही है,
तुझ से ही तो सीख रही है,
सुखारोग्य का ज्ञान !
जय जय जय आयुर्विज्ञान !!

तेरी ओजमयी वह वाणी,
फड़कउठें सुन जिसको प्राणी,
आशीः दे वन मां कल्याणी,
कर जगती का त्राण !
जय जय जय आयुर्विज्ञान !!

रचयिता—श्री एम० पी० रंजन, आसनसोली ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ श्री धन्वन्तरयेनमः ॥

प्राणाचार्य

स्वास्थ्योपदेशकुशलः सौख्यायुष्यप्रवर्धक ।
आयुर्वेद प्रबोधार्थं प्राणाचार्यं प्रकाशितः ॥

आयुर्वेद विद्यालय

अखिल भारतवर्षीय महामण्डल की विद्यालय विषयक योजना काफी समय से चल रही है परन्तु अभी तक कोई फल नहीं निकला। जब कि वास्तविकता यह है कि यह कार्य आज से दसियों वर्ष पूर्व ही सम्पन्न हो जाना चाहिये था। परन्तु किन्हीं परिस्थितियों के कारण यह कार्य विलम्ब से भी पूरा नहीं हुआ। हम उन परिस्थितियों पर विस्तार से न जाकर व्यर्थ के विवाद में नहीं पड़ना चाहते। हमें इधर के कुछ समाचारों से पता चला है कि श्री उपेन्द्र-नाथ दास जी भिषगाचार्य इस विषय में प्रयत्नशील है और किन्हीं दानी महोदय ने कुछ सहायता का भी आश्वासन भी दिया हुआ है। यदि यह बातें सच हैं तो हम महा-मन्डल के अधिकारियों से निवेदन करते हैं कि वह इस विषय पर सम्पूर्ण भेदों को (चाहें वह कितने भी गहरे क्यों न हों) भुलाकर एक मत से तन मन धन से इस योजना व समय को न चला जाने दें अन्यथा आयुर्वेद विद्यापीठ का महत्व लगभग नष्ट ही हो जायगा और उसके द्वारा सम्पादित परीक्षाओं का कोई भी महत्व नहीं रहजायगा। आयुर्वेद विद्यालय का स्वरूप क्या हो, कोर्स क्या हो कितने वर्ष का हो व उसमें विषय क्या हो इन सभी बातों के तय करने के लिये आयुर्वेद विद्वानों की एक समिति का गठन किया जाय जिसमें विद्वान अध्यापक हों न कि नेता मात्र।

आयुर्वेद विद्यालय अपने ढंग का एक हो एवं इसके स्नातकों का रजिस्ट्रेशन सभी प्रान्तों में हो सके ऐसा प्रबन्ध भी अवश्य किया जाना चाहिये।

आशा है कि हमारी इस अपील पर सभी आयुर्वेद विद्वान एवं आयुर्वेद हितैषी विचार करेंगे और एक मत से इस समय विद्यालय की स्थापना करा ही देंगे।

अपने विषय में

प्राणाचार्य वर्ष ७ का अन्तिम अंक आपके हाथों में है। प्राणाचार्य के आगामी विशेषांक भावप्रकाश का प्रकाशन प्रारम्भ होगया है। यह अंक ३५० पृष्ठ के लगभग होगा एवं जितना मैटर इस अंक में आवेगा उसके आगे का मैटर क्रमशः साधारण अङ्कों में दिया जायगा। और इस प्रकार वर्षान्त तक पूरा मैटर देदिया जायगा।

भाव प्रकाश कैसा होगा इसकी रूपरेखा आपको अङ्क ११ में प्रकाशित लेख से मिल सकती है। जिन सज्जनों को यह न मिला हो वह पुनः मंगाले।

विशेषांक सचित्र होगा। बनौषधियों के कई रंगीन चित्र होंगे एवं इकरंगे सैकड़ों चित्र अलग होंगे। टीकाकार ने अपना सम्पूर्ण कौशल इस टीका में प्रदर्शित किया है। हमें पूर्ण विश्वास है कि यह अङ्क आपको अवश्य पसन्द आवेगा। कागज की समस्या इस समय बड़ी भीषण हो रही है। प्रति दिन मूल्य वृद्धिपर है और कह नहीं सकते कि भविष्य में किस हदतक मूल्य पहुचेंगे पोस्टेज आदि में भी वृद्धि हो गई है। इन सब बातों की बावजूद भी हमने वार्षिक मूल्य में केवल ।=) छः आना की वृद्धि की है। यानी अब वार्षिक मूल्य ४॥-) के स्थान पर ५) होगा।

जो सज्जन ग्राहक न रहना चाहें वह कृपा कर एक पोष्ट कार्ड इस आशय का डालदें ताकि उनको वी० पी० न भेजी जाय अन्यथा वी०पी० वापिस आने में हमारा ।॥) के लगभग नुकसान पड़ जायगा अतः आप यदि ग्राहक न रहना चाहें तो आज ही एक पत्र द्वारा सूचित करदें हम आपके अत्यन्त आभारी होंगे। वैसे हम अपने ग्राहकों को विश्वास दिलाते हैं कि आगामी वर्ष के सभी अङ्क यथा-समय पहुंचेंगे एवं उनमें भावप्रकाश का शेषांश होगा। अतः आप इस वर्ष हमारे अनुरोध पर ग्राहक अवश्य रहें। आप से इस बात की भी पूर्ण आशा है कि आप हमारे लिये १-२ ग्राहक भी अवश्य बनावेंगे। हम आपके चिर कृतज्ञ रहेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाड़ी का ज्ञान

लेखक—बाबूलाल "रावत" शादीपुर (गंगीरी) अलीगढ़ ।

मद्वक्त्रेभ्यः पञ्चसंख्यागतेभ्यो,
वेदा जाता ऋग्यजुः साम रूहाः ।
सायुर्वेदाऽथर्व वेदाश्च तस्मिन्नास्तां,
शम्भौ श्री कणादस्ये भक्तिः ॥१॥

वन्दे तं परमानन्दं भक्तानामार्ति नाशनम् ॥
ममापि संकटं सर्वं हरत्वेव न संशयः ॥२॥

तिन शिवजी महाराज में कणाद आचार्य की भक्ति प्राप्त हो । कैसे शिव हैं जिन्हों के पांच मुखों से ऋग्यजुः साम और अथर्ववेद तथा आयुर्वेद ये उत्पन्न हुये हैं, तात्पर्य ऐसे जो शिव हैं उनमें कणाद महाराज की भक्ति रहे ! उन परमानन्द को प्रणाम हो, जो भक्तों की पीड़ा को नाश करते हैं, मेरे भी सब कष्टों को दूर करो ॥२॥

श्री गुरुदेव की कृपा, से, जिन्हों ने मुझे आयुर्वेद का ज्ञान दिया है । नाड़ी ज्ञान की ओर एक झलक डालता हूं।

पहिले नाड़ी की संख्या को कहता हूं—शरीर में मनुष्यों के साढ़े तीन करोड़ मोटी और पतली नाड़ी है। यह सब नाभि के मूल में गुथी (बंधी) हुई हैं ।

साढ़े तीन करोड़ नाड़ियों में बहत्तर हजार मोटी नाड़ी हैं यह शरीर में रात दिन वायु को धमन करने से धमनी संज्ञिका कही है । पांचों इन्द्रियों के गुण को प्राप्त करती है । इस लिये पंचेन्द्रियगुणा कहा है ।

बहत्तर हजार नाड़ियों में से सात सौ नाड़ी पतले मुख वाली हैं, खाये हुये अन्न के रस को तन में फैलाती है जिससे तन पुष्ट होता है । जैसे नदियों के मिलने से बड़ा सागर बन जाता है वैसे ही खाये हुए अन्न के रस से शरीर बढ़ता है ।

मनुष्य का तन पैर से मस्तक पर्यन्त अर्थात् सम्पूर्ण ही तन नाभि में स्थित एकसौ सात शिराओं से बंधा हुआ है जैसे चर्म डोरी से मृदंग बंधा रहता है ।

७०० नाड़ियों में भी २४ नाड़ी मुख्य हैं, इन चौबीस नाड़ियों में से भी एक नाड़ी परीक्षा के योग्य है । दाहिने हाथ तथा पैर की ।

मनुष्य के नाभि के आश्रय तिरछा कच्छ की तरह नाड़ी चक्र है जिसका बांये ओर मुख है और दाहिनी ओर पूंछ है ऊपर की ओर बांयें हाथ पैर हैं नीचे को दाहिने हाथ पैर है ।

उस कच्छ के मुंह में दो नाड़ी हैं । और दो पूंछ में हैं । पांच पांच हाथ और पैरों में हैं, बांये तथा दाहिने में ।

सम्पूर्ण नाड़ी वात, पित्त, कफ द्वन्द्व दोषों को तथा सन्निपात को और रस त्वचा असृक साध्य और असाध्य को विवेक अर्थात् ज्ञान को सब प्रकाश करती है ।

इस लिये वैद्य को नाड़ी देखने में बड़ा यत्न करना चाहिये ।

अब नाड़ी देखने का काल कहते हैं—प्रातः काल वैद्य को उचित है कि शौचादि कर्म निवृत होकर सुख पूर्वक बैठे । रोगी को भी उचित है कि वह शौचादि से निवृत होकर वैद्य को नाड़ी दिखावे । स्थिर चित्त वाला बुद्धिमान हृदय में अच्छा विचार वाला वैद्य तीन अंगुलियों से रोगी के दाहिने हाथ में नाड़ी को देखे ।

रोगी पुरुष के दहने हाथ के अंगुठ के मूल में अपने हाथ से रोगको जानने के लिये नाड़ी को छुवे । प्रायः करके स्त्रियों के बांये हाथ में तथा पुरुषों के दाहिने हाथ में नाड़ी स्फुट होती है ।

नाड़ी के अग्र भाग में वायु की गति होती है मध्य स्थान में पित्त की अन्त में कफ की गति होती है अर्थात् अंगुष्ठ की जड़ में रखी तरजनी ऊंगुली के नीचे वायु की गति होती है और मध्यमा ऊंगली के नीचे पित्त तथा अनामिका के नीचे कफ की नाड़ी चलती है । रोग रहित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरुष की नाड़ी केंचुवे की तरह चलती है और शुद्ध गति होती है।

वायु की नाड़ी की गति तिरछी होती है पित्त से चपल गति होती है कफ से मन्द गति होती है मिश्रित दोषों से मिश्रित लक्षण होते हैं।

वैद्याचार्यों ने वात की गति सर्प, जौंक, बिच्छू आदि की चाल के समान बताई है। पित्त की चाल कौवे लावक, मेंढक आदि की गति कही है। कफ की नाड़ी की गति मोर कपोत, राजहंस, घंगुची, मुर्गे, पिंडुकिया की सी चाल होती है।

अब द्वन्द्वज दोषों की गति को क्रम से कहते हैं। बार बार सर्प की गति चले या बार बार मेंढक की चाल चले उसे वात पित्त की नाड़ी कहते हैं। जो नाड़ी सर्प की गति से चले व मोर की चाल चले वह नाड़ी बायु और कफ के प्रकोप से जानना।

जो नाड़ी मेंढक की चाल चलती व मोर की तरह चलती हो वह नाड़ी पित्त कफ के प्रकोप से चलती है।

कभी नाड़ी तीव्र कभी मन्द ऐसी नाड़ी त्रिदोष की नाड़ी है। जो नाड़ी लवा, तीतर, बटेर, की चाल चलती है तो सन्निपात से जानना।

जिस नाड़ी की गति धीरे धीरे हो या शिथिलता के साथ हो वा व्याकुल ठहर ठहर के चले व यदि सूक्ष्म हो स्थान से हट कर चले उस नाड़ी को असाध्य जानना। जब नाड़ी एक स्थान में ३० बार फड़के तब रोगी निश्चय जीता है।

ज्वर के प्रकोप में नाड़ी की गति उष्णता सहित वेगवती होती है। पित्त के बिना उष्णता नहीं होगी ऊष्मा के बिना ज्वर नहीं होता इसलिये ज्वर के प्रकोप में नाड़ी की गति ऊष्णता सहित वेगवती होती है।

वात ज्वर में नाड़ी की गति वक्र अर्थात् सर्प जौंक की गति के समान शीघ्र तथा ठंडे स्पर्श वाली होती है। पित्त ज्वर में नाड़ी की गति कठिन पुष्ट तथा दीर्घ वेगवती होती है।

कफ ज्वर में नाड़ी की गति सूक्ष्म अर्थात् मन्द हंस के समान चलती हैं। वात पित्त ज्वर में नाड़ी की गति चंचल, शीघ्र, तथा स्थूल, स्तब्ध परिपुष्ट गति वाली होती है। वात कफ में नाड़ी की गति कुछ उष्ण तथा मन्द गति वाली होती है। पित्त कफ में नाड़ी की गति सूक्ष्म, कृश, अल्प शीत और स्थिर गति वाली होती। जो नाड़ी निरन्तर उष्णता युक्त चले तो निश्चय दुष्ट रक्त से परि पूरित दोष जानना।

अजीर्ण में नाड़ी की गति कठिन अर्थात अकोमलता के साथ चलती है और दोनों पार्श्व में जड़ता होती है मन्दाग्नि तथा क्षीण धातु पुरुष की नाड़ी मंदतर होती है। संग्रहणी रोग में नाड़ी अधिक वेग से शान्त चलती है। अतिसार में ज्यादे वेग से अति कोमल गति होती है। बिलम्बिका रोग में नाड़ी की गति मेंढक की चाल के समान होती है। आमातिसार में नाड़ी की गति भारी होती है। मल मूत्र के रोकने से या विसूचिका के होने से नाड़ी की चाल मेंढक के समान होती है। अनाह (अफरा), मूत्र कृच्छ में नाड़ी भारी चलती है। वात शूल में नाड़ी वक्र एवं पित्त शूल में गर्म, कफ शूल में भारी चलती है।

प्रमेह रोग वाले पुरुष की नाड़ी बीच बीच में गांठ रूप वाली होती है। आम वात तथा गठिया में सुतप्ता अर्थात उष्ण गत वाली होती है। विष के खाने में मनुष्य की गति उछलती हुई चलती है। अफोर तथा गुल्म रोग में वायु की अधिकता से नाड़ी नीचे को स्फुरण करती है। वमन रोग, अन्न के साथ कांटा तृण आदि पेट में जाने से, मल मूत्र के रोकने से व्याकुल पुरुष की नाड़ी की गति हाथी, हंस की चाल के समान होती है

जिस रोगी की नाड़ी की गति केंचुआ व सर्प की गति के समान चले तथा क्षीणता हो व शरीर पर शोथ हो तो मास के अन्त में दूसरे महीने में अवश्य मृत्यु जाननी चाहिये।

जिस प्रकार वीणा बजाने वाले को तार का ज्ञान हो जाता है उसी प्रकार अभ्यास करके से नाड़ी का ज्ञान हो जाता है और नाड़ी स्पर्श करने से शरीर का पूर्ण हाल मालूम हो जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्वर विज्ञान पर मेरा विचार

लेखक—कविराज द्वारिकाप्रसाद शास्त्री, राजगांगपुर।

आयुर्वेद के माधव निदान नामक ग्रन्थ में ज्वर की उत्पत्ति इस प्रकार वर्णन की गई है। यथा—

दक्षापमान संक्रुद्ध रुद्रनिःश्वास सम्भवः।
ज्वरोऽष्टधा पृथग्द्वन्द्व संघाता गन्तुजस्स्मृतः॥१॥

अच्छा देखिये प्राचीन टीकाकार इससे क्या अभिप्राय निकालते हैं।

तस्य (ज्वरस्य) प्रागुत्पत्तिमाह—दक्षापमाने इत्यादि।

दक्षापमानेन (दक्षयुक्त परिभवेण) क्रुद्धस्य रुद्रस्य निःश्वासात् सम्भव उत्पत्तिर्यस्य स ज्वरः।—इति श्रीकंठः।

—माधव निदान २०—भावप्रकाश २२२

अर्थ स्पष्ट है—अब हमें देखना है कि प्राचीन टीकाकार इसका यही अर्थ करते हैं या नहीं और इस अर्थ से चरकादि महर्षि प्रणीत मौलिक विषय से कुछ सम्बन्ध है या नहीं।

ज्वरस्तु खलु महेश्वर कोपप्रभवः। प्राणिनांप्राण हरः, देहेन्द्रिय मनस्तापकरः, प्रज्ञाबल वर्ण हर्षोत्साह ह्रास करः। श्रम क्लम मोहहारोपरोध संजननो ज्वरयति शरीराणीति ज्वर इत्यादि। चरक निदान १ सू० ३१।

इसकी व्याख्या करते हुए चरक चतुरानन श्री चक्रदत्त जी शंका उठाकर उसका समाधान करते हैं, उससे एक अपूर्व मौलिक विषय का क्या ही अच्छा वर्णन मिलता है। आरम्भ में चक्रदत्त जी कहते हैं—सम्प्राप्ति ज्वरस्य महा प्रभावतां दर्शयितुं "पूर्वोत्पत्तिप्रकारान्तरमाह" ज्वरस्तु खलु महेश्वर कोप प्रभवः इति।

अर्थात् ज्वरोत्पत्ति की महा प्रभावता दिखाने के लिये—"प्रथम ज्वरोत्पत्ति प्रकार" कहते हैं कि—ज्वर महेश्वर (शिव) जी के क्रोध से उत्पन्न हुआ है।

चरक चिकित्सा स्थान में इसका विस्तार पूर्वक वर्णन है, जिन्हें देखना हो वहीं देख लेने की कृपा करें।

किन्तु हम यहां श्री चक्रदत्त जी की उठाई हुई शंका व समाधान को ही देते हैं। यथा—

सर्वप्राणभृतः स ज्वरा एव जायन्ते, स ज्वरा एव म्रियन्ते। तत्किमिति तेषां जन्मनि मरणे वा सन्तापात्मा ज्वरो न लक्ष्यते इत्यत आह—स महामोह इति जन्ममरण यो महामोह रूपो ज्वरो भवति न सन्तापात्मेत्यर्थः। अतएवाह ज्वरः प्रभावो जन्मादौ निधने च महत्तमः इति।

—चरक पृ० ३१

भावार्थ—चक्रदत्त जी शंका करते हैं कि जब सर्व प्राणी ज्वर युक्त पैदा होते हैं। और ज्वर युक्त मरते हैं। तो वहां संताप रूप ज्वर क्यों नहीं मालूम होता है कि इसके ज्वर है या नहीं। इसका उत्तर यह है कि जन्म मरण समय में महामोह रूप ज्वर होता है, सन्ताप रूप नहीं होता है। क्योंकि सन्तापरूप तो मिथ्याऽहार विहार जन्य है जैसा कि महर्षि चरक ने भी कहा है कि अपचारज (मिथ्या आहार विहार जन्य) ज्वर का प्रभाव सन्ताप रूप है और जो अपचारज नहीं है अर्थात् (महेश्वर कोपोत्पन्न है) उसका जन्म मरण के समय में मोह रूप प्रभाव है।

उपरोक्त समाधान से यह तात्पर्य निकलता है कि क्या ज्वर दो प्रकार का होता है, १-सन्ताप रूप २-मोह रूप। वैद्यबन्धु! देखिये वाग्भट्टाचार्य इसका स्पष्ट वर्णन करते हैं,

क्रोधोदक्षाध्वरध्वंसी रुद्रोद्‌र्ध्व नयनोद्भवः।
जन्मान्तयोर्मोहमयः सन्तापात्माऽपचारजः॥
विविधै र्नामभिः क्रूरो नाना योनिषु वर्त्तते।
स जायतेऽष्टधादोषैः पृथङ्मिश्रैः समागतैः॥

—वाग्भट नि० २ अ०

अर्थ—दक्षाध्वरध्वंसी रुद्रोद्‌र्ध्व नयनोद्भवः जन्मान्तयो र्मोह मयः इति जन्मान्तयोःसन्तापानुपलब्धेर्मोहमय इत्युक्तम् यश्चापचारजस्तथा विषाहाराद्युद्‌भूतः स सन्ताप स्वभावः। सच क्रूरः दुश्चिकित्स्यः। नाना योनिषु च विविधैर्नाम्

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभिवर्तते। यथा—पकलस्तु यथेभानामभि तापस्तु वाजिनाम इत्यादि। स सन्ताप लक्षणो ज्वरोऽष्टधाऽष्ट प्रकार सम्पद्यते। कथम्—पृथक् दोषैर्वात, पित्त, कफैस्तथा मिश्रैर्द्वाभ्यां ३ तथा समागतैः सन्निपातैस्थता आगंतुकारण जनितः एवमष्टौ भेदाः इति।

अर्थात् दक्ष के यज्ञ को विध्वंस करने वाले शिव जी के क्रोध से उत्पन्न ज्वर जन्म और मरण समय में मोह रूप होता है, अपचारज (मिथ्या आहार विहार जन्य) ज्वर सन्ताप रूप से होता है।

यह अपचारज ज्वर क्रूर है तथा सम्पूर्ण जीवों में भांति भांति के नाम से प्रगट होता है जैसे हाथी को पाकल नाम से, घोड़े को अभिताप नाम से और यह अपचारज ज्वर वातादि दोष भेद से आठ प्रकार का है – यथा—वात, पित्त, कफ, द्वन्द्वज, ३ सन्निपातिक और आगन्तुक।

महर्षि चरक ने भी ज्वर के इन दो प्रभावों का वर्णन किया है। यथा—

सन्तापः सारुचिस्तृष्णा सांगमर्दोहृदि व्यथा।
ज्वर प्रभावो जन्मादौ निधने च महत्तमः॥

अर्थ उपरोक्त है। किन्तु "दक्षापमान" इत्यादि इसके प्राचीन अर्थ का वास्तविक भाव न समझ कर जो अर्थ निकालते हैं वह सिर्फ "अपचारजः" इसी पद से निकल आता है। विशेष कल्पना की आवश्यकता नहीं।

मिथ्याहार विहाराभ्याम् दोषाःह्यामाशयाश्रयाः।
बहिर्निरस्य कोष्ठाग्निं ज्वरदास्यूः रसानुगाः॥

यदि पाठक कहें कि यह ज्वरोत्पत्ति (या निदान पूर्वक सम्प्राप्ति) नहीं है केवल सम्प्राप्ति है तो क्या "ज्वरदा" इस पद का भावप्रकाशोक्त "ज्वरकारिणः" या श्री कण्ठदत्तोक्त "ज्वरोत्पादक" अर्थ का क्या अभिप्राय निकालेंगे। इससे वातादि दोषों को ज्वर कारणता सिद्ध है।

यह तो आयुर्वेद का सिद्धान्त ही है कि "सर्वेषांमेव रोगाणाम् निदानंकुपितामलाः।"

श्रीमान् भावमिश्र जी ने "मिथ्याहार विहाराभ्याम्" लिखने के पूर्व लिखा है कि—"अथ दूर, समीप, कारण, कथन, पूर्वक, ज्वर, सम्प्राप्तिः" देखो भावप्रकाश पृ० २२२

आजकल के भी विनोदलाल सेन आदि विद्वान "मिथ्याहार विहाराभ्यां" को निदान पूर्वक सम्प्राप्ति ही मानते हैं। "मिथ्याहार विहाराभ्यां" कहने के पहले विनोदलाल सेन जी ने लिखा है "ज्वरस्य निदानं सम्प्राप्तिश्च" देखो आयुर्वेद विज्ञान पृ० १०।

यदि थोड़ी देर के लिये ऐसा न भी माने तो भी "दक्षापमान" श्लोक अपचारज (मिथ्याहार विहारजन्य) ज्वर का सन्निकृष्ट निदान नहीं हो सकता है।

इसका अपचारज नाम ही प्रमाण पर्याप्त है। इसलिये तो "दक्षापमान" श्लोक की टीका करते हुए प्रसिद्ध टीकाकार "श्री कंठ जी" ज्वर निदान माह न कह करके "तस्याप्राग्दुत्पत्ति माह" कहते हैं। देखिये माधव निदान पृ० २०।

फिर निदान को सन्निकृष्ट, विप्रकृष्ट, व्यभिचारी और प्राधानिक भेद से आचार्यों ने चार प्रकार का माना है। जिसके उदाहरण माधव निदान की मधुकोष व्याख्या में मौजूद हैं। जैसे—सन्निकृष्टो यथा—नक्तंदिनर्त्तु भक्तांशा दोष प्रकोपस्य हेतवः न च ते चयादिक मपेक्षन्ते। विप्रकृष्टो यथा—हेमन्ते निचिताश्लेष्मा वसन्तेकफ रोगकृत्। किंवा सन्निकृष्टो ज्वरस्य रूक्षादि सेवा। विप्रकृष्टो रुद्रप्रकोपः इति माधव १०।

(२) ज्वर को रुद्रक्रोध से उत्पन्न मानने में चिकित्सा विषयक एक और मौलिक बात मिलती है वह यह कि—

क्रुद्धरुद्रनिःश्वास सम्भूतत्वेन ज्वरस्य स्वभावतः तैजसत्वं (पित्तप्रधानत्वं) प्रकाशयते।

यत उक्तं चरकेण—क्रोधात्पित्तमित्यादि।

तेन सर्व ज्वरेषु पित्ताविरोधिनी चिकित्सा कार्येति सिद्धयति। यदुक्तं वाग्भट्टे नैव—

उष्मापित्तादृते नास्ति ज्वरो नास्त्यूष्मणा बिना।
तस्मात् पित्त विरुद्धानित्यजेत्पित्ताधिकेऽधिकम्॥
अतएव चरके कटवम्ल लवणान् पाचनान् परित्यज्य
तरुणज्वरे पाचकत्वेन तिक्तको रसःपित्तघ्नोनिर्दिष्टः।

अर्थात्—रुद्र क्रोध से ज्वरोत्पत्ति मानने पर ज्वर को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वभावतः तेजासी (पित्तांश प्रधान) मानना पड़ेगा। क्योंकि क्रोध से पित्त कुपित होता है। इससे सर्व ज्वरों में पित्त के विरोधिनी (पित्त को अत्यन्त शान्त ठण्डा या कुपित कर देने वाली) चिकित्सा न करनी चाहिये। ऐसा वाग्भट्ट ने कहा है, और इसी से चरक ने कटु अम्ल और लवण पाचकों को छोड़कर तरुण ज्वर में पित्तघ्न तिक्त रस देना कहा है।

प्रायः देखने में आया है कि ज्वर में पित्त को उभाड़ने वाली और एकदम ठंडा कर देने वाली चिकित्सा से अकसर हानि ही हो जाती है। ज्वर क्या है ? शारीरिक ऊष्मा (ताप) का बढ़ जाना और शारीरिक ऊष्मा पित्त है। यही तापमान (टेम्प्रेचर) से भी तात्पर्य है।

अब पाठक भलीभांति समझ गये होंगे कि 'दक्षापमान' के प्राचीन अर्थ में कैसी कैसी गूढ़ महत्व की बातें हैं। अच्छा देखिये—इससे हमें चिकित्सा के प्रधान अंग 'दैव व्यापाश्रय' चिकित्सा का कैसा परमोत्तम आदेश मिलता है। यथा —

(३) रुद्रकोप सम्भवत्वेन देवतात्मकत्वात् पूजार्हत्वमुपदर्शितम्।

यदाह विदेहः—ज्वरस्तु पूजनैर्वापि सहसैवोपशाम्यति।
चरकेपि—सोमंचानुचरं देवं समातृगणमीश्वरम्।
पूजयन्प्रयतःशीघ्रं मुच्यते विषम ज्वरात्।
विष्णुं सहस्र मूर्द्धानं चराचरपतिं विभुम्। स्तुवन्नाम सहस्रेण ज्वरान्सर्वान् व्यपोहति। च०चि० ३ पृ० ४२२।

यह दैवव्यपाश्रय चिकित्सा का उपदेश है जो चिकित्सा का एक अंग है।

असाध्य अवस्था में जब कोई औषधि नहीं काम करती 'महामृत्युंजय विधान' आदि से सहस्रशः लाभ होते देखा गया है।

महर्षि चरक ने इसे चिकित्सा का प्रधान अंग माना है। यथा—

त्रिविधमौषधमिति दैवव्यपाश्रयं, युक्ति व्यपाश्रयं। सत्त्वा वजयश्च। च० सू० ११–७३

वेद में राजयक्ष्मा आदि असाध्य रोग नाशक मन्त्रों का पाठ मिलता है। देखो आयुर्वेद मीमांसा पृ०३१। वेदों में वैद्यक ज्ञान २४, इसी से शास्त्रों में कहा है कि—

भैषजैर्विनिवर्त्तन्ते विकारा साध्य संमताः।
रसायन तपो जाप योग सिद्धैर्महात्मभिः॥
कालमृत्यु रपि प्राज्ञै जीयते नालसैर्नरैः॥

अर्थात्—भैषज द्वारा साध्य रोग तो दूर हो जाते हैं असाध्य नहीं। परन्तु रसायन जप तप योग सिद्ध महात्माओं के द्वारा काल मृत्यु भी जीत ली जा सकती है। सिद्ध महात्माओं की बात ही न्यारी है उन्हीं के द्वारा महा विज्ञान पूर्ण यह ग्रंथ लिखे गये हैं।

बस ! इन्हीं उपर्युक्त तीन विषयों का "दक्षापमान" द्वारा भी बीज रूप से वर्णन है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कास

लेखक—शिवकुमार "व्यास" व्यास आयुर्वेदिक फार्मेसी (रजि०) बाढ़दा कलां वाले, करौल बाग, दिल्ली ।

'कासनात कास उच्यते' अथवा 'कासर कुशब्दे' आदि जिनके अर्थ केवल यही हैं कि शुष्क ही अथवा कफ युक्त होकर यतः कुशब्द करता है अतः कास कहा जाता है ।

सम्प्राप्ति--

कास की सम्प्राप्ति इस प्रकार कही गयी है कि फुफ्फुसों (छाती) तक धूंआ पहुंचने से; रस का परिपाक न होने से, व्यायाम से, रूक्ष द्रव्यों के सेवन से, भोजन के श्वास मार्ग में थोड़ा भी चले जाने से, मल मूत्रादि एवं आती हुई छींक के वेग को रोकने से, प्राण वायु उदान के साथ मिलकर फूटे हुए कांस्य पात्र के शब्द के समान शब्द करता हुआ पित्त अथवा कफ से युक्त घोष एकाएक मुंह से निकलता है, बस इसे ही कास नाम दिया जाता है ।

पूर्व रूप--

"पूर्व रूपं भवेत्तेषां शूक पूर्ण गलास्यता । कण्ठे कण्डूश्च भोज्यानामवरोधश्च जायते ।।" (च. चि.अ. १८) अर्थात् गले एवं मुख में ऐसा प्रतीत होना मानो धान्यादि का शूक अटका हो, कण्ठ में कण्डू (खारिश) और भोजन निगलने में रुकावट आदि कास के पूर्व रूप होते हैं ।

भेद--

कास पांच प्रकार का होता है यथा वातज, पित्तज, कफज, क्षतज और क्षयज । प्रत्येक का अलग अलग वर्णन करेंगे ।

वातज कास –

हेतु

"रूक्ष शीत कषायाल्प प्रमितानशनंस्त्रियः । वेग धारण मायासोवात कास प्रवर्तका ।।" (चि० चि० अ० १८) अर्थात् रूक्ष शीत तथा कषाय द्रव्यों का भोजन अथवा मात्रा में अल्प प्रमाण में भोजन, उपवास, स्त्री भोग, पुरीषादि के वेगों का रोकना परिश्रम व थकावट सब वातज कास को प्रवृत करते हैं ।

लक्षण--

हृच्छङ्ख मूर्धोदर पार्श्वशूली क्षामाननः क्षीण बल स्वरौजा। प्रसक्त वेगस्तु समीरणेन भिन्न स्वरः कासति शुष्क मेव।। (सु० उ० अ० ५२) अर्थात् वातज कास में हृदय, शंख, शिर पेट एवं पार्श्वों में पीड़ा चेहरा उतर जाना, बल, स्वर तथा ओज का क्षीण हो जाना, निरन्तर खांसना एवं शुष्क कास होना लक्षण होते हैं इस के अतिरिक्त रोगी दुर्बल हो जाता है और उसे क्षोभ एवं मोह होजाता हैं । वातज कास में खांसी अधिक होती है उसका कारण यह है कि वातज कास में अन्न के अजीर्ण होने पर वायु का अत्यधिक वेग होता है जिससे ही अधिक खांसी होती है ।

पथ्य--

बथुवा, मकोय, मूली, चौपतिया, तैल आदि स्निग्ध द्रव्य, दूध, ईख का रस अथवा गुड़ से निर्मित पदार्थ, दही, काञ्जी, खट्टे फल, शराब पीना, मीठा, खट्टा तथा नमकीन द्रव्यों का सेवन करना वातजन्य कास को नष्ट करता है ग्राम्य, अनूप और जल के प्राणियों का मांस रस तथा शालि और साठी चावलों का भात जौ तथा गेहूं से बने द्रव्य उड़द तथा केंवच के यूष के साथ खाना वातज कास में पथ्य है ।

चिकित्सा क्रम--

सर्व प्रथम वातज कास स्नेहों से उपचार करना चाहिए । रोगी को घृत सेवन कराना चाहिए । वस्ति देनी चाहिए । पेया यूष तथा मांस रस का आहार दें । यदि वातज कास पित्त युक्त हो तो आहार के पश्चात ऊपर से घृत पिलाना चाहिए । यदि वात कास में कफ भी साथ हो तो स्नेह विरेचन द्वारा ठीक करना चाहिए ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिकित्सा–

१-कण्टकारी घृतम् — छोटी कटेरी और गिलोय दोनों को पौने चार-चार सेर की मात्रा में लें और डेढ़ मन जल में क्वाथ बनावें। जब जल पन्द्रह सेर बच रहे तो उसे उतार छान लेवें। इस क्वाथ में चार सेर गव्य घृत साधित कर लेवें। यह घृत वातज कास के लिये बहुत उत्तम है।

२-विश्वादिलेह— सौंठ, यवासा, काकड़ा सिंगी, मुनक्का और मिश्री समान भाग ले बारीक पीस चूर्ण करके एक से दो मासे की मात्रा में तैल के साथ सेवन करने से वात जन्य कास नष्ट होजाती।

३-शठ्यादि कल्क — कचूर, सोंठ और उदीच्य (सुगंध वाला) तीनों के कल्क को कपड़े में छानकर डेढ मासे तक की मात्रा में घी मिला आलोडित कर रोगी को पिलावें। यह वातज कास को नष्ट करती है।

पित्तज कास––

हेतु

"कटुकोष्ण विदाह्यम्ल क्षारणामति सेवनम्। पित्त कास करं क्रोधः सन्तापश्चाग्नि सूर्यजः॥ (च० चि० १८)

अर्थात्–कटु उष्ण, विदाही अम्ल तथा क्षारों का अत्यन्त सेवन, क्रोध, अग्नि व सूर्य का ताप पित्तज कास को करने वाले होते हैं।

लक्षण–

उरो विदाहज्वर वक्त्र शोषैरभ्यर्दित स्तिक्त मुखस्तृषार्तः।
पित्तेन पित्तानि वमेत कटूनिकासेत्स पाण्डु परिदह्यमान॥
—सु० उ०अ० ५२

अर्थात्–उर के भीतर दाह, ज्वर, मुंह का सूखना, मुख का कड़वा होना, प्यास लगना, पीली एवं कड़वी वमन होना, शरीर का वर्ण पीला हो जाना और शरीर में जलन होना आदि पित्त कास के लक्षण हैं। इसके अतिरिक्त पित्तज कास के रोगी को खांसते खांसते पसीने आने लग जाते हैं। रोगी पित्त मिश्रित कफ थूकता है और खांसते खांसते उसे तारे दिखाई देने लगते हैं। मोह, अरुचि और भ्रम आदि भी रोगी को हो जाते हैं।

पथ्य–

मधुर रस वाले पदार्थ, जांगल प्राणियों का मांस रस, मूंग आदि का यूष, तिक्त शाक, सांवा, यव तथा कोदों से बने पदार्थ खाना पित्तज कास में पथ्य है। खांड का शरबत, अंगूर का रस, ईख का रस, दूध, शीतल तथा अविदाही पदार्थ पित्तज कास में हितकर हैं।

चिकित्सा क्रम–

पित्त से उत्पन्न कास में यदि कफ पतला हो तो विरेचन के लिए मधु औषधियों के साथ और यदि गाढ़ा हो तो तिक्त औषधियों के साथ निशोथ का चूर्ण खिलाना चाहिए। इससे विरेचन हो जाता है। इसके पश्चात पतले कफ वाले को स्निग्ध एवं शीत पेयादि क्रम और गाढ़े कफ वाले को रूक्ष एवं शीत पेयादि क्रम कराना चाहिए। इसके साथ साथ कफ युक्त पैत्तिक कास में वमन भी कराना चाहिए। मैनफल, गम्भारी फल और महुआ इन तीनों के क्वाथ से पैत्तिक कास रोगी को वमन करानी चाहिए और फिर शीतल एवं मधुर पेयादि का सेवन कराना चाहिए।

चिकित्सा–

१-शठ्यादि रस प्रयोग— कचूर, सुगन्धवाला, बड़ी कटेरी, चीनी और सौंठ। सब समान भाग लेकर पीसकर रस निचोड़ लें। इसे घी के साथ सेवन करने से पैत्तिक कास नष्ट होती है।

२-पिप्पल्यादिलेह— पिप्पली, आंवला, मुनक्का, कच्ची लाख, लाजा और मिश्री। सब को समान भाग लें, पीस कर चौगुने दूध में डाल कर पकावें। मावा बन जाने पर उतार कर आठवां भाग शहद मिला लेवें। इसे आधा तोला की मात्रा से चाटने से पित्तज कास नष्ट होती है।

३-द्राक्षादिलेह— द्राक्षा, आंवला, पिंड खजूर, पिप्पली, कालीमिर्च। इन सब का चूर्ण घी तथा मधु के साथ सेवन करने से पैत्तिक कास नष्ट होती है। इसकी मात्रा छः माशे है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४-कमल चूर्ण – कमल के बीज का चूर्ण मधु के साथ चाटने से पैत्तिक कास नष्ट होती है।

कफज कास--

हेतु

गुर्वभिष्यन्दि मधुर स्निग्ध स्वप्नावि चेष्टनैः। वृद्धः श्लेष्माऽनिलं रूद्ध्वा कफ कासंकरोति च॥ (च० चि० १८)

अर्थात् गुरू अभिष्यन्दि मधुर एवं स्निग्ध द्रव्यों के सेवन से, निद्रा से, किसी प्रकार की चेष्टा न करने से अर्थात् सदैव आराम में बैठे या लेटे रहने से प्रवृद्ध हुआ कफ वायु को रोक कर कफज कास को उत्पन्न करता है।

लक्षण--

"प्रलिप्य मानेन मुखेन सीदन् शिरोरूजति कफ पूर्ण देहः।
अभक्त रूग्गोख कण्डु युक्तः कासेद भृशं सान्द्र कफः कफेन॥
(सु० उ० अ० ५२)

अर्थात् मुख कफ से लिपा रहना अंगों की अवसन्नता सिर में पीड़ा, शरीर के स्रोतों का कफ से भर जाना, भोजन में अरुचि, शरीर का भारीपन, शरीर में खुजली एवं गाढ़े कफ का निकलना आदि कफज कास के लक्षण हैं। इसके अतिरिक्त अरुचि, प्रतिश्याय, रोमहर्ष, क्लेद आदि लक्षण पाये जाते हैं। खांसते हुए छाती में अधिक वेदना नहीं होती परन्तु रोगी एसा अनुभव करता है जैसे छाती भरी हो। रोगी बहुत मधुर, स्निग्ध तथा घने कफ को थूकता है।

पथ्य–

कफ नाशक, कटु, रूक्ष एवं उष्ण, जौ का अन्न, शहद का शर्वत, काञ्जी आदि अम्ल द्रव्य, गर्म जल, रूक्ष मधु कटु पदार्थ युक्त मांस रस, लघु अन्न, त्रिकुटाआदि सभी कफज कास में पथ्य हैं। दुग्ध और साधा घी हानि करता है।

चिकित्सा क्रम--

कफज कास का रोगी यदि बलवान होतो पहले उसे वमन कराना चाहिए। रोगी को विरेचन, शिरोविरेचन कराना भी हितकर होता है। यदि कफज कास पित्त युक्त हो तो तिक्त पदार्थों से चिकित्सा करनी चाहिए।

चिकित्सा--

१-दशमूलादि घृत—दशमूल आठ सेर को चौसठ सेर जल में क्वाथ करें और जब सोलह सेर बचरहे तब छान लेवें और इस क्वाथ में चार सेर गव्य घृत संस्कृत करें। इसके उपरांत पुष्कर मूल, कचूर, बेल की जड़ की छाल, तुलसी, काली मिर्च, पिप्पली, सौंठ और हींग प्रत्येक ढाई ढाई तोला ले बारीक चूर्ण कर संस्कृत घी में (स्वागं शीतल होने पर) मिलावें। इस की आधे तोले की मात्रा कफज कास के साथ साथ वातज कास तथा श्वास आदि को भी नष्ट करती है।

२ पौष्करादि क्वाथ — पुष्कर मूल, कायफल, भारङ्गी, सौंठ और पिपल का क्वाथ सेवन करने से कफज कास शीघ्र ही नष्ट हो जाती है।

३ नवाङ्ग यूष—मूग, आंवला, अनार, बेर, मूली के टुकड़े, सौंठ, पिपल और कुलथी इन नौ द्रव्यों को समान भाग में मिलावें। इसमें से दो तोला लेकर चार सेर जल में औटावें जब जल आधा सेर रह जावे तो उसका सेवन करायें। यह कफज कास में लाभ पहुंचाता है।

क्षतज कास–

हेतु

अति-व्यवाय-भाराध्व-युद्धाश्व गजविग्रहैः।
रूक्षस्योरः क्षतं वायुर्गृहीत्वा कासमा चरेत॥
(च० चि० १८)

अर्थात्-अधिक मैथुन, अधिक भार वहन (भार उठाना) अति मार्ग गमन (मार्ग चलना), कुश्ती लड़ना, घोड़े व हाथी को बल पूर्वक रोकना तथा स्निग्ध आहार न करने से रूक्ष पुरुष के अन्दर क्षत हो जाता है इसी क्षतको लेकर वायु कास कर देता है।

लक्षण-

सूचोभिरिव तीक्ष्णाभिस्तुद्य मानेन शूलिना।
दुख स्पर्शेन शूलेन भेद पीड़ा भितापिना॥
—च० चि० अ० १७।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर्व भेद ज्वर-श्वास-तृष्णा वैस्वर्य-पीडितः।
परावत इवा कूजन कास वेगात क्षयोद्भवात् ॥

अर्थात् – वक्षस्थल (छाती) में तीक्ष्ण सूइयों के चुभाने का सा तोद और शूल होता है। शूल स्थान में स्पर्श मात्र से ही दुख होता है। पर्व भेद, ज्वर, श्वास, तृषा और ज्वर की पीड़नादि होती है। रोगी कबूतर के समान कूजन करता है। यह कास क्षीण पुरुषों की मृत्यु का कारण होता है अर्थात् असाध्य होता है। बलवान पुरुष का क्षतज कास याप्य होता है। याप्न द्वारा इसकी चिकित्सा करनी चाहिए।

पथ्य, चिकित्सा कर्म तथा चिकित्सा--

क्षतज कास को घातक जानकर शीघ्रही बल एवं मांस को बढ़ाने वाली चिकित्सा अर्थात् मधुर द्रव्यों तथा जीवनीय गण के द्रव्यों के साथ चिकित्सा करनी चाहिए। अभिप्राय यह है कि क्षतज कास की चिकित्सा यथा सम्भव शीघ्र ही होनी चाहिए, क्योंकि इससे शीघ्र ही मृत्यु की सम्भावना होती है। इसकी चिकित्सा में रोगी के मांस तथा बल को क्षीण न होने देना अति आवश्यक है। क्षतज कास से पीडित पुरुषों का आहार विहार तथा औषधि आदि सब पित्त कास के सदृश्य ही होना चाहिए। इसमें दूध, घृत तथा मधु का अधिक प्रयोग करना चाहिए। यदि रोगी मांस भक्षण का अभ्यासी हो तो कृशता और रूक्षता की अवस्था में उन्हें लावा आदि पक्षियों का मांस रस देना चाहिए। क्षतज कास में सदा इस प्रकार की आहार औषधि देनी चाहिए कि कफ की वृद्धि हो।

१-पिप्पल्यादिलेह--पिप्पली, मुलहठी, मिश्री प्रत्येक ढाई-ढाई तोला, गो दुग्ध चार सेर, बकरी का दूध चार सेर, ईख का रस चार सेर, जौ का आटा, गेहूं का आटा, मुनक्के का कल्क, आंवले का रस, तिल तैल प्रत्येक पाव-पाव भर लेवें। एकत्र डाल मन्द-मन्द आंच से लेह पाक करें। इसमें चढ़ाते समय यथोचित मात्रा में मधु तथा घृत मिला लेना चाहिए। यह क्षतज कास में लाभ करता है।

२-धूमवर्ति—मैदा, महामैदा, मुलहठी, बला, महाबला इनके कल्क को क्षौम वस्त्र खण्ड पर लिप्त कर शुष्क कर लें। पश्चात् शुष्क कर वर्तिका बना लें और रोगी को धूम्र पान करावें। फिर स्निग्ध आहार दें। यह क्षतज कास में लाभ करती है।

क्षयज कास

हेतु--

"विषमासात्म्य भोज्यातिं व्यवायाद् वेग निग्रहात्।
घृणिनां शोचतां नृणां व्यापन्नेऽग्नौ त्रयोमलाः ॥
कुपिता क्षयज कासं कुर्युर्देह क्षय प्रदम्।"
—च० चि० अ० १८

अर्थात्—विषम तथा प्रकृति विरुद्ध भोजन, अतिमैथुन, वेग निग्रह, घृणा एवं शोक से जठराग्नि मन्द होने पर तीनों दोष कुपित होकर क्षयज कास को उत्पन्न कर देते हैं।

लक्षण--

"स गात्र शूल ज्वर दाह मोहहान् प्राणक्षयं,
चोपल भेत कासी।
शुष्यान्वि निष्टीवति दुर्बलस्तु,
प्रक्षीण मांसो रुधिरं सपूयम् ॥

अर्थात्—क्षयज कास में–गात्र शूल, ज्वर, दाह, मोह एवं अन्त में प्राण के क्षय को प्राप्त करता है। फिर सूखने लगता है और दुर्बल होता जाता है। मांस पेशियां सूखने लगती हैं, क्योंकि पूय सहित रक्त खांसी के साथ निकलता जाता है।

पथ्य चिकित्सा क्रम तथा चिकित्सा--

यदि रोगी बलवान हो तो प्रत्याख्यान करके क्रिया करनी चाहिए। नवीन क्षय कास में रोगी को पूर्व बृंहण तथा अग्नि दीपन क्रिया करनी चाहिए। यदि दोषों की की मात्रा अत्यधिक हो तो मृदु विरेचन देना चाहिए। जाङ्गल पशु पक्षियों का मांस रस लाभ करता है। अतः रोगी को जांगल पशु पक्षियों का मांस रस देना चाहिए। गुडूच्यादि घृत लाभ करता है।

—शेषांश पृष्ठ ४९० पर देखें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खजूर

लेखक—कविराज हरिकृष्ण सहगल, बागीची अलाउद्दीन, दिल्ली ।

साधारण लोग समझते हैं कि खजूर अरब की मरु-भूमि का फल है। परन्तु आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि खजूर का प्राचीन यूनानी पुस्तकों में उल्लेख ही नहीं। अगरचे आयुर्वेद के सभी ग्रंथों में इसका वर्णन है। खजूर एक भारतीय फल है। इस साधारण खजूर से अन्य एक खजूर है उसे पिंड खजूर कहते हैं वह बेशक उत्तरी अफ्रीका, मिश्र,सीरिया और अरब में होती है। इसे फार्सी में खुर्मा कहते हैं। इन्हीं खजूरों का एक और भी भाई बन्धु है, उससे आपका परिचय छुहारे के नाम से है। यह भी उपरोक्त देशों में ही होता है। इन छुहारों के भी कई प्रकार हैं। भारत में बाहर से आता है।

खजूर भारत में मीठा फल होने के कारण मौसम पर खाया जाता है। परन्तु अरब में पिंड खजूर और खजूर शौक के लिये नहीं बल्कि आवश्यक भोजन होने के कारण खाया जाता है। प्रकृति भी कितनी दयालु है कि अरब में गायें नहीं होतीं, दूध दही नहीं मिल सकते, वहां उसने पिंड खजूर को पैदा किया है, जो कि दुग्ध के समान पूर्ण भोजन है। एक-एक वृक्ष पर यह खजूर साढ़े सात मन तक देखे गये हैं। अरब आदि देशों में गन्ना नहीं होता, उन देशों में इन्हीं खजूरों से चीनी बनाई जाती है। अरबों के निकट खजूर भगवान की सब से बड़ी देन है। अर्बों का भोजन खजूर और उंटनी का दुग्ध है। अरब देश की कहावत हैं कि खजूर के पेड़ का शिर आग में और पैर पानी में होने चाहिए। किसी में खजूर को सूर्य का संग्रहीत प्रकाश भी कहा है। आयुर्वेद मतानुसार खजूर में अनेक गुण हैं। यथा—

> मधुरं बृंहणं वृष्यं खजूरं गुरु शीतलम्।
> क्षयेऽभिघाते दाहे च वात पित्ते च तद्धितम्॥

खजूर में प्रोटीन ३० प्रतिशत, स्निग्धांश ०.२ अंश, खनिज द्रव्य १.३ अंश, तन्तुमय द्रव्य २.१ अंश, कार्बोहाइड्रेट्स (मधुरांश) ७७.३ प्रतिशत, कैल्शियम ०.०७, फास्फोर्स ०.०३, लोहांश १०.६, आर्द्रता २६.१ रहती है, ओजोवर्धक विटामिन प्रति हजार में ६०० अंश रहता है, थोड़ा भाग विटामिन सी का भी होता है, खजूर शर्करा ईक्षु शर्करा की उपेक्षा शीघ्र पच जाती है। मधु में पाई जाने वाली शक्ति खजूर में भी होती है। खजूर सभी के लिये बल रक्षक और शक्ति वर्द्धक है। खजूर के इन्हीं गुणों पर मुग्ध होकर महात्मा गांधी खजूर और बकरी का दुग्ध भोजन में लिया करते थे। मुसलमान खजूर का फल खा कर और ऊपर से पानी पी कर रोज़ा (उपवास) तोड़ते हैं।

खजूर से कृत्रिम मधु भी बनाया जाता है। विधि इस प्रकार है—

पाव भर दुग्ध में पाव भर पानी तथा एक व डेढ़ छटांक खजूर डाल कर पकावें और जल भाग जल जाने पर मधु के स्थान पर पीवें। अन्य विधि—

खजर के बीज निकाल कर आध सेर खजूर, २ सेर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जल में पकावें, जब आध सेर बाकी रहे उतार कर छानलें, उसमें आध सेर चीनी डालकर एक व दो तार की चाशनी तैयार करें. इसमें अब १ पाव शुद्ध मधु मिला दें। अब यह नकली मधु तैयार हो गया, जिसकी असल से परीक्षा करना कठिन है।

मुरब्बा खजूर–

खजूर को उबाल कर बीज निकाल दें और चाशनी में खजूर डुबा कर रखें, मुरब्बा तैयार हो गया। याद रखिये खजूर की शक्कर में एक विशेष गुण है कि यह वसा को नहीं बढ़ाती। मधुमेही इसका सेवन कर सकता है। बच्चों के पेट चलने व सूखा रोग में उपरोक्त शर्बत लाभदायक है।

विरेचन के लिये खजूर प्रयोग--

खजूर को रात के समय पानी में भिगो दें, प्रातः मल छान कर पिलाया करें।

दाह--

आध पाव पानी में खजूर मल कर छान कर पियें।

रक्तपित्त--

खजूर मधु के साथ सेवन करें।

आतवात--

खजूर को पानी में भिगो कर पीना चाहिये।

अतिसार--

२–२ घन्टे के बाद ४ व १०-१० पिंड खजूर खाने को दें। जल थोड़ा थोड़ा पीने को दें।

अगर अधिक खजूर खाने से अजीर्ण हो जाये तो सौंठ खाने से ठीक हो जाता है।

रक्त प्रदर--

खजूर (छुहारा) का सेवन लाभ करता है।

गुण--

पक्षाघात अर्दित व थकान को दूर करता है। बूढ़ों को बल देता है। शरीर को स्थूल करता है, शीतल प्रकृति वालों में बाजीकरण करता है। इसके कल्क में सेंधी मिला कर पीने से पथरी टूट कर निकल जाती है। छुहारे में बड़ के दुग्ध की १० बूंद डालकर प्रति दिन खाने से और ऊपर से गरम दूध पीने से काम शक्ति बढ़ती है।

पृष्ठ ४८६ का शेषांश

गुडूच्यादि घृतम्—गिलोय, पिप्पली, मूर्वामूल, हल्दी, गज पीपल, बच, छोटी कटेरी, कसौंदी, पाठा, चित्रक, सौंठ सपरिमाण में एकत्रित कर चौगुने जल में क्वाथ करें। चतुर्थांश क्वाथ रहने पर छान, समान घृत मिला पाक करें।

सब प्रकार के कासों पर दो सरल योग

१—कालीमिर्च के बारीक चूर्ण को घी मधु से खांड के साथ चाटने से सब प्रकार की कास नष्ट होती है।

२—रासना, खरेंटी, त्रिकुटा, गोखरू का कल्क और कल्क से चौगुना घी और घी से चौगुना कण्टकारी का रस लेकर घृत सिद्ध करें। यह घृत सब प्रकार की कास को नष्ट करता है।

देश की उन्नति के लिये

देशी औषधियां और आयुर्वेद साहित्य से प्रेम करना ही आपका श्रेय है!

विदेशी औषधियों का सेवन करना ही अपने धन को विदेश में देना है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्गुण्डी

(लेखक—वैद्य मदनगोपाल गुप्ता)

संस्कृत*—निर्गुण्डी (निर्गतं गुण्डं वेष्टनं यस्याः), नीलशेफालिका, शेफाली, नीलिका, मल्लिका, सुवहा, रजनीहासा, निशिपुष्पिका, सिन्दुकः, सिन्दुवारः, इन्द्रसुरिष' इन्द्राणिका, सिन्धुकः, सिन्दुवारः, इन्द्रसुरसः, इन्द्राणीः, पौलोमी, शक्राणी, कासनाशिनी, विसुन्धकः, सिन्धकम्, सुरसः, सिन्धुवारितः, सुरसा, सिन्धुवारकः।

अन्य भाषाओं के नाम—

हिन्दी—सम्हालु, निर्गुण्डी, मेउडी, खिहरू।

बम्बई—लिंगुर, शिवारी।

बगाली निर्गुण्डी, संभालू, नीलनिशिन्दा।

गुजराती—निगोड, नगडनावी।

मराठी—लिंगुर, निर्गुण्डी।

पञ्जाबी—वणा, लहरि, मोरौन, वनकाहू।

तैलंगु—तेलावाविली, नाविलिचेट्टु, तेल्लव।

तामिल—निर्नोचि, मनजाय।

कर्णाटकी—करियल्ल।

फारसी—परंगुष्ट, तुख्मेपञ्जगुष्ट, फंजगस्तु।

अरबी—हडुलफुक्का, बजरुल।

इंगलिश—फाइव लीव्ड चेष्ट ट्री (Five leaved chest tree)।

लेटिन—श्वेत पुष्पी (Vitex incissa willd.)
नील पुष्पी (Vitex negunds)

---

*उपरोक्त संस्कृत नाम शब्दरत्नावली, अमरकोष, रत्न कोष एवं भर्तृ हरि के मतानुसार लिखे गये।

भावप्रकाश निघण्टु में श्वेत पुष्पी एवं नील पुष्पी दो भेद किये हैं एवं दोनों के पृथक पृथक पर्य्याय लिखे हैं।

सिन्दुवारः श्वेतपुष्पः सिन्दुकः सिन्दुवारकः।
नीलपुष्पी तु निर्गुण्डी शेफाली सुवहा च स॥

परिचय—

प्रायः सारे भारत में विशेषतः देहरादून और सहारनपुर के प्रदेश में होने वाला झाड़ीदार वृक्ष है। शाखाएं पतली होती हैं। पत्र-प्रत्येक डण्डी पर तीन कहीं कहीं पांच भी पाये जाते हैं ये भालाकार एवं नोकीले होते हैं। इनकी लम्बाई २ से ४ इन्च, ऊपरी पृष्ठ गहरा हरा तथा निम्न पृष्ठ श्वेत हरा होता है। अगली पत्ती बड़ी किनारे कहीं सरल धार एवं कहीं कटावदार होते हैं। कटावदार पत्रों वाली निर्गुण्डी ही चिकित्सा की दृष्टि से श्रेयस्कर है। पुष्प नील एवं श्वेत दो प्रकार के मञ्जरी के रूप में निकलते हैं।

बंगाली वैद्य पारिजातक के झाड़ को भी निर्गुण्डी का एक भेद मानते हैं। किन्तु, "वैद्यक-शब्द-सिन्धु" के वर्णनानुसार इस मन्तव्य की पुष्टि नहीं होती। महाराष्ट्र में निर्गुण्डी नामसे पहिचानी जाने वाली जो वनस्पति है, यहां उसी निर्गुण्डी से अभिप्राय है।

रसायनिक संगठन—

इसकी पत्तियों में सुगन्धित तैल (Essential oil) तथा राल (Resin) होती है। फलों में एसिड रेजिन (Acid Resin), सेन्द्रिय पदार्थ, मेलिक एसिड (MalicAcid) तथा कुछ क्षारीय रंजक द्रव्य रहता है।

गुण-कर्म—

निर्गुण्डी कटु, उष्ण, तिक्त, रूक्ष, वातवेदना और आध्मान को दूर करती है। यह चक्षुष्य, केश्य, अग्निदीपन, मेधाजनन, वर्णकारक, व्रणशोधन, व्रणरोपण, शोथघ्न, कृमिनाशक एवं रसायन द्रव्य है। यह सन्धिवात, कृमि, कुष्ट, व्रण, प्लीहावृद्धि, कण्ठ रोग, गृध्रसी, प्रतिश्याय, कास, श्वास एवं क्षय को नष्ट करती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्गुण्डी बीज (रेणुका) स्फोटकों को बैठा देते हैं। ये प्लीहावृद्धि एवं शोथ में हितकर है।

शोथ रोगों पर निर्गुण्डी का प्रयोग--

निर्गुण्डी शोथनाशक वेदनानाशक एवं वातनाशक होने से शोथ रोगों में अत्यधिक प्रयुक्त होती है। शोथ आन्तरिक हो अथवा बाह्य इसके सेवन से दूर होती है। फुफ्फुसशोथ (Cogasntion of lungs), फुफ्फुसावरणशोथ (Pleurisy), उदर्याकलाशोथ (Peritonitis), आन्त्रकलाशोथ (Enleritis), सुजाक जन्य वृषणशोथ (Orchitis), आमवात (Gout), गलशोथ (Pharyngitis) इत्यादि हर प्रकार की शोथ में इसके समान लाभकारी अन्य कोई औषधि नहीं है। वैसे तो आयुर्वेद में नागदमन, वत्सनाभ, अहिफेन आदि अनेक शोथनाशक औषधियों का वर्णन आता है। किन्तु निर्गुण्डी सर्वसुलभ होने से एवं गुणों की दृष्टि से शोथनाशक औषधियों में अग्रगण्य है। शोथ रोगों में इसके प्रयोग की विधि निम्न है।

पत्रों को कुचल कर एक हांडी में बन्द कर पकायें◆। पत्रों के पक जाने पर हांडी को उतार लें, एवं इसके कल्क को शोथ स्थान पर रखकर बांधने से बड़ा लाभ होता है।

(१) हाथ पैरों की लचक, मोच एवं शोथ पर इन पत्तों को बांधने से बड़ा लाभ होता है।

(२) रस ग्रन्थियों का शोथ, सुजाक जन्य वृषणशोथ में स्वेदन एवं इसका सुखोष्ण कल्क बांधना उपयोगी है।

(३) कफज्वर एवं फुफ्फुसशोथ में निर्गुण्डी स्वरस एवं पिप्पली चूर्ण का अन्तः सेवन कराते हैं तथा पत्तों से सेक करते हैं।

(४) आमवात में निर्गुण्डी एवं शुन्ठी का क्वाथ देते हैं।

(५) गलशोथ में इसके शुष्क पत्तों का धूम्रपान कराते हैं, साथ ही पत्तों का लघुपिप्पली और चन्दन के साथ क्वाथ बनाकर पिलाते हैं।

◆ यदि निर्गुण्डी पत्रों के साथ धतूर एवं निम्ब पत्र भी डाल दिये जावें तो अधिक अच्छा है।

व्रणों पर निर्गुण्डी द्वारा आश्चर्यजनक लाभ

सन् १९२४ में अखिल भारतीय वैद्य सम्मेलन के अध्यक्ष कविराज योगीन्द्र नाथ सेन एम०ए० ने निर्गुन्डी तैल का चमत्कार पत्रों में प्रकाशित कराया था। उन्होंने लिखा था कि अहमन सिंह नामक एक वृद्ध पुरुष को उसके दुश्मनों ने खूब मारकूट कर एक खेत में डाल दिया। पता लगने पर उसके सम्बन्धी वहां से उसे अस्पताल ले गये। उसके शरीर में अनेक व्रण थे। वे व्रण उस अस्पताल की पाश्चात्य चिकित्सा से ठीक होगये। किन्तु बांए हाथ पर एक गहरा व्रण था। जो उत्तरोत्तर अधिक सड़ता जाता था डाक्टरों ने तीन मास तक उसकी चिकित्सा की जब वह व्रण अत्यधिक सड़ गया तो वहां के डाक्टरों ने उसे लखनऊ जाकर हाथ कटवा आने की सम्मति दी। इसी समय योगीन्द्र नाथ जी अकस्मात् वहां पहुंचे। उन्होंने उस व्रण पर निर्गुन्डी तैल× लगवाना प्रारम्भ किया, तो पाश्चात्य चिकित्सा द्वारा तीन मास में भी ठीक न होने वाला वह व्रण निर्गुन्डी तैल के प्रयोग से केवल तीन सप्ताह में ठीक हो गया।

कास, श्वास एवं यक्ष्मा में निर्गुण्डी का प्रयोग—

इन रोगों में निर्गुण्डी का प्रयोग निर्गुन्डी घृत○ के रूप में होता है। ½ से १ तोला घृत प्रातः सायं सेवन करते रहने से क्षय क्षीण व्यक्ति निरोग होकर देवों की भांति कान्तिमान् हो जाता है।

× निर्गुण्डीकारसाप्रस्थं प्रस्थं मार्कवजाद्रसात्।
रसाद्वत्तूरजाप्रस्थं गोमूत्रं प्रस्थ सम्मितम्॥
वचा कुष्ठं हेमबीजं तेजाह्वा कटफलं तथा।
पलार्द्धांशानि सर्वैस्तु वत्सनागः समोमतः॥
तैलप्रस्थं पचेद्युक्त्या वातरोगेषु शस्यते।
हेमन्ते हरिणाक्षीणां गाढ़मालिङ्गनं यथा॥
(वैद्यामृत)

○ समूलपत्रनिर्गुण्डीरसपक्वं घृतं पिबेत्।
क्षत क्षीण भवेच्छोषी सर्वातङ्कविवर्जितः॥
—चक्रदत्त, गदनिग्रह-राजयक्ष्मा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिद्ध नित्यनाथ अपने 'रस रत्नाकर' नामक ग्रन्थ में लिखते हैं कि निगु ंडी पत्र का स्वरस निकाल कर उसे गुड़ की चाशनी के समान होने तक पकाते हैं। तत्पश्चात् उस वर्तन को उतार कर अवलेह को ठंडा कर कांच के पात्र में रख देते हैं। श्वास, कास एवं क्षय के रोगियों को वमन विरेचनादि पंचकर्म कराने के बाद इस अवलेह को १-२ तोला की मात्रा में प्रातः सायं सात दिन सेवन कराने से आश्चर्यजनक लाभ दृष्टिगोचर होता है। प्रयोग के समय पथ्य केवल दूध दें।

ज्वर–

वारी से आने वाले विषम ज्वर एवं अन्य ज्वरों में पत्र चूर्ण, पंचांग स्वरस अथवा क्वाथ देना उपयोगी है। क्वाथ से शरीर का प्रक्षालन कराने से उसकी गर्मी और दुर्गन्ध कम होती है। ज्वर में होने वाली वमन और घवराहट दूर करने के लिये निगु ंडी पुष्प चूर्ण मधु से देते हैं।

सूतिका ज्वर× में निगु ंडी, लहशुन एवं शुंठी के मन्दोष्ण क्वाथ में पिप्पली चूर्ण मिला कर पिलाने से अतिशय लाभ होता है।

प्लीहावृद्धि–

निगु ंडी स्वरस एवं गोमूत्र प्रत्येक २-२ तोला प्रातः कई दिन पीने से बढ़ी हुई तिल्ली में लाभ होता है। निगु ंडी पत्र चूर्ण का कुटकी एवं रसौत के साथ प्रयोग कराना भी उत्तम है।

गण्डमाला※–

निगु ंडी स्वरस ४ सेर, तिल तैल १ सेर एवं लांगली मूल ५ तोला के कल्क से सिद्ध तैल को नस्य लेने से कष्टसाध्य गंडमाला भी शीघ्र नष्ट हो जाता है।

कृमि◇–

निगु ंडी, शोभांजनत्वक् एवं कायफल के क्वाथ में पीपल, विडंग एवं मदनफल चूर्ण मिला कर पीने से शरीर से कृमि बाहर निकल कर कृमिजन्य रोग नष्ट होते हैं।

उपजिह्वा□–

निगु ंडीमूल चर्वण से उपजिह्वा रोग नष्ट होता है।

विषों में–

चरक एवं सुश्रुत के मतानुसार इसका पौधा सर्प एवं वृश्चिक विष में उपयोगी होता है। रावर्ट के मतानुसार सर्प विष में इसके मूल, पत्र एवं छाल को कुचल कर दंश स्थान पर लेप करते हैं। पत्तों का ताजा रस अचेतनता दूर करने के लिये रोगी की नाक में टपकाते हैं एवं मूल का क्वाथ बना कर पिलाते हैं।

अलर्क विष (पागल कुत्ते के काटने पर) में निगु ंडी पत्रों का कल्क काटे हुए स्थान पर लगाते हैं।

स्नायुक□–

प्रथम तीन दिन तक गो घृत पान करने के बाद तीन दिन निगु ंडी स्वरस १-२ तोला की मात्रा में दिन में तीन बार पीने से कष्टसाध्य स्नायुक भी ठीक हो जाता है।

कर्णपूय○–

निगु ंडी स्वरस ४ सेर, सैन्धा नमक, घर का धुंआ

× संयोजितो दलितया कणया कवोष्णो,
निगु ंडिकालशुननागरजः कषायः।
पीतो निहन्ति कफमारुतकोपजातं,
सूत्यामयं सकलमेव सुदुस्तरञ्च॥
—योगरत्नाकर-सूतिका।

※ निगु ंडी स्वरसेनाथ लांगलीमूलकल्कितम्।
तैलं नस्येन हन्त्याशु गंडमालां सुदुस्तराम्॥
—चक्रदत्त, भैषज्यरत्नावली-गंडमाला।

◇ निगु ंडीशिग्रुयुतकटफलजः कषायः।
कृष्णाकृमिघ्नफल कल्कयुतः प्रपीतः॥
—गदनिग्रह-कृमि।

□ निगु ंडीमूललीकन्दं चर्वयेदुपजिह्वा प्रशान्तये।
—योगरत्नाकर, बृहत् निघंटु रत्नाकर-मुखरोग।

□ गव्यं सर्पिस्त्र्यहं पीत्वा निगु ंडी स्वरसं त्र्यहम्।
पिबेत्स्नायुकमत्युग्रं हन्त्यवश्यं न संशयः॥
—वंगसेन-स्नायु

○ निगु ंडीस्वरसैस्तैलं सिन्धुधूमरजोगुडः।
पूरणात्पूति कर्णस्य शमनो मधुसंयुतः॥
—भैषज्यरत्नावली-कर्णपूय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और गुड़ सम भाग मिश्रित ५ तोला, तथा तिल का तैल १ सेर लेकर सबको एकत्र मिलाकर पकावें। जब पानी जल जाय तो तैल को छान लें। इसमें मधु मिलाकर कान में डालने से पूतिकर्ण रोग नष्ट होता है।

आधाशीशी–

शिर में जिस तरफ दर्द हो उसके विपरीत नासिका छिद्र में ५ बून्द निगुंडी स्वरस डालने से लाभ होता देखा गया है।

कामशक्ति वर्द्धन के लिये–

½ तोला निगुंडी चूर्ण एवं ½ तोला शुंठी चूर्ण प्रातः कई दिन दूध से लेने से पुरुष की कामशक्ति बढ़ जाती है।

वली (शरीर की झुर्रियां) नष्ट करने में×--

निगुंडी, धतूर, बासा, विल्व, आमलकी, असन इन सबके पत्र, एरंड मूल, दूर्वा, लवंग, हल्दी, श्वेत सर्षप, पवांड के बीज और दालचीनी इन सबके समान भाग मिश्रित चूर्ण को नवनीत में मिलाकर कुछ दिन मर्दन करने से शरीर की झुर्रियां नष्ट हो जाती हैं।

निगुंडी कल्प--

भैषज्यरत्नावली के रसायनाधिकार में इस कल्प का वर्णन निम्न प्रकार आया है—

निगुंडीमूल चूर्ण ३२ तोला को ६४ तोला मधु से भली भांति मर्दन करके घृत लिप्त भांड में रखते हैं। भांड के मुख पर सकोरा रखकर अच्छी तरह सन्धिबन्धन कर उसे एक मास तक धान के ढेर में रखा जाता है। तत्पश्चात् १–२ तोला प्रातः सायं सेवन कराते हैं। एक मास तक सेवन कराने से मनुष्य सब रोगों से छूट कर वृद्धावस्था से मुक्त हो जाता है।

कुष्ठ रोग की चिकित्सा में १ तोला निगुंडीमूल चूर्ण देने के आधे घंटे पश्चात् ५ से १० तोला ताजा गोमूत्र देते हैं।

पथ्य—भीगे हुए चने एवं उसका पानी। औषधि सेवन के बाद ३–४ दिन तक रोगी को दस्त होते हैं। जो शरीर में संचित मल के निकल जाने पर स्वयं ही बन्द हो जाते हैं। अतः दस्तों से घबड़ाना नहीं चाहिये। और न दस्तों को बन्द करने का प्रयत्न करना चाहिए। इससे खुजली, नासूर, गुल्म तथा प्लीहा वृद्धि में भी लाभ होता है।

× निगुंडीकनकवासाश्रीफलामलकासनोत्थपत्राणि।
गन्धर्वहस्तमूलं दूर्वा कुसुमं तथा रजनी॥
सिद्धार्थेऽगजत्वगिति समभाग प्रक्षिप्य नवनीते।
उद्वर्तनं विधेयं सततं बलिनाशनं दृष्टम्॥
—वंगसेन–रसायन

घर बैठे

वैद्य, डाक्टर, हकीम बनिए

हमने ऐसी प्रायः सब ही संस्थाओं स्कूलों और कालेजों की जिनकी परीक्षाऐं केन्द्रों द्वारा अथवा प्राइवेट भी होती हैं उनकी पाठ्य विषय की सूचियां मंगाकर अपने यहां पाठ्य ग्रंथ संग्रह किये हैं और जो घर बैठे वैद्य या डाक्टर अथवा हकीम बनना चाहें उनकी शिक्षा एवं परीक्षाओं का प्रबन्ध किया है नियम मंगाकर देखिये।

आयुर्वेदिक रिसर्च कारपोरेशन (इन्डिया) रजिस्टर्ड विजयगढ़ (अलीगढ़)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनार

लेखक—राजवैद्य अमरदत्त मिश्र एल० एम० ए०, केकडी (अजमेर)

यह वृक्ष विशेषतः अरब, ईरान, अफगानिस्तान, भारतवर्ष, जापान, दक्षिण यूरोप, मध्य एशिया आदि स्थानों में होता है।

यह पेड़ १४-२० फीट ऊंचा, तने की गोलाई ३-४ फीट होती है। प्रातः माह फाल्गुण में इस वृक्ष के नवीन पत्ते आते हैं, फल भादों से आषाढ़ तक पकते हैं।

इसकी फलत्वचा में २०-२५ शतांश Tannin पाया जाता है। मूल त्वक् में २०-२५ शतांश Peunico Tannic Acid होता है।

उपयोगांश त्वक्, मूल, अपक्व फल, पक्व फल, बीज, स्वरस, पत्र, पुष्प हैं।

अनार मधुर, वात नाशक, ग्राही, अम्ल, कषैला, दीपन, स्निग्ध, वृष्य, उष्ण, कफ और पित्त का किंचित सधर्मी है, और न विरोधी है, मीठा अनार त्रिदोष नाशक है, श्रम नाशक, रुचि कारक, पित्त नाशक, दाहहर, ज्वर हृदय रोग आदि को सात्म्य है। शुक्रकर, स्मर्ण शक्ति वर्धक, अग्नि दीपक, बल कारक है!

खट मिट्ठा अनार अग्नि दीपक टानिक, पित्तल, रुचिकर एवं लघु होता है।

खट्टा अनार पित्तज, वातकफघ्न गुणों वाला होता है।

नव्य मतानुसार—

अनार दाने का रस ग्रहणी ज्वर में अच्छा लाभप्रद है। अनार के छिलके व फूल, जावित्री, दालचीनी, धनियां कालीमिर्च इनका मिश्रण बनाकर पुराने बालातिसार में देते हैं। दूब के रस के साथ अनारदाने का रस पिलाने से नासा रक्त स्राव बन्द होजाता है। मूल त्वक् उदरस्थ कृमि पातनार्थ व्यवहारित होती है।

—R. N. Khori 2 P. 218

अनार मूलत्वक् ५ तोला को ६ छटांक जल में क्वाथ करें आधा रहने पर पिलावें, मद्य पीने वाले ग्लास से, आध-आध घंटे के अन्तर से, इससे मूत्राधिक्य होगा सम्भव है पेट की कुछ हानि हो परन्तु उदरस्थ कृमियों की अव्यर्थ महौषधि है।

—Demak 2 part 45

दाड़िम के वैद्यकीय व्यवहार-

१—आमाजीर्ण में गुड़ के साथ सेवन करें।

२—अरोचक रोग में बिड़ लवण के साथ।

३—रक्तातिसार में कुटज त्वक् के साथ।

४—ज्वरकृत मुख वैरस्य में सिता के साथ।

५—खट्टे अनार के रस में कुछ मधु मिलाकर कान में डालने से कान का दर्द दूर होता है।

६—वमन और उत्क्लेश में खट्टे अनार के रस का उपयोग करें।

७—अनारदाने का ताजा रस उदरजशूल शामक होता है।

८—विशूचिका में खट्टे अनार का रस उत्तम औषधि है।

९—परिपक्व अनार का रस ज्वरज उष्णता और तृष्णा को शमन करने वाला होता है।

१०—मीठे अनार का रस खूब धूप में नितरालें फिर उसे आंखों में आंजें। नेत्रदृष्टि वर्धक, नेत्रकन्डू नाशक है।

इसके फल की मात्रा आधे तोला से पौन तोला तक की है।

अनार के पुष्पों का उपयोग—

१—इसके पुष्पों में संकोचक गुण हैं—यह ४ से ५ ग्रेन की मात्रा में उपयोग करने पर कास रोग में बार-बार आने वाले कास से बचाती है।

२—अनार के पुष्पों को अतिसार योगों में मिलाने से योग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अति उत्तम गुणों वाला हो जाता है।

३—अनार के पुष्प और गुलाब के पुष्प दोनों शुष्क लें। पीसकर मंजन करने से दन्तवेष्टज जलस्राव बन्द हो जाता है।

४—अनार के ताजा पुष्प ४ तोला, हरी मेंथी १० तोला दोनों को बारीक पीसकर ३ सेर जल में पकावें, जब गाढ़ा हो जाय तब शिर के बालों पर लेप करें, इससे बाल घुंघरूदार और मुलायम होते हैं। लेप २–३ घंटे रखें फिर धोलें।

अनार त्वक् प्रयोग-

१—रक्तार्श में अनार की छाल का क्वाथ बिल्वादि प्रक्षेप सह पिलाने से रक्त स्राव बन्द होता है।

२—रक्तातिसार में अनार छाल और कूडा छाल दोनों का क्वाथ करके मधु मिलाकर चटावे। यह योग रक्तातिसार में आशुफलप्रद है।

३—उपदंश में अनार की त्वचा का चूर्ण व्रणों पर छिड़कें जिससे व्रण रोपन क्रिया होती है।

४—अनार की जड़ की छाल उदर कृमि नाशक है। अधिक मात्रा में सेवन करने से वामक गुण दर्शाती है।

५—अनार फल त्वक् का क्वाथ करें पुनः आवश्यकतानुसार अफीम मिलाकर प्रयोग करें अतिसार में उत्तम लाभ करती है।

६—इसकी छाल के क्वाथ में चन्दन और शुंठी का चूर्ण प्रक्षेप रूप से डालकर उपयोग करने से रुधिर युक्त संग्रहणी मिटती है।

७—इसकी मूल को चन्दन की तरह घिसकर प्रयोग करने से शिर दर्द मिटता है।

अनार पत्र प्रयोग-

१—गर्भाशय के बाहर आने पर एवं गुद भ्रंश रोग में मीठे अनार के हरे पत्तों को छाया में सुखाकर कपड़छन चूर्ण बना लें। पुनः दिन में दोनों समय ताजा पानी के साथ ६-६ माशा की मात्रा में सेवन करावें, अवश्य लाभ होगा।

२—इसके १० तोले ताजा पत्तों को एक प्रस्थ जल में उबालें आधा रहने पर उतार कर छानलें इस पानी से गुदा धोवें गर्भाशय को भी धोवें उपरोक्त लाभ होगा।

३—अनार के पत्तों को छाया में सुखाकर बारीक चूर्ण कर लें, ६ माशा प्रातः गौ तक्र के साथ देवें और सायं काल ताजा जल के साथ देवें। पांडु रोग में अच्छा गुणकारी है।

४—दाड़िम के दो तोले ताजा पत्तों को १० तोला पानी के साथ पीसकर छान लें और पिलादें। पत्तों को पीस कर पेडू पर लेप करें। गर्भपात विकार को मिटाने में अच्छा लाभ करता है।

५—इस प्रकार पत्र स्वरस उरःक्षत में भी लाभ करता है।

६—अनार के पत्तों के छाया शुष्क चूर्ण को ६-६ माशा रोज दिन में दोनों समय ३ दिन तक गौ तक्र के साथ सेवन कराने से उदरस्थ कृमि बाहर आजाते हैं।

७—अनार के पत्तों के छाया शुष्क चूर्ण को अनार के पत्र स्वरस की २१ भावना देकर छाया शुष्क कर लें, यह चूर्ण उपदंश के घावों को सुखाने में आश्चर्यजनक लाभ करने वाला है।

८—अनार के ताजा पत्ते २ तोला को रोज दिन में दोनों समय ठंडाई की तरह बिना मीठा डाले पीने से अधोग रक्तपित्त को मिटाता है।

९—अनार के पत्तों का छाया में सुखाकर बारीक चूर्ण कर लें इसको दन्तमंजन की तरह उपयोग करने पर दाँतों का हिलना, मसूढ़ों से रक्त आना, मसूढ़ों का फूलना आदि मिट जाता है, दिन में दोनों समय मंजन करें।

१०—अनार के पत्तों को बारीक जल के साथ पीसकर लेप करने से स्तन दृढ़ होते हैं।

११—अनार के पत्तों का छाया शुष्क बारीक चूर्ण को ६-६ माशा ताजा जल के साथ दिन में दोनों समय सेवन कराने से नासूर में अच्छा लाभ करता है।

१२—उपरोक्त योग श्वित्र में भी अच्छा लाभ करता है।

१३—अनार के पत्तों का हिम बनाकर सायंकाल में सेवन करने से सोम रोग में शान्ति मिलती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कल्बुलहज्र क्या है ?

लेखक—श्री वैद्य श्रीगोपाल गुप्त, प्राणाचार्य भवन प्रा० लिमिटेड, विजयगढ़ (अलीगढ़)

प्रकृति ने मानव जाति के हितार्थ करोड़ों वनस्पतियां खनिज आदि द्रव्य बनाये हैं और जब भी जिस वस्तु की मानव जाति को आवश्यकता पड़ती है किसी न किसी प्रकार उसके हितार्थ वह वस्तु उसे सृजन करनी ही पड़ती है। आयुर्वेद और यूनानी ग्रन्थों में इन सभी उपयोगी द्रव्यों का वर्णन प्राप्त है। परन्तु आवश्यकता है लगन से खोज करने की। यही एक प्रमुख कारण है कि आज आयुर्वेद और यूनानी शास्त्र पिछड़ गया है और एलोपैथी इन्हीं ग्रन्थों के आधार पर नवीन खोज कर चकाचौंध उत्पन्न कर रही है।

कल्बुलहज्र भी इसी प्रकार से मानव समाज के लिये प्रकृति की अनुपम देन है। यह पत्थरों की चट्टानों के मध्य में स्थित रहता है अतः इसे पत्थर का दिल भी कहते हैं।

कल्बुलहज्र के भेद—

यह दो प्रकार का रंग भेद से होता है। १-सफेद २-गुलाबी मटमैला इनमें श्वेत रंग का सर्वोतम होता है और दूसरा न्यून गुण होते हैं। यह सभी किस्म के कल्बुलहज्र खरल में आसानी से पीसे जा सकते हैं। सफेद रंग का कल्बुलहज्र स्फटिक के समान आभा युक्त होता है।

विभिन्न रोगों में कल्बुलहज्र का प्रयोग

१-वंध्यारोग—

(अ) कल्बुलहज्र १ तोला अहिफेन २ माशा बुरादा हाथीदांत ६ माशा, लोंग ३ माशा, गाजवां के बीज ६ माशा, कस्तूरी ६ माशा, भांग ६ माशा,

—सबको काले पत्थर के खरल में घोट कर चने के गोली बना लें।

(ब) हजरल यहूद १ तोला, रूमी मस्तंगी ६ माशा, वंशलोचन ४ माशा

—सब कपड़ छन चूर्ण बनालें।

(स) तेजपात ६ माशा, दालचीनी ६ माशा, अगर ६ माशा बालछड़ ६ माशा केशर ६ माशा बुरादाहाथीदांत १ तोला कस्तूरी २ माशा

—सबको बारीक कूट कर शहद में मिला बत्ती बनावें।

मासिक धर्म के स्नान के उपरान्त अर्थात् चौथे पांचवे दिन १-१ गोली प्रातः सायं असगंध की चाह के साथ लें। गोली लेने के आधा घन्टा उपरान्त १-१ माशा चूर्ण ताजी पानी के साथ लें। इन औषधियों को सात दिन नियम पूर्वक सेवन करें। तीन दिन सेवन कर चुकने के उपरान्त रात्रि को योनि में उपरोक्त निर्मित बत्ती चार दिन तक रखें। इस प्रकार ७ दिन सेवन करने के उपरान्त सम्भोग करें। गर्भ स्थिर हो जायगा।

२-साधारण बंध्या रोग—

जिन स्त्रियों को एक दो बार संन्तान होकर बन्द हो जाय तब प्रातः काल ४ रत्ती कल्बुलहज्र ताजी पानी के साथ सेवन १५ दिन तक करें, गर्भ स्थिर हो जायगा।

३--गर्भपात और गर्भश्राव--

गर्भाधान के पहिले माह में १०दिन दूसरे और तीसरे माह में ८-८ दिन, चौथे, पांचवे, छटे और सातवें में ६-६ दिन और आठवे और नवे माह में केवल ४-४ दिन कल्बुलहज्र ४ रत्ती में बढ़िया वंशलोचन ४ रत्ती मिलाकर ताजे पानी अथवा गौदुग्ध के साथ दें इससे गर्भ श्राव या गर्भपात का भय नहीं रहता है। और पूरे समय पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन्तान उत्पन्न होती है ।

४- मासिक धर्म विकृति–

प्रातः सायं ६-६ रत्ती कल्वुलहज् १ तोला सुपारी पाक में मिलाकर दूध के साथ सेवन करें ।

५-श्वेत प्रदर–

प्रातः काल ४ रत्ती से १ माशा पर्यन्त कल्वुलहज् ठन्डे पानी के साथ लें ।

योषा अपस्मार–

कल्वुलहज् १ माशा, ऊदसलीब ४ रत्ती, निर्विषी ४ रत्ती को मोती पाक (खमीरा मरवारीद) १ माशा में मिलाकर ठण्डे पानी के साथ दें ।

धातुक्षीणता–

४ रत्ती से १ माशा तक रात्रि को च्यवनप्राश्य में मिलाकर गरम दूध के साथ दें ।

स्वप्नदोष--

कल्वुलहज् ४ रत्ती मूसली पाक २ तोला में मिलाकर दूध के साथ दें ।

प्रमेह में--

प्रातः काल १ माशा कल्वुलहज् दूध के साथ लें ।

दिल की धड़कन--

४ रत्ती कल्वुलहज् और ४ रत्ती अकीक ठंडे पानी के साथ प्रातः सायं लें ।

शुष्क गर्भ--

गर्भिणी को ३-३ रत्ती कल्वुलहज् गौदुग्ध के साथ तीसरे मास से ६ वें मास तक दें ।

बालशोष पर--

कल्वुलहज् १ रत्ती जहरमोहरा भस्म १ रत्ती सुबह शाम शहद के साथ दें और यकृतरोगहर तैल की मालिश करावें ।

यदि किसी स्त्री के बच्चे सूखा रोग से मरते हों–

२-२ रत्ती कल्वुलहज् ६, ७, ८ और ९ वें मास में ताजा पानी के साथ प्रातः सायं दें ।

क्षय पर--

कल्वुलहज् १ तोला, अभ्रक भस्म सौ पुटी १ तोला पीपल छोटी १ तोला, स्वर्ण भस्म १॥ माशा, स्वर्ण-सिंदूर १॥ माशा । सब को अर्क गुलाब में २४ घंटे घुटाई कर ४-४ रत्ती की पुड़िया बनालें । नित्य ३ मात्रा (प्रातः, सायं एवं दोपहर) शहद के साथ सेवन करें ।

पथ्य—हलका सुपाच्य और बल कारक भोजन लें । ३ माह में लाभ होता है ।

इसके अतिरिक्त इसको अन्य रोगों में भी सेवन किया जा सकता है । स्वयं अनुभव कर प्रकाश में लावें ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रह्मचर्य-वीर्य रक्षा

लेखक—धर्मरत्न शंकरप्रसाद कौशिक प्रवीण, हापुड़ (मेरठ)

बलेन पृथिवी तिष्ठति, बलेनान्तरिक्षम् ।
वीर्यमेव बलं बलमेव वीर्यम् ॥

अर्थात् --बल से पृथिवी ठहरी है, आकाश भी बल से ठहरा हुआ है । वीर्य ही बल है ।

ब्रह्मचर्य या वीर्य रक्षा के द्वारा अपने शरीर को बलवान बनाना मनुष्य के लिये उतना ही आवश्यक है, जितना भोजन करना और रात्रि में सोना है । शास्त्रकारों ने इस बात को बार बार बतलाया है कि जीवन संग्राम में विजयी होने के लिये मनुष्य को ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिये । मनुष्य का जीवन शुरू से ही लड़ाई का मैदान होता है । दुनिया भर के रोग उसके शरीर को खा जाने के लिये मुंह बाये बैठे रहते हैं । काम क्रोध आदि शत्रु इसको हमेशा दबोचने की फिक्र में रहते हैं । चोरी बेईमानी और व्यभिचार आदि बुराइयों का बाजार उसे बर्बाद करने के लिये हमेशा खुला रहता है ।

एक दूसरे को दबाना मनुष्य की पुरानी आदत है, अपने से कमजोर को हर एक दबाता है, और जो बलवान है वही संसार का आनन्द लेता है ।

इस तरह लड़ाई के इस मैदान में वही सिपाही विजयी होता है, जिसकी भुजाओं में ताकत और मस्तिष्क में बुद्धि होती है । मनुष्य की ताकत है उसका शुक्र (वीर्य), बल तेज, साहस, शौर्य, वीर्य के ही नाम हैं और वीर्य रक्षा के मानी हैं शरीर को बलशाली बनाना । समझदार व्यापारी अपने खजाने को कभी खाली नहीं रखता और जो ऐसा नहीं करते उन्हें जल्दी ही दिवालिया बनना पड़ता है । शरीर रूपी व्यापर के खजाने की रक्षा के लिये वीर्य रक्षा करनी चाहिये, और इसी के ऊपर स्वास्थ और जीवन की जिम्मेदारी है । जिस शरीर में वीर्य का खजाना भरा रहता है, उसके पास दुनिया का कोई रोग नहीं आ सकता । काम क्रोध आदि विकार उसे छू भी नहीं सकते, उसे संसार की कोई भी ताकत नष्ट नहीं करती ।

जिस मनुष्य के पास वीर्य धन होता है, वह हमेशा सफल होता है विजय लक्ष्मी उसका आलिंगन करती है ।

स्मरणं कीर्तनं केलिः प्रेक्षणं गुह्यभाषणम् ।
संकल्पोऽध्यवसायश्च, क्रियानिवृत्ति रेवचः ॥

स्मरण, कीर्तन, केलि, प्रेक्षण, गुह्य भाषण, संकल्प, अध्यवसाय और क्रिया निवृत्ति, इस तरह मैथुन आठ प्रकार का होता है । जब ब्रह्मचर्य भंग होता है, तथा वीर्य जरूरत पर बाहर निकलता है तो यही अमोघ वीर्य इच्छानुसार कार्य करता है । इस वीर्य में जननशक्ति स्वाभाविक होती है और ऐसा वीर्य स्त्री के गर्भाशय में जाकर निश्चित ही गर्भ की रचना करता है । इतना ही नहीं, पुत्र और पुत्री पैदा करना भी उसकी इच्छानुसार होता है । सन्तान में जैसे गुण चाहिये वैसे ही इस अमोघ वीर्य से पैदा हो सकते हैं । वैज्ञानिकों का विश्वास है कि ४० सेर अन्न से १ सेर रक्त बनता है, और १ सेर रक्त से २ तोला वीर्य और उसके बनने में लगभग १ माह का समय लगता है । आधा सेर अन्न खाने वाले मनुष्य के शरीर में दो माह २० दिन में २ तोला वीर्य तैयार होता है । वीर्य रक्षा करने वाले के शरीर में सदा यौवन रहता है ।

जिन मनुष्यों ने वीर्य रक्षा नहीं की उनका शरीर हमेशा मन्दाग्नि, प्रमेह, स्वप्नदोष आदि पाजी रोगों का शिकार होता रहता है, जवानी में ही बुढ़ापा आ जाता है । चेहरे पर झुर्रियां पड़ जाती है । इन रोगों से बचने के निम्न उपाय अपने मित्रों के लाभार्थ प्रकाशित कर रहा हूं ।

स्वप्नदोष नाशक चूर्ण--

राल मिश्री —२–२ तोला

—सम भाग मिला ले । इसे रात्रि को सोते समय सेवन करना चाहिये । तत्कालिक फायदा करती है ।

अगर आपकी इन्द्री पर नसें व खराबी हस्तमैथुन द्वारा होगई है तो इसके लिये प्राणाचार्य भवन से तिला प्राप्त हो जाती है । हमारे यहां की शंकर वटी का प्रयोग धातुस्राव स्वप्नदोष आदि पर विशेष लाभकारक है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

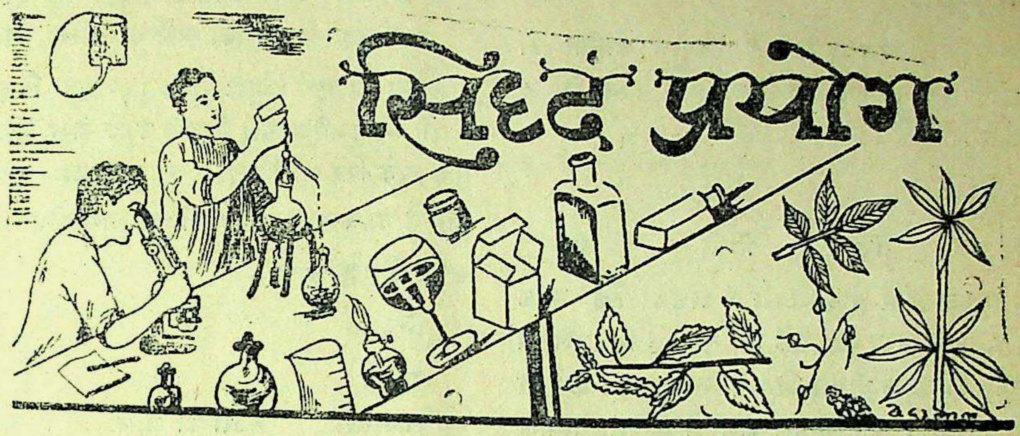

दुखती आंख पर पोटली--

लोध रसोत जीरा फिटकरी फूला
हल्दी मुर्दासिंग शुद्ध नीला तूतिया
प्रत्येक ३-३ माशा

कालीमिर्च	१ माशा
अफीम	१ रत्ती

—सबको कूटकर पोटली आंवला के बराबर बनावें। पानी में पोटली डालकर २ घंटा पड़ी रहने देवें, फिर ८ पहर तक जब चाहे आंखों पर फेरे। पानी के अन्दर पड़ी रखें।

खून की खराबी पर--

खून खराबी जो आतशक के कारण से हुई हो और कपाल कुष्ठ भी इससे जाता रहता है। आतशक नवीन पुरानी हो तो—

उशवा मगरबी गोरखमुण्डी कचनार छाल
इन्द्रायन की जड़ बबूल की फली
भोरीगनी कटाई बकायन की अन्तर छाल
नीम की अन्तर छाल पुराना गुड़
प्रत्येक १०-१० तोला

—सब को ३ सेर पानी में औटावें तीन पाव पानी रहने पर छान कर बोतल में भर लेवे, ६ रोज में पी लेवे। खाने में भात खावें।

गरम खुश्क पित्त वायु की खांसी पर--

गरम खुश्क पित्त वायु की खांसी का दम भी इससे आराम होता है। वह बीमारी जिसमें गरम खुश्क की वजह से श्वास छोड़ जाती है, लेकिन श्वास लेता नहीं बहुत बड़ी घबराहट होती है। हिचकी भी बन्द होती हैं।

लाल फिटकरी नौसादर

—सम भाग लेकर डमरूमन्त्र से उड़ा लेवें।

मात्रा—२-२ रत्ती। अनुपान—पान के साथ।

आधाशीशी पर--

मुलहठी बिहीदाना रेशा खतमी

—बराबर बजन से लेकर पानी में पीसकर छानकर पिलावें, शर्तिया आराम होगा।

नाक में छोडे जमने पर--

अगथिया पेड़ के पत्ते नाक में सूंघने से नाक में छोड़े नहीं जमते हैं।

बेहोशी नाशक-

सिरका अंगूरी	२ तोला
शहद	१ तोला
जुन्दबेदस्तर हींग बढ़िया	—१-१ रत्ती

—सबको मिलाकर पिलावें होश आवेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लू लगने पर--

कितनी ही जोरदार लू लगी है, बेहोश होगया हो तो बकरी के दूध की हाथ पैरों में मालिश करने से लू फौरन उतर जाती है।

पेचिस पर--

सोंठ सोंफ मिश्री घी

—चारों बराबर लेकर सोंठ को घी में डालकर सेके, सोंफ को अग्नि में कच्ची पकी सेकें। सब को मिला लेवें। अव्वल पेचिस के बीमार को अंडी का तैल दूध में देकर जुल्लाब देवें। बाद में इस योग को आंवला प्रमाण दिन में पांच छः बार देवें, आराम होगा।

दिल व वक्षस्थल के दर्द पर--

सिरका अंगूरी	३ तोला
तुरंजबीन	६ माशा
पानी	३ तोला

—मिलाकर थोड़ा थोड़ा तीन बार पिलावें शर्तिया आराम होता है।

छोटे बच्चों के दूध पलटने पर--

आम की गुठली चांवलों की परमल
सेंधा नमक चूना का पानी शहद

—मिलाकर पिलावें।

हृदय ज्वर पर--

कलोंजी	३ माशा
गधी का दूध	५ तोला

—शर्तिया आराम होगा, दिल की धड़कन भी मिटती है।

उल्टी बन्द करने के लिये-

जायपत्री नाग केशर कमलगट्टा की मींग
नमक सेंधा —सब समान भाग

—मिलाकर पानी में घोटें कुछ गुनगुना करके पिलावें।

दाद खाज छाजन पर--

गन्धक आंवलासार नौसादर ठीकरी का

—दोनों बराबर लेकर डमरूयन्त्र से उड़ावें, इसको शीतल सार कहते हैं। इसको खाने का तरीका यह है—

खस का चूर्ण हथेली पर १॥ माशा बिछाकर ऊपर से १॥ माशा शीतलसार बिछावे उसके ऊपर फिर खस का चूर्ण बुरके फिर सबके ऊपर शकर डाल कर फांक जावे। खाने में नमक नहीं खावे। शर्तिया लाभ होगा।

बालजीवन बटी--

गोरोचन		३ माशा
एलुआ		६ माशा
रेवनसार	कटेरी का जीरा	यवक्षार
स्वर्णक्षीरी		—सब १-१ तोला

—सबको कपड़छन कर अद्रक स्वरस में घोटकर मूंग प्रमाण बटी बनाई जावें।

बालकों के पसली, डब्बा रोग, विबन्ध, मूत्रावरोध, कास श्वास पर अजीर्ण और कफ के अन्य रोग जैसी उम्र हो आधी गोली से१ गोली तक मा के दूध के साथ देवें।

बालकों के डब्बा रोग पर--

जब बच्चे को डिब्बा की बीमारी होती है तो खांसी जोर की होती है, कफ निकालना बच्चा नहीं जानता है उस वक्त अमृत का काम यह दवा करती है, बल्कि डब्बा की सब शिकायत १ गोली देने से दूर होजती है।

१—तनगच (करंजुवा) के बीज की मींग
शुद्ध नीला तूतिया

—बराबर वजन मिलाकर उड़द प्रमाण गोली बनावे। दो-दो घंटे के फासले से १-१ गोली दी जावे। २ गोली से ज्यादा न देवे।

२—सफेद प्याज का अर्क बढ़िया शराब

—बराबर वजन लेकर छान कर बोतल में भर देवें। जैसी ताकत होवे २० से ६० बूंद तक दे सकते हैं। इसकी तीन ही मात्रा मां के दूध के साथ देनी चाहिये

निद्रा कर योग--

जायफल जायपत्री कालीमिर्च

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वर्ण माक्षिक भस्म	रुद्राक्ष	सर्पगन्धा
करंज मज्जा		अफीम

—समान मात्रा द्रव्य ग्रहण किये जांय प्रथम काष्ठादिक औषधियों का चूर्ण बनाया जावे, फिर अन्य औषधियों के साथ मिलाया जावे। तुलसी स्वरस और अद्रक स्वरस के साथ सात-सात भावनायें देवे। गुंजा प्रमाण वटी बनाई जावे। प्रलाप, अनिद्रा, सन्निपात ज्वर में आवश्यकतानुसार १-२ वटी ब्राह्मी कषाय के साथ दें।

सुधा पर्पटी—

कण्ठ के ऊपर अर्थात् मुख पर होने वाले व्रणों में पीप कम करने के लिये।

शुद्ध गन्धक	२॥ तोला
चूना बिना बुझा	१॥ तोला

—दोनों द्रव्यों को घोटकर पर्पटी के विधान से पर्पटी तैयार कर लेवे।

मात्रा—२ रत्ती, मक्खन, घी के साथ लेवे।

गुण—पायरिया आदि गरदन से ऊपर जिस घाव में पीप आती हो अच्छे होते हैं।

आतशक पर—

भीम कपूर	५ माशा
लोंग	२१ दाना
कपूरी पान	३० नग

—सबको घोटकर चना प्रमाण गोली बनावे। गोली दूध या लस्सी से देवें, आम का अचार भी दे सकते हैं परहेज नहीं।

—पं० रमाशंकर शर्मा वैद्य।

कुछ गरीबी परीक्षित प्रयोग—

(१) अश्वत्थ वृक्ष के फल, पत्रमुकुल (अविकासित पत्र), छाल और मूल इन्हें सम भाग लेकर मधु के प्रक्षेप के साथ दिन में उस समय सेवन करावें। ताजा गौ दुग्ध का सेवन भी कराते रहें तो वह पुरुष मैथुन शक्ति में चिड़े के समान हो सकता है।

(२) कलिहारी (लांगुलि) मूल को जल में घिसकर बायें हाथ के अंगुठे के नाखून पर लेप करे तो दाहिनी डाढ़(दंष्ट्रा)का दर्द बंद होगा कीड़ा आदि गिर जांयगे इस प्रकार बांये में हो तो बांये हाथ के अंगुठे के नख पर लेप करें अवश्य लाभ होता है।

(३) पाषाण भेद, शतावरी, दंतीमूल, कलिहारी, वत्सनाभ इनका लेप पेट और पेडू पर करने से मूढ़गर्भ आड़ा टेड़ा गर्भ त्वरितही बाहर आजाता है।

(४) कलिहारी के लेप से किसी भी स्थान में सुई, कील, कांटा आदि चुभ जाने पर यव जितना मोटा लेप करने से स्वतः ही निकल आते हैं।

(५) अपरा पातनार्थ कलिहारी मूल को पीस कर पेडू और योनि पर लेप करें।

(६) बिनौला की गिरी और गंधा बिरोजा दोनों को इन्द्री के छिद्र में रखने से लिंगेन्द्रिय चैतन्य होती है।

(७) इन्द्र लुप्त (गंज) पर कलिहारी मूल का लेप करने से गंज नष्ट होती है।

(८) कनसला को सुखाकर रुई द्वारा तिल तैल से दीपक विधी से काजल तैयार करें इस काजल को पक्ष्म रोग वाले पर प्रयोग करें पलकों के बाल वापस जम जायंगे।

(९) छोटी कटेली की जड़ का चूर्ण सम भाग मिश्री और गौदुग्ध के साथ सेवन करें प्रचुर मात्रा में स्तम्भन शक्ति का विकाश होगा।

(१०) बिल्वपत्र की कोपलें और इशबंद दोनों को अलग पीसकर मिलालें ऋतुस्नान के पश्चात् ४ दिन बासे पानी के साथ ६ मासा प्रातः सेवन करावें तो अधिक सन्तान देने वाली स्त्रियों को विश्रांति मिलेगी (सन्तानों का होना बंद हो जायगा)।

—राजवैद्य भ्रमरदत्त मिश्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

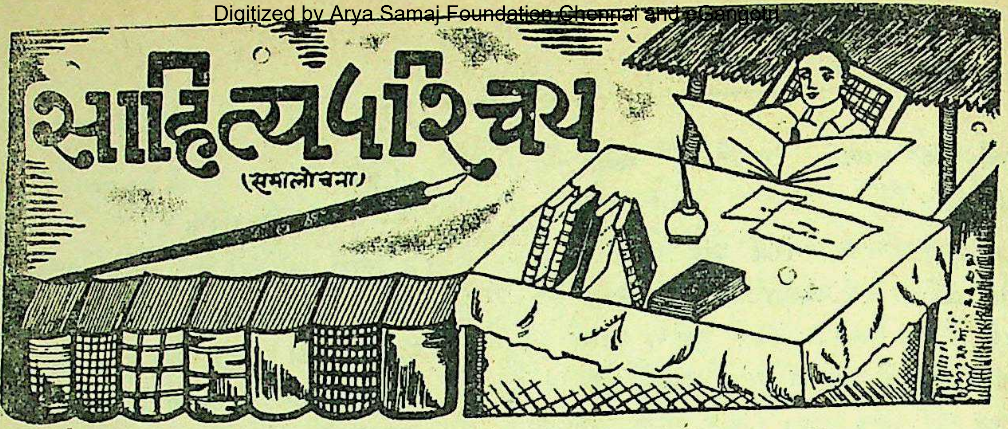

नागार्जुन (मासिक)

प्रकाशक-श्री लक्ष्मीकांन्त पंड्या, कलकत्ता

मूल्य—प्रति अङ्क ।।।) वार्षिक १५)

अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित होने वाला आयुर्वेद का यह प्रथम पत्र है। आर्ट पेपर पर सुन्दर छपाई एवं साहित्य से संयुक्त यह पत्र आयुर्वेद को आंग्ल भाषा में पढ़ने के इच्छुक व्यक्तियों के लिये एक मननीय सहित्यक ग्रन्थ होगा। पत्र में आयुर्वेदीय समाचारों को स्थान कम दिया जा रहा है। यदि विभिन्न प्रान्तों के मुख्य समाचार स्थान पा सकें तो उत्तम होगा।

नागार्जुन की हम हृदय से सफलता चाहते हैं और आशा करते हैं कि वह विदेशों के आयुर्वेद प्रेमियों को अपनी तरफ आकर्षित कर विदेशों में आयुर्वेद पताका फहरावेगा।

पता—नागार्जुन—५८-D न्यू अलीपुर, कलकत्ता-३३

गौहाटी आयुर्वेदिक कालेज पत्रिका

सन् १९५७ की षष्ठम प्रति हमारे सामने है। पत्रिका का यह अंक उत्तम कोटि के लेखों से युक्त है। इसमें अंग्रेजी भाषा के लेखों का भी संग्रह है। विद्यालय का प्रयास स्तुत्य है।

भिषग्विलास

आहार विशेषांक मूल्य—२)

अहमद नगर आयुर्वेद महाविद्यालय से प्रकाशित मराठी भाषा का यह मासिक पत्र शीघ्र ही ४७ वें वर्ष में प्रवेश करने वाला है। पूज्य श्री स्व० गंगाधर जी गुणे द्वारा संस्थापित यह पत्र उनके अनुरूप ही गुणप्रद है। प्रस्तुत अंक में आहार के योग्य पदार्थों का वर्गीकरण वैज्ञानिक दृष्टिकोण से आहार, गर्भ दशा में आहार पर विचार आदि उत्तम लेखों का संग्रह है।

आयुर्वेद संदेश

पाक्षिक—वार्षिक मूल्य ३)

प्रकाशक—पं० सुरेन्द्रनाथ दीक्षित राजवैद्य आयु०, अशरफाबाद, लखनऊ।

सहयोगी पत्र पहिले साप्ताहिक रूप में छपता था, पर जैसा कि आयुर्वेदीय पत्रों का हाल है वही समस्या इस पत्र के लिये भी उत्पन्न हुई और इसको पाक्षिक करना पड़ा। आज भी आर्थिक समस्या इस पत्र के भाग्य निर्णय को तुली है। देखें क्या होता है। श्री सुरेन्द्रनाथ दीक्षित ने १५ फरवरी के अंक में अपना कलेजा [illegible] निवेदन किया पर हमारे महारथियों पर उसका भी असर नहीं पड़ा। यह अंक किसी फार्मेसी के आश्रित न होने के कारण केवल विज्ञापनों एवं ग्राहकों के भरोसे ही चल रहा है। यद्यपि पिछले समय लक्ष्मी रसायनशाला का आश्रय लिया गया था पर अब लगता है कि वह भी समाप्त हो गया है।

आयुर्वेद संदेश उत्तर प्रदेशीय वैद्यों के लिये अत्यन्त उपयोगी पत्र है क्योंकि प्रान्तीय समाचारों के अतिरिक्त बोर्ड के लगभग सभी आवश्यक समाचार व सूचनायें शीघ्राति-शीघ्र इस अंक में निकलती रहती हैं और उन पर टीका टिप्पणी भी यथावत् होती रहती हैं। हमारे प्रान्तीय सम्मेलन का पत्र जब कि इतना ज्यादा समाचार नहीं दे पाता। वार्षिक मूल्य भी पत्र का आकार प्रकार देखते हुये अधिक नहीं है। यदि वैद्य समाज चाहे तो आसानी से चार आना प्रति मास बचाकर २-४ हजार की संख्या में ग्राहक बन सकता। परन्तु मालूम पड़ता है कि दीक्षित जी ने इस दशा में उचित उद्योग नहीं किया है।

हम सहयोगी के दीर्घायुष्य की कामना करते हैं और आशा है कि वैद्य समाज कम से कम अपने इस एक मात्र साप्ताहिक को अवश्य जीवित रखेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

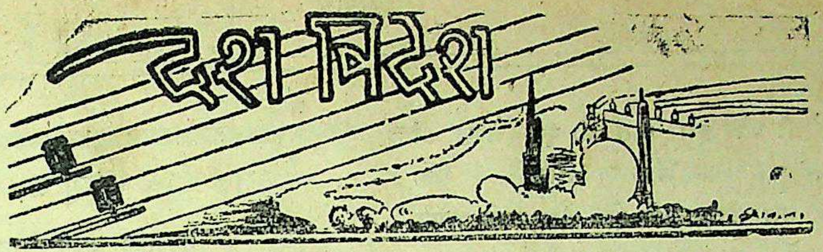

आयुर्वेद सेवासदन का श्रममन्त्री द्वारा उद्घाटन

कानपुर नागरिक वैद्य सभा और अग्रसेन व्यायामशाला की संयुक्त समाज सेवा

कानपुर ६ फरवरी। नगर की समाजसेवी संस्था श्री अग्रसेन व्यायामशाला ने नागरिक सभा का सहयोग प्राप्त कर अपने व्यायामशाला भवन में आयुर्वेद सेवा सदन की स्थापना की है जिसका विधिवत उद्घाटन आज राज्य के समाज कल्याण मंत्री आचार्य जुगलकिशोर जी ने किया।

आयुर्वेद सेवा सदन का उद्देश्य निःशुल्क चिकित्सा करना है इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु नगर के ४ वैद्य शास्त्रियों ने अपनी ओर से अभी बिना मूल्य औषधियां सेवा सदन को [illegible]। आशा की जाती है कि निकट भविष्य में नागरिक वैद्य सभा के सभी सदस्य संस्था को औषधिदान करने लगेंगे। सेवा सदन में रोगियों के लेटने तथा रहने की पूरी व्यवस्था है। अग्रसेन व्यायामशाला ने इसके लिए ४ कमरे बनवा दिये हैं और आतुरालय के लिये पृथक एक बड़ा स्थान बनवा दिया है। लगभग एक हजार दवायें इस समय यहां संग्रहीत थीं।

समारोह में नागरिक वैद्य सभा के सभी प्रमुख वैद्य उपस्थित थे। समाज सेवा विभाग के मन्त्री आचार्य जुगलकिशोर के पधारने पर पं० राजेश्वर जी मिश्र वैद्य ने उनका हार्दिक स्वागत करते हुये कहाकि आयुर्वेद के प्रवर्तक तथा प्रधानाचार्य इसी राज्य में उत्पन्न हुये है। धन्वन्तरि, भारद्वाज, चरक, आत्रेय आदि ने इसी राज्य में जन्म ग्रहण किया। आयुर्वेद का प्रथम उदय भी यहीं हुआ। आयुर्वेद ही जनता की चिकित्सा पद्धति हैं। सरकार ने पहले भी अयुर्वेद के उत्थान के लिये अनेक कार्य किये हैं इन्डियन मेडिसिन बोर्ड की स्थापना ही इस बातका एक प्रमाण है।

हमें अपने समाज कल्याण मन्त्री आचार्य जुगुलकिशोर से पूरी आशा है कि वे हमारे इस आयुर्वेद सेवासदन तथा आतुरालय की उन्नति में पूर्णतया सहायक होंगे। मन्त्री महोदय ने यहां आकर जो कष्ट स्वीकार किया है हम हृदय से उनके आभारी हैं।

श्री राधेश्याम अग्रवाल ने व्यायामशाला की ओर से मन्त्री जी का स्वागत करते हुये अग्रसेन व्यायामशाला के जन्म काल से इस संस्था ने सार्वजनिक सेवा तथा जन-सेवात्मक इतिहास को बतलाया।

राज्य के समाज कल्याण मन्त्री आचार्य जुगलकिशोर ने अपने भाषण में इस संस्था का उद्घाटन करने पर प्रसन्नता प्रगट की।

आपने कहा कि यह शुभ कार्य है। मेरा भी हाथ इस सेवा कार्य में लग रहा है, इसका मुझे हर्ष है। अग्रसेन व्यायाम शाला कानपुर की बहुत ही अच्छी संस्था है। यहां आकर सभी को प्रसन्नता होना स्वाभाविक है। जहां तक आयुर्वेद का सम्बन्ध है इसकी महत्ता सभी मानते हैं। ८० फीसदी जनता आयुर्वेद से लाभ पाती है। सरकार भी आयुर्वेद के लिये काफी प्रयास कर रही है। आज यदि आयुर्वेद की ओर लोगों का ध्यान कम है तो इसका उत्तरदायित्व वैद्यों पर भी है, जो शोध कार्य की ओर से उदासीन रहते हैं। आवश्यकता है कि वैद्य समाज आयुर्विज्ञान में अधिकाधिक शोध करें और जनता का विचारशील वर्ग समाज सेवा में प्रवृत्त हो और चिकित्सा की संस्थाओं को जन्म दे और उनके संचालन में सभी जन अपना अपना योग दें। जनता के कार्यों में सरकार का हाथ बंटाना उचित ही है। पर हमें अपनी शक्ति पर ही भरोसा करना चाहिये।

नागरिक वैद्य सभा के अध्यक्ष पं० सत्यनारायण मिश्र वैद्य ने अन्त में मन्त्री महोदय को धन्यवाद दिया।

आपने मंत्री जी की सलाह के अनुसार कहाकि हमारी नागरिक वैद्यसभा तथा अग्रसेन व्यायामशाला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
113882

कर्तव्य पालन करेगी और इस बात की पूरी चेष्ठा की जायगी कि संस्था को चलाने में तथा रोगियों की सेवा पूरी तरह करने में हम स्वावलम्बी हों और अपने साधन बढ़ाने की चेष्टा करें। जब तक हम सरकार के द्वार खट खटाने के लिले विवश न हो जांयगे, हम सरकार से कुछ भी नहीं मांगें गे।

भाषणोपरान्त मन्त्री महोदय ने औषधालय का विधि वत उद्‌घाटन किया। इस अवसर पर नगर का वैद्य समाज तथा विशिष्ट नागरिक अच्छी संख्या में एकत्र हुए थे।

व्यायामशाला के प्रधान मन्त्री श्री किसनलाल केडिया ने आयुर्वेद सेवा सदन के लिए जैसा अच्छा स्थान बनवा दिया और नागरिक वैद्य सभा ने जिस प्रकार लगभग १ हजार औषधियों की यहां व्यवस्था की है उसकी प्रसंशा सभी ने की। समारोह के अन्त में एक हजार से ऊपर अभ्यागतों को पौष्टिक आमलकी रसायन वितरित किया गया।

वैद्यों से प्रश्न-

मैं ता० १-२-४७ को इंजिन से गिर गया था। मेरी दोनों पुट्टों के बीच गुदा के पास हड्डी टूट गई और डाक्टरों ने आपरेशन करके हड्डी निकाल दी है। जहां पर आपरेशन किया गया व जहां पर इंजैक्शन लगाये गये थे वहां पर रीढ़ में दर्द हो रहा है एवं उसी समय से दिमाग में सनन-सनन झींगुर की आवाज हो रही है।

विद्वानों से प्रार्थना है कि वह इस विषय पर विचारकर औषधि या उपाय मुझे सूचित करें। एक्स-रे आदि भी कई बार हो चुके हैं। पता—रामलाल निर्भय गोदिया
जर्रा टिकुरिया, कटनी।

वैद्यराज प्रो० चतुर्भुज चौधरी का दुःखद देहावसान

वेगूसराय—अयोध्या शिवकुमारी आयुर्वेद महाविद्यालय वेगूसराय के द्रव्यगुण विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर चतुर्भुज चौधरी का हृदयावसाद के कारण शुक्रवार ता० १४ फरवरी १९५८ को मध्याह्न १ बजकर १५ मिनट पर दरभंगा मेडिकल कालेज अस्पताल में स्वर्गवास होगया। वे लगभग १ वर्ष से हृदयावसाद रोग से पीड़ित थे। कष्ट बहुत बढ़ जाने के कारण ता० ९ फरवरी १९५८ को चिकित्सा के लिये दरभंगा मेडिकल कालेज हस्पताल में उन्हें प्रविष्ट कराया गया था। वहां हृदय रोग विशेषज्ञ डा० बी० मुखर्जी की चिकित्सा चल रही थी। परन्तु रोग असाध्य था और स्थिति बहुत चिन्तनीय थी, अतः डा० मुखर्जी के अधिक प्रयत्नों के बावजूद प्रो० चौधरी जी की प्राण रक्षा नहीं हो सकी। उनके स्वर्गवास का समाचार वेगूसराय पहुंचा तो अयोध्या शिवकुमारी आयुर्वेद महाविद्यालय में गहरा शोक छा गया। महाविद्यालय के सब विभाग उनके सम्मान में बन्द रहे तथा सब अध्यापकों, छात्रों एवं कार्यकर्ताओं की शोक सभा में शोक प्रस्ताव स्वीकार किया गया। सब ने आर्थिक सहायता कोष बना कर उनके श्राद्ध आदि क्रियाकर्म के लिए तात्कालिक तथा परिवार के भरण पोषण के लिए नियमित मासिक आर्थिक सहायता देने का निश्चय किया।

अकाट्य-सचाई

जटिल रोगों की सफल चिकित्सा नामक रचना आयुर्वेद संसार की समीक्षानुसार जटिल रोगों की चिकित्सा सम्बन्धी समस्या को स्वनामानुसार सुलझाने में पूर्ण समर्थ-है। मूल्य २)। पोष्ट व्यय प्रथक।

पता—वैद्य एम० वासदेव, रघुनाथपुरा, जम्मू (कश्मीर)
प्राणाचार्य भवन प्रा० लिमिटेड, विजयगढ़ (अलीगढ़)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैद्योपयोगी कुछ अमूल्य साहित्य

प्रयोग[illegible]माला-

इसमें २५१ वैद्यों के चित्र तथा हर एक वैद्य के २-२ गुप्त प्रयोग दिये हैं। जो कि स्व० वैद्यभास्कर बांकेलाल गुप्त 'प्राणाचार्य' द्वारा परीक्षित हैं। थोड़ी प्रति शेष रह गई हैं शीघ्र ही मंगा लें अन्यथा द्वितीय संस्करण की प्रतीक्षा करनी होगी। मूल्य केवल लागत मात्र ८) पो. व्य. प्रथक्

शिशु रोगांक-

यह प्राणाचार्य का अमूल्य विशेषांक बालकों के हर एक रोग पर दृष्टिपात करके लिखा गया है। इसमें देश-विदेश के उत्तम लेखकों द्वारा बाल-रोगों का निदान तथा चिकित्सा का अनुकरण किया गया है। आवश्यक चित्रों से सुसज्जित इस विशेषांक का मूल्य केवल ४) है। शीघ्र ही मंगाकर लाभ उठावें।

ऊर्ध्व [illegible]क-

इस विशेषांक [illegible] शिरो भाग के अंग प्रत्यंग जैसे नाक, कान, आंख, दांत, मुख, मस्तिष्क आदि का विशद विवेचन किया गया है। ५३ आयुर्वेद के धुरीण पंडितों द्वारा इसको पूर्ण किया गया है। इसमें शिरो भागों में होने वाले रोगों का निदान और चिकित्सा तथा सामयिक चित्र दिये गये हैं। मूल्य ४) पोस्ट व्यय प्रथक्।

स्त्री रोगांक-

यह विशेषांक स्त्री जाति के लिये अमूल्य उपहार है। इसमें स्त्री रोगों पर उत्तम-उत्तम लेख दिये गये हैं, तथा रोगों का निदान, लक्षण और परीक्षित प्रयोग दिये गये है। इसके प्रयोगों को बनाकर कितने ही वैद्यों ने यश प्राप्त किया है और हमें बधाई दी है। मूल्य ४) पोस्ट व्यय प्रथक्।

कामविज्ञानांक-

काम शास्त्र कितना विशद ग्रन्थ है इसे आप सब जानते हैं। इस विशेषांक में लेखकों द्वारा इसका शास्त्रीय विवेचन किया गया है। इसका अध्ययन युवक-युवतियों को विशेषरूप से करना अनिवार्य है। मूल्य ४) पोस्ट व्यय प्र.

प्रयोगमणिमालांक-

इस विशेषांक में भारत के प्रसिद्ध वैद्यों के प्रयोग व परिचय एवं चित्र दिये गये हैं। ५०० के लगभग अमूल्य प्रयोगों का भण्डार है। थोड़ी प्रति शेष रह गई हैं। मूल्य ४) पोस्ट व्यय प्रथक्

स्वप्नदोष और वीर्य सञ्जीवन-

स्वप्न दोष से बचने के उपाय, स्वप्नदोष के कारण एवं चिकित्सा आदि का विस्तृत वर्णन है। मूल्य २)

परीक्षित प्रयोग प्रथम भाग-

बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी के परीक्षित प्रयोगों का विशाल संग्रह। मूल्य ।।।)

परीक्षित प्रयोग द्वितीय भाग-

धर्मार्थ औषधालय के अल्प मूल्य से बनने वाले हजारों सफल परीक्षित प्रयोग हैं। मूल्य १।)

वैज्ञानिक प्राणायाम रहस्य-

प्राणायाम से लाभ, स्वास्थ्य लाभ के उपाय, रक्त बहाव का वर्णन, हृदय कार्य प्रणाली आदि का विस्तृत वर्णन है। मूल्य २।)

आहार-

भोजन के नियम, भोजन कौन सा उत्तम है और स्वस्थ्य रहने के अनेकों तरीके दिये हैं। मूल्य १।)

थर्मामीटर विज्ञान-

थर्मामीटर की प्रयोग विधि। मूल्य ।)

नोट—सभी पुस्तकें एक साथ मंगाने पर २५% कमीशन दिया जावेगा, पोस्ट व्यय प्रथक् लिया जायेगा।

प्राणाचार्य भवन प्रायवेट लि०, विजयगढ़ (अलीगढ़)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राणाचार्य का आगामी विशेषांक

भावप्रकाश

[विस्तृत सरल हिन्दी टीका युक्त]

सम्पादक—श्री० पं० रामचन्द्र शर्मा साहित्यायुर्वेद शास्त्री

प्राणाचार्य का यह विशेषांक अपने ढंग का एक ही अङ्क होगा यह टीका विद्यार्थियों के लिये अत्यन्त उपयोगी होगी। यह अङ्क प्राणाचार्य के ग्राहकों को वार्षिक मूल्य देने पर विमूल्य भेंट किया जायगा

इस विशेषांक की निम्न विशेषतायें होंगी—

१—इस ग्रन्थ में आधुनिक काल के अन्य चिकित्सा निघन्टुओं के समान प्रत्येक पदार्थ का विस्तृत वर्णन किया है।

२—प्रारम्भ में विविध भाषाओं के नाम, उत्पत्ति स्थल, द्रव्य का स्वरूप तथा रस वीर्य विपाक, विशेष गुण आदि को संक्षेप में लिखा है ताकि दृष्टिपात मात्र से द्रव्य विषयक ज्ञान होजाय।

३—मूल संस्कृत श्लोक देकर उसका अर्थ किया गया है तदनन्तर विशेष व्याख्या की गई है [illegible] व्याख्या में द्रव्य का शरीर पर प्रभाव, चिकित्सा में उपयोग; उपयोग विधि इत्यादि बातें लिखकर अन्त में सम्बधित विशिष्ट योग भी दिये हैं।

४—अनेक नवीन औषधियां-यूनानी तथा एलोपैथिक-पैनिसिलीन व ग्रन्थि सारादि-इसमें दिये हैं। संक्षेप में चिकित्सा में काम आने वाली अधिकांश औषधियों का समावेश इसमें कर दिया है।

५—यह ग्रन्थ ४ खण्डों में है। पहिले खन्ड में परिभाषा-मान परिभाषा में अंग्रेजी एवं अन्तराष्ट्रीय माप का भी समावेश कर उसके साथ आयुर्वेदीय व देशी मानों की तुलना भी है। द्रव्य गुण, रस विपाकादि भी इसी खण्ड में हैं। इनका वर्णन आधुनिक व प्राचीन मतानुसार किया है। द्वितीय खन्ड में वनस्पति औषधि द्रव्यों का सचित्र वर्णन है। तृतीयखन्ड में रसशास्त्र का पूर्णरूपेण वर्णन है एवं चतुर्थखन्ड में आहार द्रव्यों का वर्णन है। परिशिष्ट में विस्तृत अनुक्रमणिका भी है जिसमें वस्तु का प्रत्येक भाषा में नाम दिया है।

विशेष ज्ञातव्य केवल अङ्क को देखकर ही समझ सकेंगे।

आज ही अपना नाम प्राणाचार्य के स्थायी ग्राहकों में लिखाकर इस ग्रन्थ को विमूल्य प्राप्त करें।

वार्षिक मूल्य ५) मात्र

प्राणाचार्य भवन प्रायवेट लि०, बिजयगढ़ (अलीगढ़)

श्रीतोताराम गुप्त के प्रबन्ध से प्राणाचार्य प्रेस बिजयगढ़ में मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar